उच्च शिक्षा में प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों की चुनौतियाँ एवं प्रतिक्रिया: लखनऊ जिले के युवाओं का समाजशास्त्रीय अध्ययन

(Challenges and Response of First Generation Students in Higher Education: A Sociological Study of Youth in Lucknow District)

शोध-प्रबन्ध

बाबासाहेब भीमराव अम्बेडकर विश्वविद्यालय लखनऊ से
समाजशास्त्र विषय में पी-एच०डी० उपाधि हेतु प्रस्तुत

डॉक्टर ऑफ फिलॉसफी

शोधार्थी

सुनीता भारती

नामांकन सं0 116/13

शोध निर्देशक

डॉ ब्रजेश कुमार

सहायक आचार्य
समाजशास्त्र विभाग

BABASAHEB
BHIMRAO
AMBEDKAR
UNIVERSITY
LUCKNOW
प्रज्ञा शील करुणा
ESTABLISHED 1996

समाजशास्त्र विभाग
अम्बेडकर अध्ययन विद्यापीठ
बाबासाहेब भीमराव अम्बेडकर विश्वविद्यालय
(केन्द्रीय विश्वविद्यालय)
विद्या विहार, रायबरेली रोड, लखनऊ (उ०प्र०)

2020

घोषणा पत्र

मैं सुनीता भारती यह घोषणा करती हूँ कि मैनें **"उच्च शिक्षा में प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों की चुनौतियाँ एवं प्रतिक्रियाः लखनऊ जिले के युवाओं का समाजशास्त्रीय अध्ययन"** (Challenges and Response of First Generation Students in Higher Education: A Sociological Study of Youth in Lucknow District) विषय पर शोध कार्य सहायक आचार्य डॉ0 ब्रजेश कुमार, समाजशास्त्र विभाग, बाबासाहेब भीमराव अम्बेडकर विश्वविद्यालय, लखनऊ के निर्देशन में पूर्ण किया है। पी0एच0डी0 की उपाधि हेतु प्रस्तुत शोध मेरा मौलिक कार्य है। प्रस्तुत यह शोध प्रबन्ध इससे पहले इस विश्वविद्यालय अथवा किसी अन्य विश्वविद्यालय में पी0एच0डी0 की उपाधि हेतु प्रस्तुत नहीं किया गया है। प्रस्तुत शोध प्रबन्ध पूर्ण रूप से प्लैग्यरिज्म मुक्त है।

Sunita Bharti

सुनीता भारती
(शोध छात्रा)
समाजशास्त्र विभाग
बाबासाहेब भीमराव अम्बेडकर (केन्द्रीय)
विश्वविद्यालय, लखनऊ

स्थानः लखनऊ
दिनाँकः 30/12/2020

Scanned with CamScanner

CERTIFICATE

This is to certify that the thesis titled "उच्च शिक्षा में प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों की चुनौतियाँ एवं प्रतिक्रियाः लखनऊ जिले के युवाओं का समाजशास्त्रीय अध्ययन" (Challenges and Response of First Generation Students in Higher Education: A Sociological Study of Youth in Lucknow District) submitted by **Sunita Bharti** is an original research work and has not been previously submitted in part or full for the award of any other degree or diploma to this or any other University.

The Thesis submitted to Babasaheb Bhimrao Ambedkar University, Lucknow, satisfies all the requirement as stipulated in the ***Doctor of Philosophy*** *(Ph.d) regulations*- 1999 as amended in 2008/2010/2013 and it is fit for submission and evaluation for the award of the degree of Doctor of Philosophy of the University.

Date : 30.12.2020

Supervisor

Brajesh Kumar
Assistant Professor
Deptt. of Sociology
B.B. Ambedkar University, Lucknow-226025

Head of the Department

Head
Dept. of Sociology
BBAU, Lucknow

Scanned with CamScanner

आभार

ईश्वर की कृपा, प्रेरणा एवं आशीष के बिना इस संसार में कोई भी कार्य सम्भव नहीं हो सकता। अतः प्रस्तुत शोध कार्य की पूर्णता पर सर्वप्रथम मैं अपने इष्ट देव के प्रति प्रणाम करती हूँ जिनके शुभाशीष से मैं इस महत्वपूर्ण कार्य को पूर्ण करने में सफल हो सकी। किसी भी विषय पर शोध कार्य करना एक बहुत ही कठिन कार्य होता है जिसमें जगह–जगह पर समस्याओं का सामना करना पड़ता है। प्रस्तुत शोध कार्य अपने शुरूआती चरण से पूर्णता तक मेरे इस कार्य में सहयोगी बने श्रद्धेय गुरूवर, विद्धानों, परिचितों एवं घनिष्ठ मित्रों के सहयोग, दिशानिर्देशन एवं आर्शीवाद से पूर्ण हुआ है अतः आप सभी के प्रति कृज्ञता व्यक्त करना मेरा परम कर्तव्य है।

आभार अभिव्यक्ति की श्रृंखला में मैं सर्वप्रथम पथ प्रदर्शक श्रद्धेय ***डा0 ब्रजेश कुमार*** जी, असिस्टेन्ट प्रोफेसर समाजशास्त्र विभाग, बाबासाहेब भीमराव अम्बेडकर विश्वविद्यालय लखनऊ, का आभार प्रकट करती हूँ जिनके बहुमूल्य सुझाव एवं विद्धतापूर्ण निर्देशन से फलीभूत होकर ही मैं इस महत्वपूर्ण कार्य को पूर्ण कर पायी हूँ। इस शोध के दौरान विचलित कर देने वाली परिस्थितियों में आपके दिशा–निर्देशों ने मुझे सदैव अपने कार्य को पूर्ण करने तथा अग्रसर होने की प्रेरणा प्रदान की है अतः मैं आपकी आजीवन ऋणी रहूँगी। मैं प्रो0 विभूति भूषण मलिक जी, प्रो0 बीरेन्द्र नाथ दूबे जी, विभागाध्यक्ष का आभार व्यक्त करती हूँ। जिन्होंने प्रस्तुत शोध विषय पर शोध कार्य की अनुमति प्रदान करने के साथ–साथ विभागीय औपचारिकताओं की पूर्ति एवं शोध कार्य से सम्बन्धित आवश्यक सुविधाओं का भी परस्पर ध्यान रखा। श्रद्धेय प्रो0 कामेश्वर चौधरी जी, प्रो0 मनीष कुमार वर्मा जी, डॉ0 जया श्रीवास्तव जी ने समय–समय पर अपना मार्गदर्शन दिया जो मेरे शोध के लिए काफी कारगर साबित हुआ।

मैं अपनी माता श्रीमती कमला देवी, पिता श्री केशव लाल एवं भाई मनोज कुमार भारती, बहन नीरज, ममता, अनीता भारती के प्रति हार्दिक अभार प्रकट करती हूँ

जिन्होंने अपना सहयोग देकर मेरा विश्वास और आत्मबल बनाये रखा तथा शोध कार्य पूर्ण करने के लिए प्रेरित किया। विशेष रूप से मैं अपने मित्रों रेशमी लिम्बू, दीप्ती सिंह, प्रत्याशी, मोनिका, पारूल, की आभारी हूँ। जिन्होंने समय–समय मुझे प्रेरित और प्रोत्साहित करने का कार्य किया और अपने सुझाव प्रदान किये। उन सभी सहृदयी व्यक्तियों के प्रति जो कि मेरे शोध कार्य में प्रत्यक्ष व परोक्ष रूप से सहयोगी रहे हैं, उनके प्रति मैं कृतज्ञता ज्ञापित करती हूँ।

Sunita Bharti

शोधार्थी

सुनीता भारती

स्थानः लखनऊ

दिनाँकः 30/12/2020

Scanned with CamScanner

विषय–सूची

घोषणा पत्र			i
प्रमाण पत्र			ii
आभार			iii-iv
तालिका सूची			vi-viii
रेखाचित्र सूची			ix
संक्षिप्त शब्दावली			x
अध्याय 1	:	प्रस्तावना	1–27
अध्याय 2	:	शोध की अध्ययन पद्धति	28–48
अध्याय 3	:	उच्च शिक्षा में प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों की पृष्ठभूमि	49–69
अध्याय 4	:	प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों की अध्ययन कक्ष के अन्दर एवं बाहर परिसर से सम्बन्धित चुनौतियाँ	70–107
अध्याय 5	:	प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों की उच्च शिक्षा में अभिभावकों की भागीदारी	108–131
अध्याय 6	:	उच्च शिक्षा में प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों की प्रतिक्रियाएँ	132–170
अध्याय 7	:	निष्कर्ष एवं सुझाव	171–188
सन्दर्भ ग्रन्थ सूची	:		189–207
परिशिष्ट I	:	साक्षात्कार अनुसूची	208–213
परिशिष्ट II	:	साक्षात्कार गाइड	214

तालिका सूची

तालिका सं0	शीर्षक	पृष्ठ सं0
2.1	30 उत्तरदाताओं का वितरण	40
3.1	आयु के आधार पर प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों का विश्लेषण	**50**
3.2	लिंग के आधार पर विद्यार्थियों का विश्लेषण	**51**
3.3	जाति के आधार पर विद्यार्थियों का विश्लेषण	**53**
3.4	धर्म के आधार पर विद्यार्थियों का विश्लेषण	**54**
3.5	पिता की शिक्षा के आधार पर विद्यार्थियों का विश्लेषण	**54**
3.6	माता की शिक्षा के आधार पर प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों का विश्लेषण	**55**
3.7	पिता के व्यवसाय के आधार पर प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों का विश्लेषण	**56**
3.8	माता के व्यवसाय के आधार पर प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों का विश्लेषण	**57**
3.9	घर के प्रकार के आधार पर प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों का विश्लेषण	**58**
3.10	पाठ्यक्रम के आधार पर प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों का विश्लेषण	**59**
3.11	निवास स्थान के आधार पर प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों का विवरण	**59**
3.12	प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों के परिवार की मासिक आय (रूपयों में) के आधार पर विश्लेषण	**61**
3.13	पारिवारिक आय और जाति समूह के अनुसार प्रथम पीढ़ी के युवाओं का प्रतिशत पारिवारिक आय	**62**
3.14	पारिवारिक आय और लिंग समूह के अनुसार प्रथम पीढ़ी के युवाओं का प्रतिशत विश्लेषण	**64**
3.15	पारिवारिक आय और धार्मिक समूह के अनुसार प्रथम पीढ़ी के युवाओं का प्रतिशत विश्लेषण	**65**

3.16	पाठ्यक्रम और लिंग के आधार पर प्रथम पीढ़ी के युवाओं का प्रतिशत विश्लेषण	**66**
3.17	पाठ्यक्रम और जाति के आधार पर प्रथम पीढ़ी के युवाओं का प्रतिशत विश्लेषण	**67**
3.18	पाठ्यक्रम और धार्मिक समूह के आधार पर प्रथम पीढ़ी के युवाओं का प्रतिशत विश्लेषण विश्लेषण	**68**
4.1	प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों के द्वारा वर्तमान समय में नौकरी पाने के लिए उच्च शिक्षा महत्वपूर्ण है इससे सहमत होने के आधार पर विश्लेषण	**75**
4.2	प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों के द्वारा वर्तमान समय में नौकरी पाने के लिए उचित कोर्स का चुनाव आवश्यक है इससे सहमत होने के आधार पर विश्लेषण	**77**
4.3	प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों के द्वारा दूसरों से बातचीत करने में असहजता का अनुभव करने के आधार पर विश्लेषण	**84**
4.4	प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों के द्वारा शिक्षकों की भाषा को आसानी से समझने के आधार पर विश्लेषण	**87**
4.5	प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों द्वारा अध्ययन कक्ष में शिक्षकों से स्पष्टीकरण मांगने के आधार पर विश्लेषण	**88**
4.6	प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों के द्वारा अभिजात वर्ग के विद्यार्थियों से मित्रता करने की कोशिश के आधार पर विश्लेषण	**95**
4.7	प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों के द्वारा स्वयं को उच्च शिक्षा में अनुपयुक्त (मिसफिट) महसूस करने के आधार पर विश्लेषण	**98**
4.8	प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों के द्वारा उच्च शिक्षा में प्रवेश लेने के बाद अफसोस महसूस करने के आधार पर विश्लेषण	**100**
4.9	प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों के द्वारा स्वयं के बोलने और बातचीत करने के कौशल में सुधार करने के आधार पर विश्लेषण	**101**
4.10	प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों के द्वारा अपनी पढ़ाई में ध्यान केन्द्रित	**102**

	करने के आधार पर विश्लेषण	
6.1	प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों के द्वारा अपने पहनावे, बात करने के तरीके, खाने की आदतें अन्य विद्याार्थियों से भिन्न महसूस करने के आधार पर विश्लेषण	**139**
6.2	प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों के द्वारा अन्य विद्यार्थियों के समान अंग्रेजी फिल्मों, रेस्तरां, कंप्यूटरों, एवं खाद्य पदार्थों के विषय में जानकारी नही होने के आधार पर विश्लेषण	**141**
6.3	प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों के द्वारा विश्वविद्यालय जैसा परिवेश पहले कभी न देखने के अनुभव के आधार पर विश्लेषण	**142**

रेखाचित्र सूची

रेखाचित्र सं0	शीर्षक	पृष्ठ सं0
1.1	शिक्षा का महत्व	7
2.1	त्रिभुज डिजाइन	33
2.2	लखनऊ जिले का मानचित्र	36
4.1	प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों के अध्ययन कक्ष में होने वाली चर्चा में शामिल होने के आधार पर विश्लेषण	73
5.1	प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों के द्वारा अपने अभिभावकों से पाठ्यक्रम की चर्चा करने के आधार पर विश्लेषण	117
5.2	प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों के द्वारा अपने अभिभावकों से अंको और ग्रेड के बारे में चर्चा करने के आधार पर विश्लेषण	118
5.3	प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों के द्वारा अभिभावकों से नौकरी के बारे में चर्चा करने के आधार पर विश्लेषण	119
5.4	प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों के द्वारा अभिभावकों से परिसर में होने वाली समस्याओं के बारे में चर्चा करने के आधार पर विश्लेषण	120
5.5	लिंग के आधार पर प्रथम पीढ़ी के अभिभावकों की भागीदारी	121
5.6	जाति के आधार पर प्रथम पीढ़ी के अभिभावकों की भागीदारी	122
5.7	धर्म के आधार पर प्रथम पीढ़ी के अभिभावकों की भागीदारी	123
5.8	पारिवारिक आय के आधार पर प्रथम पीढ़ी के अभिभावकों की भागीदारी	124
6.1	प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों के द्वारा अपने सहपाठियों से सहायता मांगने के आधार पर विश्लेषण	138
6.2	प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों के द्वारा पार्क, कैंटीन आदि जैसे सामान्य स्थानों पर असहजता का अनुभव करने के आधार पर विश्लेषण	140
6.3	प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों की प्रतिक्रिया के प्रकार	166

संक्षिप्त शब्दावली

संक्षिप्त शब्द	विस्तारित शब्द
जी0ई0आर0	ग्रॉस इन्रोल्मेंट रेशियो
ए0आई0एस0एच0ई0	ऑल इंडिया सर्वे ऑफ हायर एजुकेशन
एस0सी0	शेडयूलड कास्ट
एस0टी0	शेडयूलड ट्राइब
ओ0बी0सी0	अदर बैकवर्ड क्लास
जी0पी0ए0	ग्रेड प्वांइट एवरेज
सी0टी0आई0	कम्यूनिकेशन थ्योरी ऑफ आइडेन्टिटी
एस0पी0एस0एस0	स्टैटिकल पैकेज फॉर द सोशल साइंसेस

अध्याय 1

प्रस्तावना

अध्याय 1

प्रस्तावना

प्रस्तावना

पिछले ढाई दशकों में भारत में उच्च शिक्षा का अभूतपूर्व विस्तार हुआ है। युवाओं की मांग, माता–पिता की अपने बच्चों को शिक्षित करने की प्रेरणा और सरकार की नीतियों के कारण भारत में उच्च शिक्षा का विकास हुआ है। ऐसे में, भारत से वैश्विक अर्थव्यवस्था में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाने की उम्मीद है। किन्तु, जहाँ तक आय और रोजगार की बात है, इस ओर भारत संतोषजनक प्रदर्शन करने में विफल रहा है। इसका महत्वपूर्ण कारण यह है कि उच्च शिक्षा का विस्तार मात्रात्मक रहा है न कि गुणात्मक। इस सन्दर्भ में अग्रवाल (2017) ने भी कहा है कि भारत की जनसंख्या रोजगार और आय के सृजन में महत्वपूर्ण रूप से बाधक है। भारत में उच्च शिक्षा में नामांकन तेजी से बढ़ रहे हैं, जबकि देश की उच्च शिक्षा बदलते समाज और अर्थव्यवस्था की जरूरतों के लिए तैयार नहीं है। भारत के जनसंख्या की विषमता और इस तथ्य को पहचानने में सरकारी विफलता भारत की उच्च शिक्षा में गुणात्मक सुधार करने में बाधक है।

यदि हमें उच्च शिक्षा में भागीदारी को देखना है तो हमें सकल नामांकन अनुपात (जी0ई0आर0) के आकड़ों को समझना होगा। अधिक सकल नामांकन अनुपात अधिक भागीदारी दर्शता है। सकल नामांकन अनुपात के आधार पर ट्रो (2000) का तर्क है कि किसी भी समाज में उच्च शिक्षा तीन चरणों में विकसित होती है। पहले चरण में सकल नामांकन अनुपात 15 प्रतिशत से नीचे होती है और यह कुलीन या अभिजात चरण कहलाता है। दूसरे चरण में सकल नामांकन अनुपात 15 प्रतिशत से 50 प्रतिशत तक होती है और यह चरण मासिफिकेशन चरण कहलाता है। तीसरे और अंतिम चरण में 50 प्रतिशत से ऊपर सकल नामांकन अनुपात होता है और यह सार्वभौमिक चरण होता है।

अखिल भारतीय उच्च शिक्षा सर्वेक्षण (एआईएसएचई) 2010–11 के अनुसार, भारत में उच्च शिक्षा में सकल नामांकन अनुपात 19.4 प्रतिशत था। पुरूषों के लिए सकल नामांकन अनुपात 20.8 प्रतिशत और महिलाओं के लिए 17.9 प्रतिशत था। अनुसूचित जाति (SC) और अनुसूचित जनजाति (ST) के लिए यह क्रमशः 13.5 प्रतिशत और 11.2 प्रतिशत था। हलांकि, एआईएसएचई 2018–19 के अनुसार, भारत में उच्च शिक्षा में सकल नामांकन अनुपात बढ़कर 26.3 प्रतिशत हो गया। पुरूषों और महिलाओं के लिए सकल नामांकन अनुपात क्रमशः 26.3 प्रतिशत और 26.4 हो गया। अनुसूचित जाति (SC) और अनुसूचित जनजाति (ST) के लिए यह क्रमशः 23 प्रतिशत और 17.2 प्रतिशत हो गया। इन तथ्यों के आधार पर यह कहा जा सकता है कि भारत में SC और ST की आबादी का भी उच्च शिक्षा के मासिफिकेशन प्रक्रिया में महत्वपूर्ण योगदान रहा है। और यह उत्तर प्रदेश के लिए भी लागू होता है। एआईएसएचई 2018–19 के अनुसार, उत्तर प्रदेश में सकल नामांकन अनुपात 25.8 प्रतिशत था।

यदि हम उच्च शिक्षा में नामांकन के प्रतिशत के आधार पर एआईएसएचई 2010–11 और एआईएसएचई 2018–19 के आँकड़ों की तुलना करें, तो यह पता चलता है कि उच्च शिक्षा में कुल नामांकन 2010 में 27.7 मिलियन से बढ़कर 2018 में 37.4 मिलियन हो गया। महिला नामांकन इस दौरान कुल नामांकन का 44 प्रतिशत से बढ़कर 48.6 हो गया। अन्य पिछड़ा वर्ग (OBC) का नामांकन 27.6 से बढ़कर 36.34 हो गया।

इन आँकडों के आधार पर इसमें कोई संदेह नहीं है कि पिछले ढाई दशकों में युवाओं की उच्च शिक्षा तक पहुँच में जबरदस्त वृद्धि हुई है। लेकिन उच्च शिक्षा तक पहुँच का मतलब उच्च शिक्षा में समानता नहीं है और न ही उच्च शिक्षा का समावेशीय विकास हुआ है। निम्न जाति से आने वाले प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों को अभी भी उच्च शिक्षा में अधिक समस्याओं का सामना करना पड़ता है। प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों की आकांक्षाएँ बिखर जाती हैं जब वे वास्तव में उच्च शिक्षा में प्रवेश करते हैं। उच्च शिक्षा में प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों पर अब तक भारत में कोई ठोस

काम नहीं हुआ है। यह अध्ययन उच्च शिक्षा में प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों की चुनौतियों और प्रतिक्रिया को समझने का प्रयास है।

प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों को सामाजिक–आर्थिक एवं शैक्षिक स्तर पर अनेक प्रकार की चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। तथा उच्च शिक्षा के क्षेत्र में प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों के अनुभव गैर–प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों के अनुभवों से भिन्न होते है। भारतीय दृष्टिकोण से इस विषय पर शोध–अध्ययन की अत्यन्त कमी है।

प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थी का अर्थ

प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों को समझने के लिए यह समझना महत्वपूर्ण है कि प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों की सार्वभौमिक रूप से कोई स्वीकृत परिभाषा नहीं है। एक परिभाषा में कहा गया है कि प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थी ऐसे विद्यार्थी हैं जिनके माता–पिता ने उच्च शिक्षा में कभी दाखिला नहीं लिया (नूनैज एण्ड कोकारो–अलमिन, 1998)। वैकल्पिक रूप से, चॉय (2001) प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों को परिभाषित करता है जिनके परिवार में किसी ने कॉलेज या विश्वविद्यालय का अनुभव नहीं किया।

प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों को ऐसे विद्यार्थी के रूप में वर्णित किया जा सकता है, जिनके माता–पिता के पास न तो स्नातक की डिग्री होती है और न ही कॉलेज का अनुभव (डार्लिंग और स्मिथ 2007)। अध्ययन के उद्देश्य के लिए शोधार्थी ने प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों को इस प्रकार से परिभाषित किया है जो कि परिवार का पहला विद्यार्थी है और उच्च शिक्षा प्राप्त कर रहा है। इसका मतलब है कि प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थी के अभिभावकों में से किसी ने भी उच्च शिक्षा प्राप्त नहीं की है।

प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों को आमतौर पर ऐसे विद्यार्थियों के रूप में परिभाषित किया जाता है जिनके माता–पिता के पास हाई स्कूल या डिप्लोमा से अधिक डिग्री नहीं होती है। यह प्रदर्शित करता है कि प्रथम पीढी के विद्यार्थी प्रशासक (Administrators) की उम्मीद से उच्चतर दरों में विश्वविद्यालय में प्रवेश

लेते हैं और विश्वविद्यालय के विषय में पर्याप्त ज्ञान न होने के कारण प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों को सफलता प्राप्त करने में कई बाधाओं का सामना करना पड़ता है।

प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों के अभिभावकों को उच्च शिक्षा का ज्ञान न होने के कारण इन विद्यार्थियों को अपने अभिभावकों से उचित मार्गदर्शन एवं सहयोग नहीं मिल पाता, जितना कि गैर प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों को मिलता है। उच्च शिक्षा के क्षेत्र में हो रहे परिवर्तनों को देखते हुए प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों में उच्च शिक्षा प्राप्त करने की प्रवृति का विकास हो रहा है किन्तु प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थी होने के कारण और अभिभावकों से उचित मार्गदर्शन एवं सहयोग न मिल पाने के कारण उन्हें अनेक चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। उच्च शिक्षा उनके लिए चुनौतीपूर्ण है क्योंकि अधिकतर प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थी निम्न सामाजिक–आर्थिक स्तर एवं निम्न जाति से आते हैं जिनमें से कुछ संख्या महिलाओं की भी होती है। उनके माता–पिता उन्हें सही कॉलेज एवं विश्वविद्यालय का चुनाव करने में अपनी राय देने में स्वयं को असमर्थ महसूस करते हैं।

प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों का विश्वविद्यालय जाने का अनुभव उन विद्यार्थियों से अलग होता है जिनके माता–पिता कम से कम ग्रेजुएट होते है। प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थी, जिनमें से अधिकांश निम्न आय और अल्पसंख्यक पृष्ठभूमि से आते है, उन्हें अनेक प्रकार की चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। खराब शैक्षणिक तैयारी से लेकर साथियों या परिवार के सदस्यों के समर्थन की कमी, अपर्याप्त वित्तीय सहायता उनके लिए और अधिक कठिनाईयाँ उत्पन्न कर देता है। इससे भिन्न कई चुनौतियों का सामना प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों को करना पड़ता है।

शिक्षा का अर्थ

प्राचीन समय में शिक्षा का अर्थ मात्र सीखने से लिया जाता था परंतु अब ज्ञान के अर्जन एवं क्षमताओं के विकास दोनों के लिए इस शब्द का प्रयोग किया जाता है। कई विद्वानों ने शिक्षा के अलग–अलग अर्थ बताएं हैं जैसे–शिष्यते यथा–सा शिक्षा अर्थात् जिसके द्वारा अनुशासन किया जाए, अर्थात् अनुशासन का साधन शिक्षा है। विद्या शब्द को शिक्षा का पर्याय माना जाता है। विद्या शब्द संस्कृत

की विद्ज्ञाने धातु से बना है। आंग्ल भाषा में शिक्षा के लिए एजुकेशन (Education) शब्द का अधिकतर प्रयोग होता है। लैटिन भाषा की (Educare) धातु से अर्थ है पालन–पोषण करना। लैटिन भाषा में इसी का अर्थ मार्ग–दर्शन करना या बाहर निकलना होता है। इस प्रकार शिक्षा के अनेक प्रकार के अर्थ हैं तथा इसे किसी एक शब्द या भाषा में व्यक्त नहीं किया जा सकता है।

वस्तुतः 'एजुकेशन' शब्द लैटिन भाषा के शब्द 'एजुकेचर' से व्युत्पन्न है जिसका अर्थ है पालन–पोषण करना, मार्ग दिखाना अर्थात् व्यक्ति के अन्दर जो गुण छिपे हुये हैं या अन्तर्निहित रूप में हैं उन्हें स्पष्ट करना। यह एक जीवन पर्यन्त प्रक्रिया है जो चरित्र और अन्तर्जात क्षमताओं का विकास करके व्यक्ति की प्रकृति को पूर्णता की ओर ले जाती है। शिक्षा से व्यक्ति के चरित्र और व्यक्ति का विकास होता है तो उससे भौतिक कल्याण की आशा भी की जाती है (कुमार 2010)।

लोगों की ऐसी धारणा है कि लैटिन भाषा के दो शब्द Educatum और Educare से शिक्षा शब्द की उत्पत्ति हुई है। Educatum का अर्थ है 'Act of teaching of training.' और Educare का अर्थ 'To educate, 'To bring up' or 'To raise'. इस प्रकार अंग्रेजी शब्द Education का शाब्दिक अर्थ है–प्रशिक्षण, सवर्धन एवं पथ प्रदर्शन करने वाली प्रक्रिया। दूसरी तरह से एजूकेटम में दो शब्द हैं 'ए' और 'डूको'। 'ए' का अर्थ है 'अन्दर से' और 'डूको' का अर्थ है 'बाहर लाना' इस प्रकार इसका अर्थ हुआ अन्दर से बाहर लाना। इस प्रकार शिक्षा व्यक्तियों के अन्दर की प्रतिभा को उभारता है एवं उसका विकास करता है।

भारतीय विद्वानों का मानना है कि शिक्षा शब्द की उत्पत्ति संस्कृत के 'शिक्ष्' धातु से हुई है। जिसका अर्थ होता है सीखना और सिखाना। शिक्षा शब्द में भी सीखना और सिखाने दोनों का भाव सम्मलित है। निष्कर्ष के रूप में यह कहा जा सकता है कि 'शिक्षा एक ऐसी प्रक्रिया है जिसके द्वारा बालकों की जन्मजात शैलियों का विकास किया जाता ळें

समाज में शिक्षा का महत्व

शिक्षा का मानव जीवन में महत्व होने के साथ ही सामाजिक दृष्टि से भी शिक्षा महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। शिक्षा प्रत्येक व्यक्ति को शिक्षित करती है तथा व्यक्ति के बौद्धिक विकास में भी योगदान देती है। शिक्षा समाज में व्याप्त अज्ञानता रूपी अन्धकार को दूर करती है। शिक्षा के माध्यम से व्यक्ति में तर्क–वितर्क करने की शक्ति उत्पन्न होती है तथा अपने और समाज के प्रति उचित–अनुचित का अनुमान लगाने की शक्ति का भी विकास होता है।

शिक्षा ज्ञान को विस्तृत रूप प्रदान करती है। समाज में फैले हुए पाखंड, बुराईयाँ, कुरीतियाँ एवं रूढ़ियों से छुटकारा दिलाती है और उसके स्थान पर वैज्ञानिक विचारधारा के साथ तर्क–वितर्क करने की क्षमता में वृद्धि करती है। जिसके परिणामस्वरूप समाज में सकारात्मक परिवर्तन आता है तथा स्वस्थ्य, संतुलित और संगठित समाज की स्थापना होती है।

कार्ल मार्क्स का विश्वास था कि शिक्षा श्रमविभाजन के अमानवीय प्रतिफल में संतुलन बनाने का कार्य करता है। कार्ल मार्क्स का मानना था कि समाजवादी समाज में शिक्षा श्रमिकों की तकनीकी दक्षता को बढ़ाकर उन्हें मात्र उत्पादन के एक साधन के रूप में न छोड़कर एक मनुष्य और निर्माता का स्वरूप प्रदान करता है। शिक्षा विभिन्न ढंगों से समाज को प्रभावित करती है। समाज के प्रति शिक्षा का अमूल्य योगदान यह है कि सामाजिक परिवर्तन के लिए व्यक्ति को तैयार करना। शिक्षा का प्रमुख उदेद्श्य व्यक्ति को आध्यात्मिकता के लिए शिक्षा प्रदान करना है। शिक्षा को हमारे जीवन के सामाजिक एवं आध्यात्मिक दोनों पक्षों के लिए गत्यात्मक शक्ति बनना चाहिए। शिक्षा एक ओर समाज की आवश्यकताओं को पूरा करने में सहायक होती हैं तो दूसरी ओर यह ऐसे विचारों की उत्पत्ति भी करती है जो समाज को परिवर्तित करने में सहायक होते हैं।

रेखाचित्रः1.1 शिक्षा का महत्व

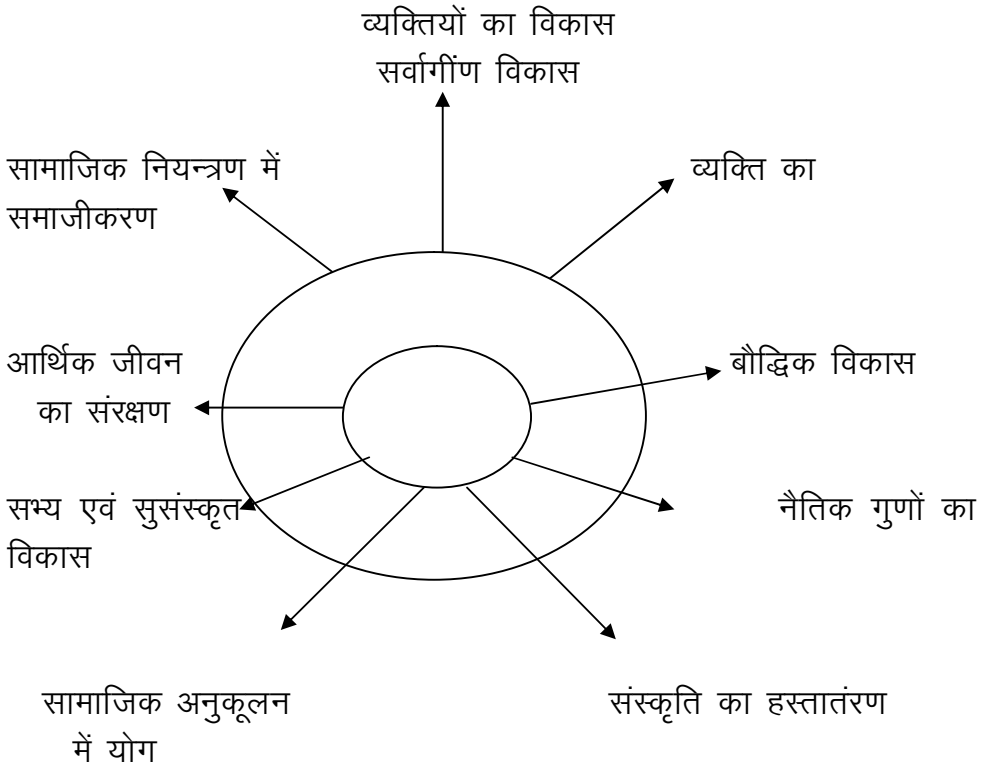

स्त्रोतः (यादव नीतू, 2014)।

भारत में उच्च शिक्षा का विकास

उच्च शिक्षा किसी भी देश की समृद्धि तथा सम्पन्नता की द्योतक है। यह राष्ट्र के विकास का महत्वपूर्ण घटक है। यह ऐसे मानव विकास को प्रोत्साहन देती है जो आर्थिक, सामाजिक, नैतिक, आध्यात्मिक व बौद्धिक सभी क्षेत्रों में प्रगति करता हुआ एक विकसित एवं क्रियाशील समाज का निर्माण कर सके। उच्च शिक्षा ज्ञान प्राप्ति, नवीन ज्ञान की खोज, राष्ट्र के लिए विशेषज्ञों की तैयारी, युवकों में विस्तृत दृष्टिकोण के विकास और राष्ट्र के बहुमुखि विकास का साधन है (अग्रवाल 2006)। उच्च शिक्षा प्रायः इण्टरमीडिएट के पश्चात् विश्वविद्यालयों, महाविद्यालयों, विशिष्ट शैक्षिक संस्थाओं, मुक्त विश्वविद्यालयों तथा पत्राचार शिक्षण संस्थाओं द्वारा प्रदान की जाने वाली शिक्षा है। प्राचीन काल में नालन्दा, तक्षशिला, ओदन्तपुरी, वल्लभी,

विक्रमशिला आदि उच्च शिक्षा के प्रमुख केन्द्र थे। मुगल कालीन समय में उच्च शिक्षा विद्यार्थियों को मदरसो में प्रदान की जाती थी। जिसमें से दिल्ली, आगरा, इलाहाबाद, अम्बाला आदि स्थानों के मदरसे उच्च शिक्षा हेतु विख्यात थे। 1600 ई0 में ईस्ट इण्डिया कम्पनी जब भारत में स्थापित हुई, तो कम्पनी के संचालकों ने भारत में उच्च शिक्षा हेतु विशेष योगदान दिया। इसी श्रृंखला में 1780 ई0 को वारेन हेस्टिंग्स ने कलकत्ता मदरसा, 1791 ई0 में जोनाथन डंकन ने बनारस संस्कृत कॉलेज तथा 1800 ई0 में लार्ड वेलेजली ने फोर्ट विलियम कॉलेज की स्थापना करायी थी।

उच्च शिक्षा का विकास भारतवर्ष में सर्वप्रथम वैदिककालीन शिक्षा प्रणाली से शुरू हुया था। इस समय उच्च शिक्षा विद्यार्थियों को गुरूकुलों तथा ऋषियों के आश्रमों में दी जाती थी। वैदिक शिक्षा के बाद बौद्ध शिक्षा का विकास हुआ। बौद्धकालीन शिक्षा ने विश्वविद्यालयी शिक्षा की शुरूआत की। इस समय में विश्वविद्यालय विश्वविख्यात हुआ करते थे। इन विश्वविद्यालयों का पाठ्यक्रम वैदिक कालीन उच्च शिक्षा के पाठ्यक्रम से अधिक विस्तृत एवं व्यापक था। कलकत्ता मदरसा के निर्माण के उपरान्त वर्ष 1857 तक उच्च शिक्षा के अनेक कॉलेजों की स्थापना की गई, जिनमें उल्लेखनीय हैं–बनारस संस्कृत कॉलेज (बनारस), हिन्दू कॉलेज (कलकत्ता), क्रिश्चियन कॉलेज (मद्रास), पचयप्पा कॉलेज (मद्रास), और आगरा कॉलेज (आगरा)। इस समय में व्यावसायिक कॉलेजों की भी स्थापना की जा चुकी थी। जिनमें से अधिक महत्वपूर्ण थे–कलकत्ता मेडिकल कॉलेज, बम्बई मेडिकल कॉलेज तथा रूड़की इंजीनियरिंग कॉलेज। ब्रिटिश काल में वर्ष 1857 में सम्पूर्ण भारत में 27 कॉलेज हुआ करते थे, जिनमें से 23 सामान्य शिक्षा, 3 चिकित्सा–शास्त्र तथा 1 इंजीनियरिंग का कॉलेज था। विश्वविद्यालयीय शिक्षा के विकास को तीन युगों में विभाजित कर सकते हैं।

1. विश्वविद्यालय शिक्षा का आरम्भिक युग (1857–1966),
2. नवीन विश्वविद्यालयी शिक्षा का युग (1917–1947), तथा
3. आधुनिक विश्वविद्यालयी शिक्षा का युग (1947 के बाद का)

भूतपूर्व प्रधानमंत्री पण्डित जवाहरलाल नेहरू ने वर्ष 1947 में इलाहाबाद विश्वविद्यालय के दीक्षान्त समारोह पर विश्वविद्यालय के उद्देश्यों तथा उसके राष्ट्रीय जीवन के महत्व पर प्रकाश डालते हुए कहा था कि **"विश्वविद्यालय का उद्देश्य मानवता, सहनशीलता, तर्क, विचारों का विकास तथा सत्य की खोज करना है। यह मानव जाति की उन्नति के लिए आवश्यक है।"**

स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद उच्च शिक्षा पर नियुक्त राधाकृष्णन आयोग 1948 ने विश्वविद्यालय शिक्षा के निम्नलिखित उद्देश्यों का निर्धारण किया है–

1. विश्वविद्यालय का उद्देश्य जीवन की नई मान्यताओं को जन्म देना है।
2. विद्यार्थियों का आध्यात्मिक विकास करना इसके द्वारा सम्भव हो।
3. उच्च शिक्षा का उद्देश्य प्रजातांत्रिक ढंग से जीवन व्यतीत करने का ज्ञान देना है।
4. इसका उद्देश्य समाज तथा मनुष्य का एकीकरण करना है।
5. यह विद्यार्थियों को नैतिकता, सद्व्यवहार तथा आदर्श नागरिकता का पाठ पढ़ाता है।
6. विश्वविद्यालय का उद्देश्य विद्यार्थियों में उन विचारों को जन्म देना है जिससे वे वसुधैव कुटुम्बकम् के सिद्धान्त का अपने जीवन में उपयोग कर सकें।

स्वतन्त्रता से पूर्व भारत में मात्र 20 विश्वविद्यालय और 500 कॉलेज थे, तब पाकिस्तान और बांग्लादेश भी इस देश का हिस्सा थे। स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात् भारतीय विश्वविद्यालय और सम्बद्ध महाविद्यालयों में अध्ययन करने वाले छात्रों की संख्या में आशातीत वृद्धि हुई, किन्तु उच्च शिक्षा के स्तर में भी गिरावट आ रही

थी। इससे भारतीय जनता असन्तुष्ट थी क्योंकि यह शिक्षा देश की तत्कालीन आवश्यकताओं की पूर्ति करने में असफल थी। इस समस्या के समाधान के लिए स्वतंत्र भारत की आवश्यकताओं के अनुरूप उच्च शिक्षा का पुनर्गठन करने के लिए अन्तर्विश्वविद्यालय परिषद् और केन्द्रीय शिक्षा सलाहकार परिषद् ने एक भारतीय विश्वविद्यालय शिक्षा आयोग नियुक्त करने का प्रस्ताव भारत सरकार के समक्ष रखा, जिसे भारत सरकार द्वारा स्वीकार कर लिया गया। सन् 1960–61 तक भारत में 45 विश्वविद्यालय और 1122 महाविद्यालय स्थापित हो चुके थे। इसके अतिरिक्त 23 शिक्षक–प्रशिक्षण केन्द्र और 51 तकनीकी शिक्षा के कॉलेज खोले गए। सन् 1953 में भारत सरकार ने विश्वविद्यालय अनुदान आयोग की स्थापना की जिसे कालान्तर में 1956 ई0 में स्वायत्तशासी संस्था बना दिया गया।

वुड की शिक्षा नीति

19 जुलाई, 1854 को वुड घोषणा पत्र **बोर्ड ऑफ कन्ट्रोल के प्रधान चार्ल्स वुड** द्वारा जारी किया गया था। इस घोषणा पत्र में भारतीय शिक्षा पर एक व्यापक योजना प्रस्तुत की गई थी, जिसे वुड का डिस्पैच कहा गया। 100 अनुच्छेदों वाले इस प्रस्ताव में शिक्षा के उद्देश्य, माध्यम, सुधारों आदि पर विचार किया गया था। इस घोषणा पत्र को भारतीय शिक्षा का **मैग्ना कार्टा** भी कहा जाता है। प्रस्ताव में पाश्चात्य शिक्षा के प्रसार को सरकार ने अपना उद्देश्य बनाया। उच्च शिक्षा को अंग्रेजी भाषा के माध्यम से दिये जाने पर बल दिया गया, परन्तु साथ ही देशी भाषा के विकास को भी महत्व दिया गया। ग्राम स्तर पर देशी भाषा के माध्यम से अध्ययन के लिए प्राथमिक पाठशालायें स्थापित हुईं और इनके साथ ही हाईस्कूल स्तर के एंग्लो–वर्नाक्यूलर कॉलेज खोले गये। घोषणा–पत्र में सहायता अनुदान दिये जाने पर भी बल दिया गया था (यादव नीतू, 2014)।

प्रस्ताव के अनुसार लन्दन विश्वविद्यालय के आदेश पर कलकत्ता, बम्बई एवं मद्रास में एक–एक विश्वविद्यालय की स्थापना की व्यवस्था की गई, जिसमें एक कुलपति, उप–कुलपति, सीनेट एवं विधि सदस्यों की व्यवस्था की गई। इन विश्वविद्यालयों को

परीक्षा लेने एवं उपाधियाँ प्रदान करने का अधिकार होता था। तकनीकि एवं व्यावसायिक विद्यालयों की स्थापना के क्षेत्र में भी इस घोषणा पत्र में प्रयास किया गया।

विश्वविद्यालय शिक्षा आयोग 1948

स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद शिक्षा के क्षेत्र में भारत सरकार ने पहला सबसे महत्वपूर्ण कदम उठाया वह था डॉक्टर सर्वपल्ली राधाकृष्णन (एक प्रतिष्ठित दार्शनिक शिक्षाविद् एवं बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति) की अध्यक्षता में विश्वविद्यालय आयोग का गठन 1948 ई0 में किया गया। यह स्वतन्त्र भारत का पहला शिक्षा आयोग था। स्वतन्त्रता के पश्चात् विश्वविद्यालयों और उससे सम्बन्धित महाविद्यालयों में अध्ययन करने वाले छात्रों की संख्या में तो वृद्धि हुई किन्तु उच्च शिक्षा के स्तर में गिरावट आ गई थी, क्योंकि यह शिक्षा देश की तत्कालीन आवश्यकताओं की पूर्ति करने में असफल थी। इन खामियों को दूर करने हेतु तथा स्वतन्त्र भारत की आवश्कताओं के अनुरूप उच्च शिक्षा का पुनर्गठन करने के लिए अन्तर्विश्वविद्यालय परिषद् ने एक भारतीय विश्वविद्यालय शिक्षा आयोग नियुक्त करने का प्रस्ताव भारत सरकार के समक्ष रखा था। भारत सरकार ने इस प्रस्ताव को स्वीकार कर 4 नवम्बर, 1984 को विश्वविद्यालय शिक्षा आयोग की नियुक्ति कर दी। इस आयोग को **डॉ0 राधाकृष्णन आयोग** भी कहा जाता है। **आयोग की नियुक्ति का प्रमुख उद्देश्य भारतीय विश्वविद्यालय शिक्षा पर रिर्पोट करना और उन सुधारों और विस्तारों के विषय में सुझाव देना जो कि देश की वर्तमान और भावी आवश्कताओं के लिए उपयुक्त हों (यादव नीतू, 2014)।**

इस आयोग में कुल दस सदस्य थे जिनके नाम क्रम अधोलिखित हैं–

1. डॉ0 सर्वपल्ली राधाकृष्णन–अध्यक्ष
2. डॉ0 सर जेम्स एफ0 डफ0 (डरहम विश्वविद्यालय के उपकुलपति)
3. डॉ0 जॉन जे टिगर्ट (अमेरिका के भूतपूर्व शिक्षा कमिशन)
4. डॉ0 आर्थर ई मौर्गन (अमेरिका)
5. डॉ0 ए0 लक्ष्मणस्वामी मुदालियर (मद्रास विश्वविद्यालय के उपकुलपति)

6. डॉ0 जाकिर हुसैन (जामिया–मिलिया इस्लामिया, दिल्ली के प्रिसिंपल)
7. डॉ0 मेघनाद साह
8. डॉ0 कर्मनारायण बहल
9. डॉ0 ताराचन्द
10. डॉ0 एन0 के0 सिद्धान्त–आयोग के सचिव

आयोग की रिपोर्ट 25 अगस्त, 1949 को भारत सरकार के सामने प्रस्तुत कर दी गई। आयोग की रिपोर्ट को दो भागों में विभाजित किया गया था। रिपोर्ट के प्रथम भाग में 757 पृष्ठ एवं 18 अध्याय हैं। दूसरे भाग में आँकड़ें एवं प्रश्नोत्तरी आदि हैं जिनके आधार पर आयोग ने अपनी रिपोर्ट प्रस्तुत की है। रिपोर्ट में उच्च शिक्षा के सभी पक्षों पर प्रकाश डाला गया है (यादव नीतू, 2014)।

विश्वविद्यालय शिक्षा आयोग के उद्देश्य–

1. जनतन्त्र को सफल बनाने वाले नागरिकों का निर्माण करना,
2. विद्यार्थियों का सर्वांगीण विकास करना,
3. राष्ट्रीय अनुशासन, अन्तर्राष्ट्रीय अवबोध, आध्यात्मिक विकास, न्याय, स्वतंत्रता, समानता और भ्रातृत्व की भावना का निर्माण करना,
4. ऐसे नेताओं का निर्माण करना जो दूरदर्शी एवं साहसी हों,
5. ऐसे युवकों का निर्माण करना जो राजनैतिक, प्रशासकीय एवं व्यावसायिक क्षेत्र में नेतृत्व ग्रहण कर सकें,
6. विश्वविद्यालय के छात्रों में विविध प्रकार के ज्ञान का समन्वय करना तथा उसकी उपलब्धि के अवसर तथा साधन देकर ज्ञान के साथ–साथ आत्मिक विकास के अवसर देना,
7. नवयुवकों में देश की संस्कृति एवं सभ्यता का संचार करना,
8. छात्रों के न केवल मानसिक विकास वरन् शारीरिक विकास की ओर भी ध्यान देना,
9. भारत में ऐसी विभूतियों को तैयार करना जो राजनीति, प्रशासन, व्यवसाय, उद्योग एवं वाणिज्य आदि क्षेत्रों में स्वस्थ्य प्रतिनिधित्व कर सकें,

10. विश्वविद्यालयों के नवयुवकों में नैतिकता तथा सद्व्यवहार के आदर्शों की स्थापना करना तथा चरित्र, व्यक्तित्व एवं अनुशासन आदि गुणों का विकास करना था।

1947 ई0 में इलाहाबाद विश्वविद्यालय के दीक्षान्त समारोह के अवसर पर तत्कालीन **प्रधानमंत्री पं0 जवाहर लाल नेहरू** ने कहा था "विश्वविद्यालय का दायित्व मानवता, सहनशीलता, तर्क, विचारों का विकास एवं सत्य की खोज करना है।" **एच0 हेदरिगटन** ने अपनी पुस्तक **द सोशल फंक्शन ऑफ यूनिवर्सिटी** में विश्वविद्यालय का कार्य ज्ञान के उस व्यापक स्वरूप का अन्वेषण करना बताया है जो मानव संस्कृति के विभिन्न क्षेत्रों के विकास एवं उन्नति में सहायक हो सके।

इस प्रकार स्पष्ट है कि विश्वविद्यालय का उद्देश्य छात्रों को केवल पुस्तकीय ज्ञान देना ही नहीं वरन् यहाँ के छात्रों को निरन्तर चिन्तन, मनन एवं अन्वेषण की एक सर्वथा नवीन दृष्टि को भी विकसित करना है, जो उस व्यक्ति का सर्वांगीण विकास तो करे साथ ही साथ समाज और राष्ट्र की अवश्यकताओं की पूर्ति में भी सहायक हो तथा नवयुवकों में ऐसी चेतना का विकास करे जो उन्हें समस्त मानवीय गुणों से परिपूर्ण वास्तविक मानव बना सके। यदि विश्वविद्यालय अपने कर्त्तव्यों का समुचित रूप से पालन करे तो राष्ट्र एवं जनता का कल्याण हो सकता है परन्तु वर्तमान में विश्वविद्यालयों का उद्देश्य महज पुस्तकीय ज्ञान होकर रह गया है। आज का छात्र महज डिग्री धारण करने के उद्देश्य से स्नातक कक्षाओं में प्रवेश लेता है न कि ज्ञान एवं व्यक्तित्व के विकास के लिए।

इस प्रकार हम कह सकते हैं कि स्वतंत्रता के पश्चात् भारत में उच्च शिक्षा के क्षेत्र में परिमाणात्मक रूप से तीव्र वृद्धि हुयी है लेकिन गुणात्मक रूप से नही।

कोठारी आयोग

14 जुलाई 1964 ई0 में डॉ0 दौलत सिंह कोठारी की अध्यक्षता में कोठारी आयोग की स्थापना की गयी। इस आयोग ने उच्च शिक्षा के साथ–साथ प्राथमिक तथा माध्यमिक शिक्षा के विषय में अपने सुझाव दिए। 1968 ई0 में प्रथम शिक्षा की

सिफारिशों के उपरान्त एवं अनेक शैक्षिक समस्याओं तथा चुनौतियों के कारण 1986 ई0 में अति महत्वपूर्ण शिक्षा नीति बनी जिसके अन्तर्गत शिक्षा की राष्ट्रीय प्रणाली की स्थापना की गयी। इसके अन्तर्गत उच्च शिक्षण संस्थाओं की सुविधाओं के विस्तार एवं सुदृढ़ीकरण पर बल दिया गया। इसी नीति के अन्तर्गत स्वायत्त महाविद्यालयों की संख्या बढ़ाने, राष्ट्रीय स्तर पर 10+2+3 प्रणाली लागू करने, विश्वविद्यालयों में अनुसंधान कार्य को बढ़ावा देने तथा इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय को अधिक स्वायत्ता प्रदान की गयी, जिसकी स्थापना 1985 ई0 में दूरस्थ प्रणाली द्वारा उच्च शिक्षा का प्रबंध करने के उद्देश्य से की गयी थी।

डॉ0 डी0 एस0 कोठारी (सिंह 2008) ने अपनी रिपोर्ट में कहा है कि "शिक्षा की मुख्य भूमिका सामाजिक व राष्ट्रीय एकता की प्राप्ति में है। भारतीय समाज सोपानबद्ध है, इसलिए इसमें एक स्तरीय गतिशीलता की कमी है। विभिन्न वर्गों में सामाजिक दूरी काफी लंबी है। ये दूरियाँ अमीर एवं गरीब के बीच, शिक्षित एवं अशिक्षित के बीच है तथा इन दूरियों की और लंबी होने की प्रवृत्ति भी है।"

उच्च शिक्षा का वास्तविक अर्थ है– उच्च प्रतिभा के व्यक्तियों की उच्च शिक्षा, एक ऐसी शिक्षा है जिसके द्वारा समाज अथवा राष्ट्र के विभिन्न क्षेत्रों के लिए विशेषज्ञ तैयार किये जाते हैं। उच्च शिक्षा द्वारा युवकों को अपनी रूचि, रूझान, योग्यता और क्षमता के अनुसार किसी कार्य को कुशलतापूर्वक करने योग्य बनाया जाता है। उच्च शिक्षा व्यक्ति में विस्तृत दृष्टिकोण का विकास करती है। कोठारी आयोग ने उच्च शिक्षा के निम्नलिखित उदेद्श्य बताये हैं (बाजपेयी एवं सारस्वत 2004)–

1. सत्य के परिपेक्ष्य में नवीन ज्ञान की खोज करना पुराने ज्ञान और पुराने विश्वासों की नई आवश्यकताओं और खोजों के प्रकार में व्याख्या करना।
2. जीवन के सभी क्षेत्रों में सही नेतृत्व प्रदान करना।

3. कृषि–कला, चिकित्सा, विज्ञान शिल्प तथा अन्य व्यवसायों में प्रशिक्षित व्यक्ति समाज को देना, जिनमें सामाजिक दायित्व की भावना हो।
4. समानता और सामाजिक न्याय को प्रोत्साहित करना।
5. अध्यापकों और विद्यार्थियों में अच्छे जीवन के लिए आवश्यक अभिवृत्तियों और मूल्यों का पोषण करना।
6. सामाजिक तथा सांस्कृतिक विषमताओं को कम करना।
7. राष्ट्रीय चेतना के विकास के लिये कार्य करना।
8. प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रमों का विकास करना।

इस प्रकार ज्ञात होता है कि भारत में विभिन्न चरणों में विभिन्न आयोगों द्वारा उच्च शिक्षा का विकास हुआ है।

उच्च शिक्षा में प्रगति के कारण

1. प्रारम्भ में हमें बौद्धिक विचारों, नयी तकनीकियों आदि को विदेशों से आयात करना पड़ता था, अपनी प्रगति के लिए उन पर निर्भर रहना पड़ता था, इसलिए हमें स्वयं की प्रगति के लिए दूसरों पर निर्भरता को छोड़ने के लिए अपने स्वयं के विचारों आविष्कारों, नयी तकनीकियों, अपने शैक्षिक संरचना, अपने पाठ्यक्रम के विकास के लिए उच्च शिक्षा की आवश्यकता हुयी। इस दृष्टिकोण हेतु उच्च शिक्षा में तीव्र प्रगति हुयी।

2. जब कोई नये विचार वृद्धि करते है तो उनके क्रियान्वयन के लिए हमें शिक्षित मानव शक्ति की आवश्यकता होती है, साथ ही साथ नियोजित आर्थिक विकास के लिए भी हमें शिक्षित मानव संसाधनों की आवश्यकता होती है। इस आवश्कता की पूर्ति हेतु उच्च शिक्षा की प्रगति पर व्यापक असर पडा।

3. ऐसे लोग जो कई वर्षों या शताब्दियों से पिछड़े दबे कुचले थे उन्हें देश की मुख्य धारा में लाने के लिए उच्च शिक्षा की प्रगति की ओर ध्यान दिया गया।

4. प्राथमिक शिक्षा के सार्वभौमीकरण से साक्षरता की दर में बढ़ोत्तरी होने से अधिक मात्रा में माध्यमिक विद्यालयों की आवश्यकता हुयी और इसी प्रकार इनसे

निकलने वाले छात्रों के लिए उच्च शिक्षा प्रदान करने हेतु अधिक संख्या में उच्च शैक्षिक संस्थानों की आवश्यकता हुई। इस आवश्यकता की पूर्ति हेतु उच्च शिक्षा की प्रगति पर जोर दिया गया।

किन्तु जो भी विकास हुए हैं ये गुणात्मक नहीं हैं न तो ये कौशल में सही मायने में विकास कर रहा है और न तो समावेशी है यही कारण है कि प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थी उच्च शिक्षा में प्रवेश पाने के बाद कई चुनौतियों का सामना करते हैं और उच्च शिक्षा के परिणाम उनके लिए सकारात्मक नहीं होते हैं।

साहित्य की समीक्षा

किसी भी क्षेत्र में किसी भी अध्ययन के लिए शोधकर्ता को पुस्तकालय तथा उसके साधनों से पर्याप्त परिचय प्राप्त करना आवश्यक होता है। तदुपरान्त ही प्रभावपूर्ण शोध सम्भव हो सकता है। सम्बन्धित साहित्य का अध्ययन शोध कार्य का एक अत्यन्त उपयोगी पक्ष है। किसी भी विषय का साहित्य उसकी आधारशिला होता है, जिस पर शोध का भविष्य निर्भर करता है। शोध विषय की समस्या पर उपलब्ध साहित्य द्वारा मार्गदर्शन प्राप्त होता है।

सम्बन्धित साहित्य से तात्पर्य अनुसंधान की समस्या से सम्बन्धित उन सभी प्रकार की पुस्तकों, पत्र–पत्रिकाओं से प्रकाशित तथा अप्रकाशित अभिलेखों आदि से है। जिनके अध्ययन से अनुसंधानकर्ताओं को यह ज्ञात होता है कि शोध समस्या के क्षेत्र में किस प्रकार का कार्य पहले हो चुका है, अन्य शोधकर्ताओं द्वारा किस प्रकार की प्रक्रिया का चयन पहले किया गया तथा क्या परिणाम प्राप्त हुए जिससे उसे समस्या का चयन, परिकल्पनाओं/शोध प्रश्न के निर्माण, अध्ययन की रूपरेखा तैयार करने एवं कार्य को आगे बढ़ाने में सहायता मिलती है। इस प्रकार शोध कार्य में सम्बन्धित साहित्य के अध्ययन की महत्वपूर्ण भूमिका होती है।

निम्न सामाजिक और आर्थिक पृष्ठभूमि से आने वाले प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों के द्वारा उच्च शिक्षा प्राप्त करने की पहुँच में समय–समय पर विधायकों और नीति निर्माताओं के द्वारा सुधार करने पर जोर दिया जाता है। निम्न सामाजिक

आर्थिक स्तर के विद्यार्थी और अल्पसंख्यक विद्यार्थियों की चिंताओ को संबोधित करते हुए दोनों, एक जिन्हें विशेषाधिकार प्राप्त है उनकी तुलना में दूसरे जो निम्न स्तर से संबंधित है उनमे विश्वविद्यालय में भाग लेने की बहुत कम प्रवृत्ति होती है। प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों को केवल ऐसे परिवारों से आने के रूप में परिभाषित किया जाता है, जहाँ अभिभावकों ने शिक्षा ग्रहण नहीं की (नुनैज एण्ड क्यूकारोआलमिन, 1998)। पिछले कुछ दशकों से विद्यार्थियों के इस समूह को अनुसंधान के माध्यम से निकटता से संबोधित नहीं किया गया है (नुनैज एण्ड क्यूकारोआलमिन, 1998; वारबर्टन, बुगरिन, और नुनैज़, 2001)। प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों की विशेषता है कि वे कम सामाजिक–आर्थिक स्थिति से आते हैं या जातीय अल्पसंख्यक के रूप में भी प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थी की पहचान करते हैं।

श्रीवास्तव एवं सिमहाद्री (1979) ने प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों की पढ़ने की तत्परता एवं मानसिक योग्यता का अध्ययन किया। अध्ययन का उद्देश्य प्रथम पीढ़ी तथा गैर प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों की पढ़ने में तत्परता में पाये जाने वाले अंतर को ज्ञात करना तथा पढ़ने की तत्परता एवं आयु, बुद्धि के मध्य सम्बन्ध ज्ञात करना था। अध्ययन के परिणाम इस प्रकार प्राप्त हुए–

1. सभी आयु वर्गों में गैर प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थी प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों की अपेक्षा पढ़ने की तत्परता में उत्तम थे।
2. पढ़ने की तत्परता एवं आयु में दोनों समूहों में सार्थक सम्बन्ध था
3. दोनों समूहों में बालिकायें, बालकों की अपेक्षा पढ़ने की तत्परता में उत्तम थी।

पटेल (1988) ने प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों की चुनौतियों का अध्ययन किया। अध्ययन के परिणामों से यह ज्ञात होता है कि बालकों की अपेक्षा बालिकाओं में प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों की संख्या अधिक थी। अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति तथा अन्य पिछड़ा वर्ग में प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों की संख्या अधिक थी। प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों में आर्थिक, सामाजिक, पारिवारिक एवं मनोवैज्ञानिक आदि विभिन्न चुनौतियाँ पाई गई। इसमें भी आर्थिक चुनौती प्रधान रूप से पायी गई और

यह भी ज्ञात हुआ कि अभिभावक बच्चों को अध्ययन के लिए उचित वातावरण प्रदान करने में असमर्थ हैं।

लंदन (1989) ने प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों के अनुभव का परीक्षण किया कि उन्हें परिवार में रहते हुए उच्च शिक्षा प्राप्त करने में समस्याओं का सामना करना पड़ता है। टेरेंजिनी, रे डॉन, अपक्रैफी, मिलर, एलिसन, ग्रेग और जालमों (1994) भी इस निष्कर्ष को मानते है।

हासियो (1992) प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों को अक्सर अपनी डिग्री प्राप्त करने के लिए अनूठी चुनौतियाँ जैसे–विवादित दायित्व, झूठी अपेक्षाओं, तैयारी या समर्थन की कमी आदि का सामना करना पड़ता है।

हरटेल (1996) ने प्रथम पीढ़ी और द्वितीय पीढ़ी के कॉलेज विद्यार्थियों की समानताओं, विभिन्नताओं तथा कॉलेज समायोजन के भेदक कारकों का अध्ययन किया था। इस अध्ययन का उद्देश्य प्रथम वर्षीय 130 कॉलेज विद्यार्थियों की समानताओं, विभिन्नताओं को ज्ञात करना था। अध्ययन के परिणाम से ज्ञात हुआ कि द्वितीय पीढ़ी की अपेक्षा प्रथम पीढ़ी विद्यार्थियों के अभिभावकों की आय कम तथा कॉलेज के साथ उनका सामाजिक समायोजन भी कम था।

पेट्रिक टी. टेरेन्ज़िनी. लियोनार्ड स्प्रिंगर, पेट्रीसिया एम. यगर, अर्नेस्ट टी. पास्करेला, और अमावी नोरा. (1996) प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थी अपने गैर–प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों से विभिन्न स्तरों में या अनेक तरीकों से भिन्न होते है। और भिन्नता यह दर्शाती है कि प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों को सीखने की प्रक्रिया में आगे समस्या होती है। गैर–प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों की तुलना में प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों में सीखने, सोचने की क्षमता जैसे पढ़ने में, गणित में और आलोचनात्मक सोच की कमी होती है। इनमें उच्च शिक्षा ग्रहण करने की आकांक्षाये कम होती है। और हाई स्कूल में शिक्षा के दौरान शिक्षकों एवं मित्रों के साथ इनकी सहभागिता में कमी होती है। प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थी उच्च शिक्षा पूरी करने में अधिक समय लेते है तथा उन्हें अपने अभिभावक से कम प्रोत्साहन मिलता है।

डब्ल्यू इलियट इनमैन एण्ड लारी मेयस (1999) ने अपने लेख में अपने पूर्व के कई लेखकों की समीक्षा प्रस्तुत की है। इन अध्ययनों के फलस्वरूप निष्कर्षतः इनका कहना है कि प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थी गैर–प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों से बिल्कुल भिन्न हैं। वे अकादमिक, आर्थिक और मनोवैज्ञानिक आधारों पर प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों और गैर प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों की विभिन्नताओं का विश्लेषण करते हैं, और उनमें एक स्पष्ट अन्तर की बात करते हैं।

हॉर्न और नुनैज़ (2000) बताते हैं कि प्रथम पीढ़ी के 50 प्रतिशत से अधिक विद्यार्थी निम्न आय वाले परिवारों से आते हैं, जबकि गैर प्रथम पीढ़ी के 10 प्रतिशत से कम विद्यार्थी निम्न आय वाले परिवार से आते हैं। कॉलेज की उपस्थिति और सामाजिक आर्थिक स्थिति के बीच एक मजबूत संबंध मौजूद है। हालांकि यह पहचानना महत्वपूर्ण है कि प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थी कम सामाजिक–आर्थिक स्थिति वाले विद्यार्थियों के लिए कई समानताओं का प्रदर्शन करते हैं, उनके पास कई विशिष्ट विशेषताएं होती हैं जिन्हें पहचानने और संबोधित करने की आवश्यकता है।

थायर (2000) प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थी आंशिक अकादमिक तैयारी के साथ में कॉलेज में प्रवेश लेते है और कॉलेज के बारे में सीमित जानकारी या तो उन्हें स्वयं होती है या तो रिश्तेदारों के द्वारा होती है। कम आमदनी और प्रथम पीढ़ी की पृष्ठभूमि के छात्रों को बाधाओं का सामना करना पड़ता है जिसमें शामिल हैं विश्वविद्यालय के वातावरण के विषय में ज्ञान की कमी, पर्याप्त अकादमिक तैयारी की कमी, और पारिवारिक सहयोग में कमी। प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों को घर और कॉलेज के बीच सांस्कृतिक संघर्ष करना पड़ता है।

डेविड टाइकसन (2000) ने अपने अध्ययन में प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों की विशेषताओं के साथ ही उच्च शिक्षा में उनके नामांकन की विधियों को स्पष्ट किया। उन्होंने विद्यार्थियों की वर्गीय, सांस्कृतिक व पारिवारिक पृष्ठभूमि का भी विश्लेषण किया है। टाइकसन सुझाव देते हैं कि ऐसे विद्यार्थियों के शैक्षिक स्तर को सुधारने हेतु पुस्तकालय के साथ ही उनके निमित्त विशेष कक्षाओं का प्रबन्ध किया जाना

चाहिए इसके अतिरिक्त विशेष प्रकार का गृहकार्य तथा एक पारिवारिक माहौल देकर भी उनके शैक्षिक स्तर को सुधारा जा सकता है।

चॉय, 2001; ईशितानी, 2006; टेरेन्ज़िनी, स्प्रिंगर, येगर, और नोरा (1996) पहली पीढ़ी के विद्यार्थियों का CGPA, कम होता है उन पर स्नातक कॉलेज की महत्वकांक्षा, स्नातक दरों और चुनौतीपूर्ण कोर्स का भार होता है जो उनकी सतत् पीढ़ी में भी निरन्तर यही चलता रहता है।

चॉय (2001) जिन विद्यार्थियों के माता–पिता ने कॉलेज में भाग नहीं लिया था, उन्हें कॉलेज में आवेदन करने में अपने माता–पिता से कम मदद मिली और उनके स्कूलों से सहायता प्राप्त करने की अधिक सम्भावना नहीं थी।

वर्गास (2004) प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों, अल्पसंख्यकों एवं कम आमदनी वाले व्यक्तियों में विशिष्ट प्रकार के कॉलेज ज्ञान का अभाव होता है वे प्रायः यह समझने में असमर्थ होते है। उच्च शिक्षा प्राप्त करने के लिए तैयारी कैसे करें, प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों में बुनियादी प्रवेश प्रक्रियाओं को पूरा करने, विश्वविद्यालय की फीस का भुगतान करने, कैरियर लक्ष्यों और शैक्षणिक आवश्यकताओं के बीच संबंध के विषय में भी ज्ञान का अभाव होता है।

सिंह तथा कुमार (2005) ने लखनऊ शहर के पांचवी कक्षा के प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों की विभिन्न चुनौतियों का अध्ययन किया। अध्ययन के उद्देश्य इस प्रकार थे– पांचवी कक्षा के प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों की शैक्षिक, सामाजिक, मनोवैज्ञानिक एवं आर्थिक चुनौतियों का प्रतिशत ज्ञात करना। अध्ययन के परिणामों से ज्ञात हुआ कि प्रथम पीढ़ी विद्यार्थियों की सभी चुनौतियों में आर्थिक चुनौती प्रधान थी। नेतृत्व न कर पाने की समस्या सामाजिक समस्याओं में सर्वप्रमुख थी। तथा भय की समस्या का प्रतिशत सभी मनोवैज्ञानिक समस्याओं में सबसे अधिक था।

स्नेल (2008) ने बताया कि प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों के शैक्षणिक व्यवहार को प्रभावित करने वाले कई कारक हैं और बहुत जटिल है जैसे आय के लिए कॉलेज के बाहर काम करना, (मुख्यतः उनकी निम्न स्थिति के कारण) शिक्षा के सम्बन्ध में

व्यक्तिगत या पारिवारिक ज्ञान की कमी, या उन्हें प्रत्यक्ष रूप से प्रेरित करना। शिक्षा को शायद ही कभी आर्थिक और सामाजिक स्थिरता के लिए टिकट के रूप में देखा जाता है, जो कि प्रमुख कारकों में से एक है। जो अकादमिक व्यवहार और पंसद में अन्तर करता है।

बुई कान्ह (2002) ने अपने लेख में कैलिफोर्निया विश्वविद्यालय के प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों की पृष्ठभूमि का अध्ययन किया। इस अध्ययन के माध्यम से वह प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों द्वारा उच्च शिक्षा प्राप्त करने के कारणों तथा कॉलेज में उनके प्रथम वर्ष के अनुभवों का परीक्षण करते हैं। इसमें प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों द्वारा प्राप्त प्रत्युत्तरों का गैर प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों से तुलनात्मक अध्ययन किया गया है जिससे स्पष्ट है कि प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों को गैर प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों की अपेक्षा कॉलेज में समायोजन करने में अधिक कठिनाइयों का सामना करना पड़ा।

एंगल,जेनिफर और विन्सेंट टिंटों (2008) यह अध्ययन उच्च शिक्षा संस्थान में कार्यरत पुस्तकालय के कार्य–कर्त्ताओं के लिए बहुत जानकारीपूर्ण होगा जो निम्न आय वाले प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों की सहायता करते है रिपोर्ट आँकड़ें, जनसांख्यिकीय जानकारी, जोखिम कारकों और इन विद्यार्थियों की वित्तीय बाधाओं से भरी है।

जहांगीर राशने (2010) लेखक पहली पीढ़ी के विद्यार्थियों के द्वारा उच्च शिक्षा प्राप्त करने के दौरान होने वाले अनुभवों की गहरी समझ प्रदान करता है। यह पुस्तक 2001 के पतन में शुरू होने वाले अध्ययन के तथ्यों पर निर्भर करती है। जहांगीर कॉलेज के दौरान पहली पीढ़ी के विद्यार्थियों के अलगाव और हाशिए के अनुभवों और बहु–सांस्कृतिक शिक्षा समुदाय में भागीदारी के अनुभवों के बारे में बताते है लेखक ने प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों के साथ उनके साक्षात्कार के कुछ हिस्सों को शामिल किया है।

प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थी वे हैं जो कॉलेज में भाग लेने के लिए अपने परिवारों में पहले हैं (ब्रायन और सीमन्स, 2009)। इसके अलावा, प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों के

अभिभावकों की हाई–स्कूल से परे कोई औपचारिक शिक्षा नहीं है (गिबन्स एंड बॉर्डर्स, 2010)। प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थी शब्द उन विद्यार्थियों को सन्दर्भित करता है जो उच्च शिक्षा की एक संस्था में (या स्नातक से) दाखिला लेने के लिए अपने परिवारों में पहले हैं।

गिबन्स एंड बॉर्डर्स (2010), मध्य और उच्च विद्यालय को संदर्भित करता है जिन विद्यार्थियों के अभिभावकों ने प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों के रूप में औपचारिक उच्च शिक्षा प्राप्त नहीं की थी। वर्तमान अध्ययन उच्च शिक्षा में प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों की चुनौतियों एवं प्रतिक्रिया पर केंद्रित है।

डेविस (2010) डेविस की पुस्तक पहली पीढ़ी के विद्यार्थियों का एक बड़ा अवलोकन प्रदान करती है यह पुस्तकालयों के लिए उपयोगी होगा जो इन जनसंख्या समूह के साथ काम करेंगे अध्याय 4 अपने स्वयं के शब्दों में पहली पीढ़ी के विद्यार्थियों की कथाओं का एक संग्रह है जो विद्यार्थियों के विचारों और भावनाओं में अद्‌भुत अर्न्तदृष्टि प्रदान करता है।

वैंग टिफनी आर (2012) वैंग ने अपने लेख में प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों के अध्ययन के लिए अध्ययन कक्ष के बाहर बातचीत करने और सहयोग करने से सम्बन्धित सम्बन्ध बनाने का सुझाव देते है। वैंग ने कॉलेज में प्रथम पीढ़ी के 30 सलाहकार (मेन्टर) का साक्षात्कार किया और पाया कि सलाहकारों से लम्बे समय तक चलने वाले सन्देश में अकादमिक सफलता, स्कूल का मूल्यांकन, भविष्य की क्षमता में वृद्धि, निर्णय लेने, समर्थन और प्रोत्साहन देने के विषयों को साझा किया गया। यह आलेख उन सन्देशों में बड़ी अर्न्तदृष्टि प्रदान करता है जो प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों का अध्ययन करते है।

घोष (2014) के अनुसार प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों की प्रकृति के कारण उन्हें 'विशेष आवश्यकता वाले विद्यार्थी' कहा गया है। कम शैक्षणिक उपलब्धि, उनमें हीन भावना, अविकसित व्यक्तित्व, और समायोजन करने में असुविधा जैसी विशेषताएँ प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों की होती हैं।

ईशितानी, 2006; लोहफिं और पॉलसेन, 2005; मैक्रारॉन एंड इंकल्स, 2006; नुनेज़ और कुकरो. अलामिन 1988; पास्करेला. एट अल, 2004; तेरेन्ज़िनी एट अल, 1996 वारबर्टन, बगरीन एंड नुनैज़, 2001. इनके अनुसार अध्ययन बताते हैं कि प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों की शैक्षिक पृष्ठभूमि उनके साथियों की तुलना में स्नातक करने और शैक्षिक प्रदर्शन करने में बाधा उत्पन्न करती है।

सैद्धान्तिक रूपरेखा

प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों की चुनौतियों को समझने में प्रकार्यात्मक दृष्टिकोण की अपनी सीमा है। दुर्खीम और पार्सन्स मानते हैं कि शैक्षिक प्रणाली द्वारा प्रेषित मानदंड और मूल्य समाज के होते हैं किन्तु उच्च शिक्षा प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों के मूल्यों और आकांक्षाओ को विफल कर देती हैं। डेविस और मूर के प्रकार्यात्मक दृष्टिकोण भी सबूत द्वारा समर्पित नहीं हैं। प्रकार्यात्मक सिद्धान्त केवल इस सीमा तक मददगार है कि उच्च शिक्षा में प्रवेश जाति, वर्ग और लिंग के आधार पर नहीं होती है, बल्कि सभी के लिए होती है। प्रकार्यात्मक सिद्धांत के दावे के विपरीत उच्च शिक्षण संस्थानों द्वारा प्रेषित मानदंड और मूल्य अभिजात वर्ग के होते हैं। प्रकार्यात्मक सिद्धांत उच्च शिक्षा में प्रवेश के बाद प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों की चुनौतियों एवं प्रतिक्रियाओं को समझने में विफल रही है।

मार्क्सवादी सिद्धांत भी कुछ हद तक ही प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों की चुनौतियों एवं प्रतिक्रियाओं को समझ पाये हैं। मार्क्सवादी सिद्धांत का तर्क है कि उच्च शिक्षा द्वारा बनाए गए मूल्य, मानदंड और व्यवहार केवल विशेषाधिकार प्राप्त विद्यार्थियों के होते हैं। इसलिए प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थी उच्च शिक्षण संस्थानों में एक वंचित समूह के सदस्य बनकर रह जाते हैं। प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों को उच्च शिक्षा में कई चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। प्रथम पीढ़ी के अधिकांश विद्यार्थी सामाजिक परिवेश में खुद को समायोजित एवं आत्मसात करने में विफल होते हैं क्योंकि उच्च शिक्षा प्रभावी मूल्यों का प्रतिनिधित्व करता है न कि वंचित समूह का। बाउल्स और गिंटिस (1976) ने इस विचार को खारिज कर दिया है कि

शिक्षा प्रणाली योग्यता पर आधारित है। वास्तव में प्रभावी मूल्य और व्यवहार योग्यता की तुलना में अधिक मायने रखते हैं। इस बात पर बल देना महत्वपूर्ण है कि प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थी इस प्रभावी मूल्यों और व्यवहारों से अनभिज्ञ होते हैं। पूंजीवादी समाज में असमानता का बड़ा हिस्सा शिक्षा प्रणाली द्वारा प्रदान किया जाता है। उच्च शिक्षा प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों को सकारात्मक वातावरण प्रदान करने में विफल रही है। पूंजीवादी समाज प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों और अभिभावकों के मन में यह गलत धारणा बनाती है कि यह प्रतिभाओं को उभारती है एवं सभी को समान अवसर प्रदान करती हैं। वास्तव में मार्क्सवादी सिद्धान्त के अनुसार उच्च शिक्षा खुले और समान समाज को बढ़ावा देने में विफल रही है।

किन्तु मार्क्सवादी सिद्धान्त की इस आधार पर आलोचन की जा सकती है कि यह वैकल्पिक शिक्षा प्रणाली स्थापित करने में विफल रहा है। समाजवाद भी उच्च शिक्षा में प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों की चुनौतियों और प्रतिक्रियों को समझने और उसे दूर करने में विफल रही है। यही कारण है कि हमें प्रकार्यात्मक और मार्क्सवादी सिद्धान्त से परे जाने की आवश्यकता है। माइकल हेचट (1993) की कम्युनिकेशन थ्योरी ऑफ आइडेंटिटी (CTI) की अवधारणा इस दिशा में महत्वपूर्ण है।

उच्च शिक्षा में अपने आप को स्थापित करने में पहचान की एक महत्वपूर्ण भूमिका होती है। CTI के अनुसार पहचान के चार फ्रेम होते हैं। पहचान का पहला फ्रेम व्यक्तिगत फ्रेम होता है। यहाँ आत्म–अनुभूति, आत्म–अवधारणा एवं सलामती का एहसास उच्च शिक्षा में विद्यार्थियों की पहचान की नींव डालती है। दूसरे फ्रेम में विद्यार्थी संचार के माध्यम से अपनी पहचान का प्रदर्शन करते हैं और दूसरों को प्रभावित करते हैं। तीसरे फ्रेम में दूसरों के साथ संबंधों के माध्यम से पहचान को उभारा जाता है और पहचान निर्मित होती है। चौथा फ्रेम एक बड़े समूह से संबंधित होता है। समान पहचान एक बड़े सामूहिक समूह को जन्म देती है और बदले में विद्यार्थियों को व्यक्तिगत पहचान देती है। इस अध्ययन में यह तर्क दिया जा सकता है कि प्रबल सामूहिक पहचान उच्च शिक्षा प्रणाली में सामाजिक और शैक्षिक वातावरण पर हावी होता है।

CTI को बुर्दियों की 'हैबिट्स', 'सांस्कृतिक पूंजी' और 'वर्ग' की अवधारणा द्वारा पूरक किया जा सकता है। बुर्दियों (1977) के अनुसार धारणाओं, पसंद और प्रस्तावों की प्रणाली सामाजिक एवं किसी की सांस्कृतिक विशिष्टता को प्रकट करती है। परिवार की परवरिश, मित्र, पड़ोस का परिवेश एवं समाजीकरण विद्यार्थियों के हैबिट्स का निर्माण करता है, जो बदले में उनकी सांस्कृतिक पूंजी के अधिग्रहण में मदद करता है। इसमें कोई संदेह नहीं कि निम्न सामाजिक–आर्थिक स्थिति के विद्यार्थियों की सांस्कृतिक पूंजी उच्च शिक्षा में उनके कोई काम नहीं आती।

अनिश्चितता के इस युग ने युवाओं को ''स्वयं की संवेदनशीलता'' (Reflexity of the self) (गिडेन्स, 1991) के माध्यम से अपना रास्ता खोजने के लिए छोड़ दिया है। युवा पूरी तरह संरचनात्मक बलों द्वारा निर्धारित नहीं होते, बल्की वे अपने क्रियाओं के प्रति संवेदनशील भी होते हैं। संरचनात्मक बलों को समझने और उसे संशोधित करने की कोशिश भी करते हैं जिसे व्यक्तिगत एजेन्सी कहते हैं। वर्तमान अध्ययन CTI, बुर्दियों के सिद्धान्त और व्यक्तिगत एंजेसी द्वारा प्रदान की गई सैद्धान्तिक रूपरेखा में स्थित है, जो उच्च शिक्षा में प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों की चुनौतियों और प्रतिक्रिया का पूर्ण वर्णन करता है।

अध्ययन का महत्व

प्रस्तुत शोध में उच्च शिक्षा के स्तर पर प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों का अध्ययन उनके समग्र दृष्टिकोण से करने का प्रयास किया गया है। इस अध्ययन में प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों के आर्थिक, सामाजिक और शैक्षिक स्तर को उजागर किया गया है। इस अध्ययन के माध्यम से यह स्पष्ट करने का प्रयास किया गया है कि निम्न सामाजिक–आर्थिक पृष्ठभूमि से सम्बन्धित प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों को उच्च शिक्षा के क्षेत्र में किस प्रकार की कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। मुख्यतः उन विद्यार्थियों को जिनके अभिभावकों ने उच्च स्तर की शिक्षा प्राप्त नहीं की है।

इस अध्ययन के लिए उच्च शिक्षा में प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों के रूप में छात्र एवं छात्राओं दोनों को चयनित किया गया है। इसके माध्यम से उनके

शैक्षिक प्रदर्शन तथा समाज व परिवार में उनकी भूमिका में आ रहे परिवर्तनों का विश्लेषण करने का प्रयास किया गया है। देश की मुख्य आबादी का शिक्षा के क्षेत्र में प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों को किस प्रकार की परेशानियों का सामना करना पड़ता है उसके बारे में क्या राय है इस सम्बन्ध में भी यह शोध महत्वपूर्ण होगा। इसके फलस्वरूप प्रस्तुत अध्ययन में समाज में उच्च शिक्षा में प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों के विस्तार में परिवर्तन का विश्लेषण किया गया है। प्रस्तुत अध्ययन में इस विषय का चुनाव भारतीय सन्दर्भ में करने के लिये किया गया है क्योंकि भारतीय सन्दर्भ में दलित, जाति, लिंग विभेद, महिला सशक्तिकरण आदि अनेक ऐसे विषय है जिन पर अनेक अध्ययन किये गये है किन्तु उच्च शिक्षा में प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों की चुनौतियाँ एवं प्रतिक्रिया ऐसे विषयों पर भारतीय सन्दर्भ में अध्ययन नहीं किये गये है। अतः इस विषय को उजागर करने के परिप्रेक्ष्य में यह अध्ययन किया गया है।

उपर्युक्त के आधार पर कहा जा सकता है कि प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों के अनुभव से सम्बन्धित समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण से यह एक महत्वपूर्ण शोध होगा, जो आगे होने वाले शोधकार्यों के लिए पथ–प्रदर्शक का कार्य करेगा एवं नीतिगत निर्णयों हेतु भी इस अध्ययन के निष्कर्ष मील के पत्थर साबित होंगे।

अध्याय योजना

प्रस्तुत शोध प्रबन्ध में सात अध्यायों का समावेश किया गया है।

शोध प्रबन्ध के अध्याय 1 का शीर्षक **''प्रस्तावना''** है। इसमें पहले प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों के विषय में चर्चा की गई है साथ ही शिक्षा का अर्थ, समाज में शिक्षा का महत्व, साहित्य की समीक्षा, सैद्धान्तिक रूपरेखा, अध्ययन का महत्व एवं अध्याय योजना का विवरण प्रस्तुत किया गया है।

अध्याय 2 का शीर्षक है **''शोध की अध्ययन पद्धति''** जिसके अर्न्तगत अध्ययन की शोध समस्या, अध्ययन के उद्देश्य, परिकल्पनाएँ, अध्ययन का समग्र एवं निदर्श ,अध्ययन के स्त्रोत एवं शोध के दौरान आने वाली प्रमुख समस्याएँ एवं शोध विषय से संबंधित भविष्य में शोध की सम्भावनाएँ आदि का विवरण दिया गया है।

अध्याय 3 का शीर्षक **''उच्च शिक्षा में प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों की पृष्ठभूमि''** है। जिसके अर्न्तगत प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों का विवरण प्रस्तुत करते हुए लखनऊ जिले के दो विश्वविद्यालयों (लखनऊ विश्वविद्यालय एवं बाबा साहेब भीमराव अम्बेडकर विश्वविद्यालय) के प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों की सामाजिक एवं आर्थिक पृष्ठभूमि का विश्लेषण किया गया है।

अध्याय 4 का शीर्षक **'' प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों की अध्ययन कक्ष के अन्दर एवं बाहर परिसर से सम्बन्धित चुनौतियाँ''** है। जिसके अर्न्तगत यह प्रदर्शित करने का प्रयास किया गया है कि प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों को अध्ययन कक्ष में और अध्ययन कक्ष के बाहर परिसर में अपने सहपाठियों एवं वरिष्ठ छात्रों के साथ एवं अपने शिक्षकों के साथ सामंजस्य बनाने में किन कठिनाईयों का सामना करना पड़ा इस सम्बन्ध में प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों के अनुभवों को विस्तार से वर्णित किया गया है।

अध्याय 5 का शीर्षक **''प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों की उच्च शिक्षा में अभिभावकों की भागीदारी''** इस अध्याय में यह दर्शाने का प्रयास किया गया है कि किस प्रकार प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों के अभिभावक अपने बच्चों को उच्च शिक्षा प्राप्त करने में सहयोग कर पाते है या नहीं। उच्च शिक्षा के अभाव में अधिकांश अभिभावक बच्चों को शिक्षा दिलाने में स्वयं को असमर्थ महसूस करते हैं इसका विस्तार पूर्वक वर्णन किया गया है।

अध्याय 6 का शीर्षक **''उच्च शिक्षा में प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों की प्रतिक्रियाएँ''** प्रस्तुत अध्याय में प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों ने अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त की है कि उन्हें किस प्रकार की समस्याओं का सामना करना पड़ा और उन समस्याओं का निवारण उन्होंने कैसे किया इसे पूर्ण रूप से वर्णित किया गया है।

अध्याय 7 का शीर्षक **''निष्कर्ष एवं सुझाव''** प्रस्तुत अध्याय में सम्पूर्ण शोध के निष्कर्ष को दर्शाया गया है साथ ही साथ परिकल्पनाओं का परीक्षण भी किया गया है। प्रस्तुत अध्याय में भविष्य में होने वाले अध्ययनों के लिये और प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों की कठिनाईयों को दूर करने के लिये सुझाव दिए गये हैं।

अध्याय 2

शोध की अध्ययन पद्धति

अध्याय 2

शोध की अध्ययन पद्धति

सामाजिक शोध का अर्थ

किसी भी विषय पर सामाजिक शोध करने के लिये यह अत्यन्त आवश्यक है कि जो भी अध्ययन किया जाये वह नियोजित ढंग से पूर्ण किया जाये। जिसके द्वारा शोध के विषय में उपयुक्त जानकारी प्राप्त हो सके। इस अध्याय में सर्वप्रथम यह स्पष्ट करने का प्रयास किया गया है कि सामाजिक शोध क्या है? इसके अतिरिक्त इस अध्याय में प्रस्तुत अध्ययन की शोध पद्धति के मुख्य अंगो का विवरण दिया गया है। जैसे –अध्ययन के उद्देश्य, परिकल्पनाएँ, समग्र निदर्श, उपकरण स्रोत, कठनाईयाँ एवं अग्रिम अध्ययन के विषय। सामाजिक अध्ययन को मनमाने ढंग से नहीं किया जा सकता है उसके लिए निरीक्षण, परीक्षण, सत्यापन पर आधारित वैज्ञानिक पद्धति का प्रयोग करके सत्य का पता लगाया जाता है।

मानव की जिज्ञासा का आधार चाहे प्राकृतिक दशाएँ हो अथवा सामाजिक जटिलताएँ, इनसे सम्बन्धित ज्ञान का स्पष्टीकरण करना तथा प्राप्त ज्ञान का सत्यापन करना ही शोध है यह प्रक्रिया जब सामाजिक घटनाओं से सम्बद्ध हो जाती है, तब इसी को हम सामाजिक शोध कहते हैं।

सामाजिक शोध एक ऐसा प्रयास है जिससे विशेष उद्देश्यों को अपने समक्ष रखकर नवीन सिद्धान्तों को निर्मित किया जाता है अथवा वर्तमान स्थिति के अन्तर्गत पुराने सिद्धान्तों की वास्तविकता को समझने का प्रयत्न किया जाता है।

बोगार्डस के शब्दों में, ''एक साथ रहने वाले लोगों में क्रियाशील अन्तनिर्हित प्रक्रियाओं की खोज करना ही सामाजिक अनुसंधान है।''

मोजर के अनुसार, ''सामाजिक घटनाओं तथा समस्याओं के बारे में नवीन ज्ञान प्राप्त करने के लिए व्यवस्थित अध्ययन को ही हम सामाजिक अनुसंधान कहते हैं।

समस्या का कथन

भारतीय परिपेक्ष्य में उच्च शिक्षा में प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों पर बहुत कम अध्ययन किये गये है। प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों को उच्च शिक्षा प्राप्त करने में अत्यधिक कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है उनके अभिभावकों का उच्च शिक्षा प्राप्त न कर पाना उनकी आर्थिक एवं सामाजिक आदि कारक प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों को प्रभावित करते है। प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों को उनके अभिभावकों के द्वारा विश्वविद्यालय के चुनाव के लिए उचित मार्गदर्शन नहीं मिल पाता है। प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों का स्कूल से कॉलेज में स्थानान्तरण करने में अभिभावकों की भागीदारी होती है। वर्तमान समय में उच्च शिक्षा के प्रसार को देखते हुए निम्न स्तर से भी आने वाले प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थी विश्वविद्यालयों में प्रवेश ले रहे हैं। किन्तु उन्हें प्रवेश प्रक्रिया के समय भी उनकी स्थिति को देखते हुए भी उन्हें प्रवेश लेने में कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। उन्हें अध्ययन कक्ष में पाठ्यक्रम एवं भाषा से सम्बन्धित समस्याओं का सामना करना पड़ता है। उच्च शिक्षा में प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थी सामाजिक अन्तः क्रिया करने में संकोच करते हैं। जब उच्च शिक्षा में प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों का स्कूल से विश्वविद्यालय में प्रवेश होता है तो उस प्रक्रिया के दौरान भी उन्हें अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों को परिसर में तथा पुस्तकालय में समायोजन करने में परेशनियों को सहन करना पड़ता है।

इन्हीं समस्याओं और साहित्य की समीक्षा को ध्यान में रखते हुए इन उद्देश्यों और परिकल्पनाओं का निर्माण किया गया है।

अध्ययन के उद्देश्य

1. उच्च शिक्षा में प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों की पृष्ठभूमि को चिन्हित करना।

2. उच्च शिक्षा में प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों के अध्ययन कक्ष एवं अध्ययन कक्ष के बाहर परिसर में चुनौतियों एवं प्रतिक्रियाओं को जानना।
3. उच्च शिक्षा में प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों के स्कूल से विश्वविद्यालय के स्थानान्तरण के दौरान अभिभावकों की भागीदारी का विश्लेषण करना।
4. उच्च शिक्षा में प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों के सामने आने वाली चुनौतियों का सामना करने के अनुभवों को इंगित करना।
5. उच्च शिक्षा में प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों की समस्याओं को दूर करने हेतु सुझाव देना।

अध्ययन की परिकल्पनाएँ

1. उच्च शिक्षा में प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थी निम्न आर्थिक पृष्ठभूमि से होते है।
2. उच्च शिक्षा में प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों को अध्ययन कक्ष में अन्तःक्रिया करने में मुश्किलों का सामना करना पड़ता है।
3. उच्च शिक्षा में प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों को अध्ययन कक्ष के बाहर परिसर में चुनौतियों का सामना करना पड़ता है।
4. प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों के स्कूल से विश्वविद्यालय के स्थानान्तरण के दौरान अभिभावकों की भागीदारी कम या ना के बराबर होती है।
5. प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थी उच्च शिक्षा प्रणाली में अलगाव महसूस करते हैं।

वर्णनात्मक अनुसंधान

प्रस्तुत शोध कार्य की समस्या को समझने तथा उससे सम्बन्धित साहित्य का अध्ययन करने के पश्चात् शोधकर्ता को प्रस्तुत शोध कार्य हेतु 'वर्णनात्मक अनुसंधान विधि' सर्वाधिक उपयुक्त प्रतीत हुई अतः वर्णनात्मक शोध विधि का प्रयोग प्रस्तुत शोध कार्य हेतु किया गया है।

इस प्रकार वर्णनात्मक विधि साधारणतयः ऐसे अनुसंधान हेतु प्रयोग की जाती है जिसका उद्देश्य यह ज्ञात करना होता है कि किसी अध्ययन–विषय के बारे में

यथार्थ तथ्य एकत्रित करके उन्हें एक विवरण के रूप में प्रस्तुत करना होता है। वर्णनात्मक शोध में विषय या समस्या के विभिन्न पक्षों पर सविस्तार प्रकाश डाला जाता है। यहाँ मुख्य जोर इस बात पर दिया जाता है कि विषय से सम्बन्धित एकत्रित किये गये तथ्य वास्तविक एवं विश्वसनीय हों। प्रस्तुत शोध अध्ययन "उच्च शिक्षा में प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों की चुनौतियाँ एवं प्रतिक्रियाः लखनऊ जिले के युवाओं का समाजशास्त्रीय अध्ययन" पर अध्ययन करना सुनिश्चित किया गया है। यही कारण है कि प्रस्तुत अनुसंधान में वर्णनात्मक विधि का प्रयोग किया गया है।

प्रस्तुत अध्ययन में गुणात्मक और मात्रात्मक विधियों का प्रयोग किया गया है इसलिए यह अध्ययन वर्णनात्मक मिश्रित विधि पर आधारित है। क्रिसवेल (2007) ने दो प्रकार के वर्णानात्मक मिश्रित विधि का उल्लेख किया है।

1. समवर्ती (Concurrent)
2. क्रमबद्ध (Sequencial)

प्रस्तुत अध्ययन में समवर्ती विधि का प्रयोग किया गया है। इस प्रकार प्रस्तुत अध्ययन समवर्ती वर्णनात्मक मिश्रित विधि पर आधारित है।

मिश्रित विधि डिजाइन

प्रथम पीढ़ी के विद्याथियों के लिए शिक्षा प्राप्त करने की आकांक्षा उच्च शिक्षा में उनकी चुनौतियों और प्रतिक्रियाओं को समझना बहुत जटिल है। इसका मुख्य कारण यह है कि प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों के अनुभव गैर प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों से बहुत अलग होते हैं साथ ही यह समूह जाति, वर्ग और धर्म के आधार पर अलग–अलग तरीके से अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करते हैं यह विश्लेषण को जटिल बनाता है। दूसरा कारण यह है कि मात्रात्मक आँकड़ें विशेष रूप से विभिन्न सामाजिक समूहों के प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों को सन्तुलित तरीके से कवर नही कर पाते हैं।

ऐसी स्थिति में मात्रात्मक विधि की विश्वसनीयता पर प्रश्न चिन्ह उठ सकते हैं। ऐसे में गुणात्मक विधि का प्रयोग भी आवश्यक हो जाता है इस दिशा में मिश्रित विधि डिजाइन सर्वोत्तम साबित होता है। मिश्रित विधि की सहायता से मात्रात्मक विधि की कमियों को दूर किया जाता है साथ ही गुणात्मक विधियों की कमियों को भी दूर किया जाता है। यही कारण है कि मिश्रित विधि से हम प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों की चुनौतियों एवं प्रतिक्रियाओं को समग्रता में समझ सकते है।

मिश्रित विधि डिजाइन एक सामाजिक अध्ययन का तरीका है जिसकी अपनी दार्शनिक धारणाएँ शामिल है जो अनुसंधान प्रक्रिया में तथ्यों के संग्रह और विश्लेषण की दिशा में गुणात्मक एवं मात्रात्मक विधियों के मिश्रण को निर्देशित करती है। और यह कई चरणों में पूर्ण होता है। इसका केन्द्रिय आधार यह है कि संयोजन में मात्रात्मक और गुणात्मक दृष्टिकोणों का उपयोग अकेले (मात्रात्मक या गुणात्मक) दृष्टिकोणों की तुलना में अनुसंधान समस्याओं को बेहतर समझ प्रदान करता है (क्रेशवेल एवं क्लार्क, 2007)।

मिश्रित विधियाँ अनुसंधान में या तो मात्रात्मक या गुणात्मक विधियों का उपयोग करने की तुलना में अधिक व्यवहारिक है क्योंकि यह एक शोधकर्त्ता को दोनों संख्याओं एवं शब्दों का उपयोग करके और अगमनात्मक और निगमनात्मक सोच के संयोजन से शोध समस्या को सम्बोधित करने के लिए आवश्यक सभी तरीको का स्वतन्त्र रूप से उपयोग करने की अनुमति देता है। मिश्रित विधियों का डिजाइन सामाजिक अनुसंधान में लागू करना आसान नहीं होता है। इसमें पद्धति सम्बन्धी मुद्दों पर सावधानी पूर्वक विचार करने की आवश्यकता है।

1. पहला मुद्दा मात्रात्मक एवं गुणात्मक तथ्यों के संग्रह और विश्लेषण को दी गयी प्राथमिकता तय करना है। अध्ययन में या तो गुणात्मक या मात्रात्मक विधि पर अधिक जोर दिया जा सकता है।
2. दूसरा मुद्दा यह तय करना है कि किस चरण में मात्रात्मक एवं गुणात्मक तरीके को अपनाया जाये। क्या मात्रात्मक एवं गुणात्मक तथ्य संग्रह एक साथ या क्रम में एक के बाद एक आयेंगें।

3. अन्तिम मुद्दा यह तय करना है कि परिणामों को खोजने के लिए मात्रात्मक एवं गुणात्मक डेटा को कब या कैसे मिश्रित किया जाये।

वर्तमान अध्ययन में मिश्रित त्रिभुज डिजाइन का उपयोग किया गया है।

त्रिभुज डिजाइन

इस अध्ययन में सबसे जाने–माने मिश्रित तरीके का इस्तेमाल किया गया है जिसे त्रिभुज डिजाइन कहा गया है (क्रेशवेल एवं क्लार्क, 2007)। त्रिभुज डिजाइन के विभिन्न प्रकार है। मिश्रित विधि त्रिभुज डिजाइन, जो यहाँ उपयोग किया गया है उसे चित्र सं0 2.1 में दर्शाया गया है।

चित्रः 2.1: त्रिभुज डिजाइन

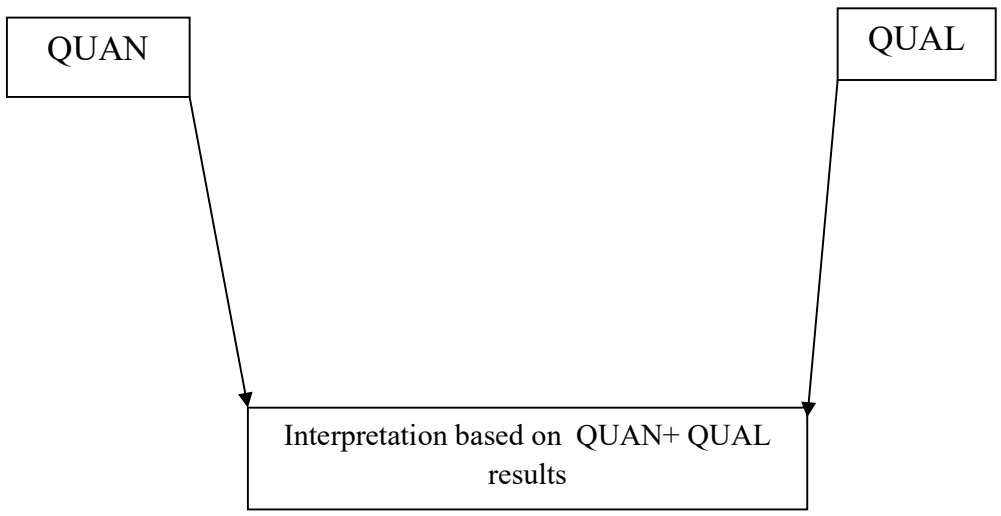

नोटः QUAN का अर्थ 'मात्रात्मक विधि'; QUAL का अर्थ 'गुणात्मक विधि'; QUAN+ QUAL का अर्थ शोध के दौरान एक ही समय में मात्रात्मक और गुणात्मक दोनों तरीकों का उपयोग किया गया है और अध्ययन में दोनों को समान महत्व दिया गया है।

इसका मुख्य उद्देश्य यह है कि विभिन्न तथ्यों को एकत्र करना है जो एक–दूसरे के पूरक होते है और विषय के ज्ञान में वृद्धि करते हैं। यह गुणात्मक निष्कर्षों के साथ मात्रात्मक संख्यकीय परिणामों की तुलना करते हैं। प्रस्तुत शोध में मात्रात्मक एवं गुणात्मक दोनों विधियों को समान प्राथमिकता दी गयी है। दोनों प्रकार के तथ्य एक ही समय में एकत्र किये गये हैं और तथ्यों के विश्लेषण को दो चरणों में विभाजित किया गया है।

1. पहले चरण के दौरान प्रत्येक मात्रात्मक एवं गुणात्मक डेटा सेट के लिए अलग–अलग डेटा विश्लेषण किया जाता है। गुणात्मक विश्लेषण का उदेश्य मात्रात्मक डेटा से प्राप्त जानकारी की गहराई तक जाना है। गुणात्मक विश्लेषण के लिए तथ्य संग्रह और तथ्यों का विश्लेषण एक साथ किये गया है (मरियम, 1998)।
2. विश्लेषण के दूसरे चरण के दौरान दोनों डेटा सेट की तुलना की गयी। एक डेटा सेट को दूसरे डेटा सेट से विस्तारित किया गया है और दोनों को मिलाकर सार्थक परिणाम प्राप्त किये गये हैं।

अध्ययन का क्षेत्र

शोध के अध्ययन हेतु समस्या के चयन, उद्देश्यों का निर्धारण करने के उपरान्त अध्ययन क्षेत्र का चुनाव किया जाता है। अध्ययन क्षेत्र का चुनाव अध्ययन के उद्देश्यों एवं उनकी प्रकृति पर निर्भर करता है। शोध अध्ययन की प्रकृति कितनी भी सकीर्ण क्यों न हो, सामाजिक अध्ययनों में उस विषय से सम्बन्धित सभी लोगों के विचारों को सम्मिलित नहीं किया जा सकता है। इस स्थिति में प्रतिवेदन के आरम्भ में ही शोधकर्ता को यह स्पष्ट कर देना आवश्यक होता है कि अध्ययन की सीमाएँ क्या हैं? इन सीमाओं में अध्ययन क्षेत्र का निर्धारण भी सम्मिलित है। क्षेत्र को देखते हुए प्रस्तुत शोध अध्ययन के लिये उत्तर प्रदेश के लखनऊ जिले का चयन उद्देश्यपूर्ण निदर्शन विधि से किया गया है तथा लखनऊ शहर में स्थित विश्वविद्यालयों का प्रतिदर्श के आधार पर चयन कर चयनित विश्वविद्यालयों के स्नातक एवं परास्नातक कक्षाओं में पढ़ने वाले प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों का अध्ययन

किया गया है। क्योंकि शोधार्थी इस क्षेत्र की भौगोलिक, सामाजिक, सांस्कृतिक परिस्थितियों से भलीभाँति परिचित है।

लखनऊ शहर में कुल 14 विश्वविद्यालय स्थापित हैं, जिनका विवरण निम्नवत् हैं–

1.	डॉ0 भीमराव अम्बेडकर केन्द्रिय विश्वविद्यालय	केन्द्रीय विश्वविद्यालय
2.	लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ	राज्यस्तरीय विश्वविद्यालय
3.	डॉ0 शकुन्तला मिश्रा पुनर्वास विश्वविद्यालय	राज्यस्तरीय विश्वविद्यालय
4.	डॉ0 राम मनोहर लोहिया विधि विश्वविद्यालय	राज्यस्तरीय विश्वविद्यालय
5.	मान्यवर कांशीराम अरबी–फारसी भाषा विश्वविद्यालय	राज्यस्तरीय विश्वविद्यालय
6.	ए0पी0जे0 अब्दुल कलाम प्राविधिक विश्वविद्यालय	राज्यस्तरीय विश्वविद्यालय
7.	भातखण्डे कला एवं संगीत विश्वविद्यालय	राज्यस्तरीय विश्वविद्यालय
8.	छत्रपति शाहूजी महाराज चिकित्सा विश्वविद्यालय	राज्यस्तरीय विश्वविद्यालय
9.	अंग्रेजी एवं विदेशी भाषा विश्वविद्यालय	राज्यस्तरीय विश्वविद्यालय
10.	एमिटी विश्वविद्यालय	निजी विश्वविद्यालय
11.	इण्टीग्रल विश्वविद्यालय	निजी विश्वविद्यालय
12.	बाबू बनारसी दास विश्वविद्यालय	निजी विश्वविद्यालय
13.	रामस्वरूप स्मारक विश्वविद्यालय	निजी विश्वविद्यालय
14.	महर्षि यूनीवर्सिटी ऑफ इंफार्मेशन टेक्नालॉजी	निजी विश्वविद्यालय

इन विश्वविद्यालयों में ए0पी0जे0 अब्दुल कलाम प्राविधिक विश्वविद्यालय के अतिरिक्त अन्य सभी विश्वविद्यालय परिसर विश्वविद्यालय हैं, परन्तु लखनऊ विश्वविद्यालय के अन्तर्गत स्वयं के दो परिसरों के अतिरिक्त विश्वविद्यालय से सम्बद्ध 70 से अधिक महाविद्यालय भी लखनऊ शहर में संचालित हो रहे हैं।

अध्ययन क्षेत्र का विवरण

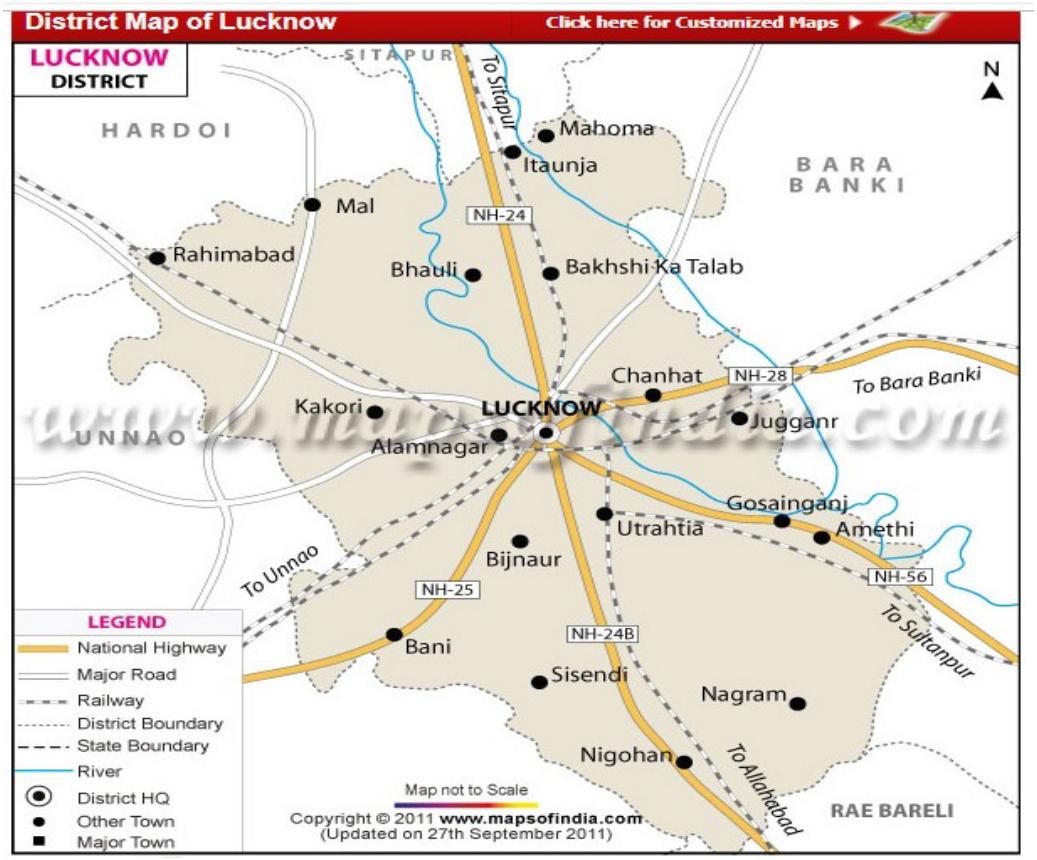

स्त्रोतः https://www.mapsofindia.com/maps/uttarpradesh/districts/lucknow.htm

रेखाचित्रः 2.2

लखनऊ जिले का नाम उत्तर प्रदेश की राजधानी लखनऊ शहर के नाम पर है। पहले यहाँ पर उत्तर प्रदेश राज्य सरकार का मुख्यालय हुआ करता था। लखनऊ शहर यहाँ की कलाओं, साहित्य, संस्कृति और शिक्षा के लिए जाना जाता है। प्राचीन काल में, कौशल साम्राज्य का बनाया गया और एक हिस्से को अवध राज्य के रूप में बदल दिया गया। लखनऊ नाम के साथ कई किवदंतियाँ जुड़ी हुई हैं। ऐसा माना जाता है कि लखनऊ शहर का नाम भगवान राम के छोटे भाई, लक्ष्मण के बाद में पड़ा। 2001 की जनगणना के पहले लखनऊ उत्तर प्रदेश और

उत्तरांचल दोनों की राजधानी थी। कहा जाता है कि लखनऊ का वास्तविक नाम लक्ष्मणपूरी था। वर्तमान नाम लखनऊ मानने से पहले इसे लखनपुर और लखनौती माना जाता था।

जनसंख्या

उत्तर प्रदेश राज्य में लखनऊ जिला जनसंख्या की दृष्टि से पाचवें स्थान पर है। लखनऊ जिले का जनसंख्या घनत्व 1816 व्यक्ति प्रति वर्ग किमी0 है। जोकि उत्तर प्रदेश राज्य की 829 व्यक्तियों प्रति वर्ग किमी की औसत से बहुत अधिक है। लखनऊ जिले की कुल जनसंख्या 45,89,838 है जिसमें पुरूषों की संख्या 23,94,476 तथा महिलाओं की संख्या 21,95362 है। लखनऊ जिले का लिंगानुपात 917 है। लखनऊ लिंगानुपात की दृष्टि से 24 वें स्थान पर है। साक्षरता दर की दृष्टि से छठे स्थान पर है, साक्षरता दर 77.3 प्रतिशत है। लखनऊ शहर में शिक्षित लोगों की कुल संख्या 3,127,260 है। जिसमें पुरूषों की संख्या 17,42,440 है तथा महिलाओं की संख्या 13,84,820 है। लखनऊ में अनुसूचित जाति के व्यक्तियों की संख्या 948,294 है। इनमें 2,538 संख्या पुरूषों की है तथा 449,495 संख्या महिलाओं की है। शहरों में रहने वाले लोगों की कुल संख्या 30,38,996 है। जिसमें से पुरूषों की संख्या 15,80,724 है तथा महिलाओं की संख्या 14,58,272 है। गाँवों में रहने वाले लोगों की कुल संख्या 15,50,842 है तथा पुरूषों की संख्या 8,13,752 है। और महिलाओं की कुल संख्या 7,37,090 है। शहरों में रहने वाले लोगों का प्रतिशत 66.21 है (जनगणना 2011)।

जनसंख्या घनत्व

लखनऊ का क्षेत्रफल 2528.00 वर्ग किमी0 है। तथा इसका घनत्व 1816 प्रति वर्ग किमी0 है (जनगणना 2011)।

लिंगानुपात

प्रति हजार पुरूषों में स्त्रियों की संख्या को लिंग अनुपात कहते हैं। वर्ष 2011 की जनगणना के अनुसार वर्तमान में लखनऊ में लिंग अनुपात 917 है। शहरों में 923 तथा गांवों में 906 प्रति हजार पुरूषों में स्त्रियों का लिंगानुपात है (जनगणना 2011)।

शिक्षा

लखनऊ जिले की कुल साक्षरता दर 31,27,260 है तथा इसका प्रतिशत 77. 29 है। जिसमें पुरूषों की संख्या 17,42,440 तथा प्रतिशत 82.56 है। और महिलाओं की संख्या 13,84,820 तथा प्रतिशत 71.54 है। लखनऊ जिला शिक्षा की दृष्टि से छठे स्थान पर है। जिसकी साक्षरता दर 77.3 प्रतिशत है जो कि राज्य की औसत से अधिक है। उत्तर प्रदेश राज्य की साक्षरता दर 67.7 प्रतिशत है (जनगणना 2011)।

अध्ययन का निदर्शन

अध्ययन के निदर्शन का उद्देश्य मात्रात्मक और गुणात्मक दोनों प्रकार के तथ्यों को उत्पन्न करना है। निदर्शन के सम्बन्ध में औपचारिक और अनौपचारिक दोनों प्रकार के तथ्यों का उपयोग किया जाता है (टेडली और यू, 2007)। संभावना (probability) और उद्देश्यपूर्ण (purposive) तकनीक दोनों का उपयोग निदर्शन के उद्देश्य से किया जाता है, जो परिकल्पनाओं को संबोधित करेगा। इस अध्ययन के उद्देश्य के लिए निदर्शन के दो सेट का उपयोग किया जाता है– एक मात्रात्मक विश्लेषण के लिए और दूसरा गुणात्मक विश्लेषण के लिए। हालांकि गुणात्मक विश्लेषण के लिए निदर्शन के रूप में 30 प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों का एक–उप निदर्शन है जो मात्रात्मक विश्लेषण के लिए चुने गए प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों निदर्शन में से चुना गया है।

मात्रात्मक विश्लेषण के लिए समग्र और प्रतिदर्श

सर्वेक्षण जो लखनऊ का प्रतिनिधि है लखनऊ में 14 विश्वविद्यालय है सभी के सर्वेक्षण हेतु काफी समय और संसाधनों की आवश्यकता होती है। समय और संसाधन की कमी को ध्यान में रखते हुए, 14 विश्वविद्यालयों में से दो विश्वविद्यालयों (लखनऊ विश्वविद्यालय, बाबासाहेब भीमराव अम्बेडकर विश्वविद्यालय) का चयन किया गया है।

विश्वविद्यालय का चयन करने के बाद 18 वर्ष से 30 वर्ष की आयु के सभी प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों की एक सूची तैयार की गयी जो निम्न सामाजिक–आर्थिक पृष्ठभूमि के विद्यार्थी थे।

निदर्शन योजना में इन प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों की आबादी के अनुपात में दो विश्वविद्यालय से सरल यादृच्छिक तकनीक के माध्यम से, 400 प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों का चयन किया गया। सबसे अच्छा, यह निदर्शन योजना की श्रेणी में आता है जिसे उदेश्यपूर्ण निदर्शन कहा जाता है, जिसके तहत प्रतिदर्श का चयन एक उदेश्यपूर्ण रूप से चयनियत प्रतिदर्श से किया जाता है (ऑनब्यूग्यूज़ी एंड लीच, 2007)।

गुणात्मक विश्लेष्ण के लिए प्रतिदर्श

गुणात्मक विश्लेष्ण के उद्देश्य के लिए 30 उत्तरदाओं का एक उप–प्रतिदर्श का चुनाव किया गया है जो गुणात्मक गहन साक्षात्कार के लिए अतिरिक्त समय देने के लिए सहमत हुए।

इन 30 प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों का चयन उद्देश्यपूर्ण पद्धति द्वारा किया गया है। इन 30 उत्तरदाताओं का वितरण परिवार की मासिक आय एवं लिंग के आधार पर किया गया है जिसे तालिका 2.1 में दर्शाया गया है।

तालिका 2.1 परिवार की मासिक आय एवं लिंग के आधार पर 30 उत्तरदाताओं का वितरण

मासिक आय	लिंग		कुल
	महिला	पुरूष	
10000 से कम	2	8	10
10001 से 20000	4	6	10
20000 से अधिक	6	4	10
कुल	12	18	30

स्त्रोतः क्षेत्रीय कार्य

तथ्य संग्रह तकनीक

मात्रात्मक तथ्य संग्रह तकनीक

साक्षात्कार अनुसूची का उपयोग उच्च शिक्षा में प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों की चुनौतियों एवं प्रतिक्रिया के बारे में तथ्य एकत्र करने के लिए किया गया है।

केवल प्रासांगिक प्रश्न जो उच्च शिक्षा में प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों की चुनौतियों एवं प्रतिक्रिया से संबंधित है जो साक्षात्कार अनुसूची में शामिल किए गए है। साक्षात्कार अनुसूची का उपयोग साक्षात्कार गाइड को विकसित करने के लिए भी किया जाता है। साहित्य की समीक्षा के आधार पर, प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों की पृष्ठभूमि, अध्ययन कक्ष से सम्बन्धित अनुभव, अभिभावकों की भागीदारी से सम्बन्धित प्रश्नों को शामिल किया गया है।

पायलट परीक्षण साक्षात्कार अनुसूची को मान्य करने और साक्षात्कार गाइड में आवश्यक संशोधन को शामिल करने के लिए किया गया है। तथ्य एकत्र करने

के लिए वास्तविक क्षेत्र का काम फरवरी 2017 से अगस्त 2017 के दौरान किया गया है।

साक्षात्कार अनुसूची को चार भागों में विभाजित किया गया है। साक्षात्कार अनुसूची के पहले भाग में उत्तरदाताओं की पृष्ठभूमि की जानकारी से संबंन्धित 13 प्रश्न हैं। दूसरे भाग में 11 प्रश्न हैं। और तीसरे भाग में 4 प्रश्न है और अन्तिम भाग में 5 प्रश्न हैं।

गुणात्मक तथ्य संकलन तकनीक

गुणात्मक तथ्य 30 उत्तरदाताओं से गहन साक्षात्कार के माध्यम से एकत्र किये गये हैं। एक बार साक्षात्कार शुरू होने के बाद यह असंरचित रूप ले लेता है, अर्थात् यह प्रश्नों के किसी पूर्व निर्धारित सेट द्वारा निर्देशित नहीं होता है।

अर्धसंरचित साक्षात्कार के उपयोग का मतलब यह नहीं है कि शोधकर्ता पर साक्षात्कार का कोई प्रभाव नहीं होता है (कॉर्बिन और स्ट्रॉस, 2008)। प्रश्न और उत्तर महत्वपूर्ण विषयगत लाइन पर आगे बढ़ते हैं। सवाल करना और जवाब देना बोलने के तरीके हैं जो सांस्कृतिक रूप से साझा किए जाते हैं, जो अक्सर विश्वासों, अनुभवों, भावनाओं और इरादों पर निर्भर करते हैं।

गुणात्मक तथ्य एकत्र करने के लिए गहन साक्षात्कार फरवरी 2017 से अगस्त 2017 के दौरान आयोजित किया गया था। प्रत्येक साक्षात्कार लगभग 20 से 30 मिनट तक चला। साक्षात्कार की शुरूआत निम्नलिखित खुले प्रश्नों के साथ हुई जो सीधे शोध के विषय से निकलते हैं।

अध्ययन में प्रयुक्त होने वाले चर

शोध के सवालों में कई सामाजिक और आर्थिक चर शामिल हैं जो प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों की चुनौतियों एवं प्रतिक्रिया को निर्धारित करते हैं। इसी प्रकार विभिन्न प्रकार के कारक प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों की चुनौतियों एवं प्रतिक्रिया को

निर्धारित करते हैं। शोध के सवालों का जवाब देने के लिए इस अध्ययन में उपयोग किए जाने वाले प्रमुख चर नीचे दिये गए हैं:

1. **आयु:** यह पिछले जन्मदिन की तरह पूर्ण वर्ष की संख्या को संदर्भित करता है। इसे अंतराल स्तर चर के रूप में माना जाता है।

2. **लिंग:** यह एक द्वंद्वात्मक श्रेणीगत चर है। विश्लेषण के उदेश्य से इसे (0) महिला और (1) पुरूष के रूप में कोडिंग किया गया है।

3. **जाति समूह:** यह उत्तरदाता की जाति की पृष्ठभूमि को संदर्भित करता है। इस अध्ययन में जाति को चार श्रेणियों में वगीकृत किया गया है, सामान्य, अन्य पिछड़ा वर्ग (ओबीसी), अनुसूचित जाति (एससी) और अनुसूचित जनजाति (एसटी)। चूंकि अनुसूचित जनजाति में कोई उत्तरदाता नहीं हैं, इस श्रेणीगत चर का विश्लेषण के उद्देश्य से (0) सामान्य, (1) अन्य पिछड़ा वर्ग और (2) अनुसूचित जाति के रूप में पुनः व्यवस्थित किया गया है।

4. **धर्म:** डेटा संग्रह के उद्देश्य से धर्म को तीन श्रेणियों में विभाजित किया गया है, जैसे कि हिन्दू, मुस्लिम, अन्य। (0) हिन्दू, (1) मुस्लिम, (3) अन्य के रूप में पुनः प्रसारित किया जाता है।

5. **पारिवारिक आय:** इसमें पारिवारिक आय को रूपयों में दर्शाया गया है।

6. **सामाजिक–आर्थिक स्थिति:** जबकि जाति सामाजिक स्थिति का एक निर्दिष्ट संकेतक है, सामाजिक–आर्थिक स्थिति का सूचक है जो पिता के शैक्षिक स्तर, माता के शैक्षिक स्तर, पारिवारिक आय जैसे चर से प्राप्त होती है जो किसी व्यक्ति द्वारा प्राप्त की जाती है। यह इन तीन चरों से प्राप्त एक एकीकृत सूचकांक का प्रतिनिधित्व करता है। तीन सामाजिक–आर्थिक स्थिति को निम्न रूप में कोडिंग किया गया है (0) निम्न, (1) मध्यम, (2) उच्च।

7. पिता का शैक्षिक स्तरः पिता की शिक्षा के स्तर को चार श्रेणियों में विभाजित किया गया है अशिक्षित, प्राथमिक शिक्षा, उच्च मध्यमिक शिक्षा, उच्च शिक्षा। लेकिन इस अध्ययन के उद्देश्य से पिता के शैक्षिक स्तर को (1) अशिक्षित, (2) प्राथमिक शिक्षा, (3) उच्च प्राथमिक शिक्षा, (4) उच्च शिक्षा, इस प्रकार से कोडिंग की गयी है।

8. माता–पिता की भागीदारीः माता–पिता की भागीदारी एक समग्र स्कोर है जो प्रत्येक उत्तरदाता से पूछे गए चार प्रश्नों की प्रतिक्रिया से प्राप्त होता है। ये प्रश्न हैंः आपने अपने माता–पिता के साथ पाठयक्रमों के चयन के बारे में कितनी बार चर्चा की? आपने अपने माता–पिता के साथ ग्रेड/अंको के बारे में कितनी बार चर्चा की? आपने अपने माता–पिता के साथ नौकरी की संभावनाओं के बारे में कितनी बार चर्चा की? आपने अपने अभिभावकों से विश्वविद्यालय परिसर में होने वाली समस्याओं के विषय में चर्चा की?

उच्च शिक्षा में प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों की चुनौतियों एवं प्रतिक्रियाओं का आकलन करने के लिए साथियों, परिचितों के समर्थन के साथ माता–पिता की भागीदारी का उपयोग किया गया है। इन चरों के अलावा, अन्य चर भी है जिनका उपयोग इस अध्ययन में किया गया है। कुछ चर कम संख्या में श्रेणियों में पुनः वितरित किए गए हैं। इन चरों के साथ–साथ पुनरावर्ति चर को शोध प्रबन्ध में उपयुक्त स्थानों पर वर्णित किया गया है।

तथ्यों का विश्लेषण

मात्रात्मक तथ्यों का विश्लेषण

ऊपर वर्णित साक्षात्कार अनुसूची का उपयोग व्यक्तिगत रूप से प्रत्येक उत्तरदाता से तथ्य एकत्र करने के लिए किया जाता है। परिणामों के विश्लेषण और

व्याख्या के उद्देश्य से तथ्यों को मुख्य चर के अनुसार अलग कर दिया गया है, जिन्हें संख्यात्मक रूप से कोडिंग किया गया है। इसके बाद, अध्ययन के उद्देश्यों के अनुसार सांख्यिकीय विश्लेषण किया गया है। सांख्यिकीय विश्लेषण में शामिल हैं:

वर्णनात्मक आँकड़ें: ये सांख्यिकीय तालिकाओं के संदर्भ में दिखाए जाते हैं जो प्रमुख सामाजिक, आर्थिक और जनसांख्यिकीय चर जैसे आयु, लिंग, जाति, धर्म, पारिवारिक आय आदि के साथ तुलनात्मक आँकड़ें प्रस्तुत करते हैं। इन तालिकाओं को आवृत्ति वितरण के सन्दर्भ में भी वर्णित किया गया है।

रेखाचित्र प्रस्तुति: रेखाचित्र प्रस्तुति संख्यात्मक मूल्य नमूना की विशेषताओं के बारे में उपयोगी जानकारी देता है, कुछ पहलुओं का पता रेखाचित्र के माध्यम से लगाया गया है। इसलिए स्थिति को समझने के लिए जहां भी आवश्यक हो, उपयुक्त रेखांकन तैयार किए गए हैं। बार ग्राफ का उपयोग विशेष श्रेणी में समस्याओं की संख्या को दिखाने या विभिन्न श्रेणियों के लिए कुछ निरंतर चर पर स्कोर दिखाने के लिए किया गया है। पाई चार्ट जहां भी आवश्यक हो, चार्ट भी तैयार किए गए हैं। ये ग्राफ विभिन्न श्रेणियों के बीच मुख्य चर पर तथ्य के वितरण का त्वरित सारांश देते है।

सामाजिक विज्ञान सॉफ्टवेयर संस्करण 22.0 के लिए सांख्यिकीय पैकेज (एस0पी0एस0एस0) का उपयोग करके मात्रात्मक तथ्यों का सांख्यिकीय विश्लेषण किया गया है।

गुणात्मक तथ्यों का विश्लेषण

गुणात्मक तथ्यों का विश्लेषण करना एक जटिल कार्य है क्योंकि शोधकर्त्ता को कई अवधारणाओं के साथ और कई सन्दर्भों के साथ काम करना पड़ता है। तथ्यों के विश्लेषण में अनुसंधान के विषय के संबंध में चुनौतियों और प्रत्येक उत्तरदाता की प्रतिक्रिया का एक विस्तृत विवरण विकसित करना शामिल है।

गुणात्मक तथ्यों के संग्रह और विश्लेषण एक साथ आगे बढ़ते हैं। तथ्यों को कोडिंग करने और श्रेणियाँ बनाने के लिए बहुत सी सोच की आवश्यकता होती है। उत्तरदाताओं द्वारा उपलब्ध कराए गए कच्चे आँकड़ों का विश्लेषण इसके संदर्भ में किया गया है ताकि चुनौतियों का विवरण और विषय विशिष्ट गतिविधियों और मामलें में शामिल स्थितियों से संबंधित हों। सभी साक्षात्कारों का विश्लेषण किया गया है।

क्रिसवेल (2002) द्वारा सुझाए गए चरणों के व्यापक पैटर्न की रेखा पर गुणात्मक तथ्यों का विश्लेषण निम्नलिखित चरणों में किया गया है:

1. प्रत्येक साक्षात्कार को लिपिबद्ध करके पढ़ने के माध्यम से तथ्य की खोज करना, सूचना की सामान्य समझ प्राप्त करना और मेमों लिखना। इस कदम में दो बातों पर जोर दिया गया है। पहला, सामान्य विचार जो उत्तरदाता की विशेष सामाजिक–आर्थिक और सांस्कृतिक संदर्भ में देता है। दूसरा, उत्तरदारा द्वारा प्रदान की गई जानकारी की गहराई क्या है?
2. इस चरण में तथ्यों के विश्लेषण के लिए कोडिंग किया जाता है (क्रिसवेल, 2002)।
3. गुणात्मक विश्लेषण में शामिल प्रत्येक उत्तरदाता के लिए थीम विकसित की जाती है। अक्सर इन विषयों को विविध उद्धरणों के द्वारा प्रदर्शित किया गया है।
4. इस चरण में 'विषय को जोड़ना और परस्पर संबंध' शामिल है (क्रिसवेल, 2002)। विभिन्न उत्तरदाताओं के विषयों की लगातार तुलना करके विभिन्न विषयों के बीच पत्राचार स्थापित किया गया है।
5. अंत में, युवाओं की चुनौतियों और प्रतिक्रिया का समग्र दृष्टिकोण देने के लिए विषयों के विवरण को विस्तार रूप प्रदान किया गया है।

कठिनाई

तथ्यों के संग्रह के दौरान आने वाली कुछ कठिनाईयों का उल्लेख नीचे किया गया है:

1. प्राइवेट विश्वविद्यालय से तथ्यों का संकलन करना मुश्किल था।
2. कुछ उत्तरदाताओं को साक्षात्कार के बारे में इतना संदेह था कि उन्होनें अपनी प्रतिक्रिया देने के लिए स्पष्ट रूप से मना कर दिया।
3. चूंकि मात्रात्मक और गुणात्मक दोनों तथ्य समवर्ती रूप से एकत्र किए जाते हैं, इसलिए तथ्यों के संग्रह और विश्लेषण की प्रक्रिया का प्रबंधन करना बहुत मुश्किल था।
4. इन कठिनाईयों को अपने स्तर पर हल करते हुये शोधार्थी ने अधिक से अधिक एवं उपयुक्त सूचनायें एकत्र कर शोधकार्य को पूर्ण किया है।

नैतिक प्रतिपूर्ति

शोधकर्ता को अनुसंधान नैतिकता के अनुसार कार्य करने की उम्मीद है। ''गोपनीयता की रक्षा के लिए गुमनामी सबसे अच्छा तरीका है क्योंकि गुमनामी का मतलब है कि उत्तरदाता की पहचान शोधकर्ता को नहीं पता है'' (जॉनसन और क्रिस्टेंसन, 2012)। गुमनामी गोपनीयता सुनिश्चित करने के लिए महत्वपूर्ण है जो बदले में प्रतिक्रिया दर को बढ़ाती है।

तथ्य संग्रह से पहले सभी उत्तरदाताओं से मौखिक सहमति मांगी गई थी और यह सुनिश्चित किया गया था कि अनुसंधान के संबंध में उनका नाम नहीं लिया जाएगा। जैसे, इस अध्ययन में शोध प्रबन्ध के किसी भी हिस्से में उत्तरदाताओं के नाम का उल्लेख नहीं किया गया है। शोध प्रबन्ध लिखने की प्रक्रिया के दौरान उत्तरदाताओं की गुमनामी को बनाए रखा गया है।

उत्तरदाताओं के साथ उचित और समान व्यवहार किया गया। उन्हें अनुसंधान के उद्देश्यों और महत्व के बारे में बताया गया। पर्याप्त गोपनीयता के साथ उत्तरदाता को सहमत करने का हर संभव प्रयास किया गया। उत्तरदाताओं को साक्षात्कार से किसी भी चरण में वापस लेने का हर अधिकार दिया गया है।

अध्ययन की सीमाएं

इस अध्ययन की कुछ सीमाएँ नीचे उल्लिखित हैं:

1. अध्ययन हेतु तथ्यों का संकलन करते समय अध्ययनकर्ता को अनेक प्रकार की समस्याओं का सामना करना पड़ा।
2. तथ्यों के संकलन के दौरान विश्वविद्यालय के विभागों एवं विद्यार्थियों से अध्ययनकर्ता को अपेक्षित योगदान प्राप्त नहीं हुआ। जिसके परिणामस्वरूप अनेक कठिनाईयों का सामना करना पड़ा।
3. विद्यार्थियों को इस कार्य में किसी प्रकार का लाभ प्राप्त न होने के कारण उनका व्यवहार काफी अरूचिकर रहा। कभी–कभी विद्यार्थी समय न होने का भी बहाना कर देते थे।
4. कई विभागों में तो शिक्षकों ने भी अनुमति प्रदान करने में अरूचि दिखाई। शिक्षकों को यह प्रतीत हुआ कि अध्ययनकर्ता उनके विश्वविद्यालय से सूचनाओं को प्राप्त करके उसका अनुचित प्रयोग करेगा।
5. विश्वविद्यालयों में विद्यार्थियों से अन्तःक्रिया करने के लिए अध्ययनकर्ता को अपने विश्वविद्यालय के विभागाध्यक्ष के द्वारा जारी किये गये अनुमति प्रमाण पत्र की मांग की जाती थी। प्रमाण पत्र दिखाने के बाद भी अध्ययनकर्ता को अनुमति नहीं मिलती थी।
6. अध्ययनकर्ता को विद्यार्थियों से व्यक्तिगत, एवं विश्वसनीय सूचनायें प्राप्त करने में कठिनाई हुई। शोध विषय पर अभी तक प्रदेश में कोई अध्ययन न

होने के कारण भी तथ्यों को संकलित करने में समस्याओं का सामना करना पड़ा।

अध्याय 3

उच्च शिक्षा में प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों की पृष्ठभूमि

अध्याय 3

उच्च शिक्षा में प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों की पृष्ठभूमि

युवा पीढ़ी भारतीय समाज का एक महत्वपूर्ण अंग हैं। यदि युवाओं की क्षमता का पूरी तरह से उपयोग किया जाये तो, यह सामाजिक परिवर्तन का एक साधन हो सकती है। युवाओं में निहित संसाधन हमारे समाज में विकास की दिशा को निर्धारित कर सकते हैं। मानव विकास संकेतकों पर भारतीय लोगों का प्रदर्शन, जो किसी भी समाज में विकास के भविष्य का निर्णय करता है, असामान्य रूप से कम है। शोध के विषय को बेहतर ढंग से समझने के लिए प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों की जनसांख्यिकीय और सामाजिक–आर्थिक पृष्ठभूमि को जानना महत्वपूर्ण है।

उच्च शिक्षा में प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों की चुनौतियों एवं प्रतिक्रियाओं का जानने में सामाजिक–आर्थिक चर का विशेष महत्व है। सामाजिक–आर्थिक तथ्यों में आमतौर पर माता–पिता का शैक्षिक स्तर, व्यावसाय, पारिवारिक आय आदि शामिल होते हैं। इस अध्याय का उद्देश्य 400 उत्तरदाताओं की जनसांख्यिकीय और सामाजिक–आर्थिक विशेषताओं का एक वर्णनात्मक आँकड़े प्रदान करना है। तथ्यों की व्याख्या और अध्ययन के लिए निष्कर्ष निकालने के लिए प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों की पृष्ठभूमि की बुनियादी जानकारी महत्वपूर्ण है। यहां दिए गए विवरण उत्तरदाताओं के सामाजिक–आर्थिक और जनसांख्यिकीय चर से संबंधित हैं, जिनमें वे स्वयं भी शामिल हैं, आयु, लिंग, जाति, धर्म आदि।

समय और संसाधन की कमी को ध्यान में रखते हुए, शोधकर्ता ने सरल यादृच्छिक नमूने के माध्यम से इन दो विश्वविद्यालयों में से प्रत्येक में से 400 उत्तरदाताओं का चुनाव किया।

आयु: प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों के बारे में अध्ययन करने में आयु की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। 400 प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों की आयु को तालिका 3.1 में दर्शाया गया है। प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों को पाँच आयु समूहों में विभाजित किया गया है 19, 20, 21, 22, और 23।

तालिकाः 3.1 आयु के आधार पर प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों का विश्लेषण

आयु	संख्या	प्रतिशत
19	61	15.3
20	109	27.3
21	141	35.3
22	58	14.5
23	31	7.6
कुल	400	100.0

स्त्रोतः क्षेत्रीय कार्य

उपर्युक्त 3.1 तालिका से स्पष्ट है कि 21 वर्ष की आयु वाले प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों की संख्या सर्वाधिक है इस आयु वर्ग वाले विद्यार्थियों की संख्या 141 तथा इनका प्रतिशत 35.3 है। 20 वर्ष की आयु वर्ग वाले विद्यार्थियों की संख्या 109 तथा इसका प्रतिशत 27.3 है। और इससे भी कम संख्या 61 तथा प्रतिशत 15.3, 19 वर्ष की आयु वर्ग वाले प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों की है। 22 वर्ष की आयु वाले प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों की संख्या 58 तथा इसका प्रतिशत 14.5 है। और 23 वर्ष की आयु वाले प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों की संख्या 31 तथा इनका प्रतिशत 7.6 है।

अतः विश्लेषण से स्पष्ट है कि 19–20 वर्ष के प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों की शिक्षा प्राप्त करने में विशेष रूचि होती है। और 21 वर्ष की आयु वाले प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों पर पारिवारिक दायित्व होने के कारण वे शिक्षा को अधिक समय नहीं दे पाते और उनकी पढ़ाई से धीरे–धीरे रूचि भी खत्म होने लगती है।

समाज के किसी भी क्षेत्र में अपनी छवि को बनाने के लिए व्यक्ति का शिक्षित होना आवश्यक है। और 21–25 वर्ष की आयु विद्यार्थियों की सबसे उपयुक्त अवस्था होती है क्योंकि इस अवस्था में विद्यार्थी सब कुछ समझने में सक्षम होता है और इसके साथ ही लिंग के आधार पर भी यह जानने की आवश्यकता है कि प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों में कितनी विषमता है।

कुछ अध्ययनों में पाया गया कि प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों की उम्र अधिक होती है (टेरेंजिनी एट अल., 1996; नुनैज़ एण्ड कूकारो–अलामिन, 1998; सनीज़ एट अल., 2007; बेन्सन एट अल., 2010) और वे शादीशुदा होते है (नुनैज़ एण्ड कूकारों–अलामिन, 1998) किन्तु प्रस्तुत शोध में पाया गया कि प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थी जिनकी उम्र 23 वर्ष की है और सभी अविवाहित विद्यार्थी हैं।

लिंगः प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों का लिंग के आधार पर अध्ययन महत्वपूर्ण है। प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों को लिंग के आधार पर दो भागों में विभाजित किया गया है जिसमें महिला और पुरूष शामिल हैं। इसे तालिका 3.2 में दर्शाया गया है।

तालिकाः 3.2 लिंग के आधार पर विद्यार्थियों का विश्लेषण

लिंग	संख्या	प्रतिशत
महिला	146	36.5
पुरूष	254	63.5
कुल	400	100.0

स्त्रोतः क्षेत्रीय कार्य

उपर्युक्त तालिका 3.2 से ज्ञात होता है कि शिक्षा प्राप्त करने में महिलाओं की तुलना में पुरूषों की संख्या 254 तथा प्रतिशत 63.50 अधिक है। और महिलाओं की संख्या 146 तथा प्रतिशत 36.50 कम है।

भारत देश एक पुरूष प्रधान देश है जहाँ पितृसत्तात्मक व्यवस्था पायी जाती है जिसके परिणामस्वरूप बालकों को हर क्षेत्र में आगे बढ़ने के अवसर मिलते है। जिस कारण से शिक्षा के क्षेत्र में बालकों की संख्या अधिक देखने को मिलती है और अभिभावकों को भी यह प्रतीत होता है कि लड़कों को शिक्षित करने से वे अपने अभिभावकों का सहारा बनेगें और अपने परिवार की आर्थिक स्थिति के सुधार में सहयोग करेंगे। इसलिए उपर्युक्त तालिका में महिलाओं की तुलना में पुरूषों का प्रतिशत अधिक है।

कॉलेज या विश्वविद्यालय में शिक्षा प्राप्त करने वाली महिला विद्यार्थियों को कॉलेज में सामाजिक यौन–भूमिका व्यवहार, विकासात्मक मुद्दों और संभवतः नकारात्मक रूढ़िवादिता में विभिन्न चुनौतियों का सामना करना पड़ता है।

बालकों को बालिकाओं की अपेक्षा अधिक महत्वपूर्ण समझ कर उनकी शिक्षा पर ध्यान देना तथा बालिकाओं की शिक्षा की उपेक्षा करना साामाजिक भेदभाव के कारण ही है जिसके कारण प्रथम पीढ़ी की महिला विद्यार्थियों के लिए उचित शिक्षा की व्यवस्था नहीं हो पाती है तथा वे शिक्षा से वंचित रह जाती हैं तथा अशिक्षा की स्थिति ने प्रथम पीढ़ी की महिला विद्यार्थियों की स्थिति पर सीधा दुष्प्रभाव डाला है। वह अपने हर प्रकार के अधिकारों से वंचित रहने पर भी उसका विरोध करने में स्वयं को अक्षम अनुभव करती है। सामाजिक भेदभाव के कारण प्रथम पीढ़ी की महिला विद्यार्थियों की स्थिति सम्माननीय न होकर एक आश्रित की हो जाती है। लिंग के आधार पर अध्ययन करने के साथ ही साथ जाति के आधार पर अध्ययन किया जाना अनिवार्य है। इसलिए जाति के आधार पर विद्यार्थियों का विश्लेषण किया गया है।

प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों की विशेषताओं के लक्षण

नीचे दी गई तालिका 3.3 से 3.12 तक की तालिक प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों की पृष्ठभूमि की विशेषताओं के अनुसार विद्यार्थियों के बारे में जानकारी देती है। यहां कई विशेषताओं को महत्वपूर्ण माना गया है। ये हैं जाति, धर्म, पिता का शैक्षिक स्तर पिता का व्यवसाय, पारिवारिक आय (रूपयों में), सामाजिक–आर्थिक स्थिति आदि।

जातिः

जाति भारतीय समाज के लिए एक महत्वपूर्ण कारक है। यह इस तथ्य से स्पष्ट है कि सरकार नौकरियों और शैक्षणिक संस्थानों में जाति आधारित आरक्षण को भी उचित महत्व दिया जाता है। 2005 में एक केन्द्रिय कानून द्वारा पारित संविधान में 93 वें संशोधन ने कानून के समक्ष समानता के सिद्धांत को अपवाद

बनाया जो शैक्षणिक संस्थानों में प्रवेश को नियंत्रित करता है (फैनेल, 2010)। इस अध्ययन के उद्देश्य से जाति समूह को तीन उपसमूहों में विभाजित किया गया हैः सामान्य, अन्य पिछड़ा वर्ग, अनुसूचित जाति। तालिका 3.3 जाति के अनुसार प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों का आवृत्ति वितरण प्रदान करती है।

तालिकाः 3.3 जाति के आधार पर विद्यार्थियों का विश्लेषण

जाति	संख्या	प्रतिशत
सामान्य	105	26.3
अन्य पिछड़ा वर्ग	138	34.4
अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति	157	39.3
कुल	400	100.0

स्त्रोतः क्षेत्रीय कार्य

उपर्युक्त 3.3 तालिका दर्शाती है कि उच्च शिक्षा में शामिल होने वाले प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थी अधिकांशतः अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति के है जिनकी संख्या 157 तथा प्रतिशत 39.3 है। जिससे यह पता चलता है कि अधिकांशतः प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थी निम्न जाति से आते है और उन्हें अपनी शिक्षा को जारी रखने में कभी–कभी जातिगत भेदभाव का भी सामना करना पड़ता है। अन्य पिछड़ा वर्ग के विद्यार्थियों की संख्या 138 एवं उनका प्रतिशत 34.4 है और सामान्य वर्ग के विद्यार्थियों की संख्या 105 एवं उनका प्रतिशत 26.3 है। जिस प्रकार से प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों पर जाति का प्रभाव देखने को मिलता है उसी प्रकार से धर्म के प्रभाव को भी देखना आवश्यक है।

धर्मः

भारत में धर्म क्षेत्रीय संस्कृतियों का एक विविध समूह है, जिनमें से प्रत्येक में रीति–रिवाजों, सिद्धांत और त्यौहार के विशिष्ट रूपांतर हैं (मचसेक, 2005)। इस अध्ययन के उद्देश्य के लिए, धर्म को तीन उप–समूहों में विभाजित किया गया हैः हिन्दू, मुस्लिम और अन्य। तालिका 3.4 धर्म के अनुसार प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों की आवृत्ति वितरण प्रदान करती है।

तालिकाः 3.4 धर्म के आधार पर विद्यार्थियों का विश्लेषण

धर्म	संख्या	प्रतिशत
हिन्दू	314	78.5
मुस्लिम	55	13.7
अन्य	31	7.8
कुल	400	100.0

स्त्रोतः क्षेत्रीय कार्य

उपरोक्त तालिका 3.4 धर्म के अनुसार विद्यार्थियों के विवरण को प्रस्तुत करती है। तालिका से स्पष्ट है कि कुल 400 विद्यार्थियों में से सर्वाधिक छात्र हिन्दू धर्म से सम्बन्धित है। प्रस्तुत अध्ययन के लिए चयनित किये गये विद्यार्थियों में हिन्दू धर्म के विद्यार्थियों की संख्या 314 एवं उनका प्रतिशत 78.5 है। तथा मुस्लिम धर्म के विद्यार्थियों की संख्या 55 तथा इनका प्रतिशत 13.7 है। मुस्लिम धर्म के लोग अधिकांशतः अपने बच्चों को शिक्षा के बजाए रोजगार में लगाना उचित समझते है किन्तु इस धर्म में कुछ ही ऐसे लोग है जो शिक्षा को तवज्जों देते है। मुस्लिम धर्म में पर्दा प्रथा होने के कारण मुस्लिम महिलाओं के आगे बढ़ने के अवसरों में अवरोध उत्पन्न होता है। इसके अतिरिक्त अन्य धर्मों से सम्बन्धि विद्यार्थियों की संख्या 31 है जिनका प्रतिशत 7.8 है।

पिता का शैक्षिक स्तरः

पिता का शैक्षिक स्तर प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों की सामाजिक–आर्थिक स्थिति का एक महत्वपूर्ण घटक है।

तालिकाः 3.5 पिता की शिक्षा के आधार पर विद्यार्थियों का विश्लेषण

पिता की शिक्षा	संख्या	प्रतिशत
अशिक्षित	7	1.8
प्राथमिक शिक्षा (I–V)	120	30.0
उच्च प्राथमिक शिक्षा (VI–VIII)	240	60.0
माध्यमिक शिक्षा (IX–XII)	33	8.2
कुल	400	100.00

स्त्रोतः क्षेत्रीय कार्य

उपर्युक्त तालिका 3.5 से स्पष्ट है कि प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों के पिता के शैक्षिक स्तर को चार भागों में विभाजित किया गया है अशिक्षित, प्राथमिक, उच्च प्राथमिक और माध्यमिक शिक्षा। प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों के पिता की शिक्षा सिर्फ माध्यमिक शिक्षा तक ही है अर्थात् उनके पास किसी भी प्रकार का विश्वविद्यालय का कोई भी अनुभव नहीं है और न ही किसी प्रकार की कोई डिग्री। जिसके फलस्वरूप वे अपने बच्चों को विश्वविद्यालय में प्रवेश लेने या विश्वविद्यालय से जुड़ी किसी भी प्रकार की जानकारी उपलब्ध कराने में स्वयं को असमर्थ महसूस करते है। जिन विद्यार्थियों के अभिभावक अशिक्षित हैं ऐसे विद्यार्थियों की संख्या 7 एवं प्रतिशत 1.8 है। जिन विद्यार्थियों के अभिभावकों ने प्राथमिक शिक्षा अर्जित की है ऐसे विद्यार्थियों की संख्या 120 और इनका प्रतिशत 30.0 है। प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों के अभिभावक जिन्होंने उच्च प्राथमिक शिक्षा प्राप्त की है ऐसे विद्यार्थियों की संख्या 240 एवं प्रतिशत 60.0 है। जिन विद्यार्थियों के अभिभावकों ने माध्यमिक शिक्षा प्राप्त की है ऐसे प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों की संख्या 33 तथा प्रतिशत 8.2 है। इसके अतिरिक्त उच्च शिक्षा ग्रहण न करने के कारण उन्हें विश्वविद्यालय का कोई ज्ञान नहीं होता है जिसके कारण वे अपने बच्चों का मार्गदर्शन नहीं कर पाते हैं विश्वविद्यालय और विषयों के चुनाव में भी कोई योगदान नहीं होता है।

माता का शैक्षिक स्तरः

माता का शैक्षिक स्तर भी प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों की सामाजिक–आर्थिक स्थिति का एक महत्वपूर्ण घटक है।

तालिकाः 3.6 माता की शिक्षा के आधार पर प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों का विश्लेषण

माता की शिक्षा	संख्या	प्रतिशत
अशिक्षित	120	30.0
प्राथमिक शिक्षा (I–V)	179	44.7
उच्च प्राथमिक शिक्षा (VI–VIII)	95	23.8
माध्यमिक शिक्षा (IX–XII)	6	1.5
कुल	400	100.00

स्त्रोतः क्षेत्रीय कार्य

उपर्युक्त तालिका 3.6 से स्पष्ट होता है कि भारत पुरूष प्रधान होने के साथ ही वर्तमान समय में शिक्षा के महत्व को समझते हुए महिलाओं को भी शिक्षा प्राप्त करने के अवसर मिल रहे हैं किन्तु प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों की माताओं की शिक्षा माध्यमिक शिक्षा से अधिक न होने के कारण वे अपने बच्चों की शिक्षा में महत्वपूर्ण योगदान नही दे पाती है। किन्तु नैतिक सहयोग में माता का पूर्ण सहयोग अवश्य रहता है। जिन प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों की मातायें अशिक्षित हैं उनकी संख्या 120 और प्रतिशत 30.3 है। जिन विद्यार्थियों की माताओं ने प्राथमिक शिक्षा प्राप्त की उनकी संख्या 179 एवं प्रतिशत 44.7 है। जिन प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों की माताओं ने उच्च प्राथमिक शिक्षा प्राप्त की है ऐसे विद्यार्थियों की संख्या 95 है तथा प्रतिशत 23.8 है। जिन प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों की माताओं ने माध्यमिक शिक्षा प्राप्त की उनकी संख्या 6 और प्रतिशत 1.5 है।

पिता का व्यवसायः

व्यावसायिक श्रेणी एक महत्वपूर्ण चर है क्योंकि, शैक्षिक प्राप्ति की तरह इसे अक्सर सामाजिक–आर्थिक स्थिति के सूचकांक के रूप में उपयोग किया जाता है (कॉफमैन और लिचेंबर्गर, 2006)। पिता के व्यवसायों को पांच श्रेणियों में वर्गीकृत किया गया है किसान, अकुशल कार्य, कुशल कार्य, प्राइवेट नौकरी, सरकारी नौकरी। तालिका 3.7 में पिता के व्यवसाय के अनुसार प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों की आवृत्ति वितरण प्रदान करती है।

तालिकाः 3.7 पिता के व्यवसाय के आधार पर प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों का विश्लेषण

पिता का व्यवसाय	संख्या	प्रतिशत
किसान	189	47.3
अकुशल कार्य	22	5.5
कुशल कार्य	12	3.0
प्राइवेट नौकरी	102	25.5
सरकारी नौकरी (ग्रुप बी, सी, डी)	75	18.7
कुल	400	100.0

स्त्रोतः क्षेत्रीय कार्य

उपर्युक्त तालिका 3.7 से स्पष्ट है कि अधिकांशतः प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों के पिता किसान है जिनकी संख्या 189 है तथा इनका प्रतिशत 47.3 है। जिन विद्यार्थियों के पिता अकुशल कार्य करते है ऐसे विद्यार्थियों की 22 एवं प्रतिशत 5.5 है। जिनके पिता कुशल कार्य करते हैं ऐसे विद्यार्थियों की संख्या 12 और प्रतिशत 3.0 है। विद्यार्थी जिनके पिता प्राइवेट नौकरी करते हैं उनकी संख्या 102 तथा प्रतिशत 25.5 है। विद्यार्थी जिनके पिता सरकारी नौकरी करते हैं उनका प्रतिशत 18. 7 एवं संख्या 75 है।

जिससे यह स्पष्ट होता है कि ज्यादातर विद्यार्थी ग्रामीण क्षेत्रों से सम्बन्धित है जिसके परिणाम स्वरूप प्रथम पीढ़ी के पिता अपने बच्चों की जरूरतों को उपलब्ध कराने में असमर्थ होते हैं और उनके बच्चे स्वयं को सभी प्रकार की सुविधाओं से वंचित महसूस करते हैं। और जिन विद्यार्थियों के पिता सरकारी नौकरी करते हैं वे अपने बच्चों को प्रत्येक सुविधा उपलब्ध कराने में सक्षम होते है और उन्हें प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों के समान चुनौतियों का सामना भी नहीं करना पड़ता है।

माता का व्यवसायः

माता के व्यवसाय को तीन श्रेणियों में वर्गीकृत किया गया है।

तालिकाः 3.8 माता के व्यवसाय के आधार पर प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों का विश्लेषण

माता का व्यवसाय	संख्या	प्रतिशत
गृहिणी	282	70.5
किसान	110	27.5
नौकरी (ग्रुप सी, डी)	8	2.0
कुल	400	100.00

स्त्रोतः क्षेत्रीय कार्य

उपर्युक्त तालिका 3.8 विश्लेषण में दर्शाया गया है कि प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों की अधिकांशतः माताओं का व्यवसाय गृहिणी है अर्थात् अधिक शिक्षा न

होने के कारण तथा परिवार के सदस्यों की देखभाल के कारण अधिकांशतः महिलायें गृहिणी ही होती है। जिन प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों की माताओं का व्यवसाय गृहिणी है ऐसे विद्यार्थियों की संख्या 282 तथा प्रतिशत 70.5 है। जिनकी माताओं का व्यवसाय किसान हैं उन विद्यार्थियों की संख्या 110 एवं प्रतिशत 27.5 है। ऐसे विद्यार्थियों की संख्या 8 और प्रतिशत 2.0 है जिनकी मातायें नौकरी करती हैं।

घर का प्रकारः

प्रस्तुत अध्याय में प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों के घर के प्रकार का भी विवरण प्रस्तुत किया गया है।

तालिकाः 3.9 घर के प्रकार के आधार पर प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों का विश्लेषण

घर का प्रकार	संख्या	प्रतिशत
कच्चा घर	171	42.7
कच्चा पक्का घर	150	37.5
पक्का घर	79	19.8
कुल	400	100.00

त्रोतः क्षेत्रीय कार्य

उपर्युक्त तालिका 3.9 से स्पष्ट होता है कि जिन प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों के घर कच्चे हैं उन विद्यार्थियों की संख्या 171 तथा 42.7 हैं। जिन विद्यार्थियों के घर आधे कच्चे और आधे पक्के हैं उनकी संख्या 150 और प्रतिशत 37.5 हैं। और वे विद्यार्थी जो पक्के घरों में रहते हैं उनकी संख्या 79 एवं प्रतिशत 19.8 है।

पाठ्यक्रमः

प्रस्तुत अध्ययन में प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों के द्वारा चयनित पाठ्यक्रम को भी प्रस्तुत किया गया है।

तालिकाः 3.10 पाठ्यक्रम के आधार पर प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों का विश्लेषण

पाठ्यक्रम	संख्या	प्रतिशत
कला संकाय	241	60.2
विज्ञान संकाय	117	29.3
वाणिज्य संकाय	22	5.5
तकनीकी एवं प्रबन्धन	20	5.0
कुल	400	100.00

स्त्रोतः क्षेत्रीय कार्य

उपर्युक्त तालिका 3.10 से स्पष्ट है कि प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों के द्वारा शिक्षा प्राप्त करने के लिए कला संकाय को अधिक विद्यार्थियों के द्वारा चुना गया इन विद्यार्थियों की संख्या 241 और इनका प्रतिशत 60.2 है। इस संकाय में अधिक प्रवेश लेने का एक कारण यह भी है कि इसमें प्रवेश शुल्क अन्य संकायों की तुलना में कम होता है। विज्ञान संकाय का चुनाव करने वाले विद्यार्थियों की संख्या 117 तथा प्रतिशत 29.3 है। जिन विद्यार्थियों ने वाणिज्य संकाय का चयन किया ऐसे प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों की संख्या 22 एवं प्रतिशत 5.5 है। तकनीकी और प्रबन्धन संकाय का चुनाव करने वाले प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों की संख्या 20 और प्रतिशत 5.0 है। इसका प्रतिशत कम होने का मुख्य कारण धनराशि का अधिक होना है।

निवास स्थानः

प्रस्तुत शोध में प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों के निवास स्थान पर भी ध्यान दिया गया है कि इन विद्यार्थियों का निवास स्थान ग्रामीण है अथवा शहरी।

तालिकाः 3.11 निवास स्थान के आधार पर प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों का विश्लेषण

निवास स्थान	संख्या	प्रतिशत
ग्रामीण	293	73.3
शहरी	107	26.7
कुल	400	100.0

स्त्रोतः क्षेत्रीय कार्य

उपर्युक्त तालिका 3.11 से स्पष्ट है कि ग्रामीण क्षेत्र में निवास करने वाले विद्यार्थियों की संख्या 293 तथा उनका प्रतिशत 73.3 है। और शहरी क्षेत्रों में रहने वाले विद्यार्थियों की संख्या 107 और इनका प्रतिशत 26.7 है।

अधिकांश व्यक्तियों का विचार है कि लोगों पर उनके निवास स्थान का प्रभाव विशेष रूप से पड़ता है लोग जैसे स्थानों पर रहते हैं उसी के अनुरूप आचरण करते हैं। और बातचीत का तौर तरीका भी उसी प्रकार का होता है। ग्रामीण क्षेत्रों में शिक्षा को कोई विशेष महत्व नहीं दिया जाता है। इस प्रकार से ग्रामीण क्षेत्रों में रहने वाले व्यक्ति उच्च शिक्षा के प्रति अधिक जागरूक नहीं होते हैं और वे अपने साथ बच्चों को भी काम में व्यस्त रखते हैं और बच्चें अपने अभिभावकों का खेती बाड़ी में हाथ बटाते है। जिस कारण से ग्रामीण क्षेत्र से आने वाले प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों को उच्च शिक्षा प्राप्त करने में कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है।

किन्तु शहरी क्षेत्रों से आने वाले प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों को ग्रामीण क्षेत्र से आने वाले विद्यार्थियों की तुलना में कुछ कम चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। इससे स्पष्ट होता है कि विश्वविद्यालय की गतिविधियों तथा अध्ययन करने में ग्रामीण क्षेत्र से आने वाले विद्यार्थियों के समान ही शहरी क्षेत्र के विद्यार्थियों को भी चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। ग्रामीण विद्यार्थियों की तुलना में शहरी क्षेत्र के विद्यार्थियों को कुछ कम कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। ग्रामीण क्षेत्रों से आने वाले विद्यार्थियों के पहनावे का ढंग साधारण होता है इसलिए उन्हें कभी–कभी अवहेलना का भी सामना करना पड़ता है। ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थियों के लिए विश्वविद्यालय का वातावरण भी बिल्कुल नया होता है।

एक अप्रत्याशित खोज से पता चलता है कि प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों की विशेषताएं गृहनगर (ग्रामीण या उपनगर) सांस्कृतिक पूंजी के कारण विश्वविद्यालय में सामाजिक समायोजन पर प्रभाव डालते हैं, जिससे ग्रामीण विद्यार्थियों को समायोजन करने में अधिक कठिनाई होती है।

तालिकाः 3.12 प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों के परिवार की मासिक आय (रूपयों में) के आधार पर विश्लेषण

परिवार की मासिक आय (रूपयों में)	संख्या	प्रतिशत
10000 से कम	73	18.3
10001 से 20000	237	59.3
20000 से अधिक	90	22.4
कुल	400	100.0

स्त्रोतः क्षेत्रीय कार्य

उपर्युक्त तालिका 3.12 से पता चलता है कि ऐसे प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों की संख्या 237 तथा प्रतिशत 59.3 है जिनकी पारिवारिक आय 10001 से 20000 है और ये विद्यार्थी संख्या में सर्वाधिक हैं। जिन विद्यार्थियों की पारिवारिक आय 20000 से अधिक है ऐसे विद्यार्थियों की संख्या 90 है तथा इनका प्रतिशत 22. 4 है। और ऐसे प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थी जिनकी पारिवारिक आय 10000 से कम है ऐसे विद्यार्थियों की संख्या 73 और प्रतिशत 18.3 है।

इस अध्ययन के 400 उत्तरदाओं का माध्य मासिक आय 16445.00 है और इसका मानक विचलन 5754.54 रूपये है। जिनमें न्यूनतम मासिक आय 6000 रूपये है और अधिकतक मासिक आय 32000 रूपये है। **इन तथ्यों से प्रथम परिकल्पना सत्य साबित होती है। अतः उच्च शिक्षा में प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थी निम्न सामाजिक–आर्थिक पृष्ठभूमि से होते हैं।**

जिससे यह ज्ञात होता है कि इतनी कम पारिवारिक आय होने के कारण ही प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों को शिक्षा से सम्बन्धित आवश्यक वस्तुओं उपलब्ध नहीं हो पाती है जिसके कारण कभी–कभी वे अध्ययन कक्ष में बेहतर प्रदर्शन करने में पीछे रह जाते हैं।

यह देखते हुए कि आय और शैक्षिक प्राप्ति एक–दूसरे से दृढ़ता से सम्बन्धित है, प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों की कम आय वाले परिवारों से होने की अधिक संभावना होती है (चॉय, 2001; सिरिन, 2005)। ये जो कम आय वाले और प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थी होते हैं उन्हें अतिरिक्त सहायता के बिना स्कूल की विफलता

के चक्र को नष्ट करने का जोखिम होता है। इसलिए, यह महत्वपूर्ण है कि प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थी शिक्षा प्राप्ति और आय के चक्रों को तोड़ने में सफल हों।

आर्थिक स्थिति कई बाधाओं को दर्शाती है जिन बाधाओं का सामना प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों को करना पड़ता है (विल्बर एण्ड रोस्कोग्नो, 2016)। वित्तीय चिंताएँ भी कई मायनों में प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों को प्रभावित करती हैं। सबसे बुनियादी और स्पष्ट प्रभाव विश्वविद्यालय की फीस वहन करने की क्षमता पर पड़ता है। प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थी टयूशन की फीस के भुगतान करने के लिए मिलने वाले छात्र ऋण पर अधिक निर्भर रहते हैं (ली एण्ड म्यूएलर, 2014)। जो विद्यार्थी कम आय वाले और प्रथम पीढ़ी के दोनों होते हैं वे अक्सर अपने वित्तीय बोझ को दूर करने के लिए काम करते हैं इसके लिए अध्ययन कक्ष के बाहर अतिरिक्त समय की आवश्यकता होती है जो प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों का समय अपने साथियों और अध्ययन में संलग्न होने के लिए समर्पित हो सकता है (प्रैट, हारवुड, कैवाज़ोस, एण्ड डेट्ज़फेल्ड, 2017)। इन सभी बाधाओं के बावजूद प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों को अपनी सामाजिक–आर्थिक स्थिति के लिए गैर–प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों की तुलना में नुकसान होता है (विल्बर एंड रोस्कोग्नों, 2016)।

तालिकाः 3.13 पारिवारिक आय और जाति समूह के अनुसार प्रथम पीढ़ी के युवाओं का विश्लेषण

परिवारिक आय और जाति समूह के अनुसार प्रथम पीढ़ी के युवाओं का विश्लेषण	जाति			कुल
	सामान्य	अन्य पिछड़ा वर्ग	अनुसूचित जाति	
10000 से कम	5 (4.8)	24 (17.4)	44 (28.0)	73 (18.2)
10001 से 20000	51 (48.6)	87 (63.0)	99 (63.1)	237 (59.3)
20000 से अधिक	49 (46.6)	27 (19.6)	14 (8.9)	90 (22.5)
कुल	105 (100.0)	138 (100.0)	157 (100.0)	400 (100.0)

स्त्रोतः क्षेत्रीय कार्य

उपर्युक्त तालिका 3.13 से स्पष्ट होता है कि पारिवारिक आय और जाति समूह के अनुसार प्रथम पीढ़ी के युवाओं का वर्गीकरण करने से ज्ञात होता है कि जिन प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों की पारिवारिक आय 10000 से कम है उन विद्यार्थियों की संख्या 73 है जिनका प्रतिशत 18.2 है। और जिन विद्यार्थियों की पारिवारिक आय 10001 से 20000 तक है ऐसे विद्यार्थियों की संख्या 237 तथा उनका प्रतिशत 59.3 है। और जिन प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों की पारिवारिक आय 20000 से अधिक है उनकी संख्या 90 एवं प्रतिशत 22.5 है।

इसे जाति के आधार पर वर्गीकृत करने से ज्ञात होता है कि सामान्य वर्ग के जिन विद्यार्थियों की पारिवारिक आय 10000 से कम है उन विद्यार्थियों की संख्या 5 और प्रतिशत 4.8 है। 10001 से 20000 तक पारिवारिक आय वाले विद्यार्थियों की संख्या 51 तथा प्रतिशत 48.6 है। 20000 से अधिक पारिवारिक आय वाले विद्यार्थियों की संख्या 49 एवं प्रतिशत 46.6 है।

अन्य पिछड़े वर्ग के विद्यार्थियों के जिन विद्यार्थियों की पारिवारिक आय 10000 से कम है उन विद्यार्थियों की संख्या 24 और प्रतिशत 17.4 है। 10001 से 20000 तक पारिवारिक आय वाले विद्यार्थियों की संख्या 87 तथा प्रतिशत 63.0 है। 20000 से अधिक पारिवारिक आय वाले विद्यार्थियों की संख्या 27 एवं प्रतिशत 19.6 है।

अनुसूचित जाति वर्ग के विद्यार्थियों के जिन विद्यार्थियों की पारिवारिक आय 10000 से कम है उन विद्यार्थियों की संख्या 44 और प्रतिशत 28.0 है। 10001 से 20000 तक पारिवारिक आय वाले विद्यार्थियों की संख्या 99 तथा प्रतिशत 63.1 है। 20000 से अधिक पारिवारिक आय वाले विद्यार्थियों की संख्या 14 एवं प्रतिशत 8.9 है।

तालिकाः 3.14 पारिवारिक आय और लिंग समूह के अनुसार प्रथम पीढ़ी के युवाओं का विश्लेषण

पारिवारिक आय और लिंग समूह के अनुसार प्रथम पीढ़ी के युवाओं का विश्लेषण	लिंग		कुल
	महिला	पुरूष	
10000 से कम	46 (31.5)	27 (10.6)	73 (18.3)
10001 से 20000	86 (58.9)	151 (59.5)	237 (59.2)
20000 से अधिक	14 (9.6)	76 (29.9)	90 (22.5)
कुल	146 (100.0)	254 (100.0)	400 (100.0)

स्त्रोतः क्षेत्रीय कार्य

उपर्युक्त तालिका 3.14 से स्पष्ट होता है कि जिन प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों की पारिवारिक आय 10000 से कम है उन विद्यार्थियों की संख्या 73 और प्रतिशत 18.3 है। 10001 से 20000 तक पारिवारिक आय वाले विद्यार्थियों की संख्या 237 तथा प्रतिशत 59.2 है और 20000 से अधिक पारिवारिक आय वाले विद्यार्थियों की संख्या 90 एवं प्रतिशत 22.5 है।

लिंग के आधार पर वर्गीकृत करने से ज्ञात होता है कि जिन महिला प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों की पारिवारिक आय 10000 से कम है उन विद्यार्थियों की संख्या 46 और प्रतिशत 31.5 है। 10001 से 20000 तक पारिवारिक आय वाले महिला विद्यार्थियों की संख्या 86 तथा प्रतिशत 58.9 है। 20000 से अधिक पारिवारिक आय वाले महिला विद्यार्थियों की संख्या 14 एवं प्रतिशत 9.6 है।

जिन पुरूष प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों की पारिवारिक आय 10000 से कम है उन विद्यार्थियों की संख्या 27 और प्रतिशत 10.6 है। 10001 से 20000 तक पारिवारिक आय वाले पुरूष विद्यार्थियों की संख्या 151 तथा प्रतिशत 59.5 है। 20000 से अधिक पारिवारिक आय वाले महिला विद्यार्थियों की संख्या 76 एवं प्रतिशत 29.9 है।

तालिकाः 3.15 पारिवारिक आय और धार्मिक समूह के अनुसार प्रथम पीढ़ी के युवाओं का विश्लेषण

पारिवारिक आय और धार्मिक समूह के अनुसार प्रथम पीढ़ी के युवाओं का विश्लेषण	धार्मिक समूह			कुल
	हिन्दू	मुस्लिम	अन्य	
10000 से कम	49 (15.6)	24 (43.6)	0 (0.0)	73 (18.2)
10001 से 20000	202 (64.3)	22 (40.0)	13 (41.9)	237 (59.3)
20000 से अधिक	63 (20.1)	9 (16.4)	18 (58.1)	90 (22.5)
कुल	314 (100.0)	55 (100.0)	31 (100.0)	400 (100.0)

स्त्रोतः क्षेत्रीय कार्य

उपर्युक्त तालिका 3.15 से स्पष्ट होता है कि प्रति व्यक्ति पारिवारिक आय और धार्मिक समूह के अनुसार प्रथम पीढ़ी के युवाओं का वर्गीकरण करने से ज्ञात होता है कि जिन प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों की पारिवारिक आय 10000 से कम है उन विद्यार्थियों की संख्या 73 है जिनका प्रतिशत 18.2 है। और जिन विद्यार्थियों की पारिवारिक आय 10001 से 20000 तक है ऐसे विद्यार्थियों की संख्या 237 तथा उनका प्रतिशत 59.3 है। और जिन प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों की पारिवारिक आय 20000 से अधिक है उनकी संख्या 90 एवं प्रतिशत 22.5 है।

इसे धर्म के आधार पर वर्गीकृत करने से ज्ञात होता है कि हिन्दू धर्म के जिन विद्यार्थियों की पारिवारिक आय 10000 से कम है उन विद्यार्थियों की संख्या 49 और प्रतिशत 15.6 है। 10001 से 20000 तक पारिवारिक आय वाले विद्यार्थियों की संख्या 202 तथा प्रतिशत 64.3 है। 20000 से अधिक पारिवारिक आय वाले विद्यार्थियों की संख्या 63 एवं प्रतिशत 20.1 है।

मुस्लिम धर्म के विद्यार्थियों के जिन विद्यार्थियों की पारिवारिक आय 10000 से कम है उन विद्यार्थियों की संख्या 24 और प्रतिशत 43.6 है। 10001 से 20000 तक पारिवारिक आय वाले विद्यार्थियों की संख्या 22 तथा प्रतिशत 40.0 है। 20000 से अधिक पारिवारिक आय वाले विद्यार्थियों की संख्या 9 एवं प्रतिशत 16.4 है।

अन्य धर्म के जिन विद्यार्थियों की पारिवारिक आय 10000 से कम है उन विद्यार्थियों की संख्या 0 और प्रतिशत 0.0 है। 10001 से 20000 तक पारिवारिक आय वाले विद्यार्थियों की संख्या 13 तथा प्रतिशत 41.9 है। 20000 से अधिक पारिवारिक आय वाले विद्यार्थियों की संख्या 18 एवं प्रतिशत 58.1 है।

तालिकाः 3.16 पाठ्यक्रम और लिंग के आधार पर प्रथम पीढ़ी के युवाओं का विश्लेषण

पाठ्यक्रम और लिंग के अनुसार प्रथम पीढ़ी के युवाओं का विश्लेषण	लिंग		कुल
	महिला	पुरूष	
कला संकाय	96 (65.8)	145 (57.1)	241 (60.2)
विज्ञान संकाय	36 (24.7)	81 (31.9)	117 (29.2)
वाणिज्य संकाय	4 (2.7)	18 (7.1)	22 (5.6)
तकनीकी एवं प्रबन्धन	10 (6.8)	10 (3.9)	20 (5.0)
कुल	146 (100.0)	254 (100.0)	400 (100.0)

स्त्रोतः क्षेत्रीय कार्य

उपर्युक्त तालिका 3.16 से स्पष्ट होता है कि कला संकाय से उच्च शिक्षा प्राप्त करने वाले प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों की संख्या 241 तथा प्रतिशत 60.2 है। विज्ञान संकाय से सम्बन्धित विद्यार्थियों की संख्या 117 और प्रतिशत 29.2 है। वाणिज्य संकाय में पढ़ने वाले विद्यार्थियों की संख्या 22 और प्रतिशत 5.6 है। तकनीकी एवं प्रबन्धन संकाय से शिक्षा लेने वाले विद्यार्थियों की संख्या 20 तथा प्रतिशत 5.0 है।

लिंग के आधार पर वर्गीकृत करने से ज्ञात होता है कि कला संकाय से सम्बन्धित महिला प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों की संख्या 96 और प्रतिशत 65.8 है। विज्ञान संकाय से सम्बन्धित महिला विद्यार्थियों की संख्या 36 एवं प्रतिशत 24.7 है। वाणिज्य संकाय की महिला विद्यार्थियों की संख्या 4 तथा प्रतिशत 2.7 है। तकनीकी

एवं प्रबन्धन संकाय से सम्बन्धित महिला विद्यार्थियों की संख्याा 10 और प्रतिशत 6.8 है।

कला संकाय से सम्बन्धित पुरूष प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों की संख्या 145 और प्रतिशत 57.1 है। विज्ञान संकाय से सम्बन्धित पुरूष विद्यार्थियों की संख्या 81 एवं प्रतिशत 31.9 है। वाणिज्य संकाय की पुरूष विद्यार्थियों की संख्या 18 तथा प्रतिशत 7.1 है। तकनीकी एवं प्रबन्धन संकाय से सम्बन्धित पुरूष विद्यार्थियों की संख्याा 10 और प्रतिशत 3.9 है।

तालिका 3.17 पाठ्यक्रम और जाति के आधार पर प्रथम पीढ़ी के युवाओं का विश्लेषण

पाठ्यक्रम और जाति के अनुसार प्रथम पीढ़ी के युवाओं का विश्लेषण	जाति			कुल
	सामान्य	अन्य पिछड़ा वर्ग	अनुसूचित जाति	
कला संकाय	40 (38.1)	88 (63.7)	113 (72.0)	241 (60.2)
विज्ञान संकाय	53 (50.5)	36 (26.1)	28 (17.8)	117 (29.2)
वाणिज्य संकाय	2 (1.9)	7 (5.1)	13 (8.3)	22 (5.5)
तकनीकी एवं प्रबन्धन	10 (9.5)	7 (5.1)	3 (1.9)	20 (5.0)
कुल	105 (100.0)	138 (100.0)	157 (100.0)	400 (100.0)

स्त्रोतः क्षेत्रीय कार्य

उपर्युक्त तालिका 3.17 से स्पष्ट होता है कि प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों को पाठ्यक्रम और जाति को एक साथ वर्गीकृत करने से ज्ञात होता है कि सामान्य जाति के जो विद्यार्थी कला संकाय से सम्बन्धित है उनकी संख्या 40 और प्रतिशत 38.1 है। विज्ञान संकाय के विद्यार्थियों की संख्या 53 एवं प्रतिशत 50.5 है। वाणिज्य

संकाय के विद्यार्थियों की संख्या 2 तथा प्रतिशत 1.9 है। तकनीकी एवं प्रबन्धन संकाय के विद्यार्थियों की संख्या 10 और प्रतिशत 9.5 है।

अन्य पिछड़ा वर्ग के जो विद्यार्थी कला संकाय से सम्बन्धित है उनकी संख्या 88 और प्रतिशत 63.7 है। विज्ञान संकाय के विद्यार्थियों की संख्या 36 एवं प्रतिशत 26.1 है। वाणिज्य संकाय के विद्यार्थियों की संख्या 7 तथा प्रतिशत 5.1 है। तकनीकी एवं प्रबन्धन संकाय के विद्यार्थियों की संख्या 7 और प्रतिशत 5.1 है।

अनुसूचित जाति के जो विद्यार्थी कला संकाय से सम्बन्धित है उनकी संख्या 113 और प्रतिशत 72.0 है। विज्ञान संकाय के विद्यार्थियों की संख्या 28 एवं प्रतिशत 17.8 है। वाणिज्य संकाय के विद्यार्थियों की संख्या 13 तथा प्रतिशत 8.3 है। तकनीकी एवं प्रबन्धन संकाय के विद्यार्थियों की संख्या 3 और प्रतिशत 1.9 है।

तालिकाः 3.18 पाठ्यक्रम और धार्मिक समूह के आधार पर प्रथम पीढ़ी के युवाओं का विश्लेषण

पाठ्यक्रम और धार्मिक समूह के अनुसार प्रथम पीढ़ी के युवाओं का विश्लेषण	धार्मिक समूह			कुल
	हिन्दू	मुस्लिम	अन्य	
कला संकाय	180 (57.4)	48 (87.3)	13 (41.9)	241 (60.2)
विज्ञान संकाय	94 (29.9)	7 (12.7)	16 (51.6)	117 (29.2)
वाणिज्य संकाय	22 (7.0)	0 (0.0)	0 (0.0)	22 (5.5)
तकनीकी एवं प्रबन्धन	18 (5.7)	0 (0.0)	2 (6.5)	20 (5.0)
कुल	314 (100.0)	55 (100.0)	31 (100.0)	400 (100.0)

स्त्रोतः क्षेत्रीय कार्य

उपर्युक्त तालिका 3.18 से स्पष्ट होता है कि प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों को पाठ्यक्रम और धार्मिक समूह को एक साथ वर्गीकृत करने से ज्ञात होता है कि हिन्दू धर्म के जो विद्यार्थी कला संकाय से सम्बन्धित है उनकी संख्या 180 और प्रतिशत

57.4 है। विज्ञान संकाय के विद्यार्थियों की संख्या 94 एवं प्रतिशत 29.9 है। वाणिज्य संकाय के विद्यार्थियों की संख्या 22 तथा प्रतिशत 7.0 है। तकनीकी एवं प्रबन्धन संकाय के विद्यार्थियों की संख्या 18 और प्रतिशत 5.7 है।

मुस्लिम धर्म के जो विद्यार्थी कला संकाय से सम्बन्धित है उनकी संख्या 48 और प्रतिशत 87.3 है। विज्ञान संकाय के विद्यार्थियों की संख्या 7 एवं प्रतिशत 12.7 है। वाणिज्य संकाय के विद्यार्थियों की संख्या 0 तथा प्रतिशत 0.0 है। तकनीकी एवं प्रबन्धन संकाय के विद्यार्थियों की संख्या 0 और प्रतिशत 0.0 है।

अन्य धर्म के जो विद्यार्थी कला संकाय से सम्बन्धित है उनकी संख्या 13 और प्रतिशत 41.9 है। विज्ञान संकाय के विद्यार्थियों की संख्या 16 एवं प्रतिशत 51.6 है। वाणिज्य संकाय के विद्यार्थियों की संख्या 0 तथा प्रतिशत 0.0 है। तकनीकी एवं प्रबन्धन संकाय के विद्यार्थियों की संख्या 2 और प्रतिशत 6.5 है।

इस अध्याय में प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों की जनसांख्यिकीय और सामाजिक–आर्थिक पृष्ठभूमि का वर्णन किया गया है। अध्ययन के लिए चुने गए 400 प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों में से 370 विद्यार्थियों से प्रश्नावली को भरवाया गया। इस अध्याय में प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों की पृष्ठभूमि के बारे में जानकारी दी गई है। जाति समूह, धर्म, पिता का शैक्षिक स्तर, माता का शैक्षिक स्तर, पिता का व्यवसाय, माता का व्यवसाय, पाठ्यक्रम, पारिवारिक आय और सामाजिक–आर्थिक स्थिति। सामाजिक वैयक्तिक स्थिति को तीन चर का उपयोग करके मापा गया है। ये हैं पिता का शैक्षिक स्तर, पिता का व्यवसाय और पारिवारिक आय। अन्य सामाजिक श्रेणी की तुलना में अन्य पिछड़ा वर्ग, अनुसूचित जाति और मुस्लिम वर्ग के विद्यार्थियों की संख्या कम सामाजिक–आर्थिक स्थिति से संबधित है। लिंग के अनुसार शैक्षिक स्तर बहुत भिन्न होता है। अनुसूचित जाति के विद्यार्थी शैक्षिक प्राप्ति के मामले में अन्य पिछड़ा वर्ग के विद्यार्थी और सामान्य जाति के विद्यार्थियों से पीछे होते हैं। सामाजिक–आर्थिक स्थिति शैक्षिक प्राप्ति में अधिक प्रभावशाली प्रतीत होती है। भारतीय समाज के अध्ययन में जाति और धर्म को पूरी तरह से नजर अंदाज नहीं किया जा सकता है।

अध्याय 4

प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों की अध्ययन कक्ष के अन्दर एवं बाहर परिसर से सम्बन्धित चुनौतियाँ

अध्याय 4

प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों की अध्ययन कक्ष के अन्दर एवं बाहर परिसर से सम्बन्धित चुनौतियाँ

शिक्षा राष्ट्र निर्माण की आधारशिला है यह समाज और संस्कृति को गतिशील बनाने एवं विकास की अनिवार्य कड़ी है। यह समाज में लोगों के अन्दर नैतिक मूल्यों एवं संस्कृति का विकास करती है। जिससे मनुष्य में मनसा, वाचा, कर्मणा का भाव जागृत होता है। फलतः समाज का चतुर्मुखी विकास सम्भव होता है। ऐसे में राष्ट्र के प्रत्येक प्राणी को शिक्षित करना आवश्यक ही नहीं अनिवार्य एवं महत्वपूर्ण भी है।

शिक्षा का प्रमुख कार्य व्यक्ति का सर्वांगीण विकास करना होता है। सर्वांगीण विकास का अर्थ व्यक्ति के भौतिक, बौद्धिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, नैतिक एवं अध्यात्मिक विकास से सम्बन्धित होता है। शिक्षक को शिक्षा प्रणाली की रीढ़ की हड्डी माना जाता है। शिक्षक व्यक्ति के सर्वांगीण विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। मानव में कौशल का विकास एवं ज्ञान अर्जन में शिक्षकों का महत्वपूर्ण योगदान होता है। अतः शिक्षक के द्वारा शिक्षा प्रणाली में प्रभावी ढंग से सुधार एवं उन्नयन किया जा सकता है।

प्रस्तुत अध्याय में प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों को अध्ययन कक्ष में एवं अध्ययन कक्ष के बाहर विश्वविद्यालय परिसर में होने वाली चुनौतियों का पता लगाने का प्रयास किया गया है जिसमें पाठ्यक्रम सामग्री, शिक्षण विधि, नियमित उपस्थिति, मूल्यांकन और सह–पाठ्यक्रम गतिविधियों में भागीदारी से सम्बन्धित चुनौतियाँ सम्मिलित है। साथ ही शिक्षकों के साथ होने वाली अन्तःक्रिया में आने वाली चुनौतियों को भी शामिल किया गया है। प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थी को 'वंचित विद्यार्थी भी कहा जाता है जो शैक्षिक और आर्थिक दृष्टिकोण से वंचित होते हैं, उन्हें भाषाई रूप से अभावग्रस्त, अकादमिक रूप से असफल और सामाजिक और आर्थिक रूप

से पिछड़ा माना जाता है। प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों की खराब शैक्षणिक पृष्ठभूमि के कारण, इन विद्यार्थियों को अक्सर सुस्त या पिछड़ा हुआ चिन्हित किया जाता है।

शिक्षक और प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थी के मध्य अन्तःक्रिया

सांस्कृतिक और सामाजिक पूंजी का एक पहलू शिक्षक और विद्यार्थियों के साथ बातचीत करने की क्षमता या इच्छा को जोड़ता है। एंगल और टिंटो (2008) का तर्क है कि विश्वविद्यालयों को विद्यार्थियों को अध्ययन कक्ष में होने वाली गतिविधियों में भागीदारी करने के लिए प्रोत्साहित करने की आवश्यकता है, और अन्य शोधकर्ता प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों को उच्च शिक्षा के महत्व के बारे में अवगत करना महत्वपूर्ण मानते हैं (उदाहरण के लिए, टिंटो, 1993; एंगल एण्ड टिंटो, 2008; पास्करेला एट एल., 2004; डेविस, 2010; टेरेंजिनी एट अल., 1996)। सोरिया और स्टबलटन (2012) शिक्षक और विद्यार्थियों के बीच की अन्तःक्रिया और विद्यार्थियों की सफलता के बीच की कड़ी के बारे में और स्पष्ट करते हुए कहते हैंः ''जिस हद तक प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थी अकादमिक रूप से विश्वविद्यालय के अध्ययन कक्ष में लगे रहते हैं उससे उनका शैक्षणिक–बौद्धिक विकास सकारात्मक रूप से प्रभावित होता है।

शिक्षकों के साथ अन्तःक्रिया करना प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों के लिए चुनौतीपूर्ण है (टिंटो, 1993; एंगल एण्ड टिंटो, 2008; डेविस, 2010)। कॉफमैन (2011), उदाहरण के लिए, दावा करते है कि, ''वर्किंग क्लास के प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों को शिक्षकों से मिलने और फेस–टू–फेस अन्तःक्रिया करने के लिए प्रोत्साहित करने की आवश्यकता है। टिंटो (1993) ने अपने अध्ययन में पाया कि शिक्षकों के साथ अधिक संपर्क रखने से विद्यार्थियों को लाभ होता है, न केवल सामाजिक रूप से, बल्कि शैक्षणिक रूप से भी। शिक्षाविदों का मानना है कि प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों को विशेष रूप से यह महसूस करने की आवश्यकता है कि वे अध्ययन कक्ष में शामिल हैं (डेविस, 2010)। शिक्षक विद्यार्थियों के साथ बातचीत शुरू करते हैं, और प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों को उच्च शिक्षा पूर्ण करने हेतु प्रोत्साहित करते हैं और उच्च शिक्षा संस्थान भी उनका समर्थन करते हैं।

कॉक–एस्ठर (2010) एक कार्यक्रम का वर्णन करता है जिसमें विश्वविद्यालय के विद्यार्थी कॉलेज के प्रशिक्षकों को एक शैक्षणिक सलाहकार के रूप में उपयोग करते हैं। विद्यार्थियों को सशक्त होने और उन्हें शिक्षकों के साथ बातचीत करने के तरीके को सीखने के लिए शिक्षकों से निरंतर बातचीत करने की आवश्यकता होती है।

प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों को अक्सर शिक्षकों के साथ बातचीत करने के लिए प्रोत्साहित करने की आवश्यकता होती है, इसी तरह, उन्हें अन्य विद्यार्थियों के साथ बातचीत करने के लिए प्रोत्साहित करने की आवश्यकता होती है। जैसा कि पहले चर्चा की गई है कि प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों का पाठ्यक्रम एवं अध्ययन कक्ष में होने वाली गतिविधियों और अध्ययन समूहों में भागादीरी का स्तर निम्न होता है, हालांकि शोध से पता चलता है कि वे उनसे अधिक लाभान्वित होते हैं (पास्करेला एट अल., 2004)। डेविस (2010) और कॉफमैन (2011) ने प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों को समूहों में भाग लेने से उनमें सुधार करने का सुझाव दिया है।

शिक्षण समुदाय विद्यार्थियों को संस्था से जुड़ा हुआ महसूस करने में मदद करता हैं (एंगल एंड टिंटो, 1993)। कुछ मामलों में, प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थी ऐसे समुदायों द्वारा बाधित होते हैं, जिनसे वे कभी–कभी गैर–प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों से अलग–थलग पड़ जाते हैं, और इस तरह विश्वविद्यालय समुदाय के साथ कम एकीकृत हो पाते हैं (लोवी–हार्ट एंड पाचेको, 2011)।

अनुसंधान से पता चलता है कि शिक्षक और विद्यार्थी के मध्य अन्तःक्रिया विद्यार्थियों के लिए कई सकारात्मक परिणामों के साथ संबन्धित है, जिसमें विद्यार्थियों की शैक्षणिक उपलब्धि, उनके विश्वविद्यालय के अनुभव के साथ संतुष्टि, बौद्धिक विकास और विश्वविद्यालय में बने रहने की संभावना शामिल है (लैम्पपोर्ट, 1993)। हालांकि विद्यार्थियों के काम और भागीदारी के क्षेत्र में व्यापक शोध 1960 के दशक से मौजूद है (लैम्पपोर्ट, 1993)। इसके अलावा, पहले के शोध ने यह जांच नहीं की कि शिक्षक और विद्यार्थियों की बातचीत विभिन्न पृष्ठभूमि के विद्यार्थियों को अलग–अलग तरीकों से कैसे प्रभावित करती है।

जबकि 1972 के दशक में कई अध्ययनों ने शिक्षक और विद्यार्थी के जुड़ाव के परिणामों की खोज की, 1990 के दशक में अधिक अनुभवजन्य अध्ययन हुए हैं जिन्होंने न केवल शिक्षक और विद्यार्थी के संपर्क सहित विद्यार्थियों की भागीदारी के विशिष्ट पहलुओं से प्राप्त परिणामों की जांच की, बल्कि विद्यार्थियों के असंतुष्ट समूहों की भी जांच की (किम एंड सैक्स, 2009)। इन अध्ययनों से संकेत मिलता है कि अलग–अलग पृष्ठभूमि और अलग–अलग विश्वविद्यालय के वातावरण के विद्यार्थियों को प्रशिक्षकों के साथ बातचीत करने से लाभ होता हैं।

रेखाचित्र 4.1. प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों के अध्ययन कक्ष में होने वाली चर्चा में शामिल होने के आधार पर विश्लेषण

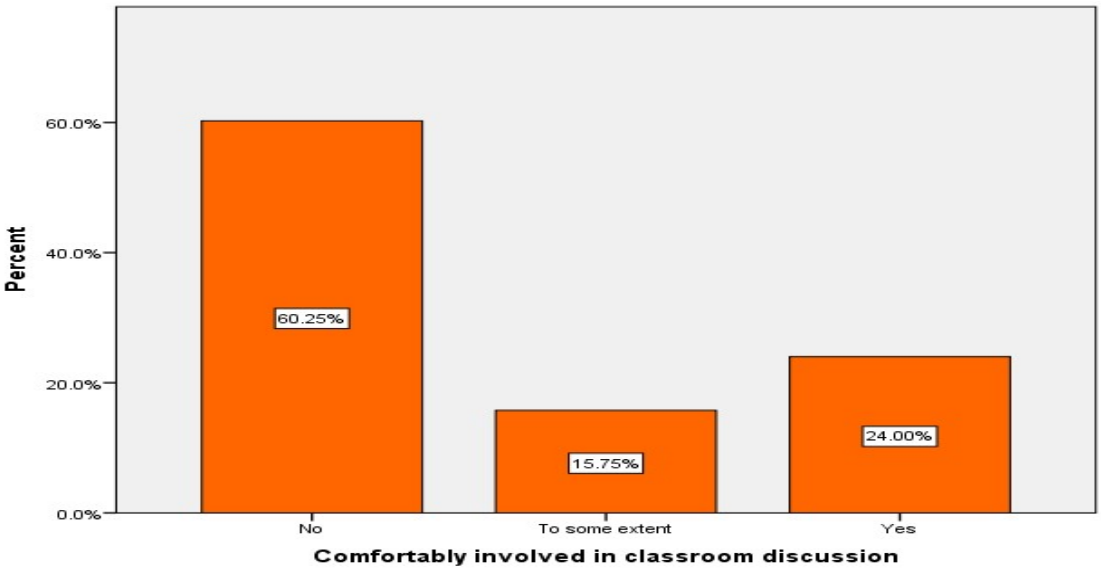

स्त्रोतः क्षेत्रीय कार्य

उपर्युक्त 4.1 रेखाचित्र से प्रदर्शित होता है कि जिन प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों की अध्ययन कक्ष में होने वाली चर्चा में भागीदारी नहीं रहती है उनका प्रतिशत 60.25 है। जिन विद्यार्थियों की कुछ हद तक भागीदारी रहती है उनका प्रतिशत 15.75 है। और जिनकी भागीदारी ज्यादा रहती हैं उनका प्रतिशत 24.00 है।

प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों की अध्ययन कक्ष में होने वाली चर्चा में भागीदारी कम होती है। कम भागीदारी के कारण प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थी अध्ययन कक्ष में होने वाली चर्चा में आसानी से भाग नहीं ले पाते हैं। और जो विद्यार्थी कुछ

हद तक भागदारी करते हैं वे शीघ्र अनुभव करने लग जाते हैं कि उनके ज्ञान में कुछ कमी है। इन प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों में से भी मुठठी भर ऐसे विद्यार्थी है जिनकी अध्ययन कक्ष में होने वाली चर्चा में पूर्ण रूप से भागीदारी रहती है।

शिक्षक और विद्यार्थी की अन्तःक्रिया में विभिन्न प्रकार के संचार और संपर्क शामिल है, जिसमें अध्ययन कक्ष के बाहर अनौपचारिक और औपचारिक बैठके शामिल हैं, जैसे पुस्तकालय या कार्यालय समय में बातचीत, साथ ही पाठ्यक्रम से संबंधित विषयों, कैरियर योजनाओं के बारे में चर्चा, शैक्षिक मुद्दे या व्यक्तिगत विषय आादि। अध्ययनों में प्रायः औपचारिक और अनौपचारिक अन्तःक्रिया के साथ कई अन्य प्रकार की शिक्षक और विद्यार्थियों की अन्तःक्रिया शामिल है (जैसे टिंटो, 1993; कुह और हू, (2001); किम एंड सैक्स, 2009; सोरिया एंड स्टबलटन, 2012), जबकि कुछ अध्ययन केवल अध्ययन कक्ष के बाहर की बातचीत पर ध्यान केन्द्रित करते हैं (जैसे पास्करेला एंड टेरेंजिनी, 1978; कोलियर और मॉर्गन, 2008)। शिक्षक के साथ पाठ्यक्रम से संबंधित सामाग्री के बारे में चर्चा यह दर्शाती है कि प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों में अवधारणा की समझ का आभाव होता है। किन्तु शिक्षकों से विद्यार्थियों के द्वारा स्पष्टीकरण प्राप्त करने से विद्यार्थियों को लाभ होता है जिससे उन्हें उच्च शिक्षा में अच्छे अंक प्राप्त होते हैं।

जैसा कि उपरोक्त विवरण में बताया गया कि शिक्षक और विद्यार्थियों के मध्य औपचारिक और अनौपचारिक रूप से अन्तःक्रिया होती है किन्तु प्रस्तुत शोध में पाया गया कि प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थी शिक्षकों से अन्तःक्रिया करने में संकोच महसूस करते थे।

शैक्षणिक तैयारी और समर्थन

एंगल और टिंटो (2008) का सुझाव है कि प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों को विश्वविद्यालय में उच्च शिक्षा प्राप्त करने और सफल होने के बारे में अधिक जानकारी प्राप्त करने की आवश्यकता है। हाई स्कूल से विश्वविद्यालय में स्थानान्तरण करने में होने वाली कठिनाईयों को ब्रिज कार्यक्रमों के माध्यम से कम किया जा सकता है (एंगल एंड टिंटो, 2008; टेरेंजिनी एट अल., 1996; मैकरॉन एंड इंकसल, 2006)।

उम्मीदें

जैसा कि पहले चर्चा की गई है, कि प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थी विश्वविद्यालय को मुख्य रूप से या विशेष रूप से एक अच्छी नौकरी के मार्ग के रूप में देखते हैं। बोक (2008) के अनुसार विश्वविद्यालय प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों को स्नातक होने के बाद जीवन के लिए तैयारी करने के लिए बाध्य करता है जिससे विद्यार्थियों का आगे तक का विस्तार हो सके।

तालिका 4.1 प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों के द्वारा वर्तमान समय में नौकरी पाने के लिए उच्च शिक्षा महत्वपूर्ण है इससे सहमत होने के आधार पर विश्लेषण

प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों के द्वारा वर्तमान समय में नौकरी पाने के लिए उच्च शिक्षा महत्वपूर्ण है इससे सहमत होने के आधार पर विश्लेषण	धार्मिक समूह			कुल
	हिन्दू	मुस्लिम	अन्य	
नहीं	9 (2.8)	3 (5.5)	2 (6.5)	14 (3.5)
कुछ हद तक	106 (33.8)	13 (23.6)	18 (58.1)	137 (34.2)
हाँ	199 (63.4)	39 (70.9)	11 (35.4)	249 (62.3)
कुल	314 (100.0)	55 (100.0)	31 (100.0)	400 (100.0)

स्त्रोतः क्षेत्रीय कार्य

उपर्युक्त तालिका 4.1 से स्पष्ट होता है कि जो प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थी यह मानते हैं कि वर्तमान समय में नौकरी प्राप्त करने के लिए उच्च शिक्षा महत्वपूर्ण है ऐसे विद्यार्थियों की संख्या 249 एवं इनका प्रतिशत 62.3 है और जो कुछ हद तक सहमत है उनकी संख्या 137 तथा उनका प्रतिशत 34.2 है और जो सहमत नहीं है उनकी संख्या 14 और प्रतिशत 3.5 है।

धर्म के अनुसार वर्गीकरण करने से ज्ञात होता है कि हिन्दू धर्म के विद्यार्थी जो इस बात से सहमत हैं कि नौकरी प्राप्त करने के लिए उच्च शिक्षा महत्वपूर्ण है उन विद्यार्थियों की संख्या 199 एवं प्रतिशत 63.4 है। जो कुछ हद तक सहमत है

उनकी संख्या 106 और प्रतिशत 33.8 है। और जो इससे सहमत नहीं है उनकी संख्या 9 तथा प्रतिशत 2.8 है।

इसी प्रकार से मुस्लिम धर्म के विद्यार्थी जो यह मानते हैं कि नौकरी प्राप्त करने के लिए उच्च शिक्षा का होना अनिवार्य है ऐसे विद्यार्थियों की संख्या 39 और प्रतिशत 70.9 है। जो कुछ हद तक सहमत है उनकी संख्या 13 तथा प्रतिशत 23.6 है। और जो सहमत नहीं है उनकी संख्या 3 एवं प्रतिशत 5.5 है।

अन्य धर्मों से सम्बन्धित विद्यार्थी जिनका मानना यह है कि नौकरी प्राप्त करने के लिए उच्च शिक्षा आवश्यक है इससे सहमत होने वाले विद्यार्थियों की संख्या 11 तथा प्रतिशत 35.4 है। कुछ हद तक सहमत होने वाले विद्यार्थियों की संख्या 18 और प्रतिशत 58.1 है और जो सहमत नही हैं उनकी संख्या 2 एवं प्रतिशत 6.5 है।

प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों को सफल होने के लिए प्रेरित किया गया और उन्होंने स्वयं भी यह महसूस किया कि नौकरी एवं अन्य लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए भी उच्च शिक्षा आवश्यक है।

बोक (2006) का तर्क है कि विश्वविद्यालयों को विद्यार्थियों को तैयार करने के लिए संचार, महत्वपूर्ण सोच, नैतिक तर्क, नागरिकता, विविधता के साथ रहना, वैश्विक समाज में रहना इत्यादि की आवश्यकता होती है। इस प्रकार से सांस्कृतिक और सामाजिक पूंजी वाले विद्यार्थी कुछ पाठ्यक्रमों को समझ पाते हैं, जबकि उसी पूंजी के बिना प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थी स्वयं को अलग–थलग महसूस करते हैं, या यह अनुभव करता है कि वह उच्च शिक्षा में समय और धन बर्बाद कर रहा है। एक उत्तरदाता ने बताया:

> *मुझे लगता है कि यह जगह मेरे जैसे विद्यार्थियों के लिए नहीं है मैं चिन्तित हूँ कि यहाँ पढ़ने के बाद मुझे कुछ फायदा होगा या नही। एक अन्य उत्तरदाता ने बताया: मैं यहाँ बहुत दिनों तक नही टिक पाऊँगा यह जगह मेरे लिए बिल्कुल अलग हैं।*

प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थी, गैर प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों की तुलना में विश्वविद्यालय के उद्देश्यों को अलग–अलग रूप में देखते हैं और संभवतः उच्च शैक्षिणक संस्थानों के प्रति उनका दृष्टिकोण भी भिन्न होता है, यह विश्वविद्यालयों

के लिए उपयोगी हो सकता है कि विश्वविद्यालय वास्तव में है क्या इसके बारे में चर्चा करने के लिए प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों को प्रोत्साहित करें। प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों की जड़ता उन्हें उच्च शिक्षा के वातावरण को आत्मसात करने में बाधक होती है। यह जड़ता उन्हें अध्ययन कक्ष के अन्दर एवं बाहर परिसर में अपने आपको ढालने में विफल बनाती है। किन्तु इसके लिए उन्हें दोषी मानना ठीक नहीं है क्योंकि उन्हें उच्च शिक्षा प्रणाली से कोई समर्थन नहीं प्राप्त होता है। उच्च शिक्षा प्रणाली केवल मध्ययम एवं उच्च वर्ग के विद्यार्थियों के समर्थन में रहता है। प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थी न तो अपनी पहचान का प्रदर्शन कर पाते हैं न ही अपने आपकों प्रभावी समूह का हिस्सा बना पाते हैं। फलस्वरूप वे प्रभावी समूह से अलगाव महसूस करते हैं और अपने आपको उच्च शिक्षा के परिवेश में समायोजित करने में विफल रहते हैं।

उनके पास कम अंक होते हैं और उनके द्वारा अधिक बार पाठ्यक्रमों को छोड़ने की संभावना रहती है (चेन एंड कैरोल, 2005)।

तालिका 4.2 प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों के द्वारा वर्तमान समय में नौकरी पाने के लिए उचित कोर्स का चुनाव आवश्यक है इससे सहमत होने के आधार पर विश्लेषण

प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों के द्वारा वर्तमान समय में नौकरी पाने के लिए उचित कोर्स का चुनाव आवश्यक है इससे सहमत होने के आधार पर विश्लेषण	धार्मिक समूह			कुल
	हिन्दू	मुस्लिम	अन्य	
नहीं	10 (3.2)	0 (0.0)	0 (0.0)	10 (2.5)
कुछ हद तक	49 (15.6)	5 (9.1)	14 (45.2)	68 (17.0)
हाँ	255 (81.2)	50 (90.9)	17 (54.8)	322 (80.5)
कुल	314 (100.0)	55 (100.0)	31 (100.0)	400 (100.0)

स्त्रोतः क्षेत्रीय कार्य

उपर्युक्त तालिका 4.2 से स्पष्ट होता है कि प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थी जो यह मानते हैं कि नौकरी प्राप्त करने के लिए उपयुक्त कोर्स का चुनाव अनिवार्य है ऐसे

विद्यार्थियों की संख्या 322 और प्रतिशत 80.5 है कुछ हद तक उचित कोर्स के चुनाव को अनिवार्य मानने वाले विद्यार्थियों की संख्या 68 तथा प्रतिशत 17.0 है। और जो नौकरी प्राप्त करने के लिए उचित कोर्स के चुनाव को अनिवार्य नहीं मानते हैं उनकी संख्या 10 एवं प्रतिशत 2.5 है।

प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों का धर्म के आधार पर वर्गीकरण करने से ज्ञात होता है कि हिन्दू धर्म के विद्यार्थी जो यह मानते हैं कि नौकरी प्राप्त करने के लिए उचित कोर्स का चुनाव अनिवार्य है ऐसे विद्यार्थियों की संख्या 255 तथा प्रतिशत 81.2 है और जो इससे कुछ हद तक सहमत है उनकी संख्या 49 और प्रतिशत 15.6 है और जो यह नहीं मानते हैं उनकी संख्या 10 एवं प्रतिशत 3.2 है।

मुस्लिम धर्म के विद्यार्थियों जो इस बात से सहमत है कि नौकरी प्राप्त करने के लिए उपयुक्त कोर्स का चुनाव अनिवार्य है ऐसे विद्यार्थियों की संख्या 50 और प्रतिशत 90.9 है। जो कुछ हद तक सहमत है उनकी संख्या 5 तथा प्रतिशत 9.1 हैं। जो सहमत नही है उनकी संख्या 0 और प्रतिशत भी 0.0 है।

इस प्रकार से अन्य धर्म के विद्यार्थी जो यह मानते हैं कि उपयुक्त कोर्स का चुनाव किया जाना आवश्यक है उनकी संख्या 17 तथा प्रतिशत 54.8 है और कुछ हद तक सहमत होने वाले विद्यार्थियों की संख्या 14 और प्रतिशत 45.2 है। और न सहमत होने वाले विद्यार्थियों की संख्या संख्या भी 0 है और उनका प्रतिशत भी 0.0 है।

संकाय के चुनाव के सम्बन्ध में एक उत्तदाता का अनुभवः

> *मुझे सभी विषयों या संकाय के बारे में विशेष जानकारी नहीं थी। मेरी रूचि तकनीकी संकाय में थी किन्तु उसमें अधिक प्रवेश शुल्क होने के कारण प्रवेश नहीं ले सका। सामाजिक विज्ञान संकाय में प्रवेश शुल्क कम होने के कारण ही मैनें इस संकाय का चुनाव किया।*

इससे यह पता चलता है कि आर्थिक तंगी प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों के लिए सबसे बड़ी चुनौती है। कुछ प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थी ऐसे हैं जिन्होंने स्वयं की

इच्छा से विश्वविद्यालय में प्रवेश नहीं लिया ऐसे विद्यार्थी केवल विश्वविद्यालय शिक्षा को पूर्ण करना चाहते हैं परिवार के लिए वे अधिकांशतः कला संकाय और ललित कला जैसे पाठ्यक्रमों का चयन करते हैं। किन्तु कुछ ऐसे भी प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थी हैं जो अपने लिए एवं अपने परिवार के लिए कुछ करना चाहते हैं आर्थिक सहायता करने के लिए, और परिवार को सम्मान दिलाने के लिए उच्च शिक्षा प्राप्त करना चाहते हैं इसके लिए वे ऐसे पाठ्यक्रमों का चयन करते जिनसे उन्हें उच्च भुगतान वाली नौकरियां प्राप्त करने की संभावना होती है (टेरेंजिनी एट अल., 1996)।

आदर्श शिक्षक को मनुष्य का निर्माता, राष्ट्र का निर्माता, शिक्षा पद्धति की आधाशिला एवं समाज को गति प्रदान करने वाला ब्रह्मास्त्र माना गया है। साधारणतः ऐसे अध्यापकों में बालकों को समझने की शक्ति, उनके साथ उचित रूप से कार्य करने की क्षमता, शिक्षण योग्यता, कार्य करने की कुशलता, दृढ़ इच्छा शक्ति, सहकारिता आदि गुणों की अपेक्षा की जाती है। ऐसे गुण सामान्यतः प्रत्येक अध्यापक में नहीं मिलते हैं और न शिक्षण प्रत्येक व्यक्ति का कार्य है। भारतीय समाज में अध्यापक को संस्कृति का आधार स्तम्भ माना गया है। वह देश एवं देश के भावी कर्णधार बालकों के भविष्य का निर्माता भी है, इसलिए उन्हें ईश्वर से ऊँचा स्थान प्रदान किया गया है।

विश्वविद्यालय संरचना में अध्यापक वह आधारभूत अंग है अध्यापक को शिक्षण प्रगति का मेरूदण्ड भी कहा जाता है। अध्यापक के स्वरूप का संकेत करते हुए डॉ0 जाकिर हुसैन का कहना है कि अध्यापक समाज के एक ऐसे वर्ग का व्यक्ति होता है जिसकी प्रमुख विशेषता अपने अन्य साथियों के प्रति प्यार, उनके साथ एकता की अनुभूति, उनकी सहायता करने की तत्परता, अपने को उनका समझना तथा अपने को उनके लिए समर्पित करना है। अध्यापक आदेश देने या आधिपत्य स्थापित करने के लिए नहीं होता है अपितु सहयोग और सेवा के लिए होता है। यह विश्वास तथा प्यार के साथ नये स्वरूप एवं प्रतिमान की स्थापना करता है। वह उन मूल्यों का संरक्षक होता है जिन्हें मानव संस्कृति का सर्वोत्तम

मूल्य कहा जाता है। वह अपने व्यक्तित्व के जादू के द्वारा उन आदर्शात्मक मूल्यों को अपने छात्रों में संप्रेषित करता है। अध्यापक के स्वरूप एवं विशेषताओं के सन्दर्भ में डॉ0 राधाकृष्णन् का कहना है कि हमारे देश में अध्यापक को आचार्य एवं गुरू, कहा गया है। ये सम्बोधन अध्यापक में उन विशेष गुणों को निर्देशित करते हैं जो इनके अर्थ में निहित है। आचार्य का तात्पर्य होता है अपने जीवन में आदर्श आचरण की प्रतिष्ठा करने वाला। इस प्रकार अध्यापक अपने चरित्र और व्यवहार में सदाचार की स्थापना कर दूसरों के समक्ष आदर्श प्रस्तुत करता है। अध्यापकों के व्यक्तित्व का यह आदर्श उच्च शिक्षा में बहुत कम दिखाई देता है और यह दिखता भी है तो केवल प्रभावी समूह के विद्यार्थियों के लिए दिखता है। प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों के लिए यह किसी भी तरह से प्रकार्यात्मक नहीं है।

शिक्षा प्रणाली में प्रभावी ढंग से सुधार एवं उन्नयन के लिए शिक्षक का केवल अपने विषय का ज्ञाता होना ही आवश्यक नहीं है बल्कि उन्हें एक कुशल मानसिकता वाला होना भी आवश्यक है। शिक्षक की योग्यता में कार्यकुशलता के साथ–साथ उनकी जितनी प्रतिबद्धता होगी, उतनी ही अधिक योग्यता का उनमें उन्नयन होगा तथा उसकी कार्यकुशलता में वृद्धि होगी। इस प्रकार प्रतिबद्धता, कार्यकुशलता और योग्यता तीनों से परस्पर सम्बन्धित होकर किसी भी कार्य को सुचारू रूप से करने की प्रेरणा देते है। शिक्षा के गुणात्मक उन्नयन में शिक्षकों की प्रतिबद्धता की महत्वपूर्ण भूमिका होती है तथा एक प्रतिबद्ध शिक्षक ही छात्रों के लिए आदर्श एवं प्रेरणादायी स्त्रोत सिद्ध हो सकता है।

प्रस्तुत अध्याय में अध्ययन कक्ष में होने वाली समस्याओं को प्रस्तुत किया गया है प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों को अध्ययन कक्ष में अंग्रेजी माध्यम की भी समस्या होती है। अंग्रेजी माध्यम का उचित ज्ञान न होने के कारण वे अपने पाठय्क्रम को समझने में स्वयं को सक्षम नहीं पाते। तथा शिक्षक द्वारा पढ़ाये गए पाठय्क्रम को समझने में तथा अध्ययन कक्ष में समायोजन स्थापित करने में प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों को समय लगता है।

शोध अध्ययन में यह भी पाया गया कि प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों का गृहकार्य अन्य विद्यार्थियों की तुलना में पिछड़ा होता है और पारिवारिक वातावरण उपयुक्त न होने के कारण विद्यार्थी गृहकार्य को उचित रूप में पूर्ण नहीं कर पाते हैं। गृहकार्य में पिछड़ने के वजह से प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों की अध्ययन कक्ष में होने वाली गतिविधियों में भागीदारी कम हो जाती है। प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों को अध्ययन कक्ष में होने वाली गतिविधियों को जानने और समझने में भी समय लगता है, इसलिए शिक्षकों को प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों पर अधिक ध्यान केन्द्रित करने की आवश्यकता है, जबकि ऐसा नहीं होता है।

अध्ययन में पाया गया कि घर पर अभिभावकों में शिक्षा जागरूकता की कमी के कारण प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों को अपना गृहाकार्य पूर्ण करने में परेशानी होती है। प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों के द्वारा जिन चुनौतियों का सामना किया जाता है उनका संचालन विद्यार्थियों के आत्मविश्वास के सन्दर्भ में किया गया है। प्रायः हम देखते है कि प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों में आत्मविश्वास की कमी होती है वे अपने बातों को या समस्याओं को शिक्षकों के समक्ष पूर्ण आत्मविश्वास के साथ प्रदर्शित करने में स्वयं को समर्थ नहीं पाते हैं। प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों के सामने आने वाली चुनौतियों के पीछे जिम्मेदार अन्य कारक जैसे–विश्वविद्यालय से दूरी, सहकर्मियों या शिक्षकों द्वारा बहिष्करण का कोई भी स्वरूप, पाठ्यक्रम सामग्री, शिक्षण विधि, सह पाठ्यचर्चा से सम्बन्धित गतिविधियों में भागीदारी इत्यादि है। अंग्रेजी विषय एवं भाषा प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों के लिए एक बड़ी चुनौती है।

प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों को अध्ययन का माध्यम विशेष रूप से प्रभावित करता है क्योंकि प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों की पृष्ठभूमि ग्रामीण क्षेत्र से सम्बन्धित होती है। विद्यार्थी अपनी उत्तर पुस्तिका में हिन्दी भाषा में ही लिखते हैं। अंग्रेजी भाषा पर मजबूत पकड़ न होने के कारण प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थी परीक्षाओं में भी हिन्दी में ही लिखना पंसद करते है। क्योंकि रोजगार के इस समय में मेरिट में आना भी एक बड़ी चुनौती है यदि वे अंग्रेजी भाषा में लिखने का प्रयास भी करते हैं, तो परीक्षाओं में अन्य विद्यार्थियों की तुलना में वे कम अंक अर्जित कर पाते हैं। एक उत्तरदाता ने बतायाः

प्रथम पीढ़ी के कुछ विद्यार्थियों ने यह अनुभव किया कि अध्ययन कक्ष में पढ़ाये जाने वाले कुछ विषय मेरे लिए कठिन हो रहे थे विशेष रूप से अंग्रेजी विषय।

एक अन्य उत्तर दाता ने बतायाः

अध्यापक के व्याख्यान एवं बोलने की शैली [आरोहण] बहुत अलग होते हैं जो मुझे समझ नही आते हैं।

प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों को अध्ययन कक्ष में यदि कोई शिक्षक अंग्रेजी भाषा में पढ़ाता है तो विद्यार्थियों को समझने में कठिनाई होती है और वे अध्ययन कक्ष में उचित प्रदर्शन करने में सफल नहीं होते हैं जिसके परिणामस्वरूप वे चिंता से ग्रस्त रहते हैं। विद्यार्थियों का आंकलन करने के लिए व्यापक और निरंतर मूल्यांकन दृष्टिकोण की आवश्यकता है जो परीक्षाओं के प्रति बच्चों की चिंता को कम करने में भी मदद करेगा।

जब प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थी प्रयोगशाला में कार्य करते हैं तो वहाँ भी उन्हें अनेक प्रकार की कठिनाईयों का सामना करना पड़ता है। शैक्षणिक एकीकरण के सन्दर्भ में प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थी कम समय अध्ययन करते हैं और अध्ययन कक्ष के अन्दर और बाहर शिक्षकों एवं अन्य विद्यार्थियों के साथ बातचीत करने में कम समय व्यतीत करते हैं। जैसा कि पहले उल्लेख किया गया है कि प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थी अधिकांशतः परिसर के बाहर रहते है, काम करते हैं अंशकालिक रूप से और अनिरन्तर कक्षायें करते हैं जबकि पूर्णकालिक नौकरी के दौरान कक्षाएँ लेने की सम्भावनायें कम होती हैं। प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थी कक्षा में भाग लेने के अलावा अक्सर बहुत कम समय परिसर में व्यतीत करते हैं। इसके अलावा जिन विद्यार्थियों के अभिभावकों ने उच्च शिक्षा प्राप्त की होती है उन्हें पाठ्यक्रम से संबंधित पुस्तकों के साथ–साथ विश्वविद्यालय में होने वाली गतिविधियों के बारे में भी आसानी से जानकारी उपलब्ध हो जाती है और गैर–प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों के अभिभावक अपनी आर्थिक स्थिति बेहतर होने से अपने बच्चो को शिक्षा से सम्बन्धित सुविधा प्रदान करने में सफल हो पाते है किन्तु प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों की आर्थिक

स्थिति ठीक न होने के कारण उन्हें पाठ्यक्रम से सम्बन्धित पुस्तकों की व्यवस्था करना कठिन होता है और उन्हें दूसरों के द्वारा पढ़ी गई किताबों से ही अपना काम चलाना पड़ता है।

शैक्षणिक बाधाएँ

अकादमी में अधिकांश लोग इस बात से सहमत होंगे कि विश्वविद्यालय की सफलता के लिए अकादमिक तैयारी महत्वपूर्ण है। विश्वविद्यालय की सफलता को कई तरीकों से मापा जा सकता है, जिसमें प्रतिधारण और विश्वविद्यालय समापन दर और ग्रेड प्वांइट औसत शामिल है (कैबरेरा, ब्रुकुम एंड ला नासा, 2005)। प्राथमिक और माध्यमिक शैक्षणिक संस्थानों में विद्यार्थियों के शैक्षणिक अनुभव अक्सर उच्च शिक्षा में उनके प्रदर्शन को प्रभावित करते हैं। दुर्भाग्य से, कई बार प्राथमिक और माध्यमिक विद्यालय हमारे युवाओं को विफल कर रहे हैं जैसा कि पहले उल्लेख किया गया है कि अधिक संख्या में प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थी निम्न सामाजिक–आर्थिक स्थिति वाली पृष्ठभूमि से आते हैं (गिबन्स एंड बॉर्डर्स, 2010)। कई स्कूल जो निम्न सामाजिक आर्थिक स्थिति से आने वाले विद्यार्थियों की सहायता करते हैं, उनके पास सीमित संसाधन और प्रमाणित शिक्षकों और परामर्शदाताओं की कमी है (कैबरेरा एट अल, 2005)। अक्सर, निम्न सामाजिक– आर्थिक स्तर से आने वाले विद्यार्थियों को उपचारात्मक कक्षाओं (रेमेडियल क्लासेस) में रखा जाता है (क्रिस्प एट अल., 2009)। इस तरह से अक्सर उम्मीदें कम होती हैं, और इसलिए कई विद्यार्थियों का अध्ययन कक्ष में प्रदर्शन अच्छा नहीं होता है।

प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों का माध्यमिक शिक्षा और हाई स्कूल में प्रदर्शन अच्छा न होने के कारण इन विद्यार्थियों में उच्च शिक्षा प्राप्त करने की उम्मीदें और आकांक्षायें कम होती है। विद्यार्थी विश्वविद्यालय में एक बार दाखिला लेने के बाद शैक्षणिक चुनौतियों से उबरने में स्वयं को असमर्थ महसूस करते हैं। प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों में अक्सर शैक्षणिक अवरोध उत्पन्न होते रहते हैं।

प्रस्तुत अध्ययन में यह भी पाया गया कि अधिकांशतः प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थी शिक्षकों से बातचीत करने में असहजता महसूस करते हैं जो विद्यार्थी शिक्षकों से किसी भी प्रकार की सहायता लेने में या पाठ्यक्रम से सम्बन्धित किसी भी प्रकार की जानकारी लेने में कठिनाई का अनुभव करते हैं वहीं कुछ ऐसे भी प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थी है जो अपनी असजता के कारण यह अनुभव करते हैं कि उनकी शिक्षा प्रभावित हो रही है तो ऐसे विद्यार्थी कुछ हद तक शिक्षकों से बातचीत करने का प्रयास करते हैं और शिक्षकों से अपनी समस्याओं का समाधान प्राप्त करते है। एक उत्तदाता ने बतायाः

> *जब पहली बार मैनें विश्वविद्यालय में प्रवेश लिया तो मेरे लिए अध्ययन कक्ष का अनुभव बहुत ही भिन्न था। मैं अध्ययन कक्ष में पहले दिन थोड़ा पीछे जा के बैठा क्योंकि वहां का वातावरण मेरे लिए नया था और मुझे यह भी भय था कि आगे बैठने पर यदि शिक्षक ने कुछ पूछ लिया और मैं उत्तर देने में असफल रहा तो अन्य विद्यार्थी मेरा उपहास करेंगे।*

विश्वविद्यालय में लगभग 43 प्रतिशत प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थी भाग लेते है किन्तु 20 प्रतिशत विद्यार्थी कॉलेज की शिक्षा पूर्ण करने से पहले और डिग्री पूरी करने से पहले ही छोड़ देते हैं (चेन, 2005)। इसमें आश्चर्य की बात नहीं है, कि प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों में नकारात्मक प्रतिधारणा का कारण शिक्षकों और अन्य विद्यार्थियों के साथ बातचीत में कमी है।

तालिका 4.3 प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों के द्वारा दूसरों से बातचीत करने में असहजता का अनुभव करने के आधार पर विश्लेषण

दूसरों से बातचीत करने में असहजता का अनुभव	संख्या	प्रतिशत
सहमत	162	40.5
कुछ हद तक सहमत	87	21.8
असहमत	151	37.7
कुल	400	100.00

स्त्रोतः क्षेत्रीय कार्य

उपर्युक्त तालिका 4.3 से स्पष्ट होता है कि प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों को दूसरों से बातचीत करने में असहजता महसूस होती है इस बात से सहमत होने वाले विद्यार्थियों की संख्या 162 तथा 40.5 है। कुछ हद तक सहमत होने वाले विद्यार्थियों की संख्या 87 एवं प्रतिशत 21.8 है। और इस बात से असहमत होने वाले विद्यार्थियों की संख्या 151 और प्रतिशत 37.7 है।

प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थी दूसरों से बातचीत करने में इसलिए भी असहजता का अनुभव करते हैं कि निम्न स्तर से आने के कारण उन्हें सभी प्रकार की जानकारी नहीं होती है और अगर दूसरों से वे पूछते हैं तो उन्हें लगता है कि कहीं वे उनका मजाक न उड़ा दे कि आज के समय में भी इसे इस बात की जानकारी नहीं है।

इस अध्ययन में पाया गया कि प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों की परिसर में या बड़े पैमाने पर समुदाय में पहचान करना आसान नहीं होता है। ऐसे विद्यार्थियों को विश्वविद्यालय के लिये तैयार रहने और आवेदन करने की प्रक्रियाओं के बारे में जानकारी नहीं होती है। विद्यार्थियों का शिक्षकों से अध्ययन कक्ष में, प्रयोगशाला, कार्यालय के समय, या अन्य स्थानों पर बातचीत करना विद्यार्थियों के विकास के साथ जुड़े विश्वविद्यालय के अनुभवों में से एक है (लाव, 2003) एवं पास्करेला और टेरेंजिनी, 1991) ने भी अपने अध्ययन में यह पाया है।

पास्करेला (1980) ने कई अध्ययनों के बाद यह निष्कर्ष दिया कि जो भी अध्ययन 1980 से पहले किये गये हैं उनमें प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों और शिक्षको के बीच होने वाली अनौपचारिक (अध्ययन कक्ष के बाहर) बातचीत से होने वाले प्रभाव को पाँच भागों में वर्गीकृत किया है–जीविका योजना और शैक्षिक आकांक्षाएँ, कॉलेज के साथ संतुष्टि, बौद्धिक और व्यक्तिगत विकास, शैक्षणिक उपलब्धि और कॉलेज की दृढ़ता। 1980 के दशक से 2000 के दशक तक कई अध्ययनों को जोड़कर पास्करेला ने शुरूआती निष्कर्षों को मजबूत और सुदृढ़ बनाया है। पास्करेला (1980), प्रदर्शित करते हैं कि प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों और शिक्षकों के मध्य बातचीत की मात्रा और गुणवत्ता विभिन्न विद्यार्थियों को सकारात्मक रूप से प्रभावित करती है जिसमें विषय वस्तु क्षमता, संज्ञानात्मक कौशल और बौद्धिक

विकास, दृष्टिकोण और मूल्य, शैक्षिक प्राप्ति, और कैरियर की पसंद और विकास शामिल है।

प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थी अध्ययन कक्ष में शिक्षकों के द्वारा पढ़ाये जाने वाले विषयों के समझ में न आने के कारण भी चिंतित रहते हैं और विषय कठिन होने के कारण विद्यार्थियों की विषय पर अच्छी पकड़ न होने के कारण उन्हें यह चिन्ता सताती है कि वे अन्य विद्यार्थियों के समान अच्छा प्रदर्शन नही कर पायेंगें और अन्ततः परीक्षा में अन्य विद्यार्थियों की तुलना में अंक भी कम ही अर्जित करेंगें जिसके कारण वे गैर–प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों को अपने से बेहतर समझते हैं।

जिन विद्यार्थियों के अभिभावकों ने उच्च शिक्षा ग्रहण की होती है वे अपने बच्चों को एक शिक्षित अभिभावक होने के कारण उन्हें बेहतर तौर तरीके सीखाने में सफल हो पाते हैं क्योंकि ऐसे अभिभावक कॉलेज के वातावरण वहां की संस्कृति से बहुत अच्छी तरह से परिचित होते हैं किन्तु प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों के अभिभावकों के पास विश्वविद्यालय के वातावरण और वहां की संस्कृति के विषय में विशेष ज्ञान न होने के कारण वे वहां के वातावरण और वहां की संस्कृति से परिचय नहीं करा पाते है जो प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों की चुनौतियों का मुख्य कारण होता है। वे अन्य विद्यार्थियों के समान अध्ययन कक्ष में अपने विचारों को प्रदर्शित करने में स्वयं को पिछड़ा हुआ महसूस करते हैं और अपनी बातों को उचित ढंग से प्रदर्शित नही कर पाते हैं। एक उत्तरदाता ने बतायाः

> *मेरे माता–पिता पांचवी तक भी नहीं पढ़े हैं उनके पास मुझे सलाह देने के लिए न तो अनुभव है न तो उनमें क्षमता है। किन्तु फिर भी वे चाहते हैं कि मैं उच्च शिक्षा हासिल कर बड़ा आदमी बनूँ।*

प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थी होने के कारण और अभिभावकों से किसी प्रकार का शैक्षिक सहयोग न मिल पाने के कारण वे अपने पाठ्यक्रम के विषयों को समझने में स्वयं को असफल महसूस करते है। क्योंकि जब वे गैर प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों को अध्ययन कक्ष में शिक्षकों के द्वारा दिये जाने वाले सभी कार्यों को पूरा करते हुए देखते हैं तो वे स्वयं को पिछड़ा हुआ देखकर और अधिक चिन्तित हो जाते हैं। और

प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थी घबराहट महसूस करते हैं कि वे अपना कार्य पूर्ण करके समय पर दे पायेंगे या नही, परीक्षाओं में सफल होगें या नहीं क्योंकि इन विद्यार्थियों को विश्वविद्यालय की गतिविधियों को समझने में अधिक समय लगता है।

प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों की अध्ययन कक्ष में होने गतिविधियों में हिस्सेदारी कम रहती है। पढ़ाये जाने वाले विषयों में भी तर्क–वितर्क करने में भी संकोच करते हैं अपने विचारों को सुचारू रूप से व्यक्त नहीं कर पाते हैं अध्ययन कक्ष के क्रिया–कलापों से दूर भागते है। प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों में आमतौर पर भय की प्रवृत्ति विशेष रूप से विद्यमान रहती है।

तालिका 4.4 प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों के द्वारा शिक्षकों की भाषा को आसानी से समझने के आधार पर विश्लेषण

प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों के द्वारा शिक्षकों की भाषा को आसानी से समझने के आधार पर विश्लेषण	लिंग		कुल
	महिला	पुरूष	
नहीं	68 (46.6)	80 (31.5)	148 (37.0)
कुछ हद तक	66 (45.2)	109 (42.9)	175 (43.8)
हाँ	12 (8.2)	65 (25.6)	77 (19.2)
कुल	146 (100.0)	254 (100.0)	400 (100.0)

स्त्रोतः क्षेत्रीय कार्य

उपर्युक्त तालिका 4.4 से स्पष्ट होता है कि अध्ययन कक्ष में शिक्षकों के द्वारा पढ़ाये जाने या उनके बोलने का स्पष्टीकरण न होने से विद्यार्थियों को कठिनाई का सामना करना पड़ता है। प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थी जो शिक्षकों की भाषा को आसानी से नहीं समझ पाते हैं ऐसे विद्यार्थियों की संख्या 148 तथा प्रतिशत 37.0 है। प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थी जो शिक्षकों के बोलने के तरीके एवं भाषा को कुछ हद तक समझ पाते हैं ऐसे विद्यार्थियों की संख्या 175 एवं इनका प्रतिशत 43.8 है। और जो बहुत ही आसानी से शिक्षकों की बोली एवं भाषा को आसानी से समझ पाते है और उन्हें

किसी भी प्रकार की कोई असुविधा नहीं होती है ऐसे विद्यार्थियों की संख्या 77 और प्रतिशत 19.2 है।

इसके अन्तर्गत पुरूष विद्यार्थी जो शिक्षकों के बोलने के तरीके को नहीं समझ पाते हैं उनकी संख्या 80 एवं प्रतिशत 31.5 है पुरूष विद्यार्थियों की संख्या 109 तथा प्रतिशत 42.9 है जो शिक्षकों के बोलने के तरीके को कुछ हद तक समझ पाते है। और जो आसानी से समझ पाते है ऐसे विद्यार्थियों की संख्या 65 तथा इसका प्रतिशत 25.6 है।

महिला विद्यार्थियों की संख्या 68 एवं उनका प्रतिशत 46.6 है जो शिक्षकों के बोलने के तरीके को नही समझ पाती हैं महिला विद्यार्थी जो शिक्षकों की भाषा को थोड़ा बहुत समझ पाती है ऐसी महिला विद्यार्थियों की संख्या 66 तथा प्रतिशत 45.2 है। और जो पूर्ण रूप से शिक्षकों की बोली को आसानी से समझ पाती हैं ऐसी महिला विद्यार्थियों की संख्या 12 और इनका प्रतिशत 8.2 है।

तालिका 4.5 प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों द्वारा अध्ययन कक्ष में शिक्षकों से स्पष्टीकरण मांगने के आधार पर विश्लेषण

प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों द्वारा अध्ययन कक्ष में शिक्षकों से स्पष्टीकरण मांगने के आधार पर विश्लेषण	जाति			कुल
	सामान्य	अन्य पिछड़ा वर्ग	अनुसूचित जाति	
नहीं	25 (23.8)	86 (56.2)	83 (58.5)	194 (48.5)
कुछ हद तक	36 (34.3)	25 (16.3)	30 (21.1)	91 (22.8)
हाँ	44 (41.9)	42 (27.5)	29 (20.4)	115 (28.7)
कुल	105 (100.0)	153 (100.0)	142 (100.0)	400 (100.0)

स्त्रोतः क्षेत्रीय कार्य

उपर्युक्त तालिका 4.5 से स्पष्ट होता है कि शिक्षकों से स्पष्टीकरण न मांगने वाले प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों की संख्या 194 है और जिनका प्रतिशत 48..5 है। और जो विद्यार्थी कुछ हद तक स्पष्टीकरण मांगते हैं उनकी संख्या 91 तथा उनका

प्रतिशत 22.8 है। और जो पूर्ण रूप से स्पष्टीकरण मांगते हैं ऐसे विद्यार्थियों की संख्या 115 जिनका प्रतिशत 28.7 है।

इसे जाति के आधार पर वर्गीकृत करने से ज्ञात होता है कि सामान्य वर्ग के विद्यार्थियों के द्वारा स्पष्टीकरण मांगने वाले विद्यार्थियों की संख्या 44 और प्रतिशत 41.9 है। कुछ हद तक स्पष्टीकरण मांगने वाले विद्यार्थियों की संख्या 36 एवं प्रतिशत 34.3 है। और जो पूर्ण रूप से स्पष्टीकरण नहीं मांगते हैं ऐसे विद्यार्थियों की संख्या 25 तथा प्रतिशत 23.8 है।

अन्य पिछड़े वर्ग के विद्यार्थियों के द्वारा स्पष्टीकरण मांगने वाले विद्यार्थियों की संख्या 42 और प्रतिशत 27.5 है। कुछ हद तक स्पष्टीकरण मांगने वाले विद्यार्थियों की संख्या 25 एवं प्रतिशत 16.3 है। जो पूर्ण रूप से स्पष्टीकरण नहीं मांगते हैं ऐसे विद्यार्थियों की संख्या 86 तथा प्रतिशत 56.2 है।

अनुसूचित जाति वर्ग के विद्यार्थियों के द्वारा स्पष्टीकरण मांगने वाले विद्यार्थियों की संख्या 29 और प्रतिशत 20.4 है। कुछ हद तक स्पष्टीकरण मांगने वाले विद्यार्थियों की संख्या 30 एवं प्रतिशत 21.1 है। जो पूर्ण रूप से स्पष्टीकरण नहीं मांगते हैं ऐसे विद्यार्थियों की संख्या 83 तथा प्रतिशत 58.5 है।

हालांकि कुछ प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों को पता है कि उनके प्रोफेसरों के साथ बातचीत करने से उन्हें भविष्य में सिफारिशों में मदद मिल सकती है, लेकिन वे इस इस बात से अनजान थे कि इस संबंध को कैसे विकसित करें और पूरी स्थिति से बचे (यी, 2015)।

प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थी अध्ययन कक्ष में उनके साथ होने वाले जातिगत भेदभाव का भी अनुभव करते हैं। जैसे उच्च जाति के विद्यार्थियों को प्रत्येक कार्य के लिए वरियता देना, सुन्दरता के आधार पर भी भेदभाव होता है यदि विद्यार्थी सुन्दर होता है तो उसे सांस्कृतिक गतिविधियों में भागीदारी करने के लिए प्रोत्साहन दिया जाता है। जिसके कारण जो प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थी होते है वे हतोत्साहित हो जाते

हैं। और उनके आगे बढ़कर कुछ करने का जो मनोबल स्तर होता है वो और भी नीचे गिर जाता है।

कुछ विद्यार्थी स्वेच्छा से उच्च शिक्षा प्राप्त करने के लिए विश्वविद्यालय जाते हैं और कुछ ऐसे विद्यार्थी होते हैं जिन्हें अभिभावक विश्वविद्यालय भेजते हैं। सामान्यतः देखा जाता कि जो विद्यार्थी भविष्य में कुछ बेहतर अर्जित करना चाहते हैं तो ऐसे विद्यार्थी विश्वविद्यालय में जाकर अध्ययन कक्ष में पढ़ते है और घर जाकर फिर स्वयं की समीक्षा भी करते हैं। जिससे उन्हें यह ज्ञात होता है कि उनकी पढ़ाई में कहां कमी है और वे उसे कैसे बेहतर कर सकते हैं। और किसी विषय में किसी प्रकार की कठिनाई होने पर शिक्षकों या अपने सहपाठियों से सहयोग लेकर समस्या का निदान करते हैं। स्वयं की समीक्षा करने से प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों को यह लाभ होता है कि यदि उन्हें अध्ययन कक्ष में पढ़ाई जाने वाले विषय को समझने में कोई कठिनाई होती है तो वे अपने वरिष्ठ सहपाठियों से उसका स्पष्टीकरण करके अपनी समस्या का समाधान प्राप्त कर लेते हैं।

प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों के लिए विश्वविद्यालय का अनुभव अलग ही होता है क्योंकि उन्हें वहां के परिवेश के बारे में उन्हें ज्ञान नहीं होता। और नए लोगों से बातचीत करने में संकोच भी करते हैं उनकी संकोची प्रवृत्ति उनके आगे बढ़ने में बाधक बनती है। जिसके कारण वे अध्ययन कक्ष में भी अकेले बैठना ही पंसद करते हैं और कॉलेज में अकेला एवं स्वयं को अध्ययन कक्ष के बाहर महसूस करते हैं जहां न तो स्वयं विद्यार्थियों से अन्तःक्रिया करता है न तो अन्य विद्यार्थी उससे अन्तःक्रिया करते हैं। प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों के द्वारा स्वयं को अकेला या अध्ययन कक्ष से बाहर महसूस करने से आशय यह है कि जब वे विश्वविद्यालय में प्रवेश लेते है तो वे शीघ्र किसी से अन्तःक्रिया करने में संकोच महसूस करते हैं। जिस कारण से वे अध्ययन कक्ष में कुछ दिन अकेले ही व्यतीत करते हैं। जिस कारण उन्हें महसूस होता है कि उनसे किसी को कोई मतलब नहीं है कोई बात नहीं करता और अकेलापन महसूस करते हैं।

प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थी शिक्षकों से अन्तःक्रिया करने में असहजता का अनुभव करते हैं विशेष रूप से महिला विद्यार्थियों में यह पाया जाता है कि वे शिक्षकों से अन्तःक्रिया करने में घबराहट का अनुभव करती हैं। अधिकांशतः विद्यार्थियों में भी यह धारणा होती है कि जिनका पढ़ाई का आधार थोड़ा कमजोर होता है वे शिक्षकों से विशेष रूप से बातचीत करने में असहजता का अनुभव करते हैं क्योंकि वे ऐसा महसूस करते हैं कि यदि शिक्षक ने पाठ्यक्रम से पूछ लिया और उन्हें जानकारी नहीं है तो शिक्षक के मन में विद्यार्थियों की छवि अच्छी नहीं बनती है। और शिक्षक के मन में या किसी भी व्यक्ति के मन में यदि एक बार गलत छवि बन गयी तो उसे सुधारने में काफी समय लगता है। और ऐसा अनुभव करने का एक दूसरा कारण घर के वातावरण का प्रभाव भी होता है। जिन परिवारों में बच्चों को शुरू से अपनी बात कहने का अवसर दिया जाता है उनके बच्चों में बोलने का कौशल होता है और जिनके परिवार में हमेशा बच्चों को दबाव में रखा जाता है उन विद्यार्थियों में बोलने के कौशल में कमी होती है।

कभी कभी विद्यार्थियों के साथ ऐसा भी होता है कि हर विषय के शिक्षकों का अपना स्वभाव होता है। कुछ शिक्षक बहुत ही कठोर होते है और कुछ शिक्षक बहुत ही सरल स्वभाव के होते है। अध्ययन कक्ष में जब प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थी गैर–प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों को बेहतर करता हुआ देखते हैं और खुद को पिछड़ता हुआ पाते हैं तो उनमें चेतना आती है कि उन्हें भी अन्य विद्यार्थियों के समान मेहनत करनी होगी। अपने संकोच को छोड़कर शिक्षकों से बातचीत शुरू करने से ही समस्याओं का समाधान प्राप्त होगा। इस प्रकार जागरूक होकर वे विद्यार्थी भी अन्य विद्यार्थियों के समान बेहतर करने लगते हैं।

ग्रामीण क्षेत्र से आने वाले विद्यार्थी को विश्वविद्यालय के वातावरण के विषय में कम ज्ञान होता है और शैक्षणिक कार्य कैसे पूर्ण किये जाते हैं उसके विषय में ज्ञान न होने पर जब वे शहरी क्षेत्रों के विद्यार्थियों से पूछते हैं तो वे उन्हें अनुचित मार्ग दर्शाते हैं उसके पश्चात् उनका उपहास उड़ाते है।

प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों के लिए अध्ययन कक्ष में मित्र बनाना थोड़ा मुश्किल होता है क्योंकि उनका संकोची व्यवहार होने के कारण वे शीघ्र किसी से बातचीत नहीं करते हैं जिसके कारण उनके लिए मित्र बनाना थोड़ा कठिन था।

शिक्षकों के द्वारा पढ़ाये गये पाठ्यक्रम से सन्तुष्ट होने या न होने से तात्पर्य ये है कि शिक्षकों के द्वारा पढ़ाये गये पाठ्यक्रम को विद्यार्थियों के समझ में न आने से है। जब उन्हें कोई विषय समझ में नहीं आता है तो वे घबरा जाते हैं और स्वयं को चिन्तित पाते हैं जिसका प्रभाव उनके परीक्षा परिणाम पर पड़ता है।

प्रथम पीढ़ी के जिन विद्यार्थियों को प्रोत्साहन नहीं मिल पाता है उनमें ईर्ष्या की भावना जाग्रत होने लगती है और उनमें प्रतिद्वंदिता उत्पन्न होने लगती है। परिणाम स्वरूप वे अन्य विद्यार्थियों से दूरी बनाने लगते है।

प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों को भी अंग्रेजी भाषा में निपुण बनाने के लिए विशेष पाठ्यक्रम का आयोजित करना चाहिए ऐसा करना अनिवार्य भी है क्योंकि ऐसा करने से प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों के आत्मविश्वास में वृद्धि होती है बोलने के कौशल का विकास होता है और उन्हें कहीं भी जाने में कोई कठिनाई नहीं होती है या फिर किसी भी व्यक्ति से वार्तालाप करने में संकोच महसूस नहीं करते हैं। और अपनी बातों को निहःसंकोच कहने में सफल होते हैं।

प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों के अभिभावकों की मासिक आय कम होने के कारण वे अपने बच्चों को आधुनिक समय में विश्वविद्यालय में प्रयोग किये जाने वाले उपकरण उपलब्ध कराने में स्वयं को असमर्थ महसूस करते हैं आधुनिक उपकरण प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों के पास उपलब्ध न होने से उन्हें काफी कठिनाई होती है। वे अपने अध्ययन कक्ष में दिये जाने वाले गृहकार्य पूर्ण करने में विफल रहते हैं। जिसके कारण वे अन्य विद्यार्थियों की तुलना में पिछड़ जाते है। और अपनी योग्यता का प्रदर्शन करने में सफल नहीं हो पाते।

शिक्षक–विद्यार्थियों के मध्य अन्तःक्रिया और शैक्षणिक उपलब्धि, बौद्धिक लाभ, विश्वविद्यालय और रिटेंशन के साथ संतुष्टि के बीच एक मजबूत सकारात्मक संबंध है (लैम्पोर्ट, 1993; एस्टिन, 1984)। इस अन्तःक्रिया में विद्यार्थियों और शिक्षकों के बीच बातचीत के साथ ही अध्ययन कक्ष की गतिविधियाँ भी शामिल हैं। यद्यपि

यहाँ कार्य कारण का निर्धारण नहीं किया गया है (कुह और हू, 2001; लामपोर्ट, 1993) इससे यह इंगित होता है कि शिक्षक और विद्यार्थी की बातचीत के विभिन्न प्रकारों के बीच, पाठ्यक्रम सामग्री के बारे में विद्यार्थियों को सबसे अधिक शिक्षकों से लाभ मिलता है, जैसा कि जीपीए में सुधार, बौद्धिक लाभ होता है, डिग्री प्राप्त करने का लक्ष्य पूर्ण होता है, शैक्षिक प्रेरणा के साथ विश्वविद्यालय के अनुभव के साथ संतुष्टि भी प्राप्त होती है (किम एंड सैक्स, 2009; हियर्न, 1987)। शोध यह इंगित करता है कि गैर–प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों की तुलना में प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों की शिक्षकों के साथ बातचीत करने की संभावना कम होती है चाहे अनौपचारिक हो या औपचारिक (टेरेंजिनी एट अल, 1996; सोरिया एंड स्टबलटन, 2012; अरूम–रोक्ससा, 2011)। प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों के लिए जो विद्यार्थी शिक्षकों के साथ बातचीत करते हैं, उन विद्यार्थियों के शिक्षकों के साथ सम्बन्ध बेहतर होते हैं (किम एंड सैक्स, 2009; एंडो और हार्पेल, 1982)। साक्षात्कार के माध्यम से, पाया गया कि प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थी शिक्षकों के साथ बातचीत करने से महत्वपूर्ण लाभ प्राप्त करते हैं। चेंग (2005) और पास्करेला और टेरेंजिनी (1977) एक हद तक शिक्षक और विद्यार्थी की अन्तःक्रिया को डिग्री प्राप्त करने के बढ़े हुए स्तरों के साथ जोड़ते हैं।

अध्ययन कक्ष के बाहर परिसर में अन्तःक्रिया के अनुभवः

फील्ड, हैबिट्स, सांस्कृतिक पूंजी और सामाजिक पूंजी जैसी बुर्दियों की अवधारणाएं प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों के विश्वविद्यालय परिसर से सम्बन्धित अनुभवों का विश्लेषण करने और समझने में सहायक हैं। जिसमें शिक्षकों के साथ प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों की बातचीत भी शामिल है। विश्वविद्यालय आने वाले प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों के लिए विश्वविद्यालय का वातावरण एक नए फील्ड का प्रतिनिधित्व करता है एक ऐसा वातावरण जहां कुछ नियमों को समझा जाता है, और विशिष्ट प्रकार की पूंजी की अपेक्षा की जाती है। बुर्दियों हैबिट्स शब्द का उपयोग किसी व्यक्ति की आत्म–धारणा और स्वभाव का वर्णन करने के लिए करता है। सांस्कृतिक पूंजी (आवश्यक ज्ञान और कौशल) और सामाजिक पूंजी (एक सामाजिक नेटवर्क तक पहुंचने की क्षमता) विद्यार्थियों को अन्तःक्रिया करने की सुविधा प्रदान करती है।

प्राथमिक विद्यालय के शुरूआत में विद्यार्थियों को कुछ पूंजी और हैबिट्स के बिना सफल होने के लिए कैसे संघर्ष करना पड़ता है। यह बुर्दियों (1973) के दावे का समर्थन करता है कि प्रभावी समूह की संस्कृति को शैक्षिक प्रणाली द्वारा प्रेषित और पुरूस्कृत किया जाता है। शिक्षक और विद्यार्थी के बीच बातचीत होना भी विश्वविद्यालय के माहौल में एक अहम पहलू है।

प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थी निम्न वर्ग उप–संस्कृति से सहजता महसूस करते हैं और उनकी आदतें और सांस्कृतिक पूंजी प्रभावी समूह की संस्कृति से भिन्न होती हैं। घोष (2014) कहते हैं कि प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थी स्वयं को "दो संस्कृतियों के हाशिये" पर पाते हैं और दोनों के बीच तनाव को प्रबंधित करने के लिए अक्सर विश्वविद्यालय और घर के रिश्तों को संतुलित करने में विद्यार्थियों को चुनौतियों का सामना करना पड़ता है।

एक उत्तरदाता ने बताया:

> *मैनें कई बार इस समूह [प्रभावी समूह] का हिस्सा बनने की कोशिश की किन्तु अक्सर वे पिज्जा, बर्गर, बड़े मॉल में खरीदारी, बाइक और कारों की नई ब्रान्ड के बारे में बातचीत करते हैं और इस सम्बन्ध में मेरा ज्ञान बिल्कुल नहीं है। इसलिए मैं इस समूह [प्रभावी समूह] में असहजता महसूस करता हूँ।*

एक अन्य उत्तरदाता ने बताया:

> *उनके [प्रभावी समूह] पहनावे का तरीका और बोलचाल का तरीका मुझसे बहुत अलग है। मेरा उस समूह [प्रभावी समूह] का हिस्सा बनना असम्भव है।*

इन बातों से पता चलता है कि अधिकतर गैर–प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों के साथ प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थी अपने आपको जोड़ने में असफल रहते हैं और अधिकतर उच्च शिक्षा में अपनी पहचान के संकट से जुझते हैं। अधिकतर प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थी गैर प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों के साथ मित्रता नहीं कर पाते हैं और अपने आपको उच्च शिक्षा में मिसफिट मानने लगते हैं। अपनी पढ़ाई पर ध्यान

देने की इच्छा के बावजूद अपने कौशल को उभारने में विफल रहते हैं और केवल अफसोस करते रह जाते हैं।

पडगेट, जॉनसन और पास्करेला (2012) लिखते हैं कि ''प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों को पीढ़ियों के माध्यम से प्रसारित होने वाली सांस्कृतिक और सामाजिक पूंजी में कमी को देखते हुए उन्हें गैर–प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों की तुलना में नुकसान होता है''। जबकि विश्वविद्यालय में प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों में सांस्कृतिक और सामाजिक पूंजी की कमी होती है। अभी तक के शोध से यह ज्ञात होता है कि प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों के विश्वविद्यालय के परिणाम खराब होते हैं।

तालिका 4.6 प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों के द्वारा अभिजात वर्ग के विद्यार्थियों से मित्रता करने की कोशिश के आधार पर विश्लेषण

प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों के द्वारा अभिजात वर्ग के विद्यार्थियों से मित्रता करने की कोशिश के आधार पर विश्लेषण	धार्मिक समूह			कुल
	हिन्दू	मुस्लिम	अन्य	
बहुत कम हद तक	36 (11.5)	20 (36.4)	0 (0.0)	56 (14.0)
कुछ हद तक	161 (51.3)	18 (32.7)	6 (19.4)	185 (46.2)
बहुत हद तक	97 (30.8)	17 (30.9)	13 (41.9)	127 (31.8)
बहुत ज्यादा हद तक	20 (6.4)	0 (0.0)	12 (38.7)	32 (8.0)
कुल	314 (100.0)	55 (100.0)	31 (100.0)	400 (100.0)

स्त्रोतः क्षेत्रीय कार्य

उपर्युक्त तालिका 4.6 से स्पष्ट होता है कि प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों के द्वारा अभिभाज वर्ग के विद्यार्थियों से बहुत कम हद तक मित्रता करने की कोशिश करने वाले विद्यार्थियों की संख्या 56 एवं प्रतिशत 14.0 है जिसमें हिन्दू धर्म के विद्यार्थियों की संख्या 36 एवं प्रतिशत 11.5 हैं वहीं मुस्लिम धर्म के विद्यार्थियों की संख्या 20 एवं प्रतिशत 36.4 है अन्य धर्मों से सम्बन्धित विद्यार्थी जो बहुत कम हद तक अभिजात वर्ग के विद्यार्थियों से मित्रता करने की कोशिश करते हैं जिनकी संख्या 0 है और प्रतिशत भी 0.0 है।

कुछ हद तक अभिजात वर्ग के विद्यार्थियों से मित्रता करने की कोशिश करने वाले प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों की संख्या 185 तथा प्रतिशत 46.2 है हिन्दू धर्म के विद्यार्थियों की संख्या 161 एवं प्रतिशत 51.3 है मुस्लिम धर्म के विद्यार्थियों की संख्या 18 और प्रतिशत 32.7 है। अन्य धर्म के विद्यार्थियों की संख्या 6 एवं प्रतिशत 19.4 है।

बहुत हद तक अभिजात वर्ग के विद्यार्थियों से मित्रता करने की कोशिश करने वाले प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों की संख्या 127 और प्रतिशत 31.8 है। हिन्दू धर्म के विद्यार्थियों की संख्या 97 एवं प्रतिशत 30.8 है मुस्लिम धर्म के विद्यार्थियों की संख्या 17 तथा प्रतिशत 30.9 है और अन्य धर्म के विद्यार्थियों की संख्या 13 एवं प्रतिशत 41.9 है।

बहुत ज्यादा हद तक अभिजात वर्ग के विद्यार्थियों से मित्रता करने की कोशिश करने वाले प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों की संख्या 32 और प्रतिशत 8.0 है हिन्दू धर्म के विद्यार्थियों की संख्या 20 एवं प्रतिशत 6.4 है मुस्लिम धर्म के विद्यार्थियों की संख्या 0 तथा प्रतिशत 0.0 है और अन्य धर्म के विद्यार्थियों की संख्या 12 एवं प्रतिशत 38.7 है।

प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों की सफलता के लिए सामाजिक समर्थन महत्वपूर्ण है क्योंकि यह तनाव को समझने और कम करने के लिए एक मार्गदर्शन प्रदान करता है। प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों को शैक्षणिक समर्थन के बजाय दोस्ती के सामाजिक समर्थन से अधिक लाभ होता है जो कि सहकर्मी पेश कर सकते हैं (जेनकिंस, बेलांगर, कोनली, बॉल्स, एंड डुरोन, 2016)।

ऐराइज़ और सीडर (2005) ने पाया कि विश्वविद्यालयों में भाग लेने वाले प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों में अपने से अधिक सम्पन्न साथियों की तुलना में डर की भावना, सम्बन्ध में अपर्याप्तता होती है सामान्य और विशेष रूप से अध्ययन कक्ष में इन विद्यार्थियों में यह कमी देखने को मिलती है।

इसके अलावा, तैयारी में कमी, अध्ययन कक्ष में विद्यार्थियों की भागीदारी, शिक्षकों के साथ बातचीत करने की इच्छा, आवश्यकता पड़ने पर मदद लेने और साथियों के साथ अध्ययन करना ये सब कारक प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों की क्षमता

को प्रभावित करते हैं जिनको प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों की भावनाओं से जोड़ा नहीं जा सकता है (ओस्ट्रोव एंड लॉन्ग, 2007; सोरिया एंड स्टीबलटन, 2012)।

निम्न सामाजिक–आर्थिक पृष्ठभूमि से आने वाले प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों को सामाजिक दुनिया को समझने में कठिनाई होती है। प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों के द्वारा दोस्त बनाने और बनाए रखने में सामाजिक वर्ग का प्रभाव विद्यार्थियों की क्षमता पर पड़ता है। और जो विद्यार्थी अधिक सम्पन्न वर्गों से आते हैं, वे अधिक सहज होते हैं उनके लिए निम्न वर्गीय साथियों की तुलना में नए दोस्त बनाना आसान होता है, क्योंकि वे मध्य वर्गीय संस्कृति में पले बढ़े होते हैं (स्टुबर, 2011)।

प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थी अध्ययन कक्ष के बाहर के कारकों से आसानी से प्रभावित होते हैं। एस्टिन, (1984) ने अपने अध्ययन में विद्यार्थियों की भागीदारी सिद्धांत का उपयोग किया है जो विद्यार्थियों की सफलता पर अध्ययन कक्ष के अन्दर और बाहर के कारकों से पड़ने वाले प्रभाव पर विचार करती है । छात्र भागीदारी सिद्धान्त शिक्षकों को निर्देश देता है कि वे विद्यार्थियों पर ध्यान केन्द्रित करें और विद्यार्थी की सफलता को बेहतर ढंग से समझने का प्रयास करें।

विद्यार्थी जीवन के सभी पहलुओं को शामिल करने के लिए एक व्यापक अर्थ में भागीदारी को परिभाषित किया गया है, उदाहरण के लिए, यदि कोई छात्र अंशकालिक नौकरी में दिन का अधिकांश समय व्यतीत करता है तो वह अपना समय अध्ययन और अध्ययन कक्ष के प्रोजेक्ट कार्य को करने में अपना समय खर्च नहीं कर सकता। यह समझना आवश्यक है कि प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थी अपने समय का उपयोग करने के लिए कैसे पथ का प्रयोग करते हैं।

उपर्युक्त विवरण में छात्र भागीदारी सिद्धांत का विवरण प्रस्तुत किया गया है जिसमें यह बताया गया कि विद्यार्थी अपना समय कहाँ और कैसे व्यतीत करते हैं। विद्यार्थियों की भागीदारी विश्वविद्यालय की गतिविधियों में कम होती है प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थी अध्ययन कक्ष में होने वाली चर्चा में समान रूप से भाग लेने में कम सक्षम हो पाते हैं। असहजता के कारण इनकी शैक्षिक गतिविधियाँ भी प्रभावित होती है।

तालिका 4.7 प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों के द्वारा स्वयं को उच्च शिक्षा में अनुपयुक्त (मिसफिट) महसूस करने के आधार पर विश्लेषण

प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों के द्वारा स्वयं को उच्च शिक्षा में अनुपयुक्त (मिसफिट) महसूस करने के आधार पर विश्लेषण	लिंग		कुल
	महिला	पुरूष	
स्हमत	98 (67.1)	108 (42.5)	206 (51.5)
कुछ हद तक सहमत	48 (32.9)	146 (57.5)	194 (48.5)
कुल	146 (100.0)	254 (100.0)	400 (100.0)

स्त्रोतः क्षेत्रीय कार्य

उपर्युक्त तालिका 4.7 से स्पष्ट होता है कि प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थी जो स्वयं को उच्च शिक्षा में अनुपयुक्त (मिसफिट) महसूस करते हैं उन विद्यार्थियों की संख्या 206 एवं प्रतिशत 51.5 है उसमें पुरूष विद्यार्थियों की संख्या 108 और प्रतिशत 42.5 हैं महिला विद्यार्थियों की संख्या 98 तथा प्रतिशत 67.1 है।

कुछ हद तक स्वयं को उच्च शिक्षा में अनुपयुक्त (मिसफिट) महसूस करने वाले प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों की संख्या 194 और प्रतिशत 48.5 है। जिसमें महिला विद्यार्थियों की संख्या 48 एवं प्रतिशत 32.9 है। पुरूष विद्यार्थियों की संख्या 146 तथा प्रतिशत 57.5 है।

प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों को अक्सर ऐसा लगता है कि वे अकेले हैं। विश्वविद्यालय में भाग लेने के लिए अपने परिवार में पहले होने पर स्वयं को समुदाय से निकाला हुआ महसूस करते हैं और स्वयं को गैर–प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों से संबंधित महसूस नहीं करते हैं। प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थी विश्वविद्यालय के बाद उनमें अलगाव की भावना और अधिक जटिल हो जाती है। अपने समुदायों में लौटने के बाद अक्सर कहते हैं कि वे अपने विश्वविद्यालय के अनुभवों से बदल गए हैं और अब अपने परिवारों और समुदायों से अधिक दूर हैं (जेहंगीर, स्टेबलटन, दीनानाथ, 2015)।

जहाँगीर (2015) के अध्ययन में विश्वविद्यालय में भाग लेने वालों ने अपने समुदायों से अलगाव के साथ अपने माता–पिता के गौरव को बनाये रखने के लिए संघर्ष किया। प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों ने अक्सर महसूस किया कि इन भावनाओं के बढ़ने से उनकी डिग्री प्राप्त करने से एक बड़ा अंतर पैदा होगा जिससे उन्हें सामाजिक गतिशीलता के मामले में ऊपर की ओर ऊठने में सफलता प्राप्त होगी। लेकिन उन्हें उच्च शिक्षा प्राप्त करने के लिए अपने परिवारों से दूर रहकर विश्वविद्यालय और घर की दुनिया के बीच में संघर्ष करना पड़ता है (जहांगीर एट अल., 2015)।

प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों को विश्वविद्यालय में फिट होने के लिए संघर्ष करना पड़ता हैं ऐसा इसलिए क्योंकि विद्यार्थियों की व्यस्तता कम होती है। प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों और उनके गैर–प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों के बीच एक बड़ा अन्तर यह था कि प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थी के पास विश्वविद्यालय के अनुभव कम थे और वे एकीकृत कम थे (पाइक एंड कुह, 2005)। न केवल वे अन्य कार्यों में कम व्यस्त रहते हैं बल्कि वे गैर–प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों की अपेक्षा विश्वविद्यालय को कम अनुकूल मानते हैं। जैसा कि पहले उल्लेख किया गया है कि प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों को अपनी शिक्षा के लिए धनराशि का भुगतान करने के लिए अंशकालिक नौकरी भी करनी पड़ती है मतलब यह है कि विश्वविद्यालय के परिसर की गतिविधियों में संलग्न होने के लिए प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों के पास कम समय होता है (प्रैट एट अल., 2017; विल्बर एंड रोस्कोग्नों, 2016)। विदेशों में अध्ययन और एक्सट्रा करिकुलर जैसी परिसर गतिविधियों में विद्यार्थियों के भागीदारी की संभावना बढ़ जाती है क्योंकि विद्यार्थी स्नातक होते हैं और वे साथियों और संस्था के जुड़ाव की भावनाओं में योगदान करते हैं। इसलिए, प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों की व्यस्तता की कमी उनकी सफलता को नकारात्मक रूप से प्रभावित करती है। प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों की एक्सट्रा करिकुलर और गैर पाठ्यक्रम संबंधित गतिविधियों में भाग लेने की संभावना कम रहती है; हालाँकि, जब वे भाग लेते हैं, तो प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों को गैर–प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों के साथ अन्तःक्रिया करने से सकारात्मक लाभ प्राप्त करने की अधिक संभावना रहती है (पास्करेला एट अल., 2004)।

तालिका 4.8 प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों के द्वारा उच्च शिक्षा में प्रवेश लेने के बाद अफसोस महसूस करने के आधार पर विश्लेषण

प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों के द्वारा उच्च शिक्षा में प्रवेश लेने के बाद अफसोस महसूस करने के आधार पर विश्लेषण	धार्मिक समूह			कुल
	हिन्दू	मुस्लिम	अन्य	
सहमत	187 (59.6)	41 (74.5)	2 (6.4)	230 (57.5)
कुछ हद तक सहमत	96 (30.6)	9 (16.4)	19 (61.3)	124 (31.0)
असहमत	31 (9.8)	5 (9.1)	10 (32.3)	46 (11.5)
कुल	314 (100.0)	55 (100.0)	31 (100.0)	400 (100.0)

स्त्रोतः क्षेत्रीय कार्य

उपर्युक्त तालिका 4.8 से स्पष्ट होता है कि प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थी जो उच्च शिक्षा में प्रवेश लेने के बाद अफसोस महसूस करते हैं और जो इससे सहमत है उनकी संख्या 230 और प्रतिशत 57.5 है। जिसमें से हिन्दू धर्म के विद्यार्थियों की संख्या 187 तथा प्रतिशत 59.6 है मुस्लिम धर्म के विद्यार्थियों की संख्या 41 एवं प्रतिशत 74.5 है। अन्य धर्म के विद्यार्थी की संख्या 2 और प्रतिशत 6.4 है।

प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थी जो उच्च शिक्षा में प्रवेश लेने के बाद अफसोस महसूस करते हैं और जो इससे कुछ हद तक सहमत है उनकी संख्या 124 और प्रतिशत 31.0 है। जिसमें से हिन्दू धर्म के विद्यार्थियों की संख्या 96 तथा प्रतिशत 30.6 है मुस्लिम धर्म के विद्यार्थियों की संख्या 9 एवं प्रतिशत 16.4 है। अन्य धर्म के विद्यार्थियों की संख्या 19 और प्रतिशत 61.3 है।

प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थी जो उच्च शिक्षा में प्रवेश लेने के बाद अफसोस महसूस करते हैं और जो इससे असहमत है उनकी संख्या 46 और प्रतिशत 11.5 है। जिसमें से हिन्दू धर्म के विद्यार्थियों की संख्या 31 तथा प्रतिशत 9.8 है मुस्लिम धर्म के विद्यार्थियों की संख्या 5 एवं प्रतिशत 9.1 है। अन्य धर्म के विद्यार्थी की संख्या 10 और प्रतिशत 32.3 है।

विश्वविद्यालय में कुछ समय बिताने के बाद प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों ने महसूस किया कि उन्होंने अपने समुदाय को पीछे छोड़ दिया और वे स्वयं को विश्वविद्यालय के साथ जुड़ नहीं पा रहे हैं।

एक शोध में प्रतिभागी ने इस भावना को ''उत्तरजीवी के अपराधबोध'' (सरवाइवर गिल्ट) के रूप में परिभाषित किया, और बहुत से विद्यार्थी इस बात से सहमत हुए कि उनकी सफलता भावभीनी (बिटरस्वीट) थी क्योंकि इससे उन्हें अपने समुदायों से दूर रहना पड़ा। समर्थन की कमी के कारण उन्होंने अकेला महसूस किया और समर्थन की कमी ने उन्हें लोगों से अलग कर दिया जिनसे वे विद्यार्थी सबसे नजदीकी बनाना चाहते थे।

तालिका 4.9 प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों के द्वारा स्वयं के बोलने और बातचीत करने के कौशल में सुधार करने के आधार पर विश्लेषण

प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों के द्वारा स्वयं के बोलने और बातचीत करने के कौशल में सुधार करने के आधार पर विश्लेषण	लिंग		कुल
	महिला	पुरूष	
बहुत कम हद तक	28 (19.2)	28 (11.0)	56 (14.0)
कुछ हद तक	62 (42.5)	76 (29.9)	138 (34.5)
बहुत हद तक	24 (16.4)	67 (26.4)	91 (22.8)
बहुत ज्यादा हद तक	32 (21.9)	83 (32.7)	115 (28.7)
कुल	146 (100.0)	254 (100.0)	400 (100.0)

स्त्रोतः क्षेत्रीय कार्य

उपर्युक्त तालिका 4.9 से स्पष्ट होता है कि प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थी अपने बातचीत करने के तरीके को बेहतर करने का प्रयास करते हैं इससे बहुत कम हद तक सहमत होने वाले विद्यार्थियों की संख्या 56 एवं प्रतिशत 14.0 है। जिसमें पुरूष विद्यार्थियों की संख्या 28 और प्रतिशत 11.0 है। महिला विद्यार्थियों की संख्या 28 तथा प्रतिशत 19.2 है।

कुछ हद तक सहमत होने वाले प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों की संख्या 138 एवं प्रतिशत 34.5 है। जिसमें पुरूष विद्यार्थियों की संख्या 76 और प्रतिशत 29.9 है। महिला विद्यार्थियों की संख्या 62 तथा प्रतिशत 42.5 है।

बहुत हद तक सहमत होने वाले प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों की संख्या 91 एवं प्रतिशत 22.8 है। जिसमें पुरूष विद्यार्थियों की संख्या 67 और प्रतिशत 26.4 है। महिला विद्यार्थियों की संख्या 24 तथा प्रतिशत 16.4 है।

बहुत ज्यादा हद तक सहमत होने वाले प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों की संख्या 115 एवं प्रतिशत 28.7 है। जिसमें पुरूष विद्यार्थियों की संख्या 83 और प्रतिशत 32. 7 है। महिला विद्यार्थियों की संख्या 32 तथा प्रतिशत 21.9 है।

तालिका 4.10 प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों के द्वारा अपनी पढ़ाई में ध्यान केन्द्रित करने के आधार पर विश्लेषण

प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों के द्वारा अपनी पढ़ाई में ध्यान केन्द्रित करने के आधार पर विश्लेषण	लिंग		कुल
	महिला	पुरूष	
बहुत कम हद तक	18 (12.4)	6 (2.4)	24 (6.0)
कुछ हद तक	10 (6.8)	22 (8.7)	32 (8.0)
बहुत हद तक	73 (50.0)	112 (44.1)	185 (46.2)
बहुत ज्यादा हद तक	45 (30.8)	114 (44.8)	159 (39.8)
कुल	146 (100.0)	254 (100.0)	400 (100.0)

स्त्रोतः क्षेत्रीय कार्य

उपर्युक्त तालिका 4.10 से स्पष्ट से स्पष्ट होता है कि प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थी बहुत हद तक अपना ध्यान पढ़ाई में केन्द्रित करते हैं उन विद्यार्थियों की संख्या 185 और प्रतिशत 46.2 हैं इसमें पुरूष विद्यार्थियों की संख्या 112 एवं प्रतिशत 44.1 है। महिला विद्यार्थियों की संख्या 73 तथा प्रतिशत 50.0 है।

जो प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थी बहुत ज्यादा हद तक अपना ध्यान पढ़ाई में केन्द्रित करते हैं उन विद्यार्थियों की संख्या 159 तथा प्रतिशत 39.8 है। पुरूष विद्यार्थियों की संख्या 114 और 44.8 है। महिला विद्यार्थियों की संख्या 45 एवं प्रतिशत 30.8 है।

कुछ हद तक ध्यान केन्द्रित करने वाले विद्यार्थियों की संख्या 32 तथा प्रतिशत 8.0 है। पुरूष विद्यार्थियों की संख्या 22 एवं प्रतिशत 8.7 है। महिला विद्यार्थियों की संख्या 10 और प्रतिशत 6.8 है।

जो प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थी बहुत कम हद तक पढ़ाई में ध्यान केन्द्रित करते हैं उन विद्यार्थियों की संख्या 24 और प्रतिशत 6.0 है पुरूष विद्यार्थियों की संख्या 6 एवं प्रतिशत 2.4 हैं महिला विद्यार्थियों की संख्या 18 तथा 12.4 है।

विश्वविद्यालय में प्रवेश करने और डिग्री प्राप्त करने वाली महिलाओं की संख्या में लगातार वृद्धि हो रही है, साथ ही साथ प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थी भी विश्वविद्यालय के छात्रों का एक बड़ा हिस्सा बना रहे हैं। हालांकि संख्या में वृद्धि हुई है, किन्तु जब भी विश्वविद्यालय में सफल होने की बात आती है तो इस आबादी को अक्सर असुरक्षित माना जाता है।

परिकल्पना 2: उच्च शिक्षा में प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों को अध्ययन कक्ष में अन्तःक्रिया करने में मुश्किलों का सामना करना पड़ता है।

प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों को अध्ययन कक्ष में अपने शिक्षकों एवं अपने सहपाठियों से अन्तःक्रिया करने में कठिनाई का अनुभव करना पड़ता है। रेखाचित्र 4.1 से ज्ञात होता है कि जिन प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों की अध्ययन कक्ष में होने वाली चर्चा में भागीदारी नहीं होती है उन विद्यार्थियों का प्रतिशत सबसे अधिक है।

तालिका संख्या 4.3 से पता चलता है कि प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थी अन्य विद्यार्थियों के साथ अन्तःक्रिया करने में अधिक संकोच करते हैं और असहजता का भी अनुभव करते है। प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थी दूसरों से बातचीत करने में इसलिए भी असहजता का अनुभव करते हैं क्योंकि निम्न स्तर से आने के कारण उन्हें सभी

प्रकार की जानकारी नहीं होती है और अगर दूसरों से वे पूछते हैं तो उन्हें लगता है कि कहीं वे उनका मजाक न उड़ा दे कि आज के समय में भी इसे इस बात की जानकारी नहीं है। कभी–कभी कॉलेज और विश्वविद्यालय की जरूरतों के हिसाब से व्यवहार न होने के कारण भी प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों को दूसरों से बातचीत करने में असहजता महसूस होती हैं।

तालिका संख्या 4.4 से ज्ञात होता है कि प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों को शिक्षकों के बोलने के तरीके/लहजा और उनकी भाषा को समझने में भी कठिनाई का सामना करना पड़ता है। तालिका संख्या 4.5 यह दर्शाती है कि प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों को शिक्षकों से स्पष्टीकरण करने में भी असहजता का अनुभव होता है। तालिका संख्या 4.6 से पता चलता है कि प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों की संकोची प्रवृत्ति होने के कारण उन्हें मित्र बनाने में भी कठिनाई होती है क्योंकि वे दूसरों से अन्तःक्रिया करने में असहजता महसूस करते हैं।

प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों की कई प्रकार की चुनौतियों के आधार पर हमारी दूसरी परिकल्पना भी पूर्ण रूप से सत्य साबित होती है।

परिकल्पना 3: उच्च शिक्षा में प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों को अध्ययन कक्ष के बाहर परिसर में चुनौतियों का सामना करना पड़ता है।

तालिका संख्या 4.7 दर्शाती है कि प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों के लिए विश्वविद्यालय परिसर का वातावरण बिल्कुल नया होने के कारण वे स्वयं को समायोजित करने में असुविधा का अनुभव करते हैं और स्वयं को अनुपयुक्त (मिसफिट) पाते हैं। उन्हें यह लगता है कि यह जगह उन जैसे विद्यार्थियों के लिए नहीं है। तालिका संख्या 4.8 से यह ज्ञात होता है कि प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थी उच्च शिक्षा में प्रवेश लेने के पश्चात अफसोस महसूस करते हैं।

वास्तव में प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों के द्वारा नकारात्मक अनुभव अधिक महसूस किये जाते हैं शिक्षकों के द्वारा विद्यार्थियों के प्रति जातिगत भेदभाव, हिन्दी या अंग्रेजी माध्यम के आधार पर विद्यार्थियों के साथ भेदभाव, अध्ययन कक्ष में उच्च

जाति के विद्यार्थियों को वरियता प्रदान करने के आधार पर प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों ने नकारात्मक भाव का अनुभव किया। वे विश्वविद्यालय के वातावरण से परिचित नहीं होते हैं क्योंकि प्रथम पीढ़ी के अभिभावकों के पास कॉलेज का कोई अनुभव नही होता है जिसके कारण विश्वविद्यालय के वातावरण के विषय में कोई पूर्व जानकारी नही होती है।

इस प्रकार से अध्ययन की तीसरी परिकल्पना भी पूर्ण रूप से सत्य साबित होती है।

प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों की सफलता के लिए महत्वपूर्ण गैर शैक्षणिक कारक

विश्वविद्यालय में शिक्षा प्राप्त करने से सम्बन्धित सफलता के लिए कई अन्य महत्वपूर्ण कारक हैं जैसे शैक्षणिक प्रदर्शन सूचकांक, जीपीए। इनमें व्यवहार, कौशल, दृष्टिकोण और नीतियाँ भी शामिल हैं जो अकादमिक प्रदर्शन के लिए प्रासांगिक है।

विश्वविद्यालय के शिक्षकों की अपेक्षाओं और उन अपेक्षाओं के बारे में विद्यार्थियों के बीच एक गुणात्मक अध्ययन में कोलियर और मॉर्गन (2008) ने पाया कि शिक्षक और विद्यार्थी की समझ में अन्तर था। इसके अलावा, जब शिक्षक ने पाठ्यक्रम सामग्री और असाइनमेंट पर चर्चा की तो उसमें पाया कि प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थी गैर प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों की तुलना में अधिक विस्तार और अधिक स्पष्टता चाहते थे, उदाहरण के लिए, प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों ने यह भी महसूस किया कि वे तब तक अपना सर्वश्रेष्ठ काम नहीं कर सकते, जब तक कि शिक्षक अधिक विशिष्ट न हो।

प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थी उच्च शिक्षा के लिए स्वयं को कम तैयार महसूस करते हैं और गैर–प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों की तुलना में स्वयं को और अधिक भयभीत महसूस करते हैं (बुई, 2002)।

वर्तमान शोध बताते हैं कि शैक्षणिक तैयारी, सामाजिक–आर्थिक स्थिति, कॉलेज की संस्कृति के झटके का अनुभव और विश्वविद्यालय की प्रक्रिया में परिवार, अभिभावकों की भागीदारी सहित कई क्षेत्रों में प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थी अपने साथियों की तुलना में अलग हैं (बिल्सन एंड टैरी, 1982; ब्रुक्सटैरी, 1988; फैलन, 1997; हॉर्न एंड नुनैज़, 2000; हॉसल्र, श्मिट, एंड वेस्पर, 1999; टेरेंजिनी, स्प्रिंगर, येगर, पास्करेला, एंड नोरा, 1996)।

कोलियर और मार्गन (2008) ने प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों और गैर प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों की समझ के बीच अन्तर को देखने के लिए विद्यार्थियों और शिक्षकों पर फोकस समूहों के तथ्यों का इस्तेमाल किया। और पता चला कि प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थी नुकसान में थे क्योंकि वे यह निर्धारित करने में असमर्थ थे कि उनके प्रोफेसरों से उनकी क्या अपेक्षाएँ थी और यह सब निर्धारित करना प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों के लिए मुश्किल था क्योंकि उन्होंने स्कूल से विश्वविद्यालय में स्थानान्तरण किया था। विश्वविद्यालय में स्थानान्तरण और भी मुश्किल हो जाता है क्योंकि प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थी एक संस्कृति से दूसरी संस्कृति में स्थानान्तरण करते हैं, जो गंभीर संघर्ष का कारण बन जाता है और उनके परिसर जीवन को प्रभावित कर सकता है। कुछ विद्यार्थियों ने इसे सदमे को दूर करने के लिए वर्षों से लगने वाला झटका बताया है (हासियों, 1992)।

उच्च शिक्षा सभी प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों के लिए समान अवसर नहीं प्रदान करता है यही कारण है कि प्रकार्यात्मक सिद्धांत से हम प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों की चुनौतियों को नहीं समझ सकते। इसके लिए हमें उनके अनुभवों कों बुर्दियों और सी0टी0आई0 के सन्दर्भ में भी देखना अति आवश्यक है।

अध्याय 5

प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों की उच्च शिक्षा में अभिभावकों की भागीदारी

अध्याय 5

प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों की उच्च शिक्षा में अभिभावकों की भागीदारी

प्रस्तुत अध्याय में यह जानने का प्रयास किया गया है कि प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों के अभिभावक उन्हें कैसे प्रेरित करते हैं। क्या उनके अभिभावक उन्हें मार्गदर्शन देने की क्षमता रखते है? इस अध्याय का उद्देश्य प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थी के सांस्कृतिक पूंजी की बेहतर समझ हासिल करना है जो उन्हें उनके अभिभावकों से मिलती है।

कई शोधकर्ताओं ने पाया है कि विश्वविद्यालय में प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों की सफलता में परिवार की सहायता प्रणाली सबसे महत्वपूर्ण कारकों में से एक है। डेनिस एट अल., (2005) और बर्गर्सन (2007) दोनों का कहना है कि यह महत्वपूर्ण है, और कॉफमैन (2011) इसी प्रकार से माता–पिता की भागीदारी और सफलता के बीच एक मजबूत संबंध की रिपोर्ट करता है। मैकरॉन और इंकलास (2006), के अनुसार, प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों के शिक्षा का स्तर माता–पिता की भागीदारी और समर्थन के स्तर से सबसे अच्छा है। इसी तरह वेन, की केस स्टडी में, कैबरेरा, नोरा और कास्टनेडा (1992) की रिपोर्ट के अनुसार दोस्तों और परिवार के द्वारा प्रोत्साहन प्रतिधारण में एक बहुत बड़ी भूमिका निभाता है। दुर्भाग्य से, प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थी अभिभावकों के सहयोग और समर्थन में कमी पाते हैं। उन्हें सही सलाह नही मिलती एवं उनके समझ और उत्साह के स्तर में कमी होती है।

प्रस्तुत अध्याय का लक्ष्य बेहतर तरीके से यह समझना है कि अभिभावक अपने बच्चों के लिए घर परिवार में ऐसा वातावरण बनाने में समर्थ होते हैं या नहीं, जो उन्हें उच्च शिक्षा में समायोजित करने में मदद करे। प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों को अक्सर इससे भी अधिक नुकसान होता है क्योंकि उनके अभिभावकों में इस ज्ञान की कमी होती है कि विश्वविद्यालय की प्रक्रिया कैसे काम करती है? और बच्चों को विश्वविद्यालय भेजने एवं प्रवेश दिलाने में क्या कदम उठाने की

आवश्यकता होती है? प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों को अक्सर विश्वविद्यालय के लाभों के बारे में पूरी तरह से सूचित नहीं किया जाता है कि विश्वविद्यालय में भाग लेने के लिए क्या करना चाहिए, और विश्वविद्यालय की प्रवेश प्रक्रिया का कैसे संचालन किया जाता है। चॉय (2001) ने विश्वविद्यालय में प्रवेश लेने के लिए अनुक्रमिक चरणों की एक श्रृंखला प्रदान की है जिसका अनुसरण प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों को करना चाहिए। इन चरणों में शामिल हैं, विश्वविद्यालय में एक दिन में भाग लेने का विकल्प बनाना, विश्वविद्यालय स्तर के पाठ्यक्रम के लिए शैक्षणिक रूप से खुद को तैयार करना, एक उपयुक्त विश्वविद्यालय में प्रवेश परीक्षा की तैयारी करना और कम से कम एक विश्वविद्यालय का चयन करना और आवेदन करना। सामाजिक आर्थिक स्थिति, सांस्कृतिक पृष्ठभूमि और लिंग जैसे कारकों के कुछ उदाहरण हैं जिनका मूल्यांकन किया गया है क्योंकि यह उच्च शिक्षा से सम्बन्धित है।

अभिभावकों की भागीदारी एवं सांस्कृतिक पूंजी

साहित्य में ध्यान आकर्षित करने वाले विद्यार्थियों का एक महत्वपूर्ण समूह प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों का है। ये विद्यार्थी कई विशेषताओं और गुणों को साझा करते हैं जैसे कि कम सामाजिक–आर्थिक पृष्ठभूमि से आना, अभिभावकों का कम शिक्षित होना आदि। जिस परिवेश में प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थी पलते–बढ़ते हैं और विश्वविद्यालय जाने के निर्णय लेते हैं, वह एक महत्वपूर्ण परिप्रेक्ष्य है। जबकि साहित्यों से पता चलता है कि प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों के लिए विश्वविद्यालय तक की पहुँच और उनकी दृढ़ता के मुद्दे नए नहीं हैं। यह उन लोगों के लिए समस्याग्रस्त बना हुआ है जो विश्वविद्यालय जाने के लिए अपने परिवार में प्रथम बार प्रयास कर रहे हैं। शोध बताता है कि बच्चों के साथ साझा करने के लिए एक सांस्कृतिक पूंजी का होना आवश्यक है जो विश्वविद्यालय की उपस्थिति और सफलता के प्रोत्साहन में एक केन्द्रीय भूमिका निभाता है। प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थी जिनके अभिभावक विश्वविद्यालय नहीं गए उन्हें अपने बच्चों को कभी–कभी आवश्यक जानकारी, और विशेषताएँ प्रदान करना मुश्किल होता है जो कि प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों को विश्वविद्यालय जाने की स्वीकृति प्राप्त करने और स्नातक करने के लिए विश्वविद्यालय में बने रहने की संभावना को बढ़ाते हैं। परिवार की

सांस्कृतिक पूंजी के निर्माण में अभिभावकों की अहम भूमिका होती है। पियरे बुर्दियो (1977) के अनुसार एक साथ रहना, चलना–फिरना, कपड़े पहनने का तरीका, समाजीकरण, पसंद और नापसंद एक समूह को दूसरे से अलग करते है, और सांस्कृतिक पूंजी का एक समूह बनाते हैं।

पास्करेला, पीयर्सन, वोल्नायक और टेरेंजिनी (2004) के अनुसार, सांस्कृतिक और सामाजिक पूंजी के परस्पर तालमेल के माध्यम से विश्वविद्यालय के परिणामों के द्वारा प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों की स्थिति के प्रभाव का परीक्षण करना महत्वपूर्ण है। पास्करेला एट अल., 2004 सुझाव देते हैं कि जिन प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों के अभिभावका शिक्षित है, उनके पास एक नेटवर्क होता है जिसके द्वारा वे समाज के मूल्यवान मानव और सांस्कृतिक पूंजी का उपयोग कर पाते हैं। उच्च शिक्षा में गैर–प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों के प्रवेश में यह एक सामान्य बात है। किन्तु प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों के लिए यह एक चुनौती है।

अभिभावक और विद्यार्थियों की बातचीत में एक गैर–शैक्षणिक कारक है जो विद्यार्थियों की सफलता के लिए विशेष रूप से मूल्यवान है। हाई स्कूल से विश्वविद्यालय तक का स्थानान्तरण कई लोगों के लिए तनावपूर्ण हो सकता है। इस स्थानान्तरण के दौरान अभिभावकों की सहायता महत्वपूर्ण हो जाती है क्योंकि अभिभावक अपने बच्चों को कौशल और नीतियों को विकसित करने में मदद करने के लिए सलाह, निर्देश और भावनात्मक समर्थन प्रदान करते हैं जो विद्यार्थी के रूप में अनुभवी नई स्थितियों या चुनौतियों का सामना करने में उपयोगी हो सकता है।

विश्वविद्यालय के बारे में बातचीत करने के दौरान, माता–पिता विश्वविद्यालय के बारे में बहुमूल्य जानकारी देते हैं, जो विद्यार्थियों की सांस्कृतिक पूंजी को बढ़ा सकते हैं (स्फैनबर्ग एंड मास, 1997; बुर्दियों, 1973; वारेन, 1999)। ये सीखने के अनौपचारिक अनुभव उन विद्यार्थियों के लिए अधिक उपलब्ध होते हैं जिनके माता–पिता विश्वविद्यालय में पढ़ते थे, और परिणामस्वरूप ये विद्यार्थी विश्वविद्यालय से प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों की तुलना में काफी अधिक ज्ञान के साथ विश्वविद्यालय शुरू करते हैं। इसके विपरीत, जो माता–पिता विश्वविद्यालय नहीं

जाते थे, उनके पास अपने बच्चों को देने के लिए विश्वविद्यालय के बारे में कोई भी व्यक्तिगत अनुभव नहीं थे। गैर प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थी अपने अभिभावकों से प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों की तुलना में अधिक सामाजिक सहयोग प्राप्त करते हैं (यॉर्क–एंडरसन और बोमन, 1991)। पूर्व के शोध बताते हैं कि विश्वविद्यालय के बारे में अभिभावक–विद्यार्थी की बातचीत की प्रकृति और सीमा का अध्ययन करना महत्वपूर्ण है। इस बात पर भी ध्यान देना है कि अभिभावकों की भागीदारी उनके सांस्कृतिक पूंजी से जुड़ी हुयी है।

अभिभावकों की भागीदारीः गुणात्मक तथ्य

उच्च शिक्षा में प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों के अभिभावकों की भागीदारी के सम्बन्ध में जो आँकड़े प्राप्त हुए हैं उनके विश्लेषण से दो महत्वपूर्ण मुद्दे उजागर होते हैं। पहला अभिभावकों के अकांक्षाओं से सम्बन्धित है और दूसरा अभिभावकों की अपने बच्चों का मार्गदर्शन करने की क्षमता से सम्बन्धित है।

एक उत्तरदाता ने कहाः

> *मैं हमेशा विश्वविद्यालय जाने की इच्छा रखती थी, लेकिन मुझें यकीन नहीं था कि मैं इस लायक हूँ या नहीं.....मेरे पिता के हौसले ने मुझे प्रेरित किया और मैं इस विश्वविद्यालय में प्रवेश पाने की हिम्मत जुटा पाई।*

एक अन्य प्रश्न के उत्तर में इस उत्तरदाता ने फिर बताया :

> *परिसर के भीतर की चुनौतियाँ अलग हैं। लगता है मैं अन्जान जगह पर हूँ बताने पर भी मेरे पिता इन चुनौतियों को नहीं समझ पाते मुझे खुद इन चुनौतियों का सामना करना पड़ता है।*

एक अन्य उत्तरदाता ने बतायाः

> *मेरे माता–पिता बहुत उत्साहित है कि मैं यूनिवर्सिटी से उच्च शिक्षा प्राप्त कर रहा हूँ वे कभी यूनिवर्सिटी नहीं गए। और मुझे यूनिवर्सिटी भेजने में उन्हें गर्व महसूस होता है। वे अक्सर कहते हैं कि मैं वह कर रहा हूँ जो आज तक परिवार में किसी ने नही किया है।*

इसमें कोई सन्देह नहीं है कि अभिभावकों के हौसले और आकांक्षाएँ प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों को उच्च शिक्षा में प्रवेश प्राप्त करने की ऊर्जा देते हैं। किन्तु उच्च शिक्षा के भीतर प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों की चुनौतियाँ भिन्न होती हैं। वे मानते हैं कि अभिभावकों की भागीदारी सीमित है। अभिभावकों की भागीदारी उत्साह बनाए रखने तक ही होती है वे चुनौतियों को सुलझाने की क्षमता नहीं रखते। एक उत्तरदाता ने बताया:

> *वास्तव में मुझे अपने माता–पिता से कुछ जानकारी नही मिली क्योंकि वे उच्च शिक्षा के बारे में कुछ नहीं जानते हैं। वे सिर्फ यह सोचते हैं कि इससे [उच्च शिक्षा] मुझे अच्छी नौकरी मिलेगी।*

एक अन्य उत्तरदाता ने बताया:

> *मेरे माता–पिता में से किसी ने भी उच्च शिक्षा नहीं प्राप्त की है। वे इसके बारे में कुछ नहीं जानते। इसलिए वे इस सम्बन्ध में कोई राय नही दे पाते हैं वे सिर्फ मुझे आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करते हैं और समय–समय पर मुझ से मेरे द्वारा अध्ययन किये जाने वाले विषयों के बारे में पूछते हैं।*

गरीब परिवार से आने वाले प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थी अधिक चुनौतियों का सामना करते हैं। एक गरीब विद्यार्थी ने बताया:

> *मेरे माता–पिता अनपढ़ है। न तो वे कभी पूछते है कि मैं क्या पढ़ रहा हूँ किस तरह से अपने आप को इस घुटन में खींच रहा हूँ। मुझे नहीं लगता इस तरह की पढ़ाई मेरे कुछ काम आने वाली है।*

एक अन्य उत्तरदाता ने बताया:

> *मेरी माँ अनपढ़ हैं। और मेरे पिता प्लम्बर हैं। वे दिनभर अपने काम में व्यस्त रहते हैं रात में देर से घर आते हैं। उनके पास मेरी दिक्कतों को सुनने का समय ही नहीं है।*

वास्तविकता यह है कि अभिभावक अपने बच्चों की दिक्कतों को समझने की क्षमता ही नही रखते हैं। उन्हें बस यह लगता है कि सबसे बड़ी दिक्कत आर्थिक

तंगी होती है जिसके लिए वे हर सम्भव प्रयास करते हैं। आर्थिक तंगी से गुजर रहे उत्तरदाता से जब यह पूछा गया कि क्या उनके पिता खुश हैं तो उनका जवाब थाः

> *मेरे माता–पिता दोनों खुश हैं कि मैं यूनिवर्सिटी में पढ़ रहा हूँ। वे अक्सर कहते हैं कि वे किसी तरह मेरी पढ़ाई के लिए पैसे की व्यवस्था करेंगे..... पर वे यह नही समझ पाते हैं कि मुझे [विश्वविद्यालय में] कई और मुश्किलों का भी सामना करना पड़ता है।*

जब इस उत्तरदाता से यह पूछा गया कि वे अन्य मुश्किलें क्या हैं तो उन्होनें बतायाः

> *मुझे हर जगह दिक्कत होती है। क्लास में अंग्रेजी माध्यम से पढ़ा रहे टीचर की बोली समझ नहीं आती। पढ़ने की सामग्री जुटाने में, ऑफिस की प्रक्रिया जानने में, दोस्त बनाने में भी दिक्कत होती है.....मैं उन विद्यार्थियों से बात नही कर पाता जो अंग्रेजी में बात करते हैं। न तो वे मुझसे बात करते हैं.....उनका पहनावा बिल्कुल अलग होता है। मैं कभी–कभी अपने आप को अकेला महसूस करता हूँ। और यह सब बातें मेरे माता–पिता नहीं समझ पाते हैं।*

कुछ विद्यार्थियों को पढ़ाई के साथ–साथ अंशकालिक काम भी करना पड़ता है। एक विद्यार्थी ने बतायाः

> *मुझे यूनिवर्सिटी के बाद अपने पिता के काम में हाथ बटाना पड़ता है नहीं तो घर का खर्च चलाना मुश्किल हो जाये। फिर भी मेरे पिता चाहते हैं कि मैं पढ़ाई न छोड़ूँ।*

उपर्युक्त गुणात्मक तथ्यों से दो बातें साफ होती हैं पहली यह कि माता–पिता की आकांक्षाएँ बहुत होती हैं किन्तु उनकी मार्गदर्शन करने की क्षमता सीमित होती है। सांस्कृतिक पूंजी के आभाव एवं गरीबी के कारण अभिभावक अपने बच्चों की समस्याओं का समाधान नहीं कर पाते हैं।

प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों का अभिभावकों से शैक्षणिक सहायता न प्राप्त होने का कारण उनकी शिक्षा में कमी तथा अपने बच्चों के साथ समय बिताने के लिए

समय की कमी है। कुछ अध्ययनों में पाया गया है कि प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों में उच्च शिक्षा छोड़ने की दर अधिक है क्योंकि कुछ अभिभावक शिक्षा की तुलना में काम को आवश्यक मानते है इसलिए वे कम उम्र में ही बच्चों को काम करने में लगा देते हैं ताकि वे परिवार में आर्थिक सहयोग कर सकें।

प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों का आर्थिक स्तर बहुत ही निम्न होता है। और अधिकांश विद्यार्थी खेतिहर मजदूरों या छोटे अस्थायी नौकरी करने वाले अभिभावकों के बच्चे होते हैं। जिनकी कोई शैक्षिक पृष्ठभूमि नहीं होती है। इन विद्यार्थियों को उनके अभिभावकों के अशिक्षित होने या केवल इण्टरमीडिएट तक बुनियादी शिक्षा होने के कारण उच्च शिक्षा प्राप्त करने के लिए कोई भी समर्थन नहीं मिलता है। कुछ विद्यार्थी अभिभावकों की मदद कर परिवार की आय में योगदान देते हैं। परिवार की आर्थिक स्थिति ठीक न होने के कारण विद्यार्थियों को विश्वविद्यालय का शुल्क जमा करने तथा अन्य आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए उन्हें अंशकालिक नौकरी भी करनी पड़ती है। ऐसी स्थिति में विश्वविद्यालय की शिक्षा और नौकरी में सन्तुलन बनाना प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों के लिए मुश्किल होता है।

Goulart, P., & Bed, A. S.(2011) ने अपने अध्ययन में पाया कि विद्यार्थियों की रूचियाँ उनके स्कूल की एवं भविष्य की सफलता पर सार्थक प्रभाव डालती है। Harackiewicz, J. M., & Hulleman, C. S.(2010) ने अपने अध्ययन में पाया कि विद्यार्थियों की रूचियाँ उनके शैक्षिक उपलब्धि, पाठ्यक्रम चुनाव व उनके व्यावसायिक विकास पर सार्थक प्रभाव डालती है परन्तु फिर भी कई स्थितियों में परिवार किसी सफल छात्र को आदर्श बनाकर या प्रतिस्पर्धी पड़ोसी या रिश्तेदार से प्रभावित होकर उसी के अनुरुप बालक को पढ़ाना चाहते हैं, तथा बालक की रूचि को जानना उनके लिए आवश्यक भी नहीं होता है। अगर इन स्थितियों में बालक अभिभावकों द्वारा चयनित विषय को चुन लेते है तो वो असमंजस में ही रहते है कि उनकी रुचि न होते हुए भी उन्होंने जिस विषय का चुनाव किया है वह उसमें किस तरह श्रेष्ठ कर पायेंगें ऐसे में वे अपने को स्वयं समायोजित नहीं कर पाते जिससे उनका मानसिक स्वास्थ्य पूरी तरह से प्रभावित होने लगता है और उस विषय में

श्रेष्ठ करने के लिए लगातार परिश्रम करते रहते हैं किन्तु कुछ सार्थक परिणाम पाने में मुख्यता विफल रहते हैं।

स्कूल से विश्वविद्यालय में स्थानान्तरण प्रक्रिया को समायोजित करना उच्च शिक्षा प्रणाली में प्रवेश करने वाले प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों के लिए एक चुनौती है। हालांकि जो छात्र अपने परिवार में प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थी का प्रतिनिधित्व करते हैं उन विद्यार्थियों को विश्वविद्यालय की डिग्री सफलतापूर्वक प्राप्त करने के लिये अतिरिक्त बाधाओं का सामना करना पड़ता है। प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थी अपने परिवार की परंपरा को तोड़ते हुए विश्वविद्यालय जाने के लिए एक जागरूक विकल्प का चुनाव करते हैं। प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों को सामान्यतः अकादमिक, सामाजिक, और स्कूल से विश्वविद्यालय में स्थानान्तरण जैसी समस्याओं के साथ–साथ व्यक्तिगत कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है (टेरंजिनी एट अल, 1994)। प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों को अपने परिवार और दोस्तों की दुनियाँ तथा उनकी नई विश्वविद्यालय की संस्कृति जैसी दो अलग–अलग संस्कृतियों को अनुकूलित करने में भी कठिनाई होती है। परिवार में तनाव की स्थिति तब उत्पन्न हो जाती है जब प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थी अपने परिवार के सदस्यों के द्वारा परंपरागत रूप से अपनाई गई विश्वविद्यालय न जाने की संस्कृति की तुलना में विश्वविद्यालय जाने की नई संस्कृति को अपनाते हैं। प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थी यह अनुभव करते हैं कि उनके परिवार के सदस्य और उनके मित्र उनकी शैक्षणिक चुनौतियों को नहीं समझते है और उनके जीवन में चल रहे संघर्ष का अनुभव भी उन्हें नहीं होता है। तनावपूर्ण या अपरिचित स्थितियों में जैसे कि प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों के लिए विश्वविद्यालय जाना, परिवार की गतिशीलता और संबंन्धियों से बातचीत, फिर समायोजन स्तर और इन छात्रों के लिए सफलता में एक महत्वपूर्ण निर्धारक हो सकता है। प्रथम पीढ़ी के छात्रों की बढ़ती संख्या के कारण उच्च शिक्षा संस्थानों में भाग लेने का अवसर मिलता है। इन संस्थानों के लिए प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों के द्वारा अनुभव किए गए संघर्षों को समझना और उन्हें सफल होने में सहायता करने के लिए उनका समर्थन और हस्तक्षेप आवश्यक होता है। विश्वविद्यालयों को प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों की सफलता के लिये नीति विकसित करने के साथ यह जानने की

आवश्यकता है कि परिवार के गतिशील मुद्दे प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों की सफलता में किस प्रकार भूमिका निभा सकते है। गुणात्मक अध्ययन (लंदन, 1989, 1992,1996, मिशेल, 1997; टेरेंजिनी एट अल, 1994) कॉलेज में भाग लेने वाले प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों की पारिवारिक गतिशीलता की कटिनाईयों को सुस्पष्ट करते है।

गुणात्मक शोध अध्ययन ने प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों और परिवार के सदस्यों के बीच कुछ महत्वपूर्ण पारिवारिक संबंधों की कठिनाईयों की संभावना की ओर संकेत किया है (लंदन, 1989, 1992,1996, मिशेल, 1997; टेरेंजिनी एट अल, 1994)।

इस ज्ञान के बावजूद कि प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थी विश्वविद्यालय के अनुभव को अधिक तनावपूर्ण मानते हैं, पूर्व में किये गये शोध प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों के परिवारों और उनके विश्वविद्यालय के अनुभव के बीच सम्बन्धों की जाँच करने में विफल रहे हैं। प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों के सम्बन्ध में उपलब्ध साहित्य में, शोधकर्ताओं ने प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों के उप–समूह में परिवारों के प्रभाव की जाँच की है और सामान्य रूप से विश्वविद्यालय के अनुभव का मात्रात्मक विश्लेषण किया है।

अभिभावकों की भागीदारीः संख्यात्मक तथ्य

प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों से सम्बन्धित सीमित संख्या में शोध उपलब्ध हैं जो प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों पर परिवार के प्रभाव की जाँच करते है और इससे भी कम संख्या में अध्ययन हैं जो विशेष रूप से विश्वविद्यालय के अनुभव पर पड़ने वाले प्रभाव पर विचार करते हैं।

मात्रात्मक शोध परिवार के समर्थन को पैमाने की रेटिंग के आधार पर मापता है जिसमें प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों के द्वारा विश्वविद्यालयों की समस्याओं का सामना करने के दौरान परिवार से मिलने वाले समर्थन को आँका जाता है मात्रात्मक शोध परिवार के सदस्यों से मिलने वाले समर्थन को इंगित करता है (डेनिस, फेनी, और चेट्को, 2005)।

साहित्य में अभिभावकों की भागीदारी सहित परिवार के समर्थन के अन्य क्षेत्रों पर प्रकाश डाला गया है। परिवार के समर्थन का यह रूप विद्यार्थियों के शैक्षिक विकास और विद्यार्थियों के अतिरिक्त गतिविधियों में अभिभावकों के समर्थन से सम्बन्धित है (मैकक्रॉन और इंकलस, 2006)। इन सभी को भी विद्यार्थियों की प्रतिक्रिया के आधार पर नापा जाता है। यह मात्रात्मक विश्लेषण प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों में परिवार के समर्थन को देखने की एक समझ है। जहाँ एक ओर गुणात्मक अध्ययन अभिभावकों की भागीदारी की भूमिका की जाँच करता है और प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों की उच्च शिक्षा की सफलता के लिए प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों में गहरी समझ विकसित करने की मांग करता है (ब्रायन और सीमन्स, 2009)। वहीं दूसरी ओर मात्रात्मक अध्ययन गुणात्मक अध्ययन के परिणामों की पुष्टि करता है।

गुणात्मक अध्ययन में पाया गया कि प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों को उनके परिवारों से गैर–प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों के समान समर्थन नहीं मिलता है, बड़े पैमाने पर इसका कारण परिवार के सदस्यों में उच्च शिक्षा के बारे में ज्ञान की कमी है। इसी ज्ञान की कमी के कारण और अभिभावकों के समर्थन की कमी के कारण ही प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों में चिंता और हताशा की भावनाएँ विकसित होती है।

मात्रात्मक अध्ययन के अनुसार अभिभावकों की भागीदारी एक समग्र स्कोर होता है जो प्रत्येक उत्तरदाता से पूछे गये 4 प्रश्नों की प्रतिक्रियाओं से प्राप्त होता है। ये प्रश्न हैं: क्या आप अभिभावकों से अपनी पसंद के पाठ्यक्रमों के बारे में चर्चा करते हैं? क्या आप अभिभावकों से अपने ग्रेड/अंक के बारे में चर्चा करते हैं? क्या आप अभिभावकों से नौकरी की संभावनाओं के बारे में चर्चा करते हैं? क्या आप अभिभावकों से विश्वविद्यालय परिसर में आने वाली चुनौतियों के बारे में चर्चा करते हैं? इन 4 प्रश्नों के चार विकल्प इस प्रकार कोडित किये गये हैं 1.बहुत कम हद तक 2. कुछ हद तक 3. बहुत हद तक 4. बहुत ज्यादा हद तक। दो क्रमिक कोडों के मध्य समान दूरी मानी गयी है। सभी चारों प्रश्नों की प्रतिक्रियाओं का योग युवाओं के जीवन में अभिभावकों की भागीदारी को दर्शाता है। इस भागीदारी का

माप न्यूनतम 4 से अधिकतम 16 तक होती है। अधिक स्कोर अधिक भागीदारी को इंगित करता है और कम स्कोर कम भागीदारी को।

सभी 400 प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों के अभिभावकों की भागीदारी का औसत 7.96 है। और इसका मानक विचलन 2.78 है। औसत अभिभावकों की भागीदारी अधिकतम भागीदारी जो 16 है उसका लगभग आधा है। इससे यह ज्ञात होता है कि प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों में अभिभावकों की भागीदारी का स्तर नीचा होता है। अब हम अभिभावकों की भागीदारी के लिए चारों प्रश्नों का अलग–अलग आंकलन करेंगें।

प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों की उच्च शिक्षा में अभिभावकों की भागीदारी को जानने के लिए रेखाचित्र 5.1 बनाया गया है।

रेखाचित्र 5.1 प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों के द्वारा अपने अभिभावकों से पाठ्यक्रम की चर्चा करने के आधार पर विश्लेषण

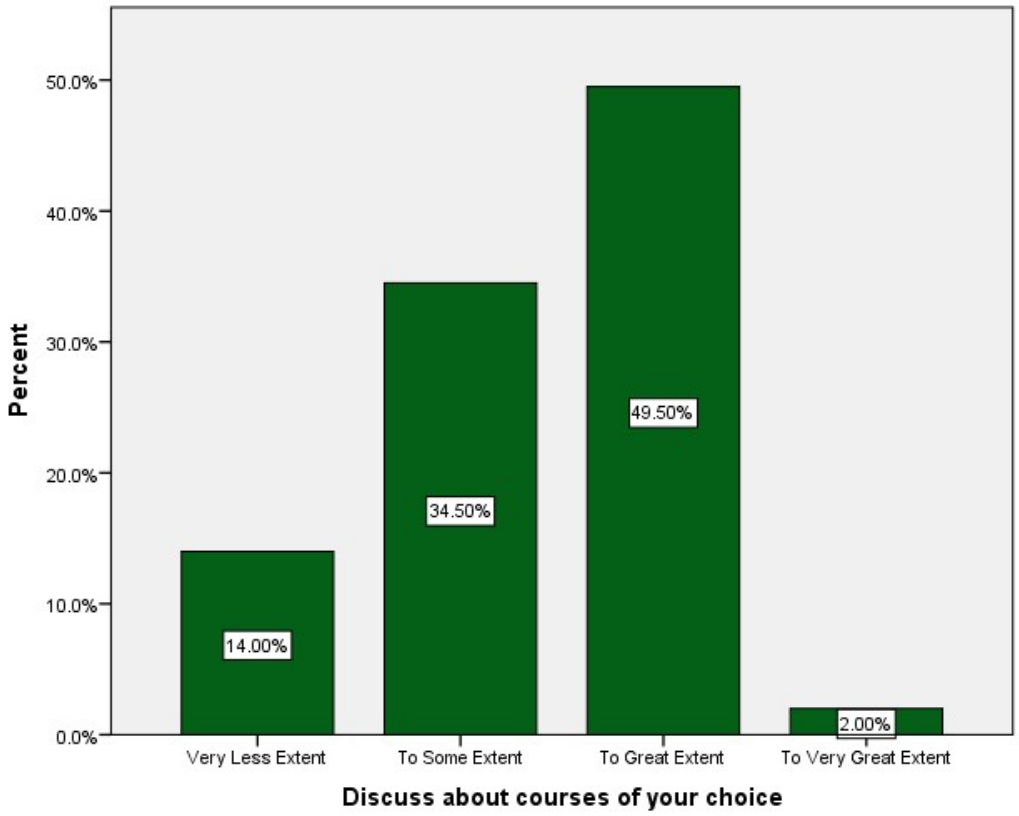

स्त्रोतः क्षेत्रीय कार्य

रेखाचित्र 5.1 दर्शाता है कि बहुत हद तक अभिभावकों से पाठ्यक्रम के विषय में चर्चा करने वाले विद्यार्थियों का प्रतिशत 49.50 है। कुछ हद तक चर्चा करने वाले प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों का प्रतिशत 34.50 है। बहुत कम हद तक चर्चा करने वाले प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों का प्रतिशत 14.00 है और जो बहुत ज्यादा हद तक अपने अभिभावकों से पाठ्यक्रम के विषय में चर्चा करते हैं ऐसे विद्यार्थियों का प्रतिश 2 है। इनका प्रतिशत सबसे कम है।

अभिभावकों को बच्चों के लिए कौन सा पाठ्यक्रम उपयुक्त होगा इसके विषय में उन्हें पर्याप्त जानकारी नहीं होती है, जिसके कारण वे अध्ययन में अपने बच्चों की पर्याप्त सहायता नहीं कर पाते हैं। और बच्चे भी अपने परिवार में उच्च शिक्षा प्राप्त करने वाला पहला व्यक्ति होने के कारण काफी उत्तेजित होता है और विश्वविद्यालय में पढ़ाये जाने वाले पाठ्यक्रम से अवगत नहीं होता है इस कारण से भी प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों को उच्च शिक्षा प्राप्त करने में चुनौतियों का सामना करना पड़ता है।

रेखाचित्र 5.2 प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों के द्वारा अपने अभिभावकों से अंको और ग्रेड के बारे में चर्चा करने के आधार पर विश्लेषण

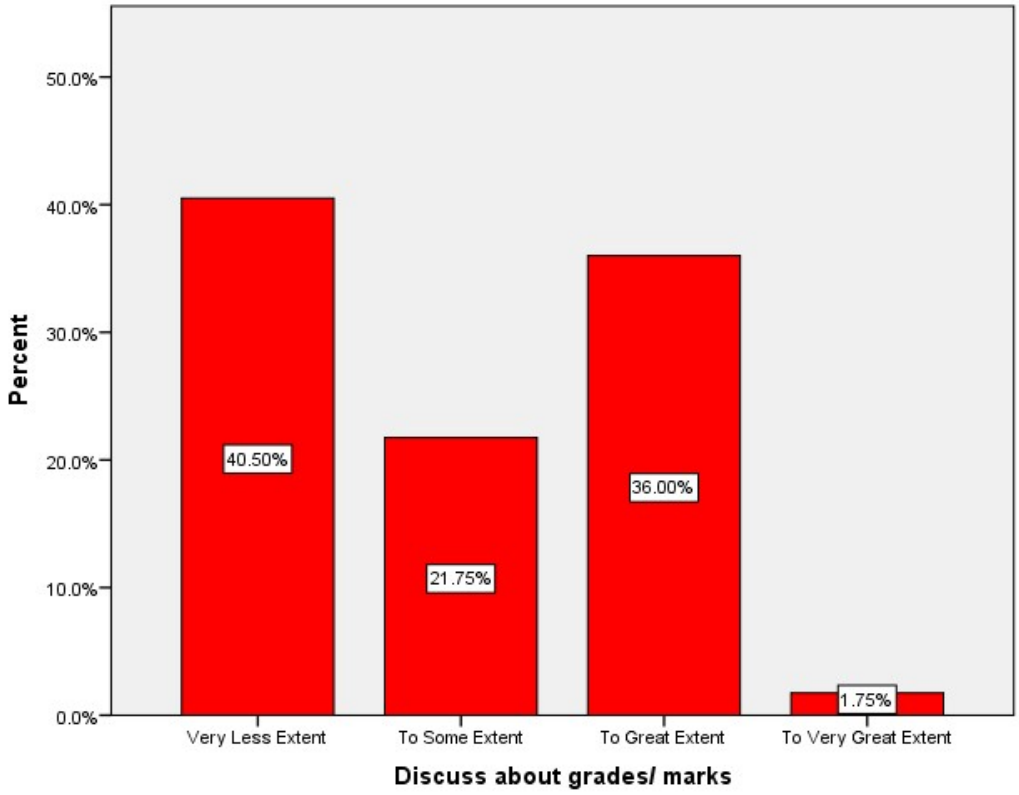

स्त्रोतः क्षेत्रीय कार्य

रेखाचित्र 5.2 से प्रदर्शित होता है कि जो प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थी अपने अभिभावकों से परीक्षा में प्राप्त होने वाले अंकों और ग्रेड के बारे में बहुत कम हद तक चर्चा करते हैं ऐसे विद्यार्थियों का प्रतिशत 40.50 है। जो कुछ हद तक अंकों और ग्रेड के बारे में चर्चा करते हैं उनका प्रतिशत 21.75 है और जो बहुत हद तक अभिभावकों से अंको की चर्चा करते हैं उनका प्रतिशत 36.00 है और जो बहुत ज्यादा हद तक अभिभावकों से अंको की चर्चा करते हैं उनका प्रतिशत 1.75 है।

रेखाचित्र 5.3 प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों के द्वारा अभिभावकों से नौकरी के बारे में चर्चा करने के आधार पर विश्लेषण

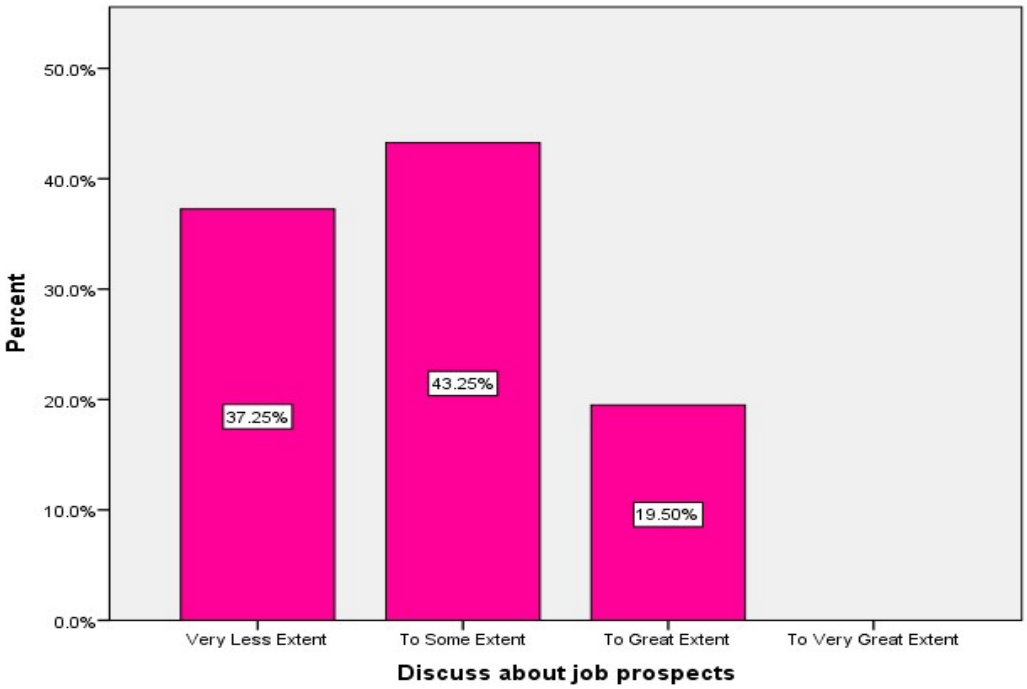

स्त्रोतः क्षेत्रीय कार्य

रेखाचित्र 5.3 से स्पष्ट होता है कि प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों को उच्च शिक्षा का ज्ञान न होने के कारण उन्हें यह ज्ञान नहीं होता है कि किस क्षेत्र में किस विभाग से सम्बन्धित नौकरी का विज्ञापन आता है। प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थी अन्य विद्यार्थियों को देख कर सीखते हैं और नौकरी के लिए आवेदन करते हैं।

अपने अभिभावकों से नौकरी के बारे में बहुत कम हद तक चर्चा करने वाले विद्यार्थियों का प्रतिशत 37.25 है। और कुछ हद तक चर्चा करने वाले विद्यार्थियों का

प्रतिशत 43.25 हैं बहुत हद तक चर्चा करने वाले प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों का प्रतिशत 19.50 है। और जो बहुत ज्यादा हद तक अपने अभिभावकों से नौकरी के विषय में चर्चा करते हैं उनका प्रतिशत 0.0 है।

रेखाचित्र 5.4 प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों के द्वारा अभिभावकों से परिसर में होने वाली समस्याओं के बारे में चर्चा करने के आधार पर

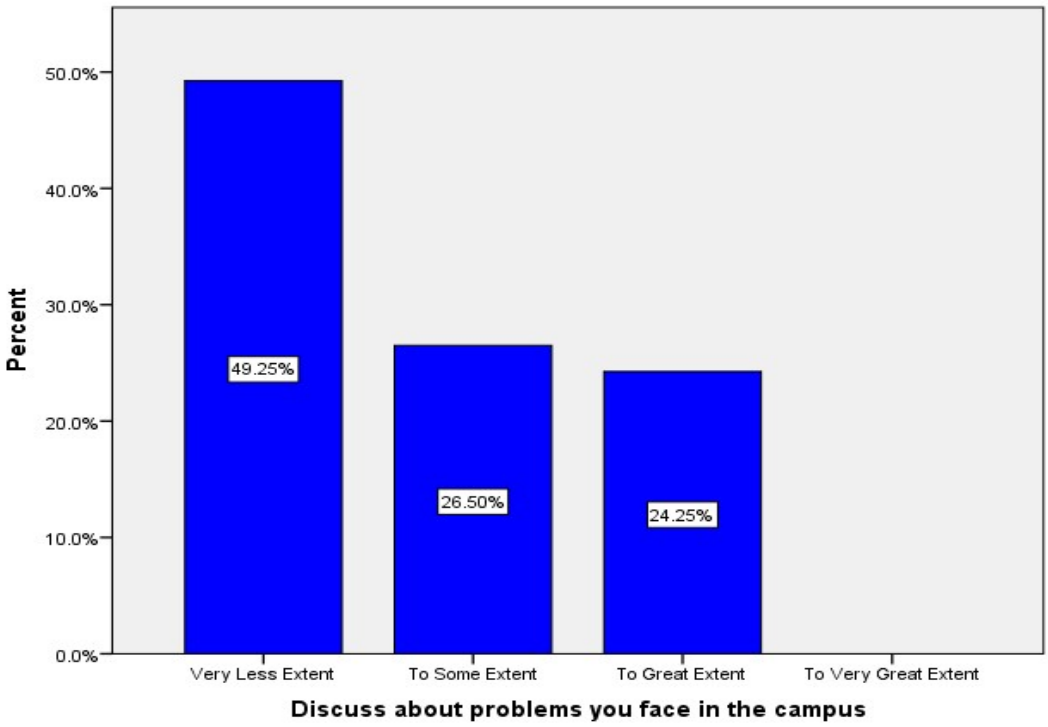

स्त्रोतः क्षेत्रीय कार्य

रेखाचित्र 5.4 से स्पष्ट होता है कि प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थी यह महसूस करते हैं कि उनके अभिभावक उनकी विश्वविद्यालय परिसर से सम्बन्धित समस्याओं को दूर करने एवं मदद करने में सफल नहीं हो पाते हैं उन विद्यार्थियों का प्रतिशत 49. 25 है जो बहुत कम हद तक अपने अभिभावकों से परिसर से जुड़ी समस्याओं के बारे में चर्चा करते है। जो कुछ हद तक अपने अभिभावकों से परिसर से जुड़ी समस्याओं के बारे में चर्चा करते हैं उनका प्रतिशत 26.50 है। ऐसे विद्यार्थियों का प्रतिशत 24.25 है जो अपने अभिभावकों से विश्वविद्यालय परिसर में होने वाली समस्याओं के बारे में बहुत हद तक चर्चा करते हैं। बहुत ज्यादा हद तक अपने

अभिभावकों से विश्वविद्यालय परिसर में होने वाली समस्याओं के बारे में चर्चा करने वाले विद्यार्थियों का प्रतिशत 0.0 है।

अब हम चारों प्रश्नों के योग के अनुसार अभिभावकों की भागीदारी का आंकलन करेंगें साथ ही यह भी देखेगें कि अभिभावकों की भागीदारी किस तरह लिंग, जाति, धर्म एवं आय के अनुसार बदलती है।

रेखाचित्रः 5.5 लिंग के आधार पर प्रथम पीढ़ी के अभिभावकों की भागीदारी का विश्लेषण

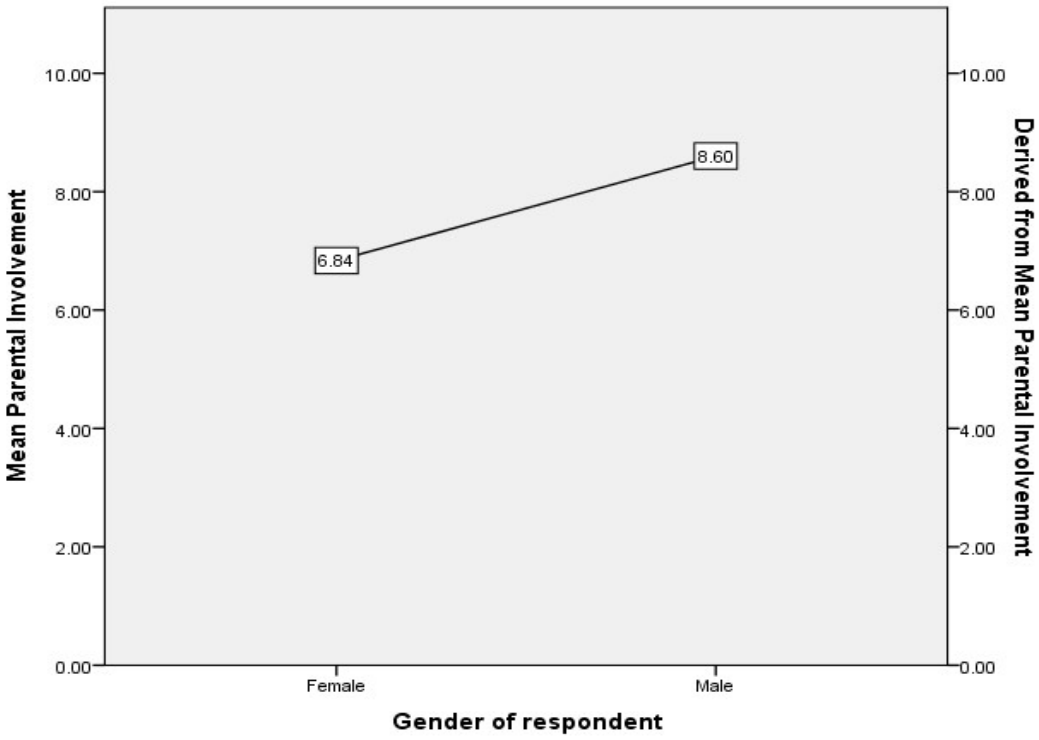

स्त्रोतः क्षेत्रीय कार्य

रेखाचित्र 5.5 यह दर्शाता है कि अभिभावकों की भागीदारी को लिंग के आधार पर वर्गीकृत करने पर ज्ञात होता है कि महिला प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों के प्रति अभिभावकों की भागीदारी 6.84 हैं और पुरूष विद्यार्थियों के अभिभावकों की भागीदारी 8.60 है। अतः अभिभावकों की भागीदारी पुरूषों के लिए अधिक है और महिलाओं के प्रति कम है।

रेखाचित्रः 5.6 जाति के आधार पर प्रथम पीढ़ी के अभिभावकों की भागीदारी का विश्लेषण

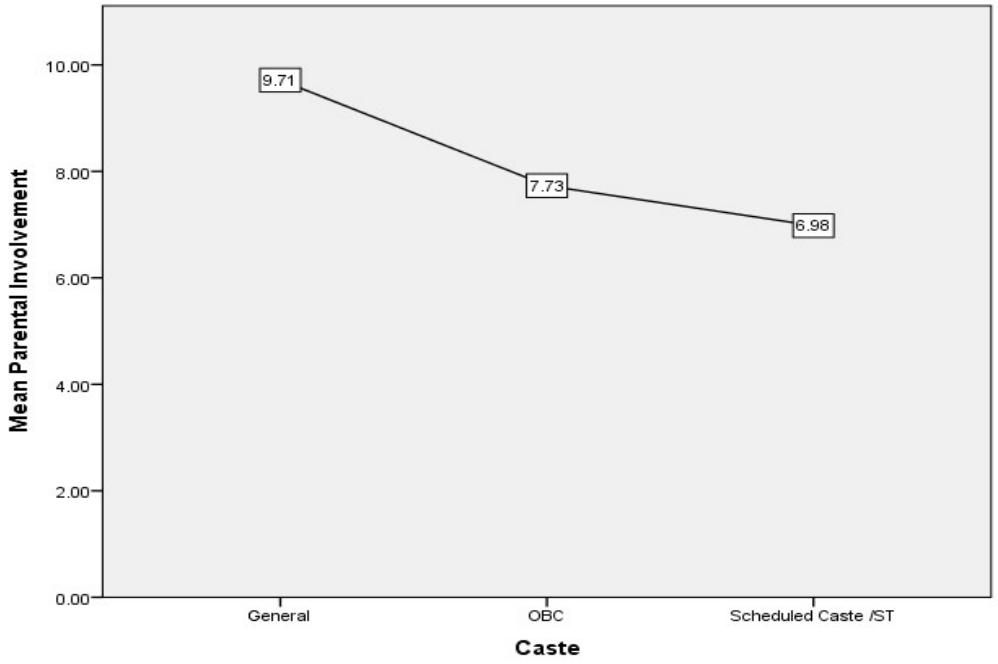

स्त्रोतः क्षेत्रीय कार्य

रेखाचित्र 5.6 यह दर्शाता है कि अभिभावकों की भागीदारी को जाति के आधार पर वर्गीकृत करने पर ज्ञात होता है कि सामान्य जाति से सम्बन्धित प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों के अभिभावकों की भागीदारी सबसे अधिक है (9.71) है और अन्य पिछड़ी जाति के प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों के अभिभावकों की भागीदारी सामान्य जाति के विद्यार्थियों से कम (7.73) है। और अनुसूचित जाति एवं जनजाति के प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों के अभिभावकों की भागीदारी का अन्य जाति के विद्यार्थियों की तुलना में सबसे कम (6.98) है।

रेखाचित्रः 5.7 धर्म के आधार पर प्रथम पीढ़ी के अभिभावकों की भागीदारी विश्लेषण

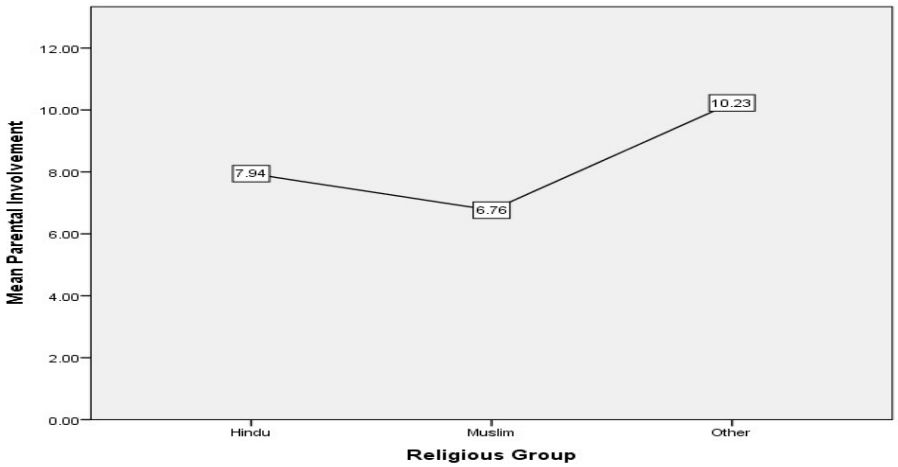

स्त्रोतः क्षेत्रीय कार्य

उपर्युक्त रेखाचित्र 5.7 यह प्रदर्शित करता है कि अभिभावकों की भागीदारी को धर्म के आधार पर वर्गीकृत करने पर ज्ञात होता है कि हिन्दू धर्म से सम्बन्धित प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों के अभिभावकों की भागीदारी 7.94 हैं और मुस्लिम धर्म के प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों के अभिभावकों की भागीदारी 6.76 है। एवं अन्य धर्म से सम्बन्धित प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों के अभिभावकों की भागीदारी 10.23 है।

रेखाचित्रः 5.8 पारिवारिक आय के आधार पर प्रथम पीढ़ी के अभिभावकों की भागीदारी का विश्लेषण

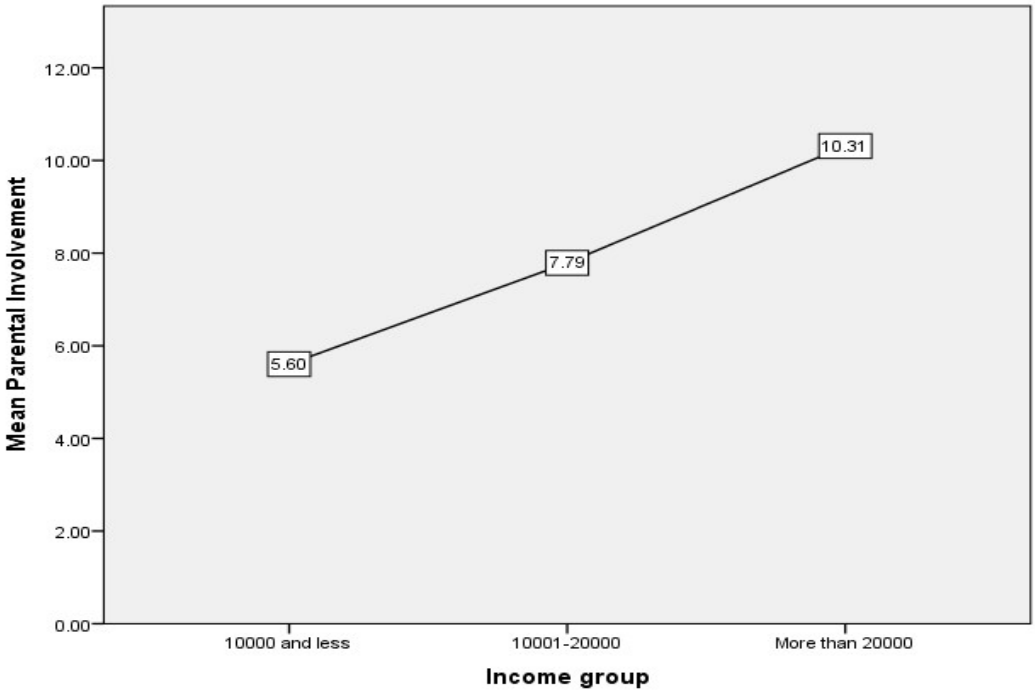

स्त्रोतः क्षेत्रीय कार्य

उपर्युक्त रेखाचित्र 5.8 यह प्रदर्शित करता है कि अभिभावकों की भागीदारी को पारिवारिक आय के आधार पर वर्गीकृत करने से ज्ञात होता है कि 10000 से कम पारिवारिक आय वाले परिवार से सम्बन्धित प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों के अभिभावकों की भागीदारी 5.60 हैं और 10000 से 20000 तक पारिवारिक आय वाले परिवार से सम्बन्धित प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों के अभिभावकों की भागीदारी 7.79 है एवं 20000 से अधिक पारिवारिक आय वाले परिवार से सम्बन्धित प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों के अभिभावकों की भागीदारी 10.31 है।

यह गौर करना महत्वपूर्ण है कि प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों में अभिभावकों की भागीदारी का स्तर बहुत कम होता है। और यदि हम अभिभावकों की भागीदारी को प्रमुख चरों के आधार पर या तो प्रमुख चरों जैसे लिंग, जाति, धर्म, एवं पारिवारिक आय के अनुसार देखें तो इसमें भी बहुत विषमताएँ दिखती हैं। गुणात्मक अध्ययन इस ओर संकेत करते हैं कि अभिभावकों की आकांक्षाएँ अधिक होती हैं किन्तु अपने बच्चों को सलाह देने की क्षमता इनमें बहुत कम होती है।

अभिभावकों की भागीदारी एक विश्लेषण

जैसा कि उच्च शिक्षा में प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों की संख्या में वृद्धि जारी है, इससे शिक्षकों को विद्यार्थियों और उनकी शैक्षणिक सफलता को प्रभावित करने वाले कारकों के बारे में अधिक जानने की आवश्यकता है। प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों के अभिभावकों के बीच विश्वविद्यालय जाने के अनुभव के सापेक्ष सामाजिक और सांस्कृतिक पूंजी की कमी को इन विद्यार्थियों की सफलता के लिए हानिकारक माना जाता है। प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों के माता–पिता विश्वविद्यालय के चयन और प्रवेश प्रक्रिया में अपने बच्चों के साथ बहुत शामिल नहीं होते हैं (एंगल, बर्मियो, एंड ओ ब्रिन, 2006)।

प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों के अभिभावकों को विश्वविद्यालय की उपस्थिति उनके गैर–प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों के अभिभावकों की तुलना में कम महत्वपूर्ण प्रतीत होती है (प्रैट् एंड स्कैग्स, 1989)। प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थी उच्च शिक्षा प्राप्त करने के बाद अपने माता–पिता के साथ संबंध खोने के बारे में दुःख और चिंता दोनों व्यक्त करते हैं। इन चिंताओं को उनके माता–पिता को विश्वविद्यालय जाने वाले अनुभव के ज्ञान की कमी के लिए जिम्मेदार ठहराया जाता है, जो विद्यार्थी महसूस कर रहा है उससे संबंधि अक्षमता पैदा करता है। प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थी के लिए विश्वविद्यालय में समायोजन करना तनावपूर्ण होता है, और वे स्वयं को अलग–थलग महसूस करते हैं, क्योंकि उनके पास अपने माता–पिता सहित अन्य व्यक्तियों तक की पहुँच की कमी होती है, जो उनकी भावनाओं के साथ सहानुभूति रखते हैं (स्मिथ, हॉकमेयर, हेरॉन, वन्डरलिच, एंड पैन्नेबेकर, 2008)। कुछ प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों को इनके अभिभावकों की पूरी सहानुभूति मिलती है जिसके सहारे वे अपनी एंजेन्सी का प्रयोग करते हैं और अपने आप को उच्च शिक्षा में स्थापित करने का प्रयत्न करते हैं। कई प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थी यह महसूस करने लगते हैं कि उनके माता पिता उनकी दिक्कतों को समझने में असमर्थ हैं और वे निराश हो जाते हैं। प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थी स्वयं उच्च शिक्षा में अपने आप को स्थापित करने में असहजता महसूस करते हैं।

जब प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थी गैर प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों के साथ चिंताओं पर चर्चा करने में सक्षम होते हैं तो प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थी गैर प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों की स्थिति से संबंधित हो पाते हैं, तो उनका तनाव स्तर कम हो जाता है (पैन्नेबेकर, कोल्डर, एंड शार्प, 1990)। बिना इस तनाव से निकले प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थी एक नए के माहौल में बाधाओं का सामना करने के लिए व्याकुल हो जाते हैं, जबकि सभी अभिभावक अपने बच्चों के तनाव को समझ नहीं पाते हैं (फिनी और हास; 2003)। यह स्थिति बताती है कि प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों ने अपने गैर–प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों की तुलना में अपने अभिभावकों के साथ अपने शैक्षणिक जीवन के बारे में अपनी चिंताओं पर कम चर्चा क्यों की (बैरी, हुडली, केली, एंड चो, 2009)। साहित्य यह इंगित करता है कि प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों को उनके गैर–प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों की तुलना में उनके माता–पिता से कम समर्थन प्राप्त होता है जो विश्वविद्यालय जाने की उनकी इच्छा के सापेक्ष है (फालौन, 1997)। यह तथ्य बताता है कि विश्वविद्यालय के अनुभव की कमी के कारण अभिभावक अपने बच्चों को विश्वविद्यालय में आवश्यक सहायता प्रदान करने की संभावना नहीं रखते हैं। माता–पिता निश्चित रूप से विद्यार्थी की सामाजिक और सांस्कृतिक पहचान के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं, और यह अभिभावक की भूमिका जातीय समूहों के भीतर और भी महत्वपूर्ण हो सकती है, जिसमें सबसे बड़ी संख्या में प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थी शामिल हैं (तायब, 2008)। और कभी–कभी उपहास का सामना करते हैं। लंदन (1989) और पोर्कप्वस्की (1983) दोनों ने पाया कि प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थी अपराध बोध (सरवाइवर गिल्ट) से पीड़ित होते हैं जब उनकी व्यक्तिगत स्थिति में सुधार हो रहा होता है तो वे अपने परिवार से संघर्ष करते हैं।

बुर्दियो ने सांस्कृतिक पूंजी को एक उपकरण के रूप में देखा जो समाज में वर्गों के बीच असमानताओं का पुनुरूत्पादन करता है बुर्दियों के अनुसार यह आमतौर पर शिक्षा के दायरे में हुआ है। माता–पिता का शैक्षणिक स्तर प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों के परिवार में सांस्कृतिक पूंजी का निर्माण करता है। बदले में यह परिवार के आर्थिक एवं सामाजिक पूंजी का निर्धारण करता है। प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों की उच्च शिक्षा को निर्धारित करती है। यह सांस्कृतिक पूंजी और

सामाजिक पूंजी के संकेतों के रूप में आती है, जो उन्हें शिक्षा प्रक्रिया को नेविगेट करने में मदद करती है। उच्च आय वाले घरों के बच्चों के पास उच्च सांस्कृतिक पूंजी होती है, जबकि कम आय वाले घरों के बच्चों के पास कम सांस्कृतिक पूंजी होती है। इसलिए, उच्च आय वाले बच्चे उच्च सांस्कृतिक पूंजी के साथ स्कूल जाते हैं और कम आय वाले बच्चों की तुलना में अधिक शैक्षणिक उपलब्धि का लाभ उठाते हैं।

मध्य और निम्न वर्ग के परिवारों के बीच विश्वविद्यालय आवेदन प्रक्रिया के दौरान लारियो और वेनिंगर (2008) ने माता–पिता की भागीदारी की जांच की। और उन्होंने पाया कि विश्वविद्यालय आवेदन प्रक्रिया के दौरान माता–पिता की भागीदारी एक मध्यम वर्ग का मामला है। जबकि निचले वर्ग के माता–पिता अपने बच्चों की मदद करने के लिए कम तैयार होते हैं, माता–पिता कितने सहायक हो सकते हैं उनके ज्ञान की कमी बच्चों की सहायता करने में बाधा डालती है।

अभिभावकों से होने वाली बातचीत में विश्वविद्यालय जाने वाले बच्चे के लिए भावनात्मक और महत्वपूर्ण समर्थन होता है। भावनात्मक समर्थन अभिभावकों की समझ विश्वविद्यालय में भाग लेने वाले अपने बच्चें की भावनाओं और चिंता पर केन्द्रित होती है। पूर्व के शोध के आधार पर, गैर–प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थी बताते हैं कि, उच्च शिक्षा शुरू करने से पहले, उन्होंने विश्वविद्यालय के बारे में अपने माता–पिता के साथ अधिक बार बात की और पाया कि प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों की तुलना में ये वार्तालाप अधिक सहायक थे।

हालांकि प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों को यह महसूस नहीं होता है कि वे अन्य विद्यार्थियों के समान अपने अभिभावकों से विश्वविद्यालय के बारे में उपयोगी जानकारी और सलाह प्राप्त कर सकते हैं, प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों को अभी भी माता–पिता के भावनात्मक समर्थन से लाभ होता है क्योंकि वे विश्वविद्यालय जाने की तैयारी करते हैं। ये विद्यार्थी अपने माता–पिता के साथ विश्वविद्यालय के बारे में बात करते हैं और अपने विश्वविद्यालय के अनुभव उनके साथ साझा करते हैं। इस तरह, उनके अभिभावक उनके लिए प्रोत्साहन का स्त्रोत हैं और विद्यार्थियों के लिए

प्रेरणा भी हैं। अपने स्वयं के विश्वविद्यालय के अनुभव की परवाह किए बिना माता–पिता की महत्वपूर्ण भूमिका उनके बच्चों के जीवन में होती है क्योंकि उनके बच्चे हाई–स्कूल से विश्वविद्यालय में स्थानान्तरण करते हैं। एक अध्ययन से ज्ञात होता है कि अभिभावक चुनौतियों का सामना करते हैं, जब वे अपने विश्वविद्यालय जाने वाले बच्चों को विश्वविद्यालय जीवन में समायोजित करने में मदद करने की कोशिश करते हैं। अभिभावकों का प्रोत्साहन प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों के लिए उच्च शिक्षा में लाभदायक सिद्ध होता है किन्तु प्रवेश के बाद उच्च शिक्षा में अपने आपको समायोजित करने की चुनौतियों को समझने और उसे दूर करने में अभिभावकों की क्षमता नहीं होती है।

पिछले शोध बताते हैं कि कुछ माता–पिता को सीमित जानकारी होती है कि कैसे अपने बच्चों को विश्वविद्यालय की आवश्यकताओं को पूरा करने में मदद करें, जैसे कि विश्वविद्यालय की तैयारी और प्रवेश प्राप्त करने के लिए आवश्यक पाठ्यक्रम का चुनाव (टोरेज़, 2004)। जब माता–पिता इस प्रकार की जानकारी चाहते हैं, तो उनके सामने आने वाली बाधाओं में अंग्रेजी भाषा की निपुणता का निम्न स्तर, मांग और काम के कार्यक्रम के साथ संघर्ष, और उपलब्ध संसाधनों और कॉलेज की तैयारी एवं कॉलेज में समायोजित होने से संबंधित सेवाओं के साथ अपरिचितता शामिल हैं। ये चुनौतियाँ विशेष रूप से निम्न आय की पृष्ठभूमि वाले प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों से सम्बन्धित है (बॉम एंड फ्लोर्स, 2011)। साथ ही यह अधिकतर एस0सी0, ओ0बी0सी0, मुस्लिम एवं महिला प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों पर भी लागू होता है।

परिवार की आय या सामाजिक–आर्थिक स्तर की समस्या प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों के लिए सांस्कृतिक और सामाजिक पूंजी की अवधारणाओं से सम्बन्धित कारक है। विश्वविद्यालय जाने की प्रक्रिया में, सांस्कृतिक और सामाजिक पूंजी शब्दावली को परिसर के पर्यावरण और परिसर के मूल्यों, मानव और वित्तीय संसाधनों का उपयोग, अपनेपन के रूप में परिभाषित किया गया है (बुर्दियों, 1977, 1986; कोलमैन, 1988; मैककैनल, 2000; मैकडोनो, 1997)। यही कारण है कि प्रथम

पीढ़ी के विद्यार्थी उच्च शिक्षा में ''कल्चरल शॉक'' की भावना से प्रेरित होते हैं (इन्मैन एंड मैयस, 1999)।

प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थी अपने पारिवारिक संस्कृति और अपने उच्च शिक्षा संस्थानों की संस्कृति के बीच विरोधाभास अनुभव करते हैं (हासियो, 1992; टिंटो, 1987)।

प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों में सांस्कृतिक स्थानान्तरण से अधिक विरोध की भावनाएं हो सकती हैं। और वे अक्सर विश्वविद्यालय की संस्कृति के साथ–साथ परिचित संस्कृति द्वारा स्वयं को हाशिए पर महसूस करते हैं क्योंकि वे विश्वविद्यालय की संस्कृति के साथ समायोजन करने में कठिनाई का अनुभव करते है और स्वयं को पिछड़ा हुआ महसूस करते हैं। (डार्लिंग और स्मिथ, 2007)।

परिकल्पना 4: प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों के स्कूल से विश्वविद्यालय के स्थानान्तरण के दौरान अभिभावकों की भागीदारी कम या ना के बराबर होती है।

प्रस्तुत अध्ययन में रेखाचित्र 5.1 में यह दर्शाया गया है कि प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थी बहुत हद तक अपने अभिभावकों से अपने पाठ्यक्रम के विषय में चर्चा करते हैं किन्तु उच्च शिक्षा के विषय में अधिक ज्ञान न होने के कारण अभिभावक से उन्हें किसी प्रकार का मार्गदर्शन नहीं मिल पाता है। रेखाचित्र 5.2 से ज्ञात होता है कि प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थी अपने ग्रेड और अंकों के बारे में अपने अभिभावकों से बहुत कम चर्चा करते हैं। रेखाचित्र 5.3 से पता चलता है कि प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थी कुछ हद तक ही अपने अभिभावकों से नौकरी से सम्बन्धित चर्चा करते हैं। रेखाचित्र 5.4 दर्शाता है कि बहुत ही कम प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थी अपने अभिभावकों से विश्वविद्यालय परिसर में होने वाली समस्याओं के विषय में वार्तालाप करते हैं। इस आधार पर देखने से ज्ञात होता है कि कुल मिलाकर प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थी अपने अभिभावकों से विश्वविद्यालय से जुड़े अनेक विषयों पर चर्चा तो अवश्य करते हैं किन्तु विद्यार्थियों की चुनौतियों को दूर करने एवं उनका समाधान करने में अभिभावक स्वयं को असर्मथ महसूस करते हैं। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि

प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों की उच्च शिक्षा में उनके अभिभावकों की भागीदारी बहुत कम या नाम मात्र की होती है। इस आधार पर प्रस्तुत अध्ययन की चौथी परिकल्पना लगभग सत्य साबित होती है। अधिकांश अभिभावक प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों के लिए प्रेरणास्त्रोत का कार्य करते हैं किन्तु वास्तविक रूप से उनकी समस्याओं को दूर करने में असमर्थ होते हैं।

निम्न सामाजिक–आर्थिक स्थिति और खराब शैक्षणिक उपलब्धि के अलावा, प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों ने कई मुद्दों के साथ उच्च शिक्षा के लिए मार्ग तैयार किया, वे इस मामले में अग्रणी हैं कि वे कुछ ऐसा कर रहे हैं जो उनके माता–पिता ने नहीं किया। कुल मिलाकर साहित्य एवं यह अध्ययन यह बताते हैं कि प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों के परिवार के समर्थन का स्तर निम्न होता है, विश्वविद्यालय के महत्व को समझने का निम्न स्तर, और प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों में विश्वविद्यालय के वातावरण तथा वहां के मूल्यों के बारे में ज्ञान का अभाव होता है (हासियो, 1992; मैककैनल, 2000; शर्लिन, 2000; टेरेंजिनी एट अल., 1996)। विश्वविद्यालय के पर्यावरण और परिसर के मूल्यों के बारे में कम जानकारी प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों के लिए विश्वविद्यालय संस्कृति झटके (कल्चरल शॉक) के समान है (इनमैन एंड मेयस, 1999; पार्योवस्की, 1983)। प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थी एक ऐसी दुनिया को खोजने के लिए परिसर में पहुँचते हैं जो अपने मूल पारिवारिक मूल्यों के साथ संघर्ष करते हैं क्योंकि उनकी विश्वविद्यालय संस्कृति और पारिवारिक संस्कृति के बीच संतुलन नही होता है। इस संघर्ष को ''डबल असाइनमेंट'' के रूप में संदर्भित करता है, जो बताता है कि प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थी दो दुनियाओं के बीच उभरकर रह जाते हैं।

अध्याय 6

प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों की उच्च शिक्षा में अभिभावकों की भागीदारी

अध्याय 6

उच्च शिक्षा में प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों की प्रतिक्रियाएँ

समाजशास्त्री अपने अद्वितीय अनुभवों के कारण प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों में रूचि रखते हैं। हालांकि अधिकांश साहित्य प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों के समायोजन पर केन्द्रित है। कुछ ही साहित्य उच्च शिक्षा में प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों की प्रतिक्रिया पर आधारित है।

अकादमिक रूप से, प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थी अपने साथियों की तुलना में विश्वविद्यालय की कठोरता के लिए कम तैयार होते हैं, इन विद्यार्थियों में आलोचनात्मक सोच कौशल की कमी होती है (चॉय, 2001; टेरेंजिनी एट अल. 1996)। कई प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों के पास वित्तीय सहायता का संसाधन नहीं होता है जिससे उनके शैक्षणिक करियर में वित्तीय बोझ के कारण तनाव में वृद्धि होती है (लुंडबर्ग एट अल. 2007)। सामान्य तौर पर, प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों की अकादमिक रूप से व्यस्त रहने की संभावना कम होती है और इस प्रकार उनमें सीखने की क्षमता भी कम होती है (पाइक एंड कुह, 2005)।

अधिकांश साहित्यों से पता चलता है कि प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थी गैर प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों की तुलना में हर हफ्ते अधिक घंटे काम करते हैं (पास्करेला एट अल. 2004; टेरेंजिनी एट अल, 1996)। प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों को अपनी वित्तीय स्थिति के कारण विश्वविद्यालय जाते समय काम करना पड़ता है, क्योंकि उन्हें अपनी शिक्षा के लिए भुगतान करने के लिए धन की आवश्यकता होती है।

प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थी और निम्न सामाजिक–आर्थिक स्थिति का वर्णन करने वाला साहित्य परिसर से संबंधित होने के महत्व को दर्शाता है। कुछ शोधकर्ताओं का मानना है कि न तो भागीदारी भावनाओं को प्रभावित करती हैं और न ही भावनाएँ भागीदारी को प्रभावित करती है। ये निष्कर्ष निम्न वर्ग के प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थी और उनके गैर–प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों के बीच 'हैबिट्स' के मतभेदों

द्वारा समर्थित हैं। 'हैबिट्स' उन आदतों और विचारधाराओं को संदर्भित करता है जो शुरूआती जीवन के अनुभवों के कारण एक व्यक्ति से जुड़े हुए होते हैं और उनके सामाजिक वर्ग और सांस्कृतिक पूंजी का निर्माण करते हैं (बुर्दियो, 1977)। सांस्कृतिक पूंजी को प्रमुख, या सबसे अधिक प्रचलित, संस्कृति से संबंधित संसाधनों की सामान्य जानकारी और उपलब्धता के रूप में परिभाषित किया गया है। विश्वविद्यालय के संदर्भ में, इसमें विश्वविद्यालय प्रवेश परीक्षा की तैयारी, अभिभावकों और माध्यमिक विद्यालयों से शिक्षा के महत्व के बारे में संदेश और उच्च शिक्षा के मानदंडों के बारे में जानकारी शामिल होती है (जहांगीर, स्टबलटन एंड दीनंत, 2015)। सामाजिक पूंजी उपलब्ध सामाजिक नेटवर्क को संदर्भित करती है जो विशेष रिक्त स्थान तक पहुंच को प्रभावित करती है, जैसे कि नौकरी तक पहुंच के लिए अच्छी तरह से शिक्षित होना और प्रभावशाली व्यक्तियों के द्वारा सिफारिश प्राप्त करना (जहांगीर, स्टबलटन एंड दीनानाथ, 2015)।

प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थी पर ध्यान केन्द्रित करने वाले साहित्य यह दिखाते हैं कि कैसे प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थी अपनी निरंतर पीढ़ी के साथियों की तुलना में काफी अलग पृष्ठभूमि से आते हैं। शिक्षा प्राप्त करके प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थी अपने व्यक्तिगत हितों की तुलना में परिवार की वित्तीय स्थिरता को प्राथमिकता देते हैं (डंडेस, चो, एण्ड कॉक, 2009; हॉज एण्ड मेलिन, 2010; एक्ज़ाइएण्ड गोयेटी, 2003)।

प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों को विश्वविद्यालय में शैक्षणिक, सांस्कृतिक, सामाजिक और वित्तीय चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। अन्य कारकों जैसे शैक्षिक अपेक्षाएं, आय, अकादमिक तैयारी, माता–पिता और साथियों के प्रभाव को नियंत्रित करना प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों को विश्वविद्यालय में कठिनाई का सामना करना पड़ता है।

प्रस्तुत अध्याय उच्च शिक्षा में प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों की प्रतिक्रिया पर आधारित है जिस विषय पर साहित्य में बहुत कम चर्चा हुई है।

प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों की प्रतिक्रियाएँः गुणात्मक तथ्य

तथ्यों के संग्रह एवं मूल्यांकन से यह पता चलता है कि प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थी विभिन्न प्रकार की प्रतिक्रियाओं को अपनाते हैं। किन्तु इस बात से इन्कार नही किया जा सकता है कि अधिकतर प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थी या तो ड्रॉप आउट हो जाते हैं या तो वे स्वयं को मौजूदा शैक्षिक वातावरण में आत्मसर्म्पण करते हैं। एक उत्तरदाता ने बतायाः

> *मेरी पृष्ठभूमि से आने वाले कई विद्यार्थी पहले सेमेस्टर के पूरा होने से पहले ही ड्रॉप–आउट हो गए। जो बचे है बस वो जैसे–तैसे इस शिक्षा को पूरा करना चाहते हैं। मैं जानता हूँ कि इस शिक्षा से मैं कुछ प्राप्त नहीं कर पाऊँगा किन्तु इसे पूरा करने से कम से कम मेरे पास एक डिग्री हो रहेगी..... क्या पता कभी कुछ काम आ जाए।*

कई विद्यार्थियों को पहले सेमेस्टर से पहले ही ड्रॉप–आउट होने के प्रश्न पर एक उत्तरदाता ने बतायाः

> *वे इसलिए ड्रॉप–आउट हो गए क्योंकि वे स्वयं को इस अप्रत्याशित वातावरण में नहीं ढाल पाए। मुझे भी शुरूआत में यहाँ का वातावरण अपरिचित सा लगा जिसके बारे में मैंने पहले कभी नहीं सोचा था।*

यह पूछने पर की क्या उन्होंने अब इस वातावरण में अपने आपको समायोजित कर लिया है? उन्होंने बतायाः

> *नही! मुझे अभी भी बहुत दिक्कत होती है। मैं अपने आपको इस वातावरण में अभी भी नहीं ढाल पाया हूँ। मैं उस दिन का इंतजार कर रहा हूँ जब मुझे इस माहौल से छुटकारा मिले।*

इस बारे में पूछने पर कि वे अध्ययन कक्ष में अच्छा प्रदर्शन करने वाले विद्यार्थियों से क्यों नहीं मिलते–जुलते? तो एक उत्तरदाता ने कहाः

> *वे मेरे बिल्कुल उल्टे हैं.....मुझे शंका है कि वे मुझसे बात करने की इच्छा रखते हैं।*

एक अन्य उत्तरदाता ने कहाः

मैं उनके जैसा नहीं दिखता वे मेरी मदद क्यों करेंगें?.....मुझे इतने लोगों के बीच भी अकेलापन और डर जैसा महसूस होता है.....यह जगह मेरे जैसे विद्यार्थियों के लिए नहीं है।

कई प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों ने अपनी समस्याओं को हल करना ही छोड़ दिया है। वे मानते हैं कि ऐसा करना व्यर्थ है। इसलिए वे सभी औपचारिकताएँ पूरी करने के लिए न्यूनतम दिनचर्या का काम करते हैं। जैसे समय पर असाइन्मेंट पूरा करना, मध्य सेमेस्टर परीक्षाओं को, अंत–सेमेस्टर परीक्षाओं को पूरा करना।

यह पूछने पर कि क्या वे अपने ग्रेड/अंकों से संतुष्ट है? एक उत्तरदाता ने बतायाः

नहीं! मैं तो बस डिग्री हासिल करने के लिए यहाँ हूँ। ड्रॉप–आउट होने से अच्छा है डिग्री हासिल कर लो।

एक अन्य उत्तरदाता ने बतायाः

बहुत मेहनत करने के बाद भी मेरे अंकों में कोई सुधार नहीं हो रहा है ना तो मुझे लगता है इसमें कुछ सुधार हो सकता है। इसलिए बस मैं परीक्षा दे देता हूँ..... परीक्षा पास होने के अलावा मैं कुछ अपेक्षा नहीं करता।

शिक्षकों से सहयोग लेने के विषय के बारे में एक विद्यार्थी ने बतायाः

मैं अपनी शंकाओं को दूर करने के लिए बार–बार शिक्षकों के पास जाता था तो शिक्षक चिढ़ जाते थे और मुझे डाँट देते थे.....भला–बुरा कहते थे.....

एक अन्य विद्यार्थी ने बतायाः

अध्यापकों की भाषा मुझे समझ नहीं आती। उनके समझाने पर भी मुझे उनकी बाते समझ नहीं आती..... उनके पास जाना व्यर्थ है।

सभी प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थी एक ही तरह की प्रतिक्रियाएँ नहीं देते हैं। उनमें से कुछ अपनी ऐजेन्सी का उपयोग करते हैं और अपने प्रदर्शन में सुधार कर पाते

हैं। इनमें से कुछ विद्यार्थी तो अपने आपको कुलीन प्रभावी वर्ग समूह के साथ समायोजित भी कर लेते हैं। किन्तु इस तरह के प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थी नगण्य हैं।

यह ध्यान देने की बात है कि अधिकतर प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थी या तो ड्रॉप–आउट हो जाते हैं या तो उच्च शिक्षा में बने रहते हैं लेकिन उच्च शिक्षा की कुलीन संस्कृति के आगे घुटने टेक देते हैं। किन्तु कुछ ऐसे विद्यार्थी भी हैं जो घुटने टेकने के बजाय कुलीन संस्कृति से जुझने का प्रयास करते हैं। उन्हें भी कई दिक्कतों का सामना करना पड़ता है। जिसे समझने के बाद वे उसे दूर करने की कोशिश करते हैं। एक उत्तरदाता ने बतायाः

> *मेरे लिए सबसे बड़ी समस्या भाषा को लेकर थी। टीचरों के व्याख्यान का लहजा और इन कुलीन विद्यार्थियों की बोली समझने में बड़ी कठिनाई होती थी.... लेकिन अब मुझे लगता है इस पर जोर देने से अच्छा है मैं अपना ध्यान अपनी पढ़ाई पर रखूँ।*

एक अन्य उत्तरदाता ने बतायाः

> *मैं भी उनकी (कुलीन विद्यार्थी) तरह बोल पाऊँगा मैं पूरी कोशिश कर रहा हूँ इसमें थोड़ा समय लग सकता है। किन्तु भाषा के आधार पर होने वाले भेद भाव का मैं विरोध करता हूँ।*

यह प्रश्न पूछने पर कि क्या जाति, लिंग एवं सामाजिक–आर्थिक स्थिति के आधार पर भेद भाव होता है? एक उत्तरदाता ने बतायाः

> *समाजिक–आर्थिक स्थिति के आधार पर भेदभाव होते हैं.....जाति के आधार पर भेदभाव तो मैं खुद झेल रहा हूँ शिकायत करने पर प्रशासन द्वारा गुलमुल रवइया अपनाया जाता है।*

एक अन्य उत्तरदाता ने बतायाः

> *परिसर सभी के लिए है किसी भी आधार पर भेदभाव नहीं होना चाहिए न तो कुलीन संस्कृति का प्रभूत्व होना चाहिए। प्रशासन को हाशियाकृत विद्यार्थियों से संवेदनशीलता से पेश आना चाहिए। लेकिन ऐसा नहीं होता इसलिए मैंने एक फेशबुक ग्रुप बनाया है जहां हाशियाकृत विद्यार्थी अपनी*

समस्या खुल कर लिख सकते हैं या बता सकते हैं और हम उनकी बातों को प्रशासन एवं मीडिया तक पहुँचाते हैं।

एक अन्य उत्तरदाता से जब इस फेशबुक ग्रुप के बारे में पूछा गया तो उन्होंने बतायाः

मैंने जब अपनी दिक्कतें इस फेशबुक ग्रुप में लिखा तो मेरे समर्थन में कई विद्यार्थी आ गये। मुझे पहली बार ऐसा महसूस हुआ कि मेरे बारे में सोचने वाले लोग भी इस परिसर में हैं। मैं अब उत्साहित हूँ।

प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों में कुछ ऐसे भी हैं जो अपनी योग्यता एवं क्षमता का पूरा प्रयोग करते हैं। वे उच्च शिक्षा में प्रवेश के पूर्व विश्वविद्यालय के बारे में अच्छी जानकारी भी एकत्रित करते हैं। और अपने आप में उसके हिसाब से बदलाव लाने का प्रयास करते हैं। लेकिन इस प्रकार के प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों की संख्या नागण्य है। इसी श्रेणी के एक उत्तरदाता ने बतायाः

जब मैं एक ही सवाल लेके दूसरी बार शिक्षक के पास गया तो वे गुस्सा हो गये और बहुत भला–बुरा कहा.... दुःख तो होता है किन्तु मुझे पता था कि हौसला बनाये रखना है और अन्त में मैनें समस्या का हल ढूँढ ही लिया..... जब आप लगातार लगे रहते हैं तो समस्यायें भी हल हो जाती हैं।

एक अन्य उत्तरदाता ने बतायाः

मैं अभिजात वर्ग से नहीं हूँ मेरे बात करने का लहजा भी शायद उनके जैसा नहीं है। यही कारण है कि जब मैं अध्ययन कक्ष में एक अभिजात वर्ग के विद्यार्थी के साथ बैठा तो उसे असहजता होने लगी और उसने अपना स्थान छोड़ दिया किन्तु दूसरे ही पल एक अन्य अभिजात वर्ग का विद्यार्थी उसकी जगह पर आकर बैठ गया। और आज वह मेरा अच्छा दोस्त है.....सभी व्यक्ति एक जैसे नहीं होते हैं इसलिए किसी से हतोत्साहित नहीं होना चाहिए और पूरी लगन से अपना कार्य करना चाहिए।

अपने अनुभव को बताते हुए एक उत्तरदाता ने बतायाः

मैं अपने परिवार में विश्वविद्यालय जाने वाला पहला व्यक्ति हूँ और मैं अपने जीवन में शिक्षा प्राप्त करने के लिए माता–पिता के द्वारा दिए गए अवसरों की अपने आशीर्वाद में गिनती करता हूँ आज मैं जहां हूँ मेरे अभिभावकों ने अपनी क्षमता के अनुसार मेरे लिए सब कुछ किया है।''

अन्य विद्यार्थी ने अपने विचार व्यक्त करते हुए बतायाः

मेरी माँ कभी स्कूल नहीं गई और मेरे पिता ने भी हाई स्कूल की पढ़ाई पूरी नहीं की। और मैं अपने परिवार में कॉलेज जाने वाला पहला व्यक्ति हूँ और कॉलेज जाने वाले पहले व्यक्ति के रूप में मुझ पर बहुत दबाव है क्योंकि मैं अपने परिवार के कॉलेज शिक्षा न प्राप्त करने के चक्र को तोड़ना चाहता हूँ और मेरे अभिभावकों को मेरी डिग्री पाने के लिए मुझ पर भरोसा है। अपने परिवार में उच्च शिक्षा प्राप्त करके मैं अपनी बहन के लिए उदाहरण स्थापित करना चाहता हूँ।

एक अन्य उत्तरदाता ने बतायाः

कई स्थानों से स्थानान्तरण करने के कारण मेरे अभिभावकों को कभी स्कूल जाने का अवसर नहीं मिला। प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थी के रूप में, मैं स्कूल जाने में सक्षम होने का लाभ उठा रहा हूँ।

उच्च शिक्षा प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों के लिए एक लंबी सड़क के समान होती है जिसकी उनके पास कोई दिशा नहीं होती है। प्रथम पीढ़ी की एक महिला विद्यार्थी ने अपने अनुभव को व्यक्त करते हुए बतायाः

मैं अपने परिवार में कॉलेज जाने वाली पहली महिला हूँ और मैं अपने छोटे चचेरे भाइयों के लिए एक अच्छा मॉडल स्थापित करना चाहती हूँ जिससे वे भी उच्च शिक्षा प्राप्त कर सकें।

गरीबी या वित्तीय कठिनाइयों का सामना करने के कारण प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों में पैसा कमाने की इच्छा बढ़ जाती है। कई अध्ययनों से पता चलता है कि प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थी अपने माता–पिता से बेहतर करना चाहते हैं।

अपनी प्रतिक्रिया देते हुए एक उत्तरदाता ने कहाः

मैनें अपने अभिभावकों को अपने जीवन के अधिकांश समय कारखानों में काम करते हुए देखा है। इसलिए मैं समाज में अपने परिवार का मान बढ़ाना चाहता हूँ।

इन गुणात्मक आंकड़ों के आधार पर यह कहा जा सकता है कि प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थी एक सजातीय समूह नहीं हैं।

प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों की प्रतिक्रियाएँः मात्रात्मक तथ्य

उच्च शिक्षा में प्रवेश करते ही ज्यादातर प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों को शीघ्र पता चल जाता है कि शिक्षकों और गैर–प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों की मदद के बिना टिके रहना बहुत मुश्किल है। इसलिए वे प्रतिक्रिया स्वरूप अपने सहपाठियों से मदद मांगते हैं।

रेखाचित्रः 6.1 प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों के द्वारा अपने सहपाठियों से सहायता मांगने के आधार पर विश्लेषण

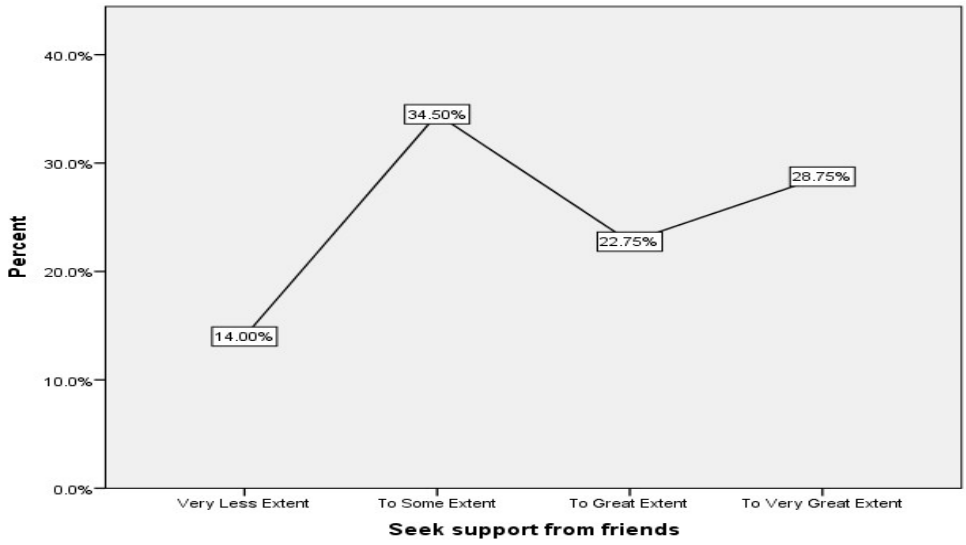

स्त्रोतः क्षेत्रीय कार्य

रेखाचित्र 6.1 दर्शाता है कि बहुत कम हद तक अपने सहपाठियों से सहयोग मांगने वाले प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों का प्रतिशत 14.00 है। कुछ हद तक अपने सहपाठियों से सहयोग मांगने वाले विद्यार्थियों का प्रतिशत 34.50 है। बहुत हद तक

सहयोग मांगने वाले विद्यार्थियों का प्रतिशत 22.75 है। और जो सबसे ज्यादा हद तक सहयोग मांगते हैं उनका प्रतिशत 28.75 है।

कुछ हद तक सहयोग मांगने वाले विद्यार्थियों का प्रतिशत ज्यादा इसलिए है क्योंकि संकोच को छोड़कर अन्य विद्यार्थियों के समान बेहतर करने की चेतना जाग्रत हो जाती हैं जिसके कारण अपने सभी सहपाठियों से थोड़ा–थोड़ा सहयोग लेते रहते है। ज्यादा सहयोग मांगने वाले विद्यार्थियों का प्रतिशत इसलिए कम है क्योंकि बहुत कम ही ऐसे प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थी अन्य गतिविधियों के बारे कुछ जागरूक होते है जिसके कारण वे हर प्रकार से सहपाठियों से सहयोग लेने के प्रयत्न में लगे रहते हैं। किन्तु सहयोग लेने का बुरा प्रभाव भी अधिकतर प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों पर पड़ता है जिसका उल्लेख गुणात्मक तथ्यों में किया गया है।

तालिकाः 6.1 प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों के द्वारा अपने पहनावे, बात करने का तरीके, खाने की आदतें अन्य विद्याार्थियों से भिन्न महसूस करने के आधार पर विश्लेषण

प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों के द्वारा अपनी ड्रेसिंग, बात करने का तरीका, खाने की आदतें अन्य विद्याार्थियों से भिन्न महसूस करने के आधार पर विश्लेषण	लिंग		कुल
	महिला	पुरूष	
हाँ	86 (58.9)	76 (29.9)	162 (40.5)
कुछ हद तक	60 (41.1)	171 (67.3)	231 (57.7)
नहीं	0 (0.0)	7 (2.8)	7 (1.8)
कुल	146 (100.0)	254 (100.0)	400 (100.0)

स्त्रोतः क्षेत्रीय कार्य

तालिका 6.1 के विवरण से स्पष्ट होता है कि विश्वविद्यालय में प्रथम पीढ़ी के द्वारा अपने पहनावे, बात करने के तरीके, खाना खाने की आदतों को अन्य से भिन्न महसूस करने वाले प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों की संख्या 162 तथा इसका

प्रतिशत 40.5 है। और जो कुछ हद तक इससे सहमत है उनकी संख्या 231 और प्रतिशत 57.8 है। असहमत होने वाले विद्यार्थियों की संख्या 7 एवं प्रतिशत 1.8 है।

प्रथम पीढ़ी के पुरूष विद्यार्थियों द्वारा अपने पहनावे, बात करने के तरीके, खाना खाने की आदतों को अन्य विद्यार्थियों से भिन्न महसूस करने वाले विद्यार्थियों की संख्या 76 तथा इसका प्रतिशत 29.9 है। और जो कुछ हद तक इससे सहमत है उनकी संख्या 171 और प्रतिशत 67.3 है। असहमत होने वाले विद्यार्थियों की संख्या 7 एवं प्रतिशत 2.8 है।

प्रथम पीढ़ी के महिला विद्यार्थियों द्वारा अपने पहनावे, बात करने के तरीके, खाना खाने की आदतों को अन्य विद्यार्थियों से भिन्न महसूस करने वाले विद्यार्थियों की संख्या 86 तथा इसका प्रतिशत 58.9 है। और जो कुछ हद तक इससे सहमत है उनकी संख्या 60 और प्रतिशत 41.1 है। असहमत होने वाले विद्यार्थियों की संख्या 0 एवं प्रतिशत 0.0 है।

रेखाचित्रः 6.2 प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों के द्वारा पार्क, कैंटीन आदि जैसे सामान्य स्थानों पर असहजता का अनुभव करने के आधार पर विश्लेषण

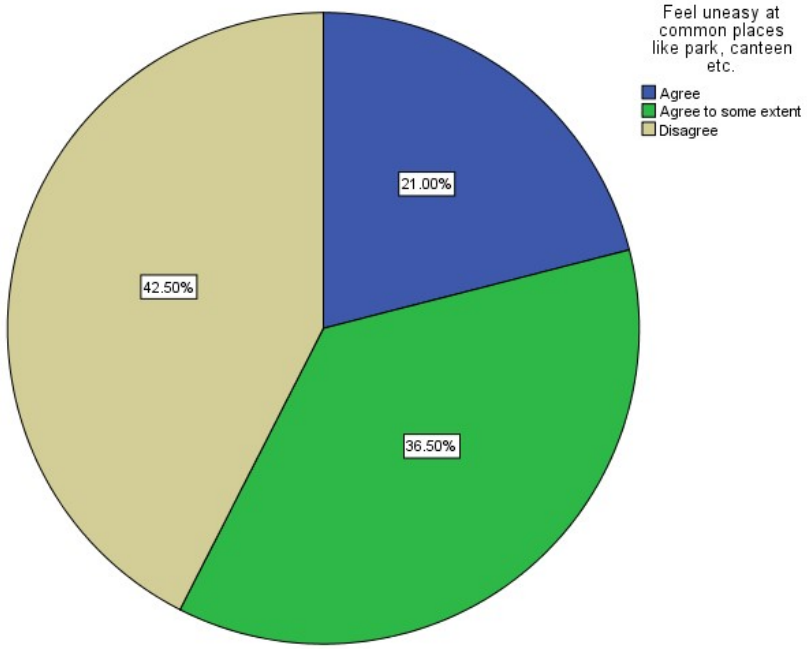

स्त्रोतः क्षेत्रीय कार्य

रेखाचित्र 6.2 से स्पष्ट होता है कि जो प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थी इस बात से सहमत है कि उन्हें अन्य विद्यार्थियों की तुलना में पार्क कैंटीन जैसे स्थानों पर असजता महसूस होती है इनका प्रतिशत 21.00 है। और जो कुछ हद तक असहजता महसूस करते हैं उनका प्रतिशत 36.50 है। और जो इस बात से असहमत है कि वे असहजता महसूस नहीं करते हैं उनका प्रतिशत 42.50 है।

पार्क और कैंटीन जैसी जगह जाने में असहजता महसूस करने का कारण यह है कि उनके पास रूपयों की कमी। जिस कारण से वे अन्य लोगों के समान ग्रप में कुछ खाने पीने नहीं जाते है और पार्क घूमने भी नहीं जाते है।

ऐसे विद्यार्थी अधिकांशतः अभिभावकों से आज्ञा लेकर ही कहीं जाते हैं। उन्हें जो रूपये कॉलेज जाने के लिए दिये जाते है वे उनमें से ही कुछ खाद्य पदार्थ लेने में सक्षम हो पाते हैं।

तालिकाः 6.2 प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों के द्वारा अन्य विद्यार्थियों के समान अंग्रेजी फिल्मों, रेस्तरां, कंप्यूटरों, एवं खाद्य पदार्थों के विषय में जानकारी नही होने के आधार पर विश्लेषण

प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों के द्वारा अन्य विद्यार्थियों के समान अंग्रेजी फिल्मों, रेस्तरां, कंप्यूटरों, एवं खाद्य पदार्थों के विषय में जानकारी नही होने के आधार पर विश्लेषण	लिंग		कुल
	महिला	पुरूष	
हाँ	98 (67.1)	108 (42.5)	206 (51.5)
कुछ हद तक	26 (17.8)	111 (43.7)	137 (34.2)
नहीं	22 (15.1)	35 (13.8)	57 (14.3)
कुल	146 (100.0)	254 (100.0)	400 (100.0)

स्त्रोतः क्षेत्रीय कार्य

तालिका 6.2 से स्पष्ट होता है कि जो प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थी इस तर्क से सहमत है कि उन्हें अन्य विद्यार्थियों के समान कार, कम्प्यूटर, अंग्रेजी फिल्मों, रेस्तरां, खाद्य–पदार्थों के बारे में जानकारी नहीं है ऐसे विद्यार्थियों की संख्या 206

तथा प्रतिशत 51.5 है। जो कुछ हद तक ही सहमत है उनकी संख्या 137 और प्रतिशत 34.2 है। जो असहमत है उनकी संख्या 57 एवं प्रतिशत 14.2 है।

लिंग के आधार पर देखें तो पुरूष विद्यार्थियों में जो इस विद्यार्थी इस तर्क से सहमत है कि उन्हें अन्य विद्यार्थियों के समान कार, कम्प्यूटर, अंग्रेजी फिल्मों, रेस्तरां, खाद्य–पदार्थों के बारे में जानकारी नहीं है ऐसे विद्यार्थियों की संख्या 108 तथा प्रतिशत 42.5 है। जो कुछ हद तक ही सहमत है उनकी संख्या 111 और प्रतिशत 43.7 है। जो असहमत है उनकी संख्या 35 एवं प्रतिशत 13.8 है।

महिला विद्यार्थियों में जो विद्यार्थी इस तर्क से सहमत है कि उन्हें अन्य विद्यार्थियों के समान कार, कम्प्यूटर, अंग्रेजी फिल्मों, रेस्तरां, खाद्य–पदार्थों के बारे में जानकारी नहीं जाते है ऐसे विद्यार्थियों की संख्या 98 तथा प्रतिशत 67.1 है। जो कुछ हद तक ही सहमत है उनकी संख्या 26 और प्रतिशत 17.8 है। जो असहमत है उनकी संख्या 22 एवं प्रतिशत 15.1 है।

तालिकाः 6.3 प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों के द्वारा विश्वविद्यालय जैसा परिवेश पहले कभी न देखने के अनुभव के आधार पर विश्लेषण

प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों के द्वारा विश्वविद्यालय जैसा परिवेश पहले कभी न देखने के अनुभव के आधार पर विश्लेषण	लिंग		कुल
	महिला	पुरूष	
हाँ	67 (45.9)	17 (6.7)	84 (21.0)
कुछ हद तक	79 (54.1)	191 (75.2)	270 (67.5)
नहीं	0 (0.0)	46 (18.1)	46 (11.5)
कुल	146 (100.0)	254 (100.0)	400 (100.0)

स्त्रोतः क्षेत्रीय कार्य

तालिका 6.3 दर्शाती है कि प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थी जो इस बात से कुछ हद तक सहमत हैं कि उन्होंने विश्वविद्यालय परिसर के जैसा परिवेश पहले कभी भी नहीं देखा उनकी संख्या 270 एवं प्रतिशत 67.5 प्रतिशत है। और जो पूर्ण रूप से

सहमत हैं उनकी संख्या 84 और प्रतिशत 21.0 है। और जो इस बात से असहमत हैं उनकी संख्या 46 और प्रतिशत 11.5 है।

लिंग के आधार पर वर्गीकृत करने के पर ज्ञात होता है कि जो महिलाओं में कुछ हद तक सहमत हैं कि उन्होंने ऐसा परिवेश पहले कभी नहीं देखा उन विद्यार्थियों की संख्या 79 और प्रतिशत 54.1 है। जबकि पुरूष विद्यार्थियों में यह संख्या 191 तथा प्रतिशत 75.2 है। महिलाओं में जो विद्यार्थी पूर्ण रूप से सहमत है कि उन्होंने ऐसा परिवेश पहले कभी नहीं देखा उनकी संख्या 67 एवं प्रतिशत 45.9 है वहीं पुरूष विद्यार्थियों में यह संख्या 17 एवं प्रतिशत 6.7 है। और जो असहमत है उन महिला विद्यार्थियों में यह संख्या 0 एवं प्रतिशत भी 0.0 है। वहीं पुरूष विद्यार्थियों में यह संख्या 46 एवं प्रतिशत 18.1 है।

उपर्युक्त मात्रात्मक तथ्य उच्च शिक्षा में प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों के प्रतिक्रियाओं को निर्धारित करता है। जिसका उल्लेख गुणात्मक तथ्यों के आधार पर किया जा चुका है।

प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों की प्रतिक्रियाएँः एक विश्लेषण

प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों की पृष्ठभूमि अक्सर उन्हें कॉलेज स्तर के कार्य करने में प्रभावित करती है। कई शैक्षिक शोधकर्ताओं ने कम आय वाले शहरी और अल्पसंख्यक विद्यार्थियों की स्कूल की स्थितियों का वर्णन किया है, अक्सर प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों को यह ज्ञान नहीं होता है कि प्रभावी ढंग से कैसे अध्ययन किया जाए, कॉलेज की शुरूआत में ये विद्यार्थी अपने अध्ययन के लिए एक महत्वपूर्ण समय समर्पित करते हैं लेकिन वे तब निराश हो जाते हैं जब उन्हें उनके प्रयास के अनुसार सकारात्मक शैक्षणिक परिणाम नहीं प्राप्त होते हैं (डेविस, 2010)। और इस चुनौतीपूर्ण वातावरण में प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों समय प्रबंधन जैसी समस्याओं का सामना करना पड़ता है (कोलियर और मॉर्गन, 2008)। कोलियर और मॉर्गन के द्वारा गुणात्मक अध्ययन पर ध्यान केन्द्रित करने से प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों की अपेक्षाओं का पता चलता है कि प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थी सफल तो होना चाहते हैं लेकिन यह नहीं जानते कि कैसे। टेरेंजिनी एट अल., (1996),

सोरिया और स्टबलटन (2012), कोलियर और मॉर्गन (2008) सभी मानते हैं कि प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थी शिक्षकों के साथ अन्तःक्रिया करने में स्वयं को सहज महसूस नहीं करते हैं और शिक्षको के साथ संलग्न होकर इनके कार्य करने की संभावना भी कम होती है। स्टीफेंस एट अल., (2012) सांस्कृतिक बेमेल सिद्धांत को लागू करके अनुमान लगाते हैं कि ये कारक एक सांस्कृतिक बेमेल की ओर ले जाते हैं, अगर कोई विद्यार्थी ऐसी संस्कृति से आता है जो अन्योन्याश्रित संबंधों की अपेक्षा करता है, जहां लोगों को दूसरों की जरूरतों के प्रति चौकस रहने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है। भौगोलिक या अनुभवात्मक रूप से अपने परिवारों से कटे हुए, विद्यार्थी कॉलेज के अनुभवों को झेलते हुए अपनी सांस्कृतिक पहचान बनाए रखने के लिए संघर्ष करते हैं। प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों के परिवारों में कॉलेज के लिए आवश्यक सांस्कृतिक पूंजी की कमी होती है परिवार के सदस्यों की सलाह में कमी विद्यार्थियों को अधिक लाभकारी या उपयुक्त पथ से दूर करती है। यह प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों के पाठ्यक्रम या कुछ कक्षाओं में उनकी सफलता को भी प्रभावित करता है।

सामाजिक पूंजी, सामाजिक और पेशेवर नेटवर्क का सेट जो विकल्पों को सूचित करने और अवसर प्रदान करने में मदद करता है, कॉलेज की सफलता के लिए महत्वपूर्ण है। प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों को अपने गैर प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों के साथियों की तुलना में अधिक चुनौतियों का सामना करना पड़ता है जब कॉलेज के सामाजिक तत्वों की बात आती है, साथ ही साथ भले ही उनके पास आवश्यक सामाजिक पूंजी न हो, फिर भी वे समझते हैं कि कॉलेज का सामाजिक पक्ष अकादमिक पक्ष की तुलना में अधिक महत्वपूर्ण है, जैसा कि बर्जरशन (2007) प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थी से साक्षात्कार में पाया।

प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थी जो कॉलेज जाते हैं उनके लिए होमसिकनेस एक प्रमुख मुद्दा है, विशेष रूप से निम्न पृष्ठभूमि से आने वाले विद्यार्थियों के लिए, जहां कॉलेज के लिए रवाना होना सामान्य मार्ग नहीं है (बर्जरशन, 2007)। जहांगीर (2010) ने प्रथम पीढ़ी के गुणात्मक अध्ययन के माध्यम से पाया कि एक विशेष शिक्षण समुदाय में जो विद्यार्थी कॉलेज के वातावरण में सफलतापूर्वक एकीकृत होते

हैं, उन्हें कम परिवार का समर्थन प्राप्त होता है (मेहता एट अल., 2011) यहां तक कि अपने स्वयं के समुदाय को अस्वीकार करने की आवश्यकता महसूस होती है (टिंटो, 1993)। कई प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थी स्वयं को अलग और हाशिए पर महसूस करते हैं (जहांगीर, 2010; बर्जरशन, 2007), विशेष रूप से अल्पसंख्यक जो मुख्य रूप से परिसरों में दिखाई देते हैं (ओरवे, 2004)।

व्यावहारिक स्तर पर, प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थी खासकर जब वे अपने परिवार में सबसे बड़े होते हैं, उन्हें अपने पारिवारिक दायित्वों को संतुलित करना पड़ता है विशेष रूप से इन विद्यार्थियों के पास कॉलेज के लिए समय नही होता है (बर्जरशन, 2007)। प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थी इस उम्मीद के साथ संघर्ष करते हैं कि कॉलेज सिर्फ शिक्षाविदों के लिए नहीं है जैसा कि एक विद्यार्थी ने व्यक्त किया कि

> *मैं यहां एक डिग्री लेने आया था। मैं यहां कॉलेज जाने के लिए नहीं आया था''*।

बिगनिंग पोस्टसेकेन्डरी स्टूडेंट्स लॉन्गिटयूडिनल स्टडी के आंकड़ों से संकेत मिलता है कि पारिवारिक दायित्वों जैसे परिस्थितिजन्य कारकों के कारण और पहले वर्णित की गई सांस्कृतिक पूंजी की कमी के कारण, प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों की अन्य गतिविधियों में स्वेच्छा से भाग लेने की सम्भावना कम होती है (एंगल एंड टिंटों, 2008)। क्योंकि प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों के पास अपना सामाजिक आत्मविश्वास और नेतृत्व क्षमता की कम आत्मधारणाएं हैं (सीन्ज़ एट अल., 2007) लेकिन इस जागरूकता का मतलब यह नहीं है कि वे इस नुकसान से आसानी से दूर होने में सक्षम हो पाते हैं।

प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों का सामाजिक अलगाव उनकी शैक्षणिक और वित्तीय चुनौतियों से संबंधित है। इन विद्यार्थियों की अधिक घंटे काम करने की संभावना होती है (सीन्ज़ एट अल., 2007; पास्करेला एट अल., 2004; एंगल एंड टिंटो, 2008), और ये कॉलेज परिसर के बाहर काम करते हैं (एंगल एण्ड, टिंटो 2008), जिसके लिए इन्हें शैक्षणिक और सामाजिक दायित्व से समय निकालना पड़ता है।

प्रेरणा एवं प्रतिक्रियाः

पिछले अध्ययन इस ओर भी इशारा करते हैं कि प्रेरणा प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों की प्रतिक्रिया को प्रभावित करते हैं। प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थी परिवार और परिवार की अपेक्षाओं से अधिक प्रेरित होते हैं। वे वित्तीय समृद्धि की संभावना से भी प्रभावित होते हैं (बर्गर्सन, 2007; बुई, 2005; स्टीफेन्स एट अल., 2012; हार्टिग एंड स्टीर्जवॉल्ड, 2007)। कुछ हद तक, वे ''सफलता'' के लिए एक अपरिभाषित इच्छा और सीखने में रूचि रखते हैं (इज़ले, बियांको, और लीच, 2012; बर्जरशन, 2007; हॉवर्ड, 2003)।

कॉलेज में भाग लेने के लिए उनसे प्रेरणा के बारे में पूछे जाने पर ज्ञात होता है कि प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थी अपने गैर प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों से यह कहने की आवृत्ति में काफी भिन्न होते हैं कि वे बस परिवार के लिए सम्मान लाना चाहते हैं (बुई, 2005; स्टीफेंस एट अल.,2012) और पारिवारिक अपेक्षाओं को पूरा करने के लिए कॉलेज जाते हैं (बर्जरशन, 2007; बुई, 2005)।

यह केवल तात्कालिक परिवार नहीं है जो प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों को प्रेरित करता है। अक्सर, वे समुदाय में रोल मॉडल बनने की इच्छा से प्रेरित होते हैं (स्टेफेन्स एट अल., 2012)।

जब प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों से पूछा जाता है कि वे कॉलेज क्यों जाते हैं तो प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थी इस वाक्यांश का उपयोग अधिक बार करते है कि वे परिवार, समुदाय और सामाजिक दबाव से प्रेरित होकर कॉलेज जाते हैं बजाय इसके कि वे आंतरिक प्रेरकों द्वारा जैसे कि स्वयं की इच्छा या विद्यार्थियों में कॉलेज जाने का जूनून से प्रेरित होते हैं (लोवरी–हार्ट एंड पाचेको, 2011)।

परिवार की अपेक्षाओं के साथ, प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थी अक्सर कॉलेज जाने के लिए एक प्रेरणा के रूप में परिवार की मदद करने की इच्छा या आवयश्यकता का हवाला देते हैं। यह विद्यार्थियों की कहने की अधिक संभावना होती है कि वे अपने परिवार की आर्थिक रूप से मदद करना चाहते हैं (बुई, 2005)। प्रथम पीढ़ी के

विद्यार्थी के साथ साक्षात्कार में, जहांगीर (2010) ने पाया कि विद्यार्थी उम्मीद व्यक्त करते हैं कि कॉलेज उनकी, उनके परिवार की, और उनके समुदाय को ऊर्ध्वगामी गतिशीलता हासिल करने में मदद करे।

अभिभावकों को विश्वविद्यालय का अनुभव न होने के कारण उनके बच्चों को अपनी बात दूसरों के समक्ष रखने में कठिनाई का सामना करना पड़ता है। और वे अपनी बातों को भी निःसंकोच करने में असहजता महसूस करते हैं।

दो अध्ययनों में पाया गया कि प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों को कॉलेज के समायोजन, अकादमिक समायोजन या व्यक्तिगत–भावात्मक समायोजन की स्थिति में महत्वपूर्ण योगदान नहीं मिलता (हर्टेल 2002)। लेकिन कॉलेज नहीं जाने वाले माता–पिता होने से प्रथम वर्ष के विद्यार्थियों के लिए संस्थान के लक्ष्य प्रतिबद्धता (goal commitment) के स्तर में कमी हो जाती है। डुग्गन (2001) ने अपने अध्ययन में स्कूल के पहले कार्यकाल के बाद प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों की स्थिति और ग्रेड के बीच कोई संबंध नहीं पाया। जबकि ग्रेसन (1997) ने दिखाया कि जिन विद्यार्थियों के अभिभावक कॉलेज गये उनका जीपीए प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों की तुलना में अधिक था। प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थी विश्वविद्यालय परिसर में कम समय व्यतीत करते हैं। हालांकि, हिकमैन (2000) ने प्रथम पीढ़ी और दूसरी पीढ़ी के विद्यार्थियों के बीच सामाजिक समायोजन में कोई अन्तर नहीं पाया, जबकि बुई (2002) ने प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों को कॉलेज के परिवेश के साथ कम सहज महसूस पाया। और हर्टेल (2002) ने बताया कि गैर प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों की तुलना में प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों को सामाजिक समायोजन करने में भी कठिनाई होती है। इसके अलावा टेरेंजिनी एट अल (1996) ने संकेत दिया कि प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों को अन्य विद्यार्थियों की तुलना में अपने परिवारों से कॉलेज के लिए कम समर्थन मिलता है।

प्रत्येक व्यक्तिगत स्थिति अद्वितीय होती है, विद्यार्थियों की भावनायें और अनुभव विशेष रूप से परिसर में पहले वर्ष के दौरान नहीं होते हैं। लगभग सभी प्रथम वर्ष के विद्यार्थी स्कूल से कॉलेज में स्थानान्तरण के दौरान कुछ बिन्दु पर

स्वयं को अभिभूत महसूस करते हैं। यह भावना प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों में और भी अधिक बढ़ जाती है, जिनके बारे में उन्हें बहुत कम या कोई समझ नहीं होती है कि उनसे क्या उम्मीद की जाती है और परिसर का जीवन कैसा होता है। प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थी अधिकतर अनुसूचित जाति और अन्य पिछड़ा वर्ग से होते हैं और उन्हें जातिगत भेदभाव भी सहना पड़ता है।

विश्वविद्यालय में जाति के आधार पर शिक्षकों का व्यवहार विद्यार्थियों के प्रति परिवर्तित होता है। और निम्न जाति के विद्यार्थियों को हीन दृष्टि से देखा जाता है कभी कभी निम्न जाति के विद्यार्थियों के द्वारा शिक्षकों को अभिवादन करने पर उन्हें नजर अन्दाज कर दिया जाता है। और वहीं उच्च जाति के विद्यार्थियों के द्वारा अभिवादन करने पर उनका अभिवादन शिक्षक मुस्कुरा कर स्वीकार करते हैं। उच्च शिक्षा में जातिगत भेदभाव का सामना प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों को अध्ययन कक्ष में भी करना पड़ता है। अध्ययन कक्ष में अधिकांशतः शिक्षकों का ध्यान उच्च जाति के विद्यार्थियों की ओर रहता है और अध्ययन कक्ष में होने वाली गतिविधियों में शिक्षकों के द्वारा उच्च जाति के विद्यार्थियों की भागीदारी सुनिश्चित की जाती है।

प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थी विश्वविद्यालय में निम्न स्तर के परिवारों से आते हैं और उनका रहन सहन बिल्कुल सादा होता है जिसके परिणामस्वरूप उनका पहनावा भी साधारण ही होता है किन्तु विश्वविद्यालय में कुछ ऐसे गैर–प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थी होते है जो उनके पहनावे की अवहेलना करते हैं और उनका उपहास करते हैं।

निम्न सामाजिक–आर्थिक स्थिति के प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों को कॉलेज में पहुंचने पर 'हैब्ट्स' अव्यवस्था का अनुभव होता है, जिसके कारण उनकी पृष्ठभूमि और वर्तमान सेटिंग के साथ भावनाओं का जुड़ाव नहीं हो पाता है (बाक्सटर एंड ब्रिटन, 2011; लेहमैन, 2007)।

विद्यार्थी शिक्षा के माध्यम से ऊर्ध्वगामी होने का प्रयास करते हैं, उन्हें अक्सर अपनी पहचान के उन पहलुओं को छिपाने के लिए प्रेरित किया जाता है जो उनकी निम्न वर्ग, की पृष्ठभूमि की ओर संकेत करता है। कॉफमैन (2003) के द्वारा तीन

प्राथमिक तरीकों के बारे में चर्चा की गयी हैः साहचर्य भेद (ऐसोशिएशनल डिसटेन्सिंग), साहचर्य आलिंगन (ऐसोशिएशनल इम्बैरस), और स्वयं की प्रस्तुति (प्रेज़ेन्टेशन ऑफ सेल्फ)।

एसोसिएशनल डिस्टेंसिंग (सहचार्य भेद) से तात्पर्य यह है कि निम्न वर्ग की पृष्ठभूमि के विद्यार्थी अपनी पिछली पहचान से अलग होने या खुद को अलग करने का प्रयास कैसे करते हैं (कॉफमैन, 2003)। इसमें हाई स्कूल के दोस्तों से बचना शामिल हो सकता है जो घर से कॉलेज नहीं जाते थे (बाक्सटर एंड ब्रिटन, 2001)।

एसोसिएशनल इम्बैरेस (सहयोगी आलिंगन) या उद्देश्यपूर्ण ढंग से बातचीत करना और अपने आप को उन साथियों के साथ शामिल करना जो एक आकांक्षी सामाजिक वर्ग की तरह हैं, उन्हें निम्न वर्ग के विद्यार्थियों के बीच उपयोग की जाने वाली तकनीक के रूप में पाया गया है (कॉफमैन, 2003)।

प्रज़ेन्टेशन ऑफ सेल्फ (स्वयं की प्रस्तुति) कॉफमैन चर्चा करते हैं कि वह स्वयं की प्रस्तुति है, जिसमें किसी व्यक्ति के व्यवहार, वेशभूषा और भावों को शामिल किया जाता है ताकि उसे उसकी पहचान बताई जा सके। प्रथम पीढ़ी के निम्न श्रेणी के विद्यार्थियों के लिए, इसमें पहले से ज्ञात शब्दावली की एक विस्तृत श्रृंखला को शामिल करना, साथियों के व्यवहार की नकल करना और भाषण पैटर्न बदलना शामिल हो सकता है (ग्रैनफील्ड, 1991; रिए, क्रोज़ियर, क्लेटन, 2009; स्टुबर, 2011; टोरस, 2009)।

प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों के द्वारा कॉलेज में भाग लेने के लिए एक मजबूत प्रेरणा प्राप्त करने के बावजूद, प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों में अपने गैर–प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों की तुलना में उच्च ड्रॉप–आउट दर है। प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थी स्वयं को संस्थान से जुड़ा हुआ अनुभव नहीं करते हैं (ईशतानी, 2006; लेहमैन, 2007; ओस्ट्रोव और लॉन्ग, 2007; सोरिया, स्टैबलटन, एण्ड ह्यूसमैन, 2013; टिंटो, 1987)।

प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थी होने के कारण इन विद्यार्थियों की शिक्षकों के साथ बहुत ही कम अन्तःक्रिया होती है और सामान्यतः ये विद्यार्थी अध्ययन कक्ष में शान्त ही रहते हैं क्योंकि उन्हें उस माहौल में समायोजित होने में समय लगता है वे शिक्षकों के साथ ही साथ अपने वरिष्ठ छात्रों से भी अन्तःक्रिया करने में संकोच करते हैं। जब शिक्षक अध्ययन कक्ष में पढ़ाते हैं तो विद्यार्थियों को कॉलेज का अनुभव न होने के कारण उन्हें शिक्षक के द्वारा पढ़ाये गये पाठ्यक्रम को समझने में कठिनाई होती है और शिक्षको से उसका स्पष्टीकरण करने में संकोच महसूस करते हैं जिसके कारण वे अपने पाठ्यक्रम को समझने के लिए अध्ययन कक्ष के बाहर अपने वरिष्ठ छात्रों की सहायता लेते है। उनकी मदद से वे अपने पाठ्यक्रम को समझने और शिक्षा पूर्ण करने में सफल हो पाते हैं। इन सभी कठिनाई के कारण वे अपने आप को उच्च शिक्षा में अनफिट महसूस करते हैं।

प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थी बहुत ही संकोची स्वाभाव के होते हैं वे अपने शिक्षकों से बातचीत करने एवं वरिष्ठ छात्रों से सहयोग लेने में संकोच करते हैं किन्तु अध्ययन कक्ष में सभी साथियों के समान बनने की होड़ में संकोच को दूर करते हुए वरिष्ठ विद्यार्थियों से सहयोग लेते है प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थी उनसे अध्ययन करने के लिए नोट्स मांगते है, पिछले वर्ष के प्रश्न पत्र लेते हैं, विश्वविद्यालय में परीक्षाओं में उत्तर पुस्तिका में लिखने के पैटर्न के बारे में पूछते हैं, शिक्षकों का विद्यार्थियों के प्रति व्यवहार कैसा होता है उसके विषय में पूछते हैं, शिक्षकों के पढ़ाने का माध्यम क्या है इस प्रकार की जानकारी वे अपने वरिष्ठ छात्रों से प्राप्त करते हैं। वरिष्ठ छात्र प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों को विश्वविद्यालय के नियमों से अवगत कराते हैं। पाठ्क्रम के बारे में भी बताते है।

प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थी जब कॉलेज में प्रवेश करते हैं तो इन विद्यार्थियों के लिए सभी चीजे नयी होती है विश्वविद्यालय का वातावरण उनके लिए नया होता है और वहाँ की संस्कृति प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों के लिए नयी होती है इस लिए विद्यार्थी नये लोगों से बातचीत करने में असहजता का अनुभव करते हैं। विशेष रूप से महिला विद्यार्थी तो बहुत ही कम लोगों से अन्तःक्रिया करती है। लोगों के दुर्व्यवहार के कारण ऐसे विद्यार्थियों को विशेष रूप से नये लोगों से अन्तःक्रिया

करने में कठिनाई होती है। निम्न स्तर के परिवारों से आने के कारण परिवार के द्वारा महिला विद्यार्थियों को निर्देशित करके भेजा जाता है कि सीधे कॉलेज जाओं और कॉलेज से सीधे घर आना। बिना अभिभावकों की अनुमति के बिना इधर–उधर जाने की अनुमति नहीं होती है। और लड़कों से दूरी बनाये रखने की सलाह भी उन्हें घर परिवार से ही दी जाती है।

सामान्यतः देखा जाता है महिला विद्यार्थियों का पहनावा सलवार कमीज होती है और पुरूष विद्यार्थियों का पैन्ट शर्ट होता है। प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थी अधिकांशतः वर्तमान में चल रहे परिधानों से प्रभावित होते हैं। और अन्य विद्यार्थियों के साथ समायोजन स्थापित करने के लिए वे स्वयं को परिवर्तित करने लगते हैं। ऐसा न करने से उच्च वर्ग के विद्यार्थी उन्हें हीन दृष्टि से देखते है और कभी–कभी दूसरे विद्यार्थियों के समक्ष उनके पहनावे को लेकर अपमान भी करने लगते है जिसके परिणामस्वरूप उन्हें शर्मिंदा होना पड़ता है और उनका आत्मसम्मान भी आहत होता है। स्वयं में एवं रहन–सहन के तौर तरीके में परिवर्तन करके ही वे समायोजन करने में सफल हो पाते हैं।

प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थी जब कॉलेज में प्रवेश लेते है तब उनमें संकोच की प्रवृत्ति अधिक होती है। किन्तु जब वे कॉलेज में पढ़ते हैं और जैसे–जैसे विश्वविद्यालय में समय बिताते हैं उनमें आत्मविश्वास की बढ़ोत्तरी होती जाती है और वे अपनी बातों को दूसरों के समक्ष स्पष्ट रूप से कहने में सफल होते हैं।

परिवार में अभिभावकों के शिक्षित न होने के कारण अभिभावकों को अच्छे कॉलेज के विषय में जानकारी नहीं होती है जिससे कि प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों को विश्वविद्यालय के चुनाव में कठिनाई होती है जिसके कारण वे अपने घर के पास के कॉलेज का चुनाव कर लेते हैं। प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों में से कई ऐसे होते हैं जो अच्छे कॉलेज में प्रवेश ले लेते हैं जहाँ वे शिक्षकों के साथ अन्तःक्रिया करना आसानी से सीख जाते हैं और आगे चलकर वे अपने परिवार के लिए नौकरी प्राप्त करके परिवार के आर्थिक सहयोग में अपना योगदान देते हैं।

प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों को अपने परिवार में उच्च शिक्षा प्राप्त करने वाला पहला व्यक्ति होने पर गर्व महसूस होता है क्योंकि उनके अभिभावकों में से किसी ने भी उच्च शिक्षा प्राप्त नही की। और अब वह उच्च शिक्षा प्राप्त कर रहा है और शिक्षा प्राप्त करके वह शिक्षित तो होता ही है और शिक्षा प्राप्त करके वह रोजगार प्राप्त करने में भी सफल होता है और अपने परिवार की आर्थिक मदद करने में अपना पूर्ण योगदान देते है। शिक्षा प्राप्त करके वे अपने व्यवहार में परिवर्तन महसूस करते हैं। विश्वविद्यालय के वातावरण का प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों पर सकारात्मक और नकारात्मक प्रभाव पड़ता है।

प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों के अभिभावकों को विश्वविद्यालय के बारे में किसी भी प्रकार का अनुभव न होने के कारण इन विद्यार्थियों को विश्वविद्यालय के वातावरण के विषय में जानकारी नहीं होती हैं। अर्थात् उनका पाठ्यक्रम क्या होगा, क्लासेज़ कितने बजे से कितने बजे तक होंगी। विश्वविद्यालय में कौन–कौन सी गतिविधियाँ करायी जाती है और किस प्रकार के कार्यक्रम आयोजित किये जाते हैं। पाठ्यक्रम के लिए किन किताबों की आवश्यकता होगी। यदि विद्यार्थी छात्रावास में रहते हैं तो वहाँ के नियमों के विषय में उन्हें ज्ञान नहीं होता है।

प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थी ग्रामीण क्षेत्रों से आते हैं और बड़ी उम्मीद के साथ अभिभावक अपने बच्चों के विश्वविद्यालय भेजते हैं कि वह विश्वविद्यालय जाकर उच्च शिक्षा ग्रहण करेगा। और परिवार की आर्थिक स्थिति में सहयोग करेगा। उसे पढ़ाई पर ध्यान केन्द्रित करने पर विशेष रूप से बल दिया जाता है।

प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थी साधारण एवं ग्रामीण क्षेत्र वाले परिवारों से आते है उन्हें विश्वविद्यालय के विषय में ज्ञान न होने के कारण वे शान्त रहते है उनमें भय की भावना पहले से ही होती है कि विश्वविद्यालय में जो भी घटनाएँ घटित होती है उनमें वे अपने विचारों को प्रदर्शित करने में संकोच करते है। और वे किसी प्रकार के विद्रोह में भाग नहीं लेते हैं क्योंकि ऐसा करने से उनकी छवि धूमिल होती है।

प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थी कई चुनौतियों का सामना करते हैं इस अध्याय में उन चुनौतियों को जानने और समझने का प्रयास किया गया है। यद्यपि उनके

जीवन में कई चुनौतियाँ एवं बाधाएँ शामिल होती हैं जिन्हें सूचीबद्ध नहीं किया जा सकता है। शोधकर्ताओं के द्वारा प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों से सम्बन्धित प्राथमिक चुनौतियों का वर्णन प्रस्तुत किया गया है। प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों की चुनौतियों से सम्बन्धित सलाह देने का कार्य शैक्षिक सलाहकारों के लिए और भी चुनौतीपूर्ण होता है।

प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थी विश्वविद्यालय परिसर में अन्य विद्यार्थियों से सहायता एवं सहयोग प्राप्त करने में संकोच महसूस करते हैं। सामाजिक एकीकरण के सन्दर्भ में प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों में शिक्षकों एवं अन्य विद्यार्थियों के साथ अध्ययन कक्ष के बाहर सामूहीकरण करने की कम सम्भावना होती है। अन्य विद्यार्थियों के साथ मित्रता विकसित करने में भी कठिनाई होती है और इसके अतिरिक्त इन विद्यार्थियों की विश्वविद्यालय परिसर में आयोजित होने वाली गतिविधियों (शैक्षणिक या सामाजिक क्लब) में भी इन विद्यार्थियों की कम भागीदारी रहती है।

टेरेंजिनी और उनके सहयोगियों (1996) ने पाया कि प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थी जब तक यह महसूस करते है कि उन्होंने अपने शैक्षणिक जीवन को नियन्त्रण में कर रखा है तब तक इन विद्यार्थियों को परिसर की अतिरिक्त गतिविधियों में भाग लेने में देर हो चुकी होती है। हालांकि, हाल के शोध से पता चलता है कि प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थी अपने अन्य साथियों की तुलना में वास्तव में ऐसी गतिविधियों में अपनी भागीदारी से अधिक लाभ प्राप्त कर सकते हैं विशेष रूप से शिक्षकों से बातचीत करके। जैसा कि अन्य शोध से पता चला है कि प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थी परिसर के माहौल में विशेष रूप से शिक्षकों की अपने प्रति कम सहायक और कम चिंतित महसूस करते हैं।

प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थी विश्वविद्यालय परिसर में अपने प्रति भेदभाव महसूस करते हैं। जैसा कि रिचर्डसन (1992) अपने स्वयं के अनुभव वर्णन करते हुए बताती है कि प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थी अक्सर कॉलेज में पूर्ण रूप से भाग लेने में असमर्थ होते हैं और वे गहन संघर्ष और समस्याओं के कारण कॉलेज के अनुभव से लाभान्वित नहीं हो पाते हैं।

प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों के अभिभावकों को उच्च शिक्षा का अनुभव न होने के कारण विद्यार्थियों को प्रवेश प्रक्रिया के दौरान भी अनेक चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। विश्वविद्यालयों का चुनाव करने में, प्रवेश हेतु फार्म भरने में और जमा करने में, पाठ्यक्रम के चुनाव में एवं अन्य विद्यार्थियों से अन्तःक्रिया करने में भी अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है।

संस्था के अन्दर, प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों में शैक्षिणक और सामाजिक एकीकरण का स्तर निम्न होता हैं (बिलसन और टेरी, 1982), और, जैसा कि टेरेंजिनी और सहयोगी (1996) बताते हैं, गैर–प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों की तुलना में प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों में अध्ययन कक्ष के बाहर भी उनका अनुभव कम सकारात्मक होता है।

प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थी को अध्ययन कक्ष में शिक्षकों के द्वारा पढ़ाये जाने वाले पाठ्यक्रम को समझने में कठिनाई होती है जिससे उन विद्यार्थियों की अध्ययन कक्ष में जाने की मानसिकता भी बदल जाती है क्योंकि यदि पढ़ने का माध्यम भिन्न होता है तो भी विद्यार्थियों को असुविधा होती है जिसके परिणामस्वरूप प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों को सामंजस्य बनाने में असुविधा होती है। वरिष्ठ छात्रों के निर्देशों के अनुसार भी कभी–कभी स्वयं की इच्छा न होने पर कार्य करने पड़ते है।

छात्रावास के नियम और वहाँ रहने के तौर–तरीकों के बारे में ज्ञान न होने के कारण उन्हें सामंजस्य से सम्बन्धित चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थी प्रवेश लेकर जब विश्वविद्यालय में आते हैं तो उनके लिए वहाँ की हर चीज नई होती है।

वर्तमान समय में जातिगत भेदभाव हर क्षेत्र में देखने को मिलता है शिक्षा के क्षेत्र में भी। चाहे वह भेदभाव शिक्षकों का विद्यार्थियों के प्रति हो या उच्च जाति के विद्यार्थियों के द्वारा उन्हें निम्न जाति का होने का एहसास कराना, शैक्षिक कार्यों में शिक्षकों के द्वारा उच्च जाति के विद्यार्थियों को वरीयता देना आदि। निम्न जाति के विद्यार्थियों से अन्तःक्रिया करने में उच्च जाति के विद्यार्थी असहजता महसूस करते

हैं। उच्च जाति के विद्यार्थियों का व्यवहार निम्न जाति के विद्यार्थियों के साथ असामान्य होता है।

प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों को पुस्तकालय से सम्बन्धित अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ता है जैसे– पुस्तकालय से पुस्तकों के चुनाव में, पाठ्यक्रम से सम्बन्धित पुस्तकों की उपलब्धता से सम्बन्धित, अधिकांश पुस्तकों का अंग्रेजी भाषा में होना आदि।

पुस्कालयों में पुस्तके अलमारी में रखी जाती हैं किन्तु फिर भी प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों को पुस्तके खोजने में असुविधा होती है। पुस्तकालयों में हिन्दी माध्यम की तुलना में अंग्रेजी माध्यम की पुस्तकें अधिक मात्रा में उपलब्ध होती है। माध्यम से सम्बन्धित पुस्तकों की उपलब्धता से सम्बन्धित समस्या दोनों प्रकार के विद्यार्थियों को होती है, जो हिन्दी माध्यम के होते हैं उन्हें भी और जो अंग्रेजी माध्यम के होते हैं उन्हें भी। इस समस्या के समाधान के लिए वे अपने मित्रों एवं शिक्षकों से सहायता मांगते हैं। और प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों के द्वारा अपनी समस्याओं का समाधान अध्ययन कक्ष के बाहर इसलिए मांगते हैं क्योंकि अध्ययन कक्ष में वे सभी विद्यार्थियों के समक्ष संकोच महसूस करते हैं कि वे जो पूछ रहे हैं उसका कुछ महत्व है भी या नहीं किन्तु प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों के लिए उसका विशेष महत्व होता है। महिला विद्यार्थियों ने संस्थान में अलगाव की भावनाओं के साथ–साथ अपने परिवारों से अलगाव की भावनाओं का वर्णन किया।

कॉलेज के लिए कम पूर्व तैयारी और कम मार्गदर्शन के कारण प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थी कॉलेज स्तर का काम करने के लिए अपने साथियों की तुलना में अकादमिक रूप से कम तैयार होते हैं (चॉय, 2001; एंगल एंड टिनो, 2008; डेविस, 2010; टेरेंजिनी एट अल., 1996; एंड पास्करेला एट अल., 2004)। इसके अलावा, प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों में आलोचनात्मक सोच और आत्म प्रभावकारिता की कमी के कारण उनके आत्मविश्वास में कमी होती है (आरूम एंड रोक्सा, 2011; डेविस, 2010)। प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थी अक्सर खुद को परिसर के जीवन से सामाजिक रूप से अलग पाते हैं। इन विद्यार्थियों के परिसर से बाहर रहने की अधिक संभावना

होती है और उन्हें अन्य विद्यार्थियों की तुलना में अधिक घंटे काम भी करना पड़ता है वे अक्सर स्वयं अलग–थलग और हाशिए पर महसूस करते हैं (जहांगीर, 2010; बर्जरशन, 2007)। यह सामाजिक अलगाव प्रथम पीढ़ी की अतिरिक्त गतिविधियों और स्वयंसेवी कार्यों में कम भागीदारी से भी जुड़ा हुआ है (हॉश वॉघन, 2004; एंगल और टिंटो, 2008)। साथ ही उनके सामाजिक आत्मविश्वास और नेतृत्व क्षमता दोनों की आत्मधारणाओं को कम करता है (सीन्ज एट अल., 2007)। प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों के लिए विश्वविद्यालय के अनुभव का एक और पहलू है जो मुश्किले पैदा करता है, जिसमें शिक्षकों के साथ अध्ययन कक्ष के अन्दर और अध्ययन कक्ष के बाहर बातचीत करना शामिल है (सोरिया और स्टीबलटन, 2012)। प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थी अपने शिक्षकों से कम बातचीत करते हैं और अध्ययन कक्ष की गतिविधियों एवं प्रश्न पूछने के मामले में ये विद्यार्थी कम व्यस्त रहते हैं (टेरेंजिनी एट अल., 1996; सोरिया एंड स्टीबलटन, 2012; अरूम और रोकसा, 2011)। इन मात्रात्मक अध्ययनों ने स्पष्ट किया है कि प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थी शिक्षकों के साथ कम बातचीत करते हैं। प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों के सफल होने के लिए, शोधकर्ताओं ने विद्यार्थियों की कार्यों में व्यस्तता को प्रोत्साहित करने के लिए विश्वविद्यालयों से आग्रह किया है कि प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों के मूल्यों को स्पष्ट करने के लिए और अधिक शोध आवश्यक है (एंगल और टिंटो, 2008; टिंटो, 1993; पास्करेला एट अल., 2004; डेविस, 2010; टेरेंजिनी एट अल.,1996)।

हालांकि विश्वविद्यालय में प्रत्येक विद्यार्थी एक–दूसरे से अलग होता है, इन प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों ने अपने और अपने साथी विद्यार्थियों के बीच जनसांख्यिकीय अन्तर को मान्यता दी है। पिछले शोध ने प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों को कम आय वाले जातीय अल्पसंख्यक पृष्ठभूमि से आने वाले के रूप में अलग से परिभाषित किया है (एंगल, 2007)। प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों के पास कॉलेज के वातावरण के संबंध में ज्ञान न होने के साथ–साथ उनके पास कॉलेज स्तर के कौशल के बारे में समझ भी नहीं थी। ये विद्यार्थी कॉलेज शिक्षा के लिए पूर्ण रूप से तैयार नही होते हैं जितने कि अन्य विद्यार्थी होते हैं जिनके पास विश्वविद्यालय शिक्षा का ज्ञान होता है और वे लोग प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों को विश्वविद्यालय के

विषय में ज्ञान प्रदान करने में सक्षम थे (मेहता, एस.एस., न्यूबोल्ड, जे.जे., और ओ'रूर्के, एम.ए., 2011)।

विश्वविद्यालय परिसर में पहली बार पहुंचने पर प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों ने असहजता का अनुभव किया और उसके समान उसके कई दोस्त भी अक्सर परिसर में स्वयं को अलग थलग महसूस करते थे।

साथियों के समर्थन को साहित्य में पारिवारिक समर्थन की तुलना में अधिक सहायक के रूप में प्रतिष्ठित किया गया है। विद्यार्थियों में से कई ने कहा कि जब वे भावनात्मक और अकादमिक सहायता के लिए अन्य विद्यार्थियों के पास जाते है तो उनके साथी और शिक्षक भी उनकी सहायता करते हैं।

इसके साथ ही कुछ ऐसे विद्यार्थी भी थे जिन्हें अपने साथियों से पर्याप्त सहयोग नहीं प्राप्त होता जिसके कारण उनमें निराशा की भावना उत्पन्न हो जाती है और उन्हें कॉलेज में आना वे वजह लगता है।

प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थी कॉलेज में भाग लेने वाले अपने परिवार में पहले हैं, और जो निम्न श्रेणी की पृष्ठभूमि से आते हैं, अक्सर अपने कॉलेजों में जगह से बाहर और बिन बुलाए महसूस करते हैं, जो कॉलेज के वातावरण में एकीकरण के साथ कठिनाइयों का कारण बन सकता है और मध्यम वर्ग के साथियों की तुलना में प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों में कम अवधारणा दर होती है।

हमारे साक्षात्कार के दौरान, उत्तरदाता ने बताया कि कैसे उसके माता–पिता ने कॉलेज जाने के उसके फैसले का समर्थन किया, लेकिन माता–पिता स्कूल और कॉलेज की शिक्षा के बीच के अंतर को पूरी तरह से नहीं समझ पाते हैं। बाद में, उन्होंने बताया कि कैसे कॉलेज में उनकी शिक्षा के बारे में माता–पिता की समझ और सामान्य चिंता की कमी के कारण उनके साथ उनकी पढ़ाई के बारे में बात करना मुश्किल होता है। अपनी प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थी की पहचान के संदर्भ में उत्तरदाता ने बताया कि कैसे उसे उच्च शिक्षा के बारे में जानकारी प्राप्त हुई यहां तक कि स्कूल में सहकर्मी की बातचीत के दौरान उन्हें उच्च शिक्षा के विषय में जानकारी प्राप्त हो पायी।

कई ग्रामीण क्षेत्र से आने वाले विद्यार्थी विश्वविद्यालय के गतिविधियों से आश्चर्यचकित थे और उच्च शिक्षा प्राप्त करने के लिए पूरी तरह से तैयार नही थे क्योंकि उनके परिसर में आगमन से पहले ऐसी समृद्ध संस्कृति से उनका कोई संबंध नहीं था। इसके अलावा, कई ग्रामीण विद्यार्थी अपने निम्न सामाजिक वर्ग में प्रथम पीढ़ी की पहचान के बारे में कम जानते थे।

प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों की बाधाओं को देखते हुए यह शोध जांचने में मददगार है कि कौन से कारकों ने उनकी सफलता में क्या योगदान दिया और उन्हें किन बाधाओं का सामना किया और उन्होंने अपनी बाधाओं से कैसे निज़ात प्राप्त की। विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों की सफलता पर पांरपरिक अध्ययन अक्सर ध्यान केन्द्रित करते हैं। हालांकि, विद्यार्थियों के पूर्व के अनुभव और उनकी पृष्ठभूमि उनके विश्वविद्यालय की सफलता को प्रभावित करते हैं (कुह, किन्जी, बकले, ब्रिज्स, एंड हेक, 2007)। इन कारकों के अतिरिक्त लिंग, जाति, सामाजिक–आर्थिक स्थिति, परिवार का समर्थन और शैक्षणिक तैयारी आदि शामिल हैं। माता–पिता की शैक्षिक प्राप्ति के संबंध में परिवार का समर्थन विद्यार्थियों की सफलता को प्रभावित करता है। विद्यार्थियों की सफलता को प्रभावित करने वाले अंतिम निर्धारित कारक उनकी अकादमिक तैयारी, शैक्षणिक कठोरता का समर्थन करने की उनकी क्षमता है। जो छात्र कठोर उच्च विद्यालय में भाग लेते हैं, वे कॉलेज में अकादमिक रूप से सफल होने के लिए जनसांख्यिकीय कारकों की परवाह किए बिना अधिक तैयार होते हैं (कुह एट अल., 2007)। प्री–कॉलेज के कारकों और कॉलेज के अनुभवों में महत्वपूर्ण अन्तर होने के कारण प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थी अपने निरंतर पीढ़ी के साथियों से भिन्न होते हैं (टेरेंजिनी एट अल., 1996)। प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों को बाधाओं का सामना करना पड़ता है और पहचान जो उनकी सफलता को प्रभावित करती है मुख्य रूप से आय, नस्लीय अल्पसंख्यक, शैक्षणिक तैयारी, कॉलेज में फिट होने के लिए संघर्ष और समर्थन की कमी। नीचे प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों से सम्बन्धित साहित्य की समीक्षा की गई है और ये मुद्दे कैसे उनकी सफलता को प्रभावित करते हैं।

आय और शैक्षिक प्राप्ति एक दूसरे के साथ दृढ़ता से सम्बन्धित हैं प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों के कम आय वाले परिवार से होने की संभावना अधिक होती है (चॉय, 2001; सिरिन, 2005)। ये छात्र जो कम आय वाले और प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थी हैं इन विद्यार्थियों को अतिरिक्त समर्थन के बिना स्कूल की विफलता के चक्र को समाप्त करने का जोखिम होता है। इसलिए यह महत्वपूर्ण है कि प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थी शैक्षिक प्राप्ति और आय के चक्रों को तोड़ने में सफल हों। प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थी और निम्न आय दोनों पर कई अध्ययन हो चुके हैं किन्तु आर्थिक स्थितियाँ प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों की कई बाधाओं को समझाती है (विल्बर और रोस्कोग्नो, 2016)। वित्तीय चिंताएँ कई मायनों में प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों को प्रभावित करती हैं और विश्वविद्यालय की धनराशि को वहन करने की क्षमता को भी प्रभावित करती है। प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थी ट्यूशन की फीस का भुगतान करने के लिए ऋण पर अधिक निर्भर रहते हैं (ली एंड मूल्लर, 2014)। प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थी अक्सर वित्तीय बोझ को दूर करने के लिए कॉलेज के पूरे समय काम करते हैं। इसके लिए उन्हें अध्ययन कक्ष के बाहर अतिरिक्त समय की आवश्यकता होती है। जो अपने साथियों के साथ और अध्ययन में संलग्न होने के लिए समर्पित हो सकता है (प्रैट, हारवुड, कैवाज़ोस एंड डिट्ज़फेल्ड, 2017)।

प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों को अक्सर अकादमिक रूप से विश्वविद्यालय के लिए तैयार नही समझा जाता है। कॉलेज के लिए अकादमिक रूप से कम तैयार होने के बावजूद कई प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थी कॉलेज की सफलता के रूप में अपने निम्न जीपीए और परीक्षा स्कोर को जोड़ने में विफल रहते हैं, वे अक्सर आश्चर्यचकित होते हैं कि कॉलेज के शिक्षाविदों की कठोरता उनकी उम्मीदों से अधिक होती है। जिससे प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों की सांस्कृतिक और सामाजिक पूंजी की कमी उजागर होती है। प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों में उनके निरंतर पीढ़ी के साथियों की तुलना में कम शैक्षिक आकांक्षाएं होती हैं (पाइक एंड कुह, 2005)।

प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों में उनके निरंतर पीढ़ी के साथियों के समान कॉलेज जीवन की वास्तविकता के संदर्भ में समझ का अभाव है, इसलिए उनमें विश्वविद्यालय जीवन की वास्तविकता से असंतुष्ट होने की अधिक संभावना होती

है। उम्मीदों और वास्तविकता के इस बेमेल रूप से प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थी अपनी बाधाओं को दूर करने के लिए कम तैयार हो पाते हैं क्योंकि वे जिन बाधाओं का सामना करते हैं, उससे अकादमिक में उनका बने रहना और सफल होना और अधिक कठिन हो जाता है (कुह एट अल., 2007)। प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों की धारणा और वास्तविकता का बेमेल होना भी शिक्षकों के साथ उनके संबंधों को प्रभावित करता है। अध्ययन कक्ष में प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों की धारणा अक्सर शिक्षकों की धारणाओं के समान नहीं होती है, जिससे प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों की शिक्षकों के साथ संघर्ष करने की अधिक संभावना रहती है (कोलियर और मॉर्गन, 2008)।

प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों को अक्सर उनके निरंतर पीढ़ी के विद्यार्थियों की तुलना में समान समर्थन नहीं मिला (ईशतानी, 2003)। आज के उच्च शिक्षा में अनुभव के एक बड़े हिस्से में अध्ययन कक्ष के अन्दर और बाहर की गतिविधियों में भागीदारी शामिल है। अनुसंधान से पता चलता है कि प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थी शैक्षणिक कार्यों में लगे रहते हैं लेकिन अन्य साथियों के विपरीत वे शैक्षणिक सफलता के लिए खुद पर भरोसा करते हैं, वे दूसरों की भागीदारी को लाभकारी नहीं मानते हैं (पाइक एंड कुह, 2005; यी, 2015)। प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों ने कहा कि सफल होने की जिम्मेदारी अकेले उनकी थी। उदाहरण के लिए, वे अपने शिक्षकों से 'अपने हाथ पकड़ने' की उम्मीद नहीं करते हैं और उन्होंने महसूस किया कि कॉलेज में अच्छा करने के लिए आत्म–अनुशासन की आवश्यकता है (यी, 2015,)। प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों के लिए व्यक्तिगत सफलता को जारी रखना और अपनी व्यक्तिगत उपलब्धियों के फल का आनंद लेना गर्व की बात है। इसलिए, इस परिप्रेक्ष्य ने अपने शिक्षकों के साथ संभावित संबंधों को बनाने की उनकी क्षमता को सीमित कर दिया है, जो उनके निरंतर पीढ़ी के विद्यार्थी शिक्षकों के साथ संबंध स्थापित करते हैं और उनसे लाभ भी उठाते हैं। इसके अतिरिक्त प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थी शिक्षकों के समर्थन की तलाश नहीं करते हैं क्योंकि वे भयभीत महसूस करते हैं। और प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थी इन संबंधों को स्थापित करने में असफल होते हैं और वे अपने ग्रेड में सुधार करने, आगामी परीक्षा और असाइनमेंट पर बेहतर

प्रदर्शन करने के बारे में शिक्षकों से सलाह लेने के अवसर से चूक जाते हैं (यी, 2015)।

अधिकांश प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थी धीमी गति से सफल प्राप्त कर पाते हैं क्योंकि वे अक्सर काम की जिम्मेदारियों के साथ शैक्षणिक जिम्मेदारियों को संतुलित करते हैं, जिसमें एक लक्षण कम आय भी है (कुह एट अल., 2007)। इसके अलावा, प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों की विश्वविद्यालय से बाहर होने की संभावना अधिक होती है (इशतानी, 2006)। इसके कारण हो सकते हैं जैसेः अकादमिक संघर्ष, वित्तीय बोझ, विश्वविद्यालय में फिट रहने के लिए संघर्ष, और समर्थन की कमी।

विश्वविद्यालय में एक अंडररिप्रजेन्टेड ग्रुप के रूप में प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों ने अपनी गैर–प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों के साथ संबंधित संघर्ष किया, जिससे उन्होंने स्वयं को बहिष्कृत महसूस किया।

प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थी अपना गृहकार्य पूर्ण करके नहीं आते हैं क्योंकि उन्हें समझ में ही नहीं आता है कि गृहकार्य करना कैसे है और अगले दिन कॉलेज में आकर दूसरे विद्यार्थियों की सहायता लेकर वे अपना गृहकार्य पूर्ण कर पाते हैं।

प्रथम पीढ़ी विद्यार्थी वे स्वयं को अपने घर समुदायों से अलग और दूर महसूस करते हैं (जहांगीर एट अल, 2015)। उन्हें ऐसा लगता है कि लक्ष्य का पीछा करने के लिए एक अकेला अस्तित्व है। जब विद्यार्थियों के पास समर्थन और नेटवर्क की कमी होती है तो विश्वविद्यालय परिसर में और भी अकेला और अलग–थलग महसूस करते हैं। प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों में समर्थन की कमी होती है।

प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों की सफलता के लिए प्रेरणा थी कि वे अपने परिवार और दोस्तों से घिरे थे। उनके प्रोत्साहन ने उन्हें ऐसा महसूस कराया जैसे कि वे सफल हो सकते हैं। यद्यपि प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थी के अभिभावक उन्हें कॉलेज की सफलता के सार्थक सलाह नहीं दे पाते हैं। कई प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थी अपने भाई–बहन के साथ अपने कॉलेज के अनुभवों पर खुलकर चर्चा करते हैं। अपने परिवार के बाहर प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों को अपने दोस्तों और रूममेट्स द्वारा सफल होने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है। उदाहरण के लिए, विद्यार्थियों

ने महसूस किया कि उन्होंने अपने दोस्तों के साथ एक सहायक वातावरण बनाया, जिसने विद्यार्थी की सफलता को प्रोत्साहित किया। एक छात्रा ने इस बात पर टिप्पणी की कि उसके सहपाठियों ने उसकी सफलता में कैसे योगदान दिया, यह स्वीकार करते हुए कहा कि हाँ मुझे लगता है कि मेरी रूममेट्स ने कॉलेज में मेरी प्रेरणा को बढ़ावा दिया।

प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थी उच्च शिक्षा प्राप्त करने के लिए नीति बनाते है जिसमें कॉलेज को अपनी मुख्य प्राथमिकता के रूप में रखने के लिए अपने जीवन के अन्य पहलुओं का त्याग करते हैं। कभी–कभी वे पूरी रात अध्ययन करने और असाइनमेंट पूरा करने के लिए जागते रहते हैं क्योंकि अध्ययन कक्ष के बाहर का समय उनकी नौकरी में व्यतीत होता है। एक और बलिदान अपने दोस्तों के साथ समय व्यतीत करने का है। प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों ने आमतौर पर एक से अधिक काम किए जिसके कारण उनके पास सार्थक संबंधों को विकसित करने के लिए बहुत कम समय था।

प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों ने माना कि अध्ययन कक्ष में सफलता एक मजबूत उपस्थिति रिकॉर्ड के द्वारा प्राप्त की जा सकती है। एक प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थी ने विस्तृत रूप से बताया कि, उसकी उपस्थिति से उसकी सफलता कैसे संबंधित है, इसलिए उपस्थिति निश्चित रूप से महत्वपूर्ण है और इसने निश्चित रूप से मुझे एक विद्यार्थी के रूप में सफल होने में मदद की। अध्ययन कक्ष में होने वाले संवाद से परीक्षा में सफल होने में मदद मिलती है क्योंकि अध्ययन कक्ष में पाठ्यक्रम को विस्तार से पढ़ाया जाता है। और यदि आप उस दिन चूक गए तो परीक्षा में सफलता प्राप्त करना कठिन हो जाता है इसलिए उपस्थिति ने निश्चित रूप से मुझे सफल होने में मदद की है।

प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों ने अपने विश्वविद्यालय की सफलता के लिए कई नीतियों का उपयोग किया। उन्होंने अपने शैक्षणिक करियर के साथ बड़ी पहल की और डिग्री प्राप्त करने के लिए अपने पाठ्यक्रमों का चयन करने में सक्रिय रूप से शामिल थे। इसके अतिरिक्त, प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों ने नियमित रूप से अध्ययन

कक्ष में भाग लिया। उन्होंने महसूस किया कि उनकी उपस्थिति उनकी सफलता से संबंधित है। इसलिए शायद ही उन्होंने कभी क्लास मिस नहीं की।

कुछ अध्ययनों में पाया गया है कि उनके पास आत्म–प्रभावकारिता (सेल्फ इफीसिएन्सी) की भावना कम होती है, उन्हें स्वयं विश्वविद्यालय जीवन में समायोजित करने से उनकी क्षमता में बाधित होती है (हेलमैन,1996), और उनके निंरतर पीढ़ी के साथियों की तुलना में आत्म–सम्मान का स्तर निम्न होता है (इनमैन एंड मेयस, 1999)।

शुरूआत या प्रथम वर्ष में, विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों को उन दिनचर्या से अलग होने की जरूरत होती है जो हाई स्कूल में सामान्य थीं और विश्वविद्यालय परिसर की मांगों के अनुकूल नई नीतियों का विकास करती थी। जबकि कई विद्यार्थी इस स्थानान्तरण को विश्वविद्यालय में यथोचित रूप से बनाये रखते हैं (फिशर एंड हूड, 1987; गर्डेस एंड मैलिन्कक्रोडट, 1994; हर्टेल, 2002; टेरेंजिनी एट अल., 1994)।

विद्यार्थी जिनके अभिभावक कॉलेज गए होते है उनकी तुलना में कॉलेज से संबंधित गतिविधियों और अपेक्षाओं के कम ज्ञान के साथ कॉलेज में प्रवेश करते हैं (डेविस, 2010; एंगल, 2007; पास्करेला एंड टेरेंजिनी, 2005; थायर, 2000; टाइम, मैकमिलन, बैरन एंड वेबस्टर, 2004)। ये कारक विद्यार्थियों की शैक्षणिक और कॉलेज के माध्यम से सफलतापूर्वक प्रगति करने की क्षमता को प्रभावित करते हैं (एंगल, 2007)।

शोध बताता है कि प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थी होने के नाते अकादमिक विफलता के लिए एक जोखिम कारक है। दूसरे शब्दों में, विद्यार्थियों की जनसांख्यिकीय पृष्ठभूमि, हाई स्कूल के दौरान अकादमिक तैयारी, और कॉलेज में अकादमिक प्रदर्शन के बाद भी, यह तथ्य है कि विद्यार्थी विश्वविद्यालय में भाग लेने के लिए परिवार में सबसे पहले आता है, जो गरीब शैक्षणिक परिणामों के लिए विद्यार्थी को जोखिम में डालता है, जैसे कि कॉलेज छोड़ना और न ही स्नातक की डिग्री प्राप्त करना (चेन एंड कैरोल, 2005; चॉय, 2001; एंगल, 2007; इशितानी, 2006; नुनैज़

एंड क्यूकोरो–आलमिन, 1998; पास्करेला एंड टेरेंजिनी, 2005; वार्बर्टन, बुग्रेन एंड नुनैज़, 2001)।

इसके अलावा जो विद्यार्थी हाई स्कूल के ठीक बाद कॉलेज में प्रवेश नहीं करते हैं, वे स्नातक या उच्च डिग्री प्राप्त करने की उम्मीद कम करते हैं और उनके पास अक्सर अपने साथियों की तुलना में कम ग्रेड होते हैं, जिन्होंने हाई स्कूल के तुरन्त बाद कॉलेज में प्रवेश लिया हो (चेंग एंड कैरोल, 2005; एंगल, 2007; नुनैज़ एंड क्यूकोरो–आलमिन, 1998; वार्बर्टन, बुग्रेन एंड नुनैज़, 2001)। विश्वविद्यालय में देरी से प्रवेश लेना और डिग्री अर्जित किए बिना विश्वविद्यालय को छोड़ना के लिए विद्यार्थियों के जोखिम को बढ़ाता है, और प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थी इस स्थिति पर विशेष रूप से कमजोर लगते हैं (नीयू एंड टिंडा, 2013)। वास्तव में, पिछले शोध में पाया गया है कि प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थी अपने साथियों की तुलना में अपने दूसरे वर्ष से पहले ही कॉलेज से बाहर हो गए (चॉय, 2001)। ये रूझान उन कारकों पर शोध की आवश्यकता को रेखांकित करते हैं जो प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों की उच्च शिक्षा में सफलता को प्रभावित करते हैं।

सांस्कृतिक पूँजी एक व्यक्ति की जागरूकता, नियमों और प्रथाओं की समझ है (स्कैफनबर्ग एंड मास, 1997; बुर्दियों, 1973; 1977)। यह विस्तारित दृष्टिकोण गैर शैक्षणिक कारकों के संबंध में कॉलेज की सफलता को समझने का प्रयास करता है। यह विचार करता है कि एक सफल विद्यार्थी न केवल अध्ययन कक्ष में अच्छा करता है, बल्कि वह परिसर में अन्य व्यक्तियों के साथ भी जुड़ने का प्रयास करता है, जिससे उनमें विश्वविद्यालय परिसर में एक सफल विद्यार्थी की भूमिका की समझ विकसित होती है। इस दृष्टिकोण का उपयोग विद्यार्थियों की सफलता के लिए नीति विकसित करने के लिए में सहायक होता है, विशेष रूप से निम्न परिवारों से आने वाले विद्यार्थियों के लिए जो विश्वविद्यालय की उपस्थिति से अपरिचित थे।

विश्वविद्यालय की सफलता के विकास की समझ को बढ़ाने और गैर शैक्षणिक कारकों का पता लगाने का एक तरीका सामाजिक विज्ञानों से ज्ञान प्राप्त करना है विशेष रूप से समाजशास्त्रीय सिद्धान्त के सांस्कृतिक पूंजी अवधारणा से।

जैसा कि पहले कहा गया है कि सांस्कृतिक पूंजी व्यक्ति की जागरूकता, आचरण, नियमों और प्रथाओं की समझ है (एसचाफैनबर्ग एंड मास, 1997; बुर्दियों, 1973; 1977)। विद्यार्थियों के लिए सांस्कृतिक पूंजी में विद्यार्थी की भूमिका का ज्ञान शामिल होता है, जैसे कि पाठ्यक्रम की अपेक्षाओं को समझना, प्रशिक्षकों के साथ बातचीत करना और अध्ययन कक्ष में शिक्षण सहायता, विद्यार्थी कैसे विश्वविद्यालय परिसर की गतिविधियों में भाग लेते हैं और परिसर में कैसे दोस्त बनाते हैं यह सभी गतिविधियाँ सांस्कृतिक पूंजी में शामिल होती हैं। कॉलेज की सफलता के लिए इस प्रकार का ज्ञान महत्पूर्ण है, लेकिन यह हमेशा आसान नहीं होता है। कई विद्यार्थियों के लिए, यह ज्ञान अनौपचारिक रूप से परिवार के सदस्यों द्वारा और अधिक औपचारिक रूप से कॉलेज के काउंसलर और अन्य नामित व्यक्तियों द्वारा पारित किया जाता है जो कॉलेज जाने के प्रक्रिया को सुविधाजनक बनाते हैं, जैसे शिक्षक और मार्गदर्शन या काउंसलर। क्योंकि यह जानकारी आमतौर पर उन विद्यार्थियों के लिए उपलब्ध होती है, जिनके माता–पिता कॉलेज में पढ़ते थे, ये विद्यार्थी इस संबंध में अधिक से अधिक सांस्कृतिक पूंजी के साथ कॉलेज में प्रवेश करते हैं, जो कि कॉलेज के विद्यार्थी की भूमिका के बारे में प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों से अधिक समझ रखते हैं (एंगल, 2007)।

इन तथ्यों से पता चलता है कि प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों का विश्वविद्यालय में प्रवेश लेना एक नया अनुभव है क्योंकि उनके अभिभावकों के द्वारा उच्च शिक्षा प्राप्त न के कारण उन्हें ऐसा परिवेश देखने का अवसर नहीं प्राप्त हुआ। और जब उन्होंने विश्वविद्यालय में प्रवेश लिया तो यह परिवेश उनके लिए बिल्कुल ही नया और अलग था।

हाई–स्कूल से विश्वविद्यालय तक के स्थानान्तरण में, प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थी अपने परिवारों की संस्कृतियों को छोड़ रहे हैं और कॉलेज के वातावरण में प्रवेश कर रहे हैं जो नए और शायद डराने वाले हैं। इस माहौल में सफलता अकादमिक और सामाजिक रूप से दोनों को समायोजित करने की मांग करती है (टिंटो, 1993)। लंदन के (1989) गुणात्मक अध्ययन जिसमें उन्होंने कई वर्षों के लिए 15 प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों के जीवन का पालन किया, लंदन ने कॉलेज संस्कृति

प्रघात और परिवार से अलगाव गतिशीलता के मुद्दे पर विशेष ध्यान दिया। कॉलेज के माहौल के साथ अपरिचितता से जुड़ी हुई चिंता और केवल परिवार को छोड़ने की चिंता यह विद्यार्थियों को अपराबोध से जोड़ता है।

प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों की शिक्षकों या सलाहकारों के साथ मिलने, कैरियर से संबंधित व्याख्यान में भाग लेने या शिक्षकों के साथ शैक्षणिक मामलों पर चर्चा करने की संभावना कम होती है (नुनैज़ एण्ड कुकारो–आलमीन 1998)। प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थी प्रतिस्पर्धा, वफादारी, कॉलेज के अनुभव के मूल्यों के बारे में गलतफहमी और परिवार के प्रति प्रतिबद्धताओं के साथ विश्वविद्यालय परिसरों में पहुंचते हैं। प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों के लिए सामाजिक एकीकरण मुश्किल होता है और कॉलेज की भागीदारी महत्वहीन लगती है, अभी तक, एस्टिन (1984) द्वारा किए गए शोध से पता चलता है कि भागीदारी परिसर जीवन के साथ संतुष्टि के लिए महत्वपूर्ण है, जिससे दृढ़ता बनी रहती है।

प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों की प्रतिक्रिया के प्रकार

उपर्युक्त विश्लेषण के आधार पर हमें मुख्यतः तीन प्रकार की प्रतिक्रियाँ मिलती हैं और जिसके आधार पर हम प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों को तीन श्रेणी में बाँटा जाता है। जिसको रेखाचित्र 6.3 में दर्शाया गया है।

रेखाचित्रः 6.3 प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों की प्रतिक्रियों के प्रकार

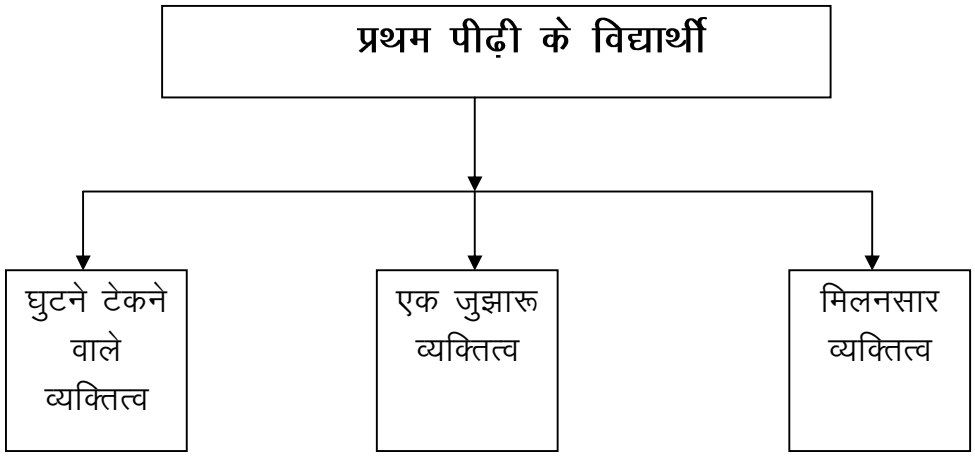

स्त्रोतः क्षेत्रीय कार्य

ये तीन प्रकार के व्यक्तित्व हैं घुटने टेकने वाले व्यक्तित्व, जुझारू व्यक्तित्व, मिलनसार व्यक्तित्व।

घुटने टेकने वाले व्यक्तित्वः घुटने टेकने वाले व्यक्तित्व से सम्बन्धित वे विद्यार्थी हैं जो उच्च शिक्षा प्राप्त करने में बहुत ही अधिक कठिनाई का अनुभव करते हैं और वे निराश होकर अपनी शिक्षा बीच में ही छोड़ देते हैं वे उच्च शिक्षा में बने रहने के लिए किसी प्रकार का प्रसास भी नहीं करते हैं। ऐसे विद्यार्थियों की संख्या सबसे अधिक है।

जुझारू व्यक्तित्वः ये प्रथम पीढ़ी के वे विद्यार्थी हैं जो विश्वविद्यालय परिसर में अभिजात वर्ग की संस्कृति का विरोध करते हैं और हाशिएकृत विद्यार्थियों के लिए उचित वातावरण तैयार करने की वकालत करते हैं।

ये भाषायी कठिनाई के कारण प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों की तुलना में धीरे–धीरे समस्याओं को समझ पाते हैं। लेकिन वे आमतौर पर एक या दो सेमेस्टर खत्म होने तक अपनी समस्याओं को भली–भाँति समझ जाते हैं और उसे दूर करने का प्रयत्न करते हैं। जब वे अपनी समस्या को समझ लेते हैं तो इस पर बहस छेड़ देते हैं वे स्वयं के लिए एवं अपने जैसे प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों के लिए परिसर में सुरक्षित जगह बनाने का प्रयास करते हैं। वे प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों की समस्याओं को संवेदनशील मुददा मानते हैं और उसे दूर करने का प्रयास करते रहते हैं। इनमें से कुछ विद्रोही हो जाते हैं और उच्च शिक्षा में प्रभावी समूह के वातावरण के विरोध के लिए प्रति संस्कृति का निर्माण करते हैं। यह प्रति संस्कृति प्रभावी संस्कृति के मानदण्डों और मूल्यों को चुनौती देती है। प्रति संस्कृति को मानने वाले विद्यार्थी विरोधी समूह के विचारों और मानदण्डों को हटाकर ऐसे मानदण्डों का समर्थन करते हैं जो प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों के लिए कारगर हो। दिन पर दिन ऐसे विद्यार्थियों की संख्या में वृद्धि होती जा रही है।

मिलनसार व्यक्तित्व: ये ऐसे प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थी हैं जो गैर प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों को अपना सन्दर्भ समूह मानते हैं। और इसी हिसाब से वे अपने रीति–रिवाजों, संस्कृति और व्यवहार को बदलने का निरन्तर प्रयास करते रहते हैं। वे पढ़ाई के अलावा कपड़े पहनने की आदतें एवं बोलने के लहजे में भी निरन्तर बदलाव करते रहते हैं। इस प्रकार वे लगातार वि–समाजीकरण एवं पुर्न समाजीकरण द्वारा अपनी सांस्कृतिक पूंजी की जकड़न से बाहर निकल कर अपने आपको उच्च शिक्षा में स्थापित करने में सफल रहते हैं।

इनकी अन्य महत्वपूर्ण विशेषताएँ हैं यह तुरन्त एक नये माहौल को समझ लेते हैं और सुचारू रूप से अपना अध्ययन करते हैं। ये प्रभावी विद्यार्थियों के साथ अच्छे सहयोगी सम्बन्धों की आवश्यकता को समझते हैं साथ ही सभी के साथ सहानुभूति दर्शाते हैं। ये तुरन्त भाप जाते हैं कि यदि वे ऐसा नहीं करेंगें तो उन्हें उच्च शिक्षा में अलगाव का सामना करना पड़ेगा। वे अपने आप को शांत एवं रचित रखते हैं और साथ ही आत्मविश्वास से भरे होते हैं। वे अच्छे स्त्रोता भी होते हैं, उत्सुक रहते हैं और अपनी गलतियों से सीखते हैं। ये गुण उन्हें उच्च शिक्षा के नए वातावरण में लचीला बनाते हैं। यही कारण है कि वे आसानी से नाराजगी महसूस नहीं करते, नाजुक भावना से प्रभावित नहीं होते और नयी चीजों को सीखने की उत्सुकता बनाये रखते हैं तथा कठिन परिश्रम करते हैं। किन्तु मुठ्ठी भर प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों का इस प्रकार का व्यक्तित्व होता है।

परिकल्पना 5: प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थी उच्च शिक्षा प्रणाली में अलगाव महसूस करते हैं।

रेखाचित्र 6.1 के आधार पर यह पता चलता है कि लगभग 48.5 प्रतिशत प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थी अपने सहपाठियों से बहुत कम या कुछ हद तक सहायता मांग पाते हैं। इसके अलावा 51.5 प्रतिशत विद्यार्थी सहयोग तो मांगते हैं किन्तु इनमें से अधिकांश को गैर–प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों द्वारा अपमानित किया जाता है।

तालिका 6.1 से यह प्रदर्शित होता है कि लगभग 98.2 प्रतिशत प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थी इस बात को मानते हैं कि उनका पहनावा, बात करने का तरीका, खाने

की आदतें गैर–प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों से अलग है। कुछ अपने आपको थोड़ा अलग मानते हैं तो अधिकतर अपने आपको बिल्कुल अलग मानते हैं। इसमें भी महिला प्रथम पीढ़ी की विद्यार्थी स्वयं को अलग मानती हैं। यह एक प्रकार का उच्च शिक्षा में अलगाव दर्शाता है।

रेखाचित्र 6.2 यह दर्शाता है कि 57.5 प्रतिशत प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थी कुछ हद तक या पूरी तरह से पार्क, कैंटीन आदि स्थानों पर अलगाव महसूस करते हैं।

इतना ही नहीं प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों को गैर–प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों जैसी अंग्रेजी फिल्मों, रेस्तरां, कंप्यूटरों, एवं खाद्य पदार्थों के विषय में जानकारी नही होती है। यह तालिका 6.2 से स्पष्ट है। तालिका 6.3 से इस बात की पुष्टि होती है कि अधिकतर प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों ने विश्वविद्यालय जैसा परिसर पहले कभी देखा।

प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों में यह समझने का अभाव होता कि विश्वविद्यालय का जीवन कैसा होता है। प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थी में संकोची प्रवृत्ति होती है जिससे वे स्वयं को अकेला अनुभव करते हैं। इस अलगाव ने उन्हें उदासी और घबराहट के अनुभव से परिचित कराया, जिससे उनमें हल्के अवसाद और चिंताएँ पैदा हो जाती हैं।

इस आधार पर हम कह सकते हैं कि प्रस्तुत शोध अध्ययन की अन्तिम परिकल्पना भी पूर्ण रूप से सत्य साबित होती है।

अध्याय 7

निष्कर्ष एवं सुझाव

अध्याय 7

निष्कर्ष एवं सुझाव

भारत में जो उच्च शिक्षा में अभूतपूर्व विकास हुआ है वो माता–पिता की अपने बच्चों को शिक्षित करने की प्रेरणा और सरकार की नीतियों के कारण सम्भव हो पाया है। किन्तु भारत में उच्च शिक्षा का विस्तार मात्रात्मक रहा है न कि गुणात्मक। सरकार उच्च शिक्षा में जनसंख्या की विषमता को पहचानने में विफल रही है जो कि भारत की उच्च शिक्षा में गुणात्मक सुधार करने में बाधक सिद्ध होती है।

उच्च शिक्षा के विस्तार में महिलाओं, अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति एवं अन्य पिछड़ा वर्ग की भूमिका अधिक रही है, जिसमें अधिकतर प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थी हैं। कुछ प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थी सामान्य वर्ग से भी आते हैं। इसमें कोई संदेह नहीं है कि पिछले ढाई दशकों में जो उच्च शिक्षा में जबरदस्त वृद्धि हुई है वह उच्च शिक्षा में समानता लाने और समावेशीय विकास करने में विफल रही है। प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों को उच्च शिक्षा प्राप्त करने में अनेक प्रकार की चुनौतियों का सामना करना पड़ता है।

भारतीय परिपेक्ष्य में उच्च शिक्षा में प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों पर बहुत कम अध्ययन किये गये है। प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों को उच्च शिक्षा प्राप्त करनें में अत्यधिक कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है उनके अभिभावकों का उच्च शिक्षा प्राप्त न कर पाना उनकी आर्थिक एवं सामाजिक आदि कारक प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों को प्रभावित करते है। प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों को उनके अभिभावकों के द्वारा विश्वविद्यालय के चुनाव के लिए उचित मार्गदर्शन नहीं मिल पाता है। प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों का स्कूल से विश्वविद्यालय में स्थानान्तरण करने में महत्वपूर्ण भागीदारी होती है। वर्तमान समय में उच्च शिक्षा के प्रसार को देखते हुए निम्न स्तर से भी आने वाले प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थी विश्वविद्यालय में प्रवेश ले रहे हैं। किन्तु उन्हें प्रवेश प्रक्रिया के समय भी उनकी स्थिति को देखते हुए उन्हें प्रवेश लेने में

कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। उन्हें अध्ययन कक्ष में पाठ्यक्रम एवं भाषा से सम्बन्धित समस्याओं का सामना करना पड़ता है उच्च शिक्षा में प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थी सामाजिक अन्तः क्रिया करने में संकोच करते है। जब उच्च शिक्षा में प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों का स्कूल से विश्वविद्यालय में प्रवेश होता है तो उस प्रक्रिया के दौरान भी उन्हें अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों को परिसर में तथा पुस्तकालय में समायोजन करने में परेशनियों को सहन करना पड़ता है।

प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों का अर्थ

प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों को समझने के लिए यह समझना महत्वपूर्ण है कि प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों की सार्वभौमिक रूप से कोई स्वीकृत परिभाषा नहीं है। एक परिभाषा में कहा गया है कि प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थी ऐसे विद्यार्थी हैं जिनके माता–पिता ने उच्च शिक्षा में कभी दाखिला नहीं लिया (नूनैज एण्ड कोकारो–अलमिन, 1998)। वैकल्पिक रूप से, चॉय (2001) प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों को परिभाषित करता है जिनके परिवार में किसी ने कॉलेज या विश्वविद्यालय का अनुभव नहीं किया।

प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों को ऐसे विद्यार्थी के रूप में वर्णित किया जा सकता है, जिनके माता–पिता के पास न तो स्नातक की डिग्री होती है और न ही कॉलेज का अनुभव (डार्लिंग और स्मिथ 2007)। अध्ययन के उद्देश्य के लिए शोधार्थी ने प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों को इस प्रकार से परिभाषित किया है जो कि परिवार का पहला सदस्य है और उच्च शिक्षा प्राप्त कर रहा है। इसका मतलब है कि प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थी के अभिभावकों में से किसी ने भी उच्च शिक्षा प्राप्त नहीं की है।

शोध पद्धति

अध्ययन की प्रकृति और उद्देश्यों को ध्यान में रखते हुए वर्णानात्मक शोध विधि का प्रयोग किया गया है। प्रस्तुत अध्ययन में गुणात्मक और मात्रात्मक दोनों विधियों का उपयोग किया गया है इसलिए यह अध्ययन मिश्रित विधि पर आधारित है– इसे त्रिभुज डिजाइन भी कहा जाता है। प्रस्तुत अध्ययन में मात्रात्मक और

गुणात्मक दोनों विधियों को समान वरीयता प्रदान की गयी है। गुणात्मक और मात्रात्मक तथ्य दोनों एक ही समय में एकत्र किये गये हैं और इनके तथ्यों के विश्लेषण को दो चरणों में बाँटा गया है।

पहले चरण में मात्रात्मक और गुणात्मक तथ्यों का अलग–अलग विश्लेषण किया गया है। दूसरे चरण में गुणात्मक और मात्रात्मक तथ्यों के विश्लेषण की तुलना की गयी है।

अध्ययन का निदर्शन

संभावना (probability) और उद्देश्यपूर्ण (purposive) तकनीक दोनों का उपयोग निदर्शन के उद्देश्य से किया गया है, जो परिकल्पनाओं को संबोधित करता है। इस अध्ययन के उद्देश्य के लिए निदर्शन के दो सेट का उपयोग किया गया है– एक मात्रात्मक विश्लेषण के लिए और दूसरा गुणात्मक विश्लेषण के लिए। हालांकि गुणात्मक विश्लेषण के लिए निदर्शन के रूप में 30 प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों का एक–उप निदर्शन है जो मात्रात्मक विश्लेषण के लिए चुने गए प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों निदर्शन में से चुना गया है।

तथ्य संग्रह तकनीक

प्रश्नावली का उपयोग उच्च शिक्षा में प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों की चुनौतियों एवं प्रतिक्रियों के बारे में तथ्य एकत्र करने के लिए किया गया है।

पायलट परीक्षण प्रश्नावली को मान्य करने और साक्षात्कार गाइड में आवश्यक संशोधन को शामिल करने के लिए किया गया था। तथ्य एकत्र करने के लिए वास्तविक क्षेत्र का काम फरवरी 2017 से अगस्त 2017 के दौरान किया गया था।

गुणात्मक तथ्य 30 उत्तरदाताओं से गहन साक्षात्कार के माध्यम से एकत्र किये गये हैं।

गुणात्मक तथ्य एकत्र करने के लिए गहन साक्षात्कार फरवरी 2017 से अगस्त 2017 के दौरान आयोजित किया गया था। प्रत्येक साक्षात्कार लगभग 20 से 30 मिनट तक चला। साक्षात्कार की शुरूआत निम्नलिखित खुले प्रश्नों के साथ हुई जो सीधे शोध के विषय से निकलते हैं।

अध्ययन में प्रयुक्त होने वाले चर

शोध में कई सामाजिक और आर्थिक चर शामिल हैं जो प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों की चुनौतियों एवं प्रतिक्रिया को निर्धारित करते हैं। प्रमुख चर आयु, लिंग, जाति समूह, धर्म, पारिवारिक आय, सामाजिक–आर्थिक स्थिति, पिता का शैक्षिक स्तर, माता–पिता की भागीदारी आदि हैं।

उच्च शिक्षा में प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों की चुनौतियों एवं प्रतिक्रिया का आकलन करने के लिए साथियों, परिचितों के समर्थन के साथ माता–पिता की भागीदारी का उपयोग किया गया है।

प्रमुख चर एवं तथ्यों का विश्लेषण

सांख्यिकीय विश्लेषण करने के लिए वर्णानात्मक आँकड़ें और रेखाचित्र का प्रयोग किया गया है। गुणात्मक तथ्यों का विश्लेषण करना एक जटिल कार्य है तथ्यों के विश्लेषण में अनुसंधान के विषय के संबंध में चुनौतियों और प्रत्येक उत्तरदाता की प्रतिक्रिया का एक विस्तृत विवरण विकसित करना शामिल है। गुणात्मक तथ्यों के संग्रह और विश्लेषण एक साथ आगे बढ़ते हैं। उत्तरदाताओं द्वारा उपलब्ध कराए गए कच्चे आँकड़ों का विश्लेषण इसके संदर्भ में किया जाता है ताकि चुनौतियों का विवरण और विषय विशिष्ट गतिविधियों और मामलें में शामिल स्थितियों से संबंधित हों।

प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों की चुनौतियाँ

प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों की अध्ययन कक्ष में होने वाली चर्चा में भागीदारी कम होती है। कम भागीदारी के कारण प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थी अध्ययन कक्ष में होने

वाली चर्चा में आसानी से भाग नहीं ले पाते हैं। और जो विद्यार्थी कुछ हद तक भागदारी करते हैं वे शीघ्र अनुभव करने लग जाते हैं कि उनके ज्ञान में कुछ कमी है। इन प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों में से भी मुठठी भर ऐसे विद्यार्थी है जिनकी अध्ययन कक्ष में होने वाली चर्चा में पूर्ण रूप से भागीदारी रहती है।

शिक्षक और विद्यार्थी की अन्तःक्रिया में विभिन्न प्रकार के संचार और संपर्क शामिल है, जिसमें अध्ययन कक्ष के बाहर अनौपचारिक और औपचारिक बैठके शामिल हैं, जैसे पुस्तकालय या कार्यालय समय में बातचीत, साथ ही पाठ्यक्रम से संबंधित विषयों, कैरियर योजनाओं के बारे में चर्चा, शैक्षिक मुद्दे या व्यक्तिगत विषय आादि। शिक्षक के साथ पाठ्यक्रम से संबंधित सामाग्री के बारे में चर्चा यह दर्शाती है कि प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों में अवधारणा की समझ का आभाव होता है।

प्रस्तुत अध्ययन में अध्ययन कक्ष में होने वाली समस्याओं को प्रस्तुत किया गया है प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों को अध्ययन कक्ष में अंग्रेजी माध्यम की भी समस्या होती है। अंग्रेजी माध्यम का उचित ज्ञान न होने के कारण वे अपने पाठय्क्रम को समझने में स्वयं को सक्षम नहीं पाते। तथा शिक्षक द्वारा पढ़ाये गए पाठय्क्रम को समझने में तथा अध्ययन कक्ष में समायोजन स्थापित करने में प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों को समय लगता है।

शोध अध्ययन में यह भी पाया गया कि प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों का गृहकार्य अन्य विद्यार्थियों की तुलना में पिछड़ा होता है और पारिवारिक वातावरण उपयुक्त न होने के कारण विद्यार्थी गृहकार्य को उचित रूप में पूर्ण नहीं कर पाते हैं। गृहकार्य में पिछड़ने के वजह से प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों की अध्ययन कक्ष में होने वाली गतिविधियों में भागीदारी कम हो जाती है। प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों को अध्ययन कक्ष में होने वाली गतिविधियों को जानने और समझने में भी समय लगता है, इसलिए शिक्षकों को प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों पर अधिक ध्यान केन्द्रित करने की आवश्यकता होती है, जबकि ऐसा नहीं होता है।

जैसा कि उपरोक्त विवरण में बताया गया कि शिक्षक और विद्यार्थियों के मध्य औपचारिक और अनौपचारिक रूप से अन्तःक्रिया होती है किन्तु प्रस्तुत शोध में

पाया गया कि प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थी शिक्षकों से बातचीत करने में संकोच महसूस करते हैं। इस प्रकार से सांस्कृतिक और सामाजिक पूंजी वाले विद्यार्थी कुछ पाठ्यक्रमों को समझ पाते हैं, जबकि उसी पूंजी के बिना प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थी स्वयं को अलग–थलग महसूस करते हैं, या यह अनुभव करते हैं कि वे उच्च शिक्षा में समय और धन बर्बाद कर रहे हैं।

प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों की जड़ता उन्हें उच्च शिक्षा के वातावरण को आत्मसात करने में बाधक होती है। यह जड़ता अध्ययन कक्ष के अन्दर एवं बाहर परिसर में अपने आपको ढालने में विफल बनाती है। किन्तु इसके लिए उन्हें दोषी मानना ठीक नहीं है क्योंकि उन्हें उच्च शिक्षा प्रणाली से कोई समर्थन नहीं प्राप्त होता है। उच्च शिक्षा प्रणाली केवल मध्ययम एवं उच्च वर्ग के विद्यार्थियों के समर्थन में रहता है। प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थी न तो अपनी पहचान का प्रदर्शन कर पाते हैं न ही अपने आपको प्रभावी समूह का हिस्सा बना पाते हैं। फलस्वरूप प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थी प्रभावी समूह से अलगाव महसूस करते हैं और स्वयं को उच्च शिक्षा के परिवेश में समायोजित करने में विफल रहते हैं।

प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों के अंक कम होते हैं और उनके द्वारा अधिक बार पाठ्यक्रमों को छोड़ने की संभावना रहती है। आर्थिक तंगी प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों के लिए सबसे बड़ी चुनौती है। कुछ प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थी ऐसे होते हैं जो स्वयं की इच्छा से विश्वविद्यालय में प्रवेश नहीं लेते हैं ऐसे विद्यार्थी केवल विश्वविद्यालय शिक्षा को पूर्ण करना चाहते हैं परिवार के लिए वे अधिकांशतः कला संकाय और ललित कला जैसे पाठ्यक्रमों का चयन करते हैं। किन्तु कुछ ऐसे भी प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थी होते हैं जो अपने लिए एवं अपने परिवार के लिए कुछ करना चाहते हैं और आर्थिक सहायता करने के लिए, और परिवार को सम्मान दिलाने के लिए भी उच्च शिक्षा प्राप्त करते हैं। इसके लिए वे ऐसे पाठ्यक्रमों का चयन करते जिनसे उन्हें उच्च भुगतान वाली नौकरियाँ प्राप्त करने की संभावना होती है।

प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों को शिक्षकों के बोलने के तरीके एवं लहजे को समझने में भी कठिनाई होती है। जिससे उन्हें शिक्षकों के द्वारा पढ़ाये गये विषय को समझने में दिक्कत होती है। गैर–प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों की तुलना में प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों की आर्थिक स्थिति ठीक न होने के कारण उन्हें पाठ्यक्रम से सम्बन्धित पुस्तकों की व्यवस्था करना कठिन होता है।

कभी–कभी विश्वविद्यालय की जरूरतों के हिसाब से व्यवहार न होने के कारण भी प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों को दूसरों से बातचीत करने में असहजता महसूस होती है।

प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थी अध्ययन कक्ष में शिक्षकों के द्वारा पढ़ाये जाने वाले विषयों के समझ में न आने के कारण भी चिंतित रहते हैं उन्हें यह चिन्ता सताती है कि वे अन्य विद्यार्थियों के समान अच्छा प्रदर्शन नही कर पायेंगें और अन्ततः परीक्षा में अन्य विद्यार्थियों की तुलना में अंक भी कम ही अर्जित कर पायेंगें।

प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों के अभिभावकों के पास विश्वविद्यालय के वातावरण और वहां की संस्कृति के विषय में विशेष ज्ञान न होने के कारण वे अपने बच्चों को वहां के वातावरण और वहां की संस्कृति से परिचय नहीं करा पाते है जो प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों की चुनौतियों का मुख्य कारण होता है। प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थी गैर–प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों के समान अध्ययन कक्ष में अपने विचारों को प्रदर्शित करने में स्वयं को पिछड़ा हुआ महसूस करते हैं।

प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थी जातिगत भेदभाव का भी अनुभव करते हैं। जैसे उच्च जाति के विद्यार्थियों को प्रत्येक कार्य के लिए वरियता देना, सुन्दरता के आधार पर भी भेदभाव होता है यदि विद्यार्थी सुन्दर होता है तो उसे सांस्कृतिक गतिविधियों में भागीदारी करने के लिए प्रोत्साहन दिया जाता है। जिसके कारण जो प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थी होते है वे हतोत्साहित हो जाते हैं। और उनके आगे बढ़कर कुछ करने का जो मनोबल स्तर होता है वो और भी नीचे गिर जाता है।

प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों के लिए अध्ययन कक्ष में मित्र बनाना थोड़ा मुश्किल होता है क्योंकि उनका संकोची व्यवहार होने के कारण वे शीघ्र किसी से बातचीत नहीं करते हैं।

प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों के अभिभावकों की मासिक आय कम होने के कारण वे अपने बच्चों को आधुनिक समय में विश्वविद्यालय में प्रयोग किये जाने वाले उपकरण उपलब्ध कराने में स्वयं को असमर्थ महसूस करते हैं आधुनिक उपकरण प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों के पास उपलब्ध न होने से उन्हें काफी कठिनाई होती है। वे अपने अध्ययन कक्ष में दिये जाने वाले गृहकार्य पूर्ण करने में विफल रहते है। जिसके कारण वे अन्य विद्यार्थियों की तुलना में पिछड़ जाते है। और अपनी योग्यता का प्रदर्शन करने में सफल नहीं हो पाते हैं।

निम्न सामाजिक–आर्थिक पृष्ठभूमि से आने वाले प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों को उच्च शिक्षा की संस्कृति को समझने में कठिनाई होती है। प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों के द्वारा दोस्त बनाने और बनाए रखने में सामाजिक वर्ग का प्रभाव विद्यार्थियों की क्षमता पर पड़ता है। और जो विद्यार्थी अधिक सम्पन्न वर्गों से आते हैं, वे अधिक सहज होते हैं और उनके लिए निम्न वर्गीय साथियों की तुलना में नए दोस्त बनाना आसान होता है। प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों को अपने परिवारों से दूर विश्वविद्यालय और घर की दुनिया के बीच संघर्ष करना पड़ता है।

कई प्रतिभागियों ने इस भावना को ''उत्तरजीवी के अपराधबोध'' (सरवाइवर गिल्ट) के रूप में परिभाषित किया है और बहुत से विद्यार्थी इस बात से सहमत हुए कि उनकी सफलता भावभीनी (बिटरस्वीट) थी क्योंकि इससे उन्हें अपने समुदायों से दूर रहना पड़ा।

वर्तमान शोध बताते हैं कि शैक्षणिक तैयारी, सामाजिक–आर्थिक स्थिति, विश्वविद्यालय की संस्कृति के झटके का अनुभव और विश्वविद्यालय की प्रक्रिया में परिवार, अभिभावकों की भागीदारी सहित कई क्षेत्रों में प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थी अपने साथियों की तुलना में अलग हैं।

प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों को अपने आपको विश्वविद्यालय में स्थापित करना और भी मुश्किल हो जाता है क्योंकि प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थी एक संस्कृति से दूसरी संस्कृति में स्थानान्तरण करते हैं, जो गंभीर संघर्ष का कारण बन सकता है और उनके परिसर जीवन को प्रभावित कर सकता है।

अभिभावकों की भागीदारी

अभिभावक और विद्यार्थी में बातचीत एक गैर शैक्षणिक कारक है जो विद्यार्थियों की सफलता के लिए विशेष रूप से मूल्यवान है। हाई स्कूल से विश्वविद्यालय तक का स्थानान्तरण कई विद्यार्थियों के लिए तनावपूर्ण हो सकता। इस स्थानान्तरण के दौरान अभिभावकों की सहायता महत्वपूर्ण हो सकती है क्योंकि अभिभावक अपने बच्चों को कौशल और नीतियों को विकसित करने में मदद करने के लिए सलाह, निर्देश और भावनात्मक समर्थन प्रदान करते हैं।

इसमें कोई सन्देह नहीं कि अभिभावकों के हौसले और आकांक्षाएँ प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों में उच्च शिक्षा में प्रवेश प्राप्त करने की ऊर्जा देते हैं। किन्तु उच्च शिक्षा के भीतर प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों की चुनौतियाँ भिन्न होती हैं। वे मानते हैं कि अभिभावकों की भागीदारी सीमित है। अभिभावकों की भागीदारी उत्साह बनाए रखने तक ही होती है वे चुनौतियों को सुलझाने की क्षमता नहीं रखते। अभिभावकों को बस यही लगता है कि सबसे बड़ी दिक्कत आर्थिक तंगी होती है जिसके लिए वे हर सम्भव प्रयास करते हैं।

माता–पिता की आकांक्षाएँ बहुत होती हैं किन्तु उनकी मार्गदर्शन करने की क्षमता सीमित होती है। सांस्कृतिक पूंजी के आभाव एवं गरीबी के कारण अभिभावक अपने बच्चों की समस्याओं का समाधान नहीं कर पाते हैं।

प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थी एक ऐसी दुनिया को खोजने के लिए परिसर में पहुँचते हैं जो अपने मूल पारिवारिक मूल्यों के साथ संघर्ष करते हैं क्योंकि उनकी विश्वविद्यालय संस्कृति और पारिवारिक संस्कृति के बीच संतुलन नही होता है।

प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों की प्रतिक्रियाएँ

तथ्यों के संग्रह एवं मूल्यांकन से यह पता चलता है कि प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थी विभिन्न प्रकार की प्रतिक्रियाओं को अपनाते हैं। किन्तु इस बात से इन्कार नही किया जा सकता है कि अधिकतर प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थी या तो ड्रॉप–आउट हो जाते हैं या तो वे स्वयं को मौजूदा शैक्षिक वातावरण में आत्मसर्म्पण करते हैं।

प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थी जो अपनी शिक्षा को जारी रखने में कठिनाई का सामना करते हैं वे अपने संकोची स्वभाव के कारण दूसरों से अन्तःक्रिया नहीं करते हैं किन्तु उन्हें शंका रहती है कि गैर प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थी उनसे अन्तःक्रिया करने में इच्छुक रहते हैं। प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों को अपनी क्षमता पर भी शंका होती है कि वे अपनी शिक्षा को सुचारू रूप से जारी रख भी पायेंगें या नहीं।

सभी प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थी एक ही तरह की प्रतिक्रियाएँ नहीं देते हैं। उनमें से कुछ अपनी ऐजेन्सी का उपयोग करते हैं और अपने प्रदर्शन में सुधार कर पाते हैं। इनमें से कुछ विद्यार्थी तो अपने आपको कुलीन प्रभावी वर्ग समूह के साथ समायोजित भी कर लेते हैं। किन्तु इस तरह के प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थी नगण्य हैं।

प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों की प्रतिक्रिया के प्रकार

इस अध्ययन के आधार पर हमें मुख्यतः तीन प्रकार के प्रतिक्रिया मिलती है और इसके आधार पर हम प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों को तीन श्रेणी में बाँट सकते हैं। ये तीन प्रकार के व्यक्तित्व हैं घुटने टेकने वाले व्यक्तित्व, जुझारू व्यक्तित्व, मिलनसार व्यक्तित्व।

घुटने टेकने वाले व्यक्तित्वः घुटने टेकने वाले व्यक्तित्व से सम्बन्धित वे प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थी हैं जो उच्च शिक्षा प्राप्त करने में बहुत ही अधिक कठिनाई का अनुभव करते हैं और वे निराश होकर अपनी शिक्षा को बीच में ही छोड़ देते हैं यदि वे उच्च शिक्षा में बने भी रहते हैं तो केवल डिग्री प्राप्त करने के लिए बने रहते हैं। और ऐसे विद्यार्थियों की संख्या सबसे अधिक है।

जुझारू व्यक्तित्वः ये प्रथम पीढ़ी के वे विद्यार्थी हैं जो विश्वविद्यालय परिसर में अभिजात वर्ग की संस्कृति का विरोध करते हैं और हाशिएकृत विद्यार्थियों के लिए उचित वातावरण तैयार करने की वकालत करते हैं।

ये भाषायी कठिनाई के कारण प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों की तुलना में धीरे–धीरे समस्याओं को समझ पाते हैं। लेकिन वे आमतौर पर एक या दो सेमेस्टर खत्म होने तक अपनी समस्याओं को भली–भाँति समझ जाते हैं और उसे दूर करने का प्रयत्न करते हैं। वे इस मुद्दे पर बहस छेड़ देते हैं। वे स्वयं के लिए एवं अपने जैसे प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों के लिए परिसर में सुरक्षित जगह बनाने का प्रयास करते हैं। इनमें से कुछ विद्रोही हो जाते हैं और उच्च शिक्षा में प्रभावी समूह के वातावरण के विरोध के लिए प्रति संस्कृति का निर्माण करते हैं। यह प्रति संस्कृति प्रभावी संस्कृति के मानदण्डों और मूल्यों को चुनौती देती है।

मिलनसार व्यक्तित्वः ये ऐसे प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थी हैं जो गैर प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों को अपना सन्दर्भ समूह मानते हैं। और इसी हिसाब से वे अपने रीति–रिवाजों, संस्कृति और व्यवहार को बदलने का निरन्तर प्रयास करते रहते हैं। वे पढ़ाई के अलावा कपड़े पहनने की आदतें एवं बोलने के लहजे में भी निरन्तर बदलाव करते रहते हैं। इस प्रकार वे लगातार वि–समाजीकरण एवं पुर्न समाजीकरण द्वारा अपनी सांस्कृतिक पूंजी की जकड़न से बाहर निकल कर अपने आपको उच्च शिक्षा में स्थापित करने में सफल रहते हैं।

इनकी अन्य महत्वपूर्ण विशेषताएँ हैं यह तुरन्त एक नये माहौल को समझ लेते हैं और सुचारू रूप से अपना अध्ययन करते हैं। ये प्रभावी विद्यार्थियों के साथ अच्छे सहयोगी सम्बन्धों की आवश्यकता को समझते हैं साथ ही सभी के साथ सहानुभूति दर्शाते हैं। ये तुरन्त भाप जाते हैं कि यदि वे ऐसा नहीं करेंगें तो उन्हें उच्च शिक्षा में अलगाव का सामना करना पड़ेगा। वे अपने आप को शांत एवं रचित रखते हैं और साथ ही आत्मविश्वास से भरे होते हैं। वे अच्छे स्त्रोता भी होते हैं, उत्सुक रहते हैं और अपनी गलतियों से सीखते हैं। ये गुण उन्हें उच्च शिक्षा के नए वातावरण में लचीला बनाते हैं। यही कारण है कि वे आसानी से नाराजी महसूस

नहीं करते, नाजुक भावना से प्रभावित नहीं होते और नयी चीजों को सीखने की उत्सुकता बनाये रखते हैं तथा कठिन परिश्रम करते हैं। किन्तु मुठठी भर प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों का इस प्रकार का व्यक्तित्व होता है।

प्रस्तुत अध्ययन में प्राप्त निष्कर्षों के आधार पर परिकल्पनाओं को संक्षेप में इस प्रकार दर्शाया जा सकता हैः

परिकल्पना 1: उच्च शिक्षा में प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थी निम्न आर्थिक पृष्ठभूमि से होते है।

प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थी कम आय वाले परिवारों से होते है, और वे विश्वविद्यालय का खर्च उठाने के लिए संघर्ष करते है। अपनी गैर–प्रथम पीढ़ी के साथियों के विपरीत, उन्हें विश्वविद्यालय के खर्चों का बोझ खुद ही संभालना पड़ता है। अधिकांश प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों के लिए इसका मतलब है कि उन्हें शिक्षा प्राप्त करने के समय में काम करना पड़ता है।

तालिका संख्या 3.12 से यह पता चलता है कि उच्च शिक्षा में प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थी निम्न आर्थिक पृष्ठभूमि से आते हैं। इस अध्ययन के 400 उत्तरदाओं का माध्य मासिक आय 16445.00 रूपये है और इसका मानक विचलन 5754.54 रूपये है। जिनमें न्यूनतम मासिक आय 6000 रूपये है और अधिकतक मासिक आय 32000 रूपये है। इन तथ्यों से प्रथम परिकल्पना सत्य साबित होती है।

परिकल्पना 2: उच्च शिक्षा में प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों को अध्ययन कक्ष में अन्तःक्रिया करने में मुश्किलों का सामना करना पड़ता है।

प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों को अध्ययन कक्ष में अपने शिक्षकों एवं अपने सहपाठियों से अन्तःक्रिया करने में कठिनाई का अनुभव करना पड़ता है। रेखाचित्र 4.1 से ज्ञात होता है कि जिन प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों की अध्ययन कक्ष में होने वाली चर्चा में भागीदारी नहीं होती है उन विद्यार्थियों का प्रतिशत सबसे अधिक है।

तालिका संख्या 4.3 से पता चलता है कि प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थी अन्य विद्यार्थियों के साथ अन्तःक्रिया करने में अधिक संकोच करते हैं और असहजता का भी अनुभव करते है। प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थी दूसरों से बातचीत करने में इसलिए भी असहजता का अनुभव करते हैं क्योंकि निम्न स्तर से आने के कारण उन्हें सभी प्रकार की जानकारी नहीं होती है और अगर दूसरों से वे पूछते हैं तो उन्हें लगता है कि कहीं वे उनका मजाक न उड़ा दे कि आज के समय में भी इसे इस बात की जानकारी नहीं है। कभी–कभी विश्वविद्यालय की जरूरतों के हिसाब से व्यवहार न होने के कारण भी प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों को दूसरों से बातचीत करने में असहजता महसूस होती हैं।

तालिका संख्या 4.4 से ज्ञात होता है कि प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों को शिक्षकों के बोलने के तरीके/लहजा और उनकी भाषा को समझने में भी कठिनाई होती है। तालिका संख्या 4.5 यह दर्शाती है कि प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों को शिक्षकों से स्पष्टीकरण करने में भी असहजता का अनुभव करना पड़ता हैं। तालिका संख्या 4.6 से पता चलता है कि प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों में संकोची प्रवृत्ति होने के कारण उन्हें मित्र बनाने में भी कठिनाई होती है क्योंकि वे दूसरों से अन्तःक्रिया करने में असहजता महसूस करते हैं।

प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों की कई प्रकार की चुनौतियों के आधार पर हमारी दूसरी परिकल्पना भी पूर्ण रूप से सत्य साबित होती है।

परिकल्पना 3: उच्च शिक्षा में प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों को अध्ययन कक्ष के बाहर परिसर में चुनौतियों का सामना करना पड़ता है।

तालिका संख्या 4.7 दर्शाती है कि प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों के लिए विश्वविद्यालय परिसर का वातावरण बिल्कुल नया होने के कारण वे स्वयं को समायोजित करने में असुविधा का अनुभव करते हैं और स्वयं को अनुपयुक्त (मिसफिट) पाते हैं। उन्हें यह लगता है कि यह जगह उन जैसे विद्यार्थियों के लिए नहीं है। तालिका संख्या 4.8

से यह ज्ञात होता है कि प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थी उच्च शिक्षा में प्रवेश लेने के पश्चात अफसोस महसूस करते हैं।

प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों के लिए कॉलेज के अनुभव अन्य विद्यार्थियों की तुलना में भिन्न होते हैं। जब वे कॉलेज में प्रवेश करते है उस दौरान वे सकारात्मक और नकारात्मक दोनों प्रकार के अनुभव महसूस करते हैं। सकारात्मक अनुभवों मे वे महसूस करते हैं कि उच्च शिक्षा प्राप्त करने से वे अपने परिवार की आर्थिक सहायता में योगदान देने में सक्षम हो पायेंगें हैं। उन विद्यार्थियों में सोचने और समझने की क्षमता का विकास होता है और उनका नये मित्र बनाने का अनुभव भी सकारात्मक होता है।

वास्तव में प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों के द्वारा नकारात्मक अनुभव अधिक महसूस किये जाते हैं शिक्षकों के द्वारा विद्यार्थियों के प्रति जातिगत भेदभाव, हिन्दी या अंग्रेजी माध्यम के आधार पर विद्यार्थियों के साथ भेदभाव, अध्ययन कक्ष में उच्च जाति के विद्यार्थियों को वरियता प्रदान करने के आधार पर प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों ने नकारात्मक भाव का अनुभव किया। वे विश्वविद्यालय के वातावरण से परिचित नहीं होते हैं क्योंकि प्रथम पीढ़ी के अभिभावकों के पास कॉलेज का कोई अनुभव नहीं होता है जिसके कारण विश्वविद्यालय के वातावरण के विषय में कोई पूर्व जानकारी नहीं होती है।

इस प्रकार से अध्ययन की तीसरी परिकल्पना भी पूर्ण रूप से सत्य साबित होती है।

परिकल्पना 4: प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों के स्कूल से विश्वविद्यालय के स्थानान्तरण के दौरान अभिभावकों की भागीदारी कम या ना के बराबर होती है।

प्रस्तुत अध्ययन में रेखाचित्र 5.1 में यह दर्शाया गया है कि प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थी बहुत हद तक अपने अभिभावकों से अपने पाठ्यक्रम के विषय में चर्चा करते हैं किन्तु उच्च शिक्षा के विषय में अधिक ज्ञान न होने के कारण अभिभावक से उन्हें

किसी प्रकार का मार्गदर्शन नहीं मिल पाता है। रेखाचित्र 5.2 से ज्ञात होता है कि प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थी अपने ग्रेड और अंकों के बारे में अपने अभिभावकों से बहुत कम चर्चा करते हैं। रेखाचित्र 5.3 से पता चलता है कि प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थी कुछ हद तक ही अपने अभिभावकों से नौकरी से सम्बन्धित किसी प्रकार की चर्चा करते हैं। रेखाचित्र 5.4 दर्शाता है कि बहुत ही कम प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थी अपने अभिभावकों से विश्वविद्यालय परिसर में होने वाली समस्याओं के विषय में वार्तालाप करते हैं। इस आधार पर देखने से ज्ञात होता है कि कुल मिलाकर प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थी अपने अभिभावकों से विश्वविद्यालय से जुड़े अनेक विषयों पर चर्चा तो अवश्य करते हैं किन्तु विद्यार्थियों की चुनौतियों को दूर करने एवं उनका समाधान करने में अभिभावक स्वयं को असर्मथ महसूस करते हैं। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों की उच्च शिक्षा में उनके अभिभावकों की भागीदारी बहुत कम या नाम मात्र की होती है। इस आधार पर प्रस्तुत अध्ययन की चौथी परिकल्पना लगभग सत्य साबित होती है। अधिकांश अभिभावक प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों के लिए प्रेरणास्त्रोत का कार्य करते हैं किन्तु वास्तविक रूप से उनकी समस्याओं को दूर करने में असमर्थ होते हैं।

परिकल्पना 5: प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थी उच्च शिक्षा प्रणाली में अलगाव महसूस करते हैं।

रेखाचित्र 6.1 के आधार पर यह पता चलता है कि लगभग 48.5 प्रतिशत प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थी अपने सहपाठियों से बहुत कम या कुछ हद तक सहायता मांग पाते हैं। इसके अलावा 51.5 प्रतिशत विद्यार्थी सहयोग तो मांगते हैं किन्तु इनमें से अधिकांश को गैर–प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों द्वारा अपमानित किया जाता है।

तालिका 6.1 से यह प्रदर्शित होता है कि लगभग 98.2 प्रतिशत प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थी इस बात को मानते हैं कि उनका पहनावा, बात करने का तरीका, खाने की आदतें गैर–प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों से अलग है। कुछ अपने आपको थोड़ा अलग मानते हैं तो अधिकतर अपने आपको बिल्कुल अलग मानते हैं। इसमें भी

महिला प्रथम पीढ़ी की विद्यार्थी स्वयं को अलग मानती हैं। यह एक प्रकार का उच्च शिक्षा में अलगाव दर्शाता है।

रेखाचित्र 6.2 यह दर्शाता है कि 57.5 प्रतिशत प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थी कुछ हद तक या पूरी तरह से पार्क, कैंटीन आदि स्थानों पर अलगाव महसूस करते हैं।

इतना ही नहीं प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों को गैर–प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों जैसी अंग्रेजी फिल्मों, रेस्तरां, कंप्यूटरों, एवं खाद्य पदार्थों के विषय में जानकारी नहीं होती है। यह तालिका 6.2 से स्पष्ट है। तालिका 6.3 से इस बात की पुष्टि होती है कि अधिकतर प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों ने विश्वविद्यालय जैसा परिसर पहले कभी देखा।

प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों में यह समझने का अभाव होता कि विश्वविद्यालय का जीवन कैसा होता है। प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थी में संकोची प्रवृत्ति होती है जिससे वे स्वयं को अकेला अनुभव करते हैं। इस अलगाव ने उन्हें उदासी और घबराहट के अनुभव से परिचित कराया, जिससे उनमें हल्के अवसाद और चिंताएँ पैदा हो जाती हैं।

इस आधार पर हम कह सकते हैं कि प्रस्तुत शोध अध्ययन की अन्तिम परिकल्पना भी पूर्ण रूप से सत्य साबित होती है।

समापन टिप्पणी एवं सुझाव

यह अध्ययन हमें उच्च शिक्षा में प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों की चुनौतियों और प्रतिक्रिया के बारे में बताता है। इस अध्ययन के आधार पर निम्नलिखित सुझाव दिये जा सकते हैं:

1. यह अध्ययन एक महत्वपूर्ण तथ्य सामने लाता है कि प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थी एक ऐसा समूह है जिन्हें उच्च शिक्षा में सफल होने के लिए अतिरिक्त सहायता और संसाधनों की आवश्यकता होती है। जो विश्वविद्यालय के द्वारा प्रदान की जानी चाहिए।

2. उच्च शिक्षा में मध्यम एवं उच्च वर्ग की संस्कृति का प्रभुत्व होता है। शिक्षकों और प्रशासन का दबाव रहता है कि प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थी उच्च शिक्षण संस्थानों की संस्कृति के मानदण्डों को आत्मसात करें जबकि ऐसा नहीं होना चाहिए। शिक्षकों और प्रशासन को प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों की समस्याओं के प्रति संवेदनशील होना चाहिए और परिसर में आरामदायक स्थिति में रखने के लिए मदद करनी चाहिए। इससे उनकी शैक्षिक सफलता पर भी सकारात्मक प्रभाव पड़ेगा है।
3. यदि प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थी को उच्च शिक्षा में सफल बनाना है, तो शिक्षकों और प्रशासन को यह समझना होगा कि उनका जीवन गैर–प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों जैसा नहीं होता है। गैर–प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थी कभी गरीबी में नहीं जीते और उन्हें जो सांस्कृतिक पूंजी विरासत में मिलती है, उससे उन्हें उच्च शिक्षा में शामिल होने में मदद मिलती है। वे शिक्षा, खेल और पाठ्योत्तर गतिविधियों पर अपनी ऊर्जा केन्द्रित करते हैं। शिक्षक और प्रशासन को प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों को भी खेल एवं पाठ्योत्तर गतिविधियों में शामिल होने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए।
4. प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थी गैर–प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों की तुलना में घर पर बहुत अधिक जिम्मेदारियाँ साझा करते हैं। यह स्वीकार किया जाना चाहिए कि उन्हें उन जिम्मेदारियों से मुक्त नहीं किया जा सकता है। इसे ध्यान में रखते हुए उन्हें उच्च शिक्षा की मुख्यधारा में समायोजित करने के लिए नीतियाँ अपनानी चाहिए।
5. हालाँकि प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों में कुछ समानताएँ हैं, लेकिन यह सत्य है कि वे विभिन्न पृष्ठभूमि से आते हैं इसलिए वे एक सजातीय समूह नहीं हैं। उनकी सामान्य आवश्यकताओं के साथ–साथ विशिष्ट आवश्यकताओं को भी संबोधित किया जाना चाहिए।

प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थी उच्च शिक्षा प्राप्त करने में अनेक प्रकार की चुनौतियों का सामना करते हैं। इन चुनौतियों का सामना करने के उपरान्त जो उन्हें सफलता प्राप्त होती है वह उनके भाई–बहनों, अपने परिवार में अन्य सदस्यों के समक्ष

प्रेरणास्त्रोत के रूप में उभरकर सामने आते हैं। इसलिए विश्वविद्यालय को प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों की चुनौतियों के प्रति संवेदनशील होना चाहिए।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

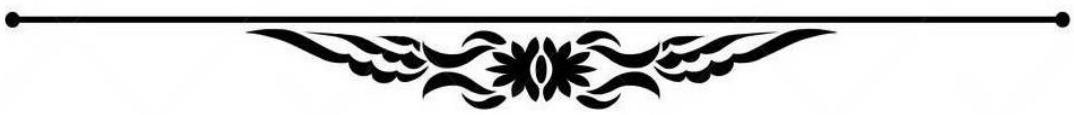

सन्दर्भ सूची

अग्रवाल, पी. (2017). इन्डियाज़ ग्रोथ ऑफ पोस्टसेकेन्डरी एजुकेशनः स्केल, स्पीड एण्ड फॉल्ट लाइन्स. इन पी.जी. अल्बेक, एल. रेजबर्ग एण्ड एच. डी विट. (इडीएस.). रेस्पोन्डिंग टू मासिफिकेशनः डिफरेन्ससिएशन इन पोस्टसेकेण्डरी एजुकेशन वर्डवाइड. रोर्टडैमः सेन्स पब्लिसर्स.

अग्रवाल, उमेश चन्द्र (2006), "भारतीय आधुनिक शिक्षा के बदलते आयाम", भारतीय आधुनिक शिक्षा, वर्ष 24, अंक 4, एन0सी0ई0आर0टी0, अप्रैल, नई दिल्ली।

एक्ज़ाइ. यू एण्ड किमबर्ली गोयेटी. (2003). ''सोशल मोबिलिटी एण्ड द एजुकेशनल च्वाइस ऑफ एशियन अमेरिकन्स.'' सोशल साइंस रिसर्च 32 (3): 467–498.

अरूम, आर., एण्ड रोकसा, जे. (2011). एकेडेमिकली एडरिफटः लिमिटेड लर्निंग ऑन कॉलेज कैम्पसेस. शिकागोः यूनिवर्सिटी ऑफ शिकागो प्रेस.

एंगल, जे. (2007). द पोस्टसेकण्डरी ऐक्सेस एण्ड सक्सेस फॉर फर्स्ट–जनेरेशन कॉलेज स्टूडेन्ट्स. अमेरिकन एकेडमिक, 3, 25–48.

एस्टीन, ए. (1984). स्टूडेन्ट इन्वॉवमेन्टः ए डेवल्पमेन्टल थ्योरी फॉर हायर ऐजुकेशन. *जर्नल ऑफ कॉलेज स्टूडेन्ट्स पर्सनल,* 25,, 297–308.

एसचाफेनबर्ग, के., एण्ड मास, आई. (1997). कल्चर्ल एण्ड ऐजुकेशन कैरियर्सः द डानेमिक्स ऑफ सोशल रिप्रोडक्शन. अमेरिकन सोशियोलॉजिकल रिविव, 62, 573–587. रिट्राइव्ड फ्रॉम http://www.jstor.org/stable/2657427.

एराइज़, ऐलिज़ाबेथ एण्ड मेनार्ड सीडर (2005). ''द इन्ट्रैक्टिव रीलेशनशिप बिटवीन क्लास आइडेन्टिटी एण्ड द कॉलेज एक्सपीरिएन्सः द केस ऑफ लोवर इन्कम स्टूडेन्ट्स.'' क्वालिटेटिव सोशियोलॉजी 28 (4): 419–443.

एन्डो, जे.जे., एण्ड हार्पेल, आर. एल. (1982). द इफैक्ट ऑफ स्टूडेन्ट–फैकल्टी इन्ट्रैक्शन ऑन स्टूडेन्ट्स ऐजुकेशनल आउटकम्स. रिसर्च इन हायर एजुकेशन, 16 (2), 115–138. रिट्राइव्ड फ्रॉम http://www.jstor.org/stable/40195453.

बाजपेयी, एल. बी. एवं मालती सारस्वत (2004). भारतीय शिक्षा का विकास एवं सामाजिक समस्यायें। लखनऊः आलोक प्रकाशन।

बुई, खान्ह वी.टी. (2002). फर्स्ट–जनेरेशन कॉलेज स्टूडेन्ट्स एट ए फोर–ईयर यूनिवर्सिटीः बैकग्राउन्ड कैरेक्टरिस्टिक्स, रीज़न्श फॉर परसूइंग हायर ऐजुकेशन, एण्ड फर्स्ट–ईयर एक्सपीरिएन्सेस. *कॉलेज स्टूडेन्ट जर्नल,* 36, 3–11.

बुई, वी.टी. (2005). फर्स्ट–जनेरेशन कॉलेज स्टूडेन्ट्स एट ए फोर–ईयर यूनिवर्सिटीः बैकग्राउन्ड कैरेक्टरिस्टिक्स, रीज़न्श फॉर परसूइंग हायर ऐजुकेशन, एण्ड फर्स्ट–ईयर एक्सपीरिएन्सेस. *कॉलेज स्टूडेन्ट जर्नल,* 36 (1), 3.

बर्जरशन, ए. ए. (2007). एक्सप्लोरिंग द इम्पैक्ट ऑफ सोशल क्लास ऑन एडजस्टमेन्ट टू कॉलेजः ऐनाज़ स्टोरी. इन्टरनेशनल *जर्नल ऑफ क्वालिटेटिव स्टडीज़ इन एजुकेशन,* 20 (1), 99–119.

बाक्सटर, अर्थर एण्ड कारोलयन ब्रिटन (2011). ''रिस्क, आइडेन्टिटी एण्ड चेंजः बिकमिंग ए मेचर स्टूडेन्ट.'' इन्टरनेशनल स्टडीज़ इन सोशियोलॉजी ऑफ एजुकेशन 11 (1): 87–104.

बिलसन, जे. एम. एण्ड टेरी, एम. बी. (फॉल 1982). इन सर्च ऑफ द सिल्केन पर्सः फैक्टरस इन एट्रिसन एमन्ग फर्स्ट–जेनरेशन स्टूडेन्टस. कॉलेज एण्ड यूनिवर्सिटी, 57–75।

बुर्दियो, पी. (1977). आउटलाइन ऑफ अ थ्योरी ऑफ प्रैक्टिस. कैम्ब्रिजः कैम्ब्रिज यूनीवर्सिटी प्रेस.

बुर्दियो, पी. (1977). कल्चर्ल रीप्रोडक्शन एण्ड सोशल रीप्रोडक्शन. इन जे. काराबेल एण्ड ए. हाल्से (इडीएस.), पावर एण्ड आडियोलॉजी इन ऐजुकेशन (पेज. 487–511). न्यू यार्कः ऑक्सफोर्ड यूनीवर्सिटी प्रेस.

बुर्दियो, पी. (1973). कल्चर रिप्रोडक्शन एण्ड सोशल रिप्रोडक्शन. इन आर. ब्राउन (इडी). नॉलेज, ऐजुकेशन एण्ड कल्चर चेंज (पीपी. 71–112). लंदनः ताविस्टोक.

बॉम, एस., एण्ड फ्लोर्स, एस.एम. (2011). हायर ऐजुकेशन एण्ड चिल्ड्रेन इन इमीग्रान्ट फैमिलीज़. द फ्यूचर ऑफ चिल्ड्रेन, 21, 171–193. रिट्राइव्ड फ्रॉम http://files.eric.ed.gov/fulltext/EJ920372.pdf-

बैरी, एल., हुडली, सी., केली, एम., एण्ड चो, एस. (2009). डिफरेन्सेस इन सेल्फ–रिर्पोटेड डिसक्लोज़र ऑफ कॉलेज एक्सपीरिएन्सेस बाइ फर्स्ट–जनेरेशन कॉलेज स्टूडेन्ट स्टेटस. एडोल्सेन्स, 44 (173), 5568.

ब्रायन, ऐलिजाबेथ, सिमॉन्स, लेह ऐने. (2009). फेमिली इन्वॉल्वमेन्टः इम्पैक्ट्स ऑन पोस्टसेकेण्डरी ऐजुकेशनल सक्सेज़ फॉर फर्स्ट–जनेरेशन अपालासियन कॉलेज स्टूडेन्ट्स. *जर्नल ऑफ कॉलेज स्टूडेंट डेवलपमेंट,* 50 (4), 391–406.

बोक, डी. (2008). अवर अन्डरऐचिविंग कॉलेजेसः ए कैन डिड लुक एट हाउ मच स्टूडेन्ट्स लर्नर एण्ड व्हाई दे सुड बि लर्निंग मोर. प्रिन्सटन, एनजेः प्रिन्सटन यूनीवर्सिटी प्रेस.

बेनसन, आर., हीव्ट, एल., हेजनी, एम., डिवोस, ए., क्रोस्लिंग, जी. (2010). डायवर्स पाथवे इनटू हायर ऐजुकेशनः यूजिंग स्टूडेन्ट्स स्टोरीज टू आइडेन्टीफाइ ट्रान्सफॉर्मेटिव एक्सपीरिएन्सेस. *अस्ट्रेलियन जर्नल ऑफ अडल्ट लर्निंग,* 50 (1,) 26–53. रिट्राइव्ड फ्रॉम http://search.ebscohost.com/login.aspx

बाउल्स, एस., एण्ड गिटिंस, एच. (1976). स्कूलिंग इन कैपिटलिस्ट अमेरिकाः एजुकेशनल रिफॉम एण्ड द कन्ट्राडिक्शन ऑफ इकोनॉमिक लाइफ. न्यू यॉर्कः बेसिक बुक्स.

क्रेशवेल, जे. डब्ल्यू. एण्ड क्लार्क, वी. एल. पी. (2007). डिज़ाइनिंग एण्ड कन्डक्टिंग मिक्सड मेथेड रिसर्च थाउजेन्ड ओक्स, सीएः सेज.

चॉय, एस. (2001). स्टूडेन्ट्स हूज पैरेन्ट्स डिड नॉट गो टू कॉलेजः पोस्टसेकण्डरी ऐक्सेस, पर्सिसटेन्स, एण्ड अटैन्मेन्ट न0 एनसीईएस आरईपी. न0. 2001–126. वाशिंगटन, डीसीः नेशनल सेन्टर फॉर ऐजुकेशनल स्टैटिस्टिक्स.

कोलियर, पी.जी., एण्ड मॉर्गन, डी. एल. (2008). इज दैट पेपर रियली डयू टूडे?'': डिफरेन्स इन फर्स्ट–जनेरेशन एण्ड ट्रेडिशनल कॉलेज स्टूडेन्ट्स' अन्डरस्टैन्डिंग्स ऑफ फैकल्टी एक्सपेक्टेशन्स. हायर ऐजुकेशन, 55 (4), 425–446.

कॉफमैन, पीटर. (2003) ''लर्निंग नॉट टू लेबरः हाउ वर्किंग–क्लास इन्डीविज्विल कन्सट्रक्ट मिडिल आइडेन्टटीज़.'' द सोशियोलॉजिकल क्वाटर्ली 44 (3): 481–504.

चेंग, जे. सी. (2005). फैकल्टी स्टूडेन्ट इन्ट्रैक्शन एट द कम्यूनिटी कॉलेजः ए फोकस ऑन स्टूडेन्ट ऑफ कलर. रिसर्च इन हायर ऐजुकेशन, 46 (47), 769–802. डीओआईः10.1007/एस 11162–004–6225–7.

कोलमैन, जे. (1988). सोशल कैपिटल इन द क्रिएशन ऑफ हयूमन कैपिटल. द अमेरिकन जर्नल ऑफ सोशियोलॉजी, 94, 95–120.

चेन, एक्स., एण्ड कारोल, सी. डी. (2005). फर्स्ट–जनेरेशन स्टूडेन्ट्स इन पोस्टसेकण्डरी एजुकेशनः ए लुक एट देयर कॉलेज ट्रांसस्क्रिप्ट्स न0. एनसीईएस 2005–171. वाशिंगटन, डीसीः यू.एस. डिपार्टमेंट ऑफ एजुकेशनः नेशनल सेन्टर फॉर ऐजुकेशनल स्टैटिसटिक्स.

क्रिस्प, ग्लोरिया., नोरा, अमूरी., टाग्राट, अमान्दा. (2009). स्टूडेन्ट कैरेक्टरीस्टिक्स, प्री–कॉलेज, एण्ड फैक्टर्स एज़ प्रीडिक्टर्स ऑफ मेज़रिंग इन एण्ड अर्निंग ए एसटीइएम डिग्रीः एन एनलिसिस ऑफ स्टूडेन्ट्स अटैन्डिंग ए हिस्पैनिक सर्विंग इन्सटीट्यूशन. *अमेरिकन ऐजुकेशनल रिसर्च जर्नल,* 46 (4), 924–942.

क्रेशवेल, जे. डब्ल्यू. एण्ड मेता, आर. (2002). क्वालिटेटिव रिसर्च. इन एन. सालकाइन्ड (इडी,), हैन्डबुक ऑफ रिसर्च डिज़ाइन एण्ड सोशल मेजरमेन्ट (पीपी. 143–184). थाउज़ेन्ड ओक्स, सीः सेज.

कार्बिन, जे. एण्ड स्ट्रास, ए. (2008). बेसिक ऑफ क्वालिटेटिव रिसर्चः टेकनिक्स एण्ड प्रोसीजर्स फॉर डेवलेपिंग ग्राउन्डेड थ्योरी. लॉस एंजेल्सः सेज.

डिपार्टमेन्ट ऑफ हायर एजुकेशन, मिनिस्टरी ऑफ ह्यूमन रिसोर्स डेवलपमेन्ट, गर्वन्मेन्ट ऑफ इन्डिया. (2019). ऑल इन्डिया सर्वे ऑन हायर एजुकेशन, 2010–11. न्यू दिल्ली.

डिपार्टमेन्ट ऑफ हायर एजुकेशन, मिनिस्टरी ऑफ ह्यूमन रिसोर्स डेवलपमेन्ट, गर्वन्मेन्ट ऑफ इन्डिया. (2019). ऑल इन्डिया सर्वे ऑन हायर एजुकेशन, 2018–19 न्यू दिल्ली.

डार्लिंग, आर. ए., एण्ड स्मिथ, एम. एस. (2007). फर्स्ट–जनेरेशन कॉलेज स्टूडेन्ट्सः फर्स्ट–ईयर चैलेंजेस. एकेडमिक एडवाइज़ः न्यू इन्साइट्स फॉर टीचिंग एण्ड लर्निंग इन द फर्स्ट इयर. एनएसीएडीए मोनोग्राफ सीरीज़, (14), 203–211.

डूगन, एम. (2001). द इफैक्ट ऑफ सोशल कैपिटल ऑन द फर्स्ट–ईयर पर्सिसटेन्स ऑफ फर्स्ट जनेरेशन कॉलेज स्टूडेन्ट्स. अनपब्लिशड डॉक्टोर्ल डिज़रटेशन, यूनीवर्सिटी ऑफ मासचूसेटैस, बोस्टन.

डंडेस, ल्यूरेन, इयूनाइस चो, एण्ड स्पेन्सर क्वाक (2009).द डयूटी टू सक्सीडः ऑनर वर्सेस हैपीनेस इन कॉलेज एण्ड कैरियर च्वाइस ऑफ ईस्ट एशियन स्टूडेन्ट्स इन द यूनाइटेड स्टेटस.'' पास्ट्रोलर केयर इन ऐजुकेशन 27 (2): 135–156.

डेविस, जे. (2010). द फर्स्ट जनेरेशन स्टूडेन्ट एक्सपीरिएन्सः इम्पलीकेशन्स फॉर कैम्पस प्रैक्टिस, एण्ड स्ट्रेटीजीज़ फॉर इम्प्रूविंग परसिस्टेन्स एण्ड सक्सेस. स्ट्रेलिंग, वीएः स्टायलस पब्लिशिंग.

डेनिस, जे. एम., फेनी, जे. एस., एण्ड चेट्को, एल. आई. (2005). द रोल ऑफ मोटिवेशन, पैरेन्टल सर्पोट, एण्ड पियर सर्पोट इन द एकेडमिक सक्सेस ऑफ इथिनिक मायनॉरीटी फर्स्ट–जनेरेशन कॉलेज स्टूडेन्ट्स. *जर्नल ऑफ कॉलेज स्टूडेन्ट डेवलमेन्ट,* 46 (3), 223–236.

एंगल, जे., एण्ड टिंटो, वी. (2008). मूविंग बियॉन्ड एक्सेसः कॉलेज सक्सेस फॉर लो–इनकम, फर्स्ट जनेरेशन स्टूडेन्ट (न0 ईडी 504448). वाशिंगटन, डीसीः पेल इन्सटीट्यूट फॉर द स्टडी ऑफ अपच्यूनिटी इन हायर एजुकेशन.

इज़ले, एन., बियान्को, एम., एण्ड लीच, एन. (2010). गानाज़ः ए क्वालिटेटिव स्टडी एक्सामिनिंग मैक्सीकन हैरिटेज़ स्टूडेन्ट्स मोटीवेशन टू सक्सीड इन हायर ऐजुकेशन. *जर्नल ऑफ हिसपैनिक हायर ऐजुकेशन,* 11 (2), 164–178.

एंगल, जे., बर्मिओ. ए., एण्ड ओ'ब्रिन, सी. (2006). स्ट्रेट फ्रॉम द सोर्सः व्हॉट वर्क्स फॉर फर्स्ट जनेरेशन कॉलेज स्टूडेन्ट्स.(द पेल इन्सटीट्यूट जनवरी रिपोर्ट). वाशिंगटन, डीसीः द पेल इन्सटीट्यूट फॉर द स्टडी ऑफ अपच्यूनीटी इन हायर ऐजुकेशन. रिट्राइव्ड फ्रॉम http://www.pellinstitute.org/publications.html.

फिशर, एस., एण्ड हूड, बी. (1987). द स्ट्रेस ऑफ ट्रांजिशन टू यूनीवर्सिटीः ए लॉन्गिट्यूडनल स्टडी ऑफ सायकॉलोजिकल डिटर्बेन्स, अब्सेन्ट–माइन्डेडनेस एण्ड वुलेनरेबिलीटी टू होमसिकनेस. *ब्रिटिश जर्नल ऑफ सायकोलॉजी,* 78, 425–441.

फालौन, एम. वी. (1997). द स्कूल कान्उसलर्स रोल इन फर्स्ट–जनेरेशन स्टूडेन्ट्स कॉलेज प्लान्स. द स्कूल कान्उसलर, 44, 384–393.

फिन्नी, जे. एस., एण्ड हास, के. (2003). द प्रोसेस ऑफ कॉपिंग एमन्ग इथिनिक माइनॉरिटी फर्स्ट–जनेरेशन कॉलेज फ्रेशमैन. द जर्नल ऑफ सोशल साइकॉलजी, 143, 707–727.

फैनल, एस., (2010). रूल्स, रूब्रिक्स एण्ड रिचेसः द इन्टररिलेशन्स बिटवीन लीगल रीफॉर्म एण्ड इन्टरनेशनल डेवलपमेन्ट. न्यू यॉर्कः रूटलेज.

गर्डेस, एच., एण्ड मैलिन्कक्रोडट, बी. (1994). इमोशनल, सोशल, एण्ड एकेडमिक एडजस्टमेन्ट ऑफ कॉलेज स्टूडेन्ट्सः ए लॉन्गिटयूडनल स्टडी ऑफ रीटेन्शन. जर्नल ऑफ कान्उसिलिंग एण्ड डेवलपमेन्ट, 72, 281–288.

गिब्बन्स, मेलिन्डा एम., बार्डरस, डी ऐने एल. (2010). पर्सपेक्टिव फर्स्ट–जनेरेशन कॉलेज स्टूडेन्ट्सः ए सोशल–कॉगनिटिव पर्सपेक्टिव. द कैरियर डेवलपमेंट क्वार्टली, 58 (3), 194–209.

ग्रेसन, डी. आर. (1997). सेल्फ–डायरेक्टेड लर्निंगः टुअर्ड अ कम्प्रेहैसिंव मॉडल. अडल्ट एजुकेशन क्वाटर्ली, 48, 18–33, http://dx.doi.org/10.1177/07417136 9704800103.

ग्रैन्डफील्ड, रॉर्बट. (1991) ''मेकिंग इट बाइ फेकिंग इटः वर्किंग–क्लास इन एन इलिट एकेडमिक इन्वॉयर्नमेन्ट *जर्नल ऑफ कन्टेम्परेरी इथनोग्राफी* 20 (30): 331–351.

घोष. (2014). द साइलेन्ट एक्सक्लुज़न ऑफ फर्स्ट जनरेशन लर्नर फ्रॉम एजुकेशनल सेनेरियो–ए प्रोफाइल फ्रॉम पुंचा ब्लॉक ऑफ पुरूला डिस्ट्रीक, वेस्ट बैंगाल.

गिडेन्स, ए. (1991). मॉडर्निटी एण्ड सेल्फ–आइडेन्टिटीः सेल्फ एण्ड सोसाइटी इन द लेट मॉडर्न ऐज. पालो एल्टो, सीएः स्टैनफोर्ड यूनीवर्सिटी प्रेस.

हासियो, के.पी. (1992). फर्स्ट–जनेरेशन कॉलेज स्टूडेन्ट्स (रिर्पोट न0. इडीओजेसी–00–04). वाशिंगटन, डीसीः ऑफिस ऑफ ऐजुकेशन रिसर्च एण्ड इम्प्रूवमेन्ट. (ईआरआईसी डॉक्यूमेन्ट रीप्रोडक्शन सर्विस न0. ईडी351079).

हरटेल जे.बी. (1996). फर्स्ट जनरेशन एण्ड सेकेण्ड जनरेशन कॉलेज स्टूडेन्ट्सः सिमिलर्टिज़ डिफरेन्सेस एण्ड डिफरेन्शियल फैक्टर इन देयर एडजस्टमेन्ट टू कॉलेज. इन डेजर्टेशन एब्सट्रैक्ट इन्टरनेशनल (1997) वैल्यूम. 58, न0.5.पी.1070–ए.

हॉर्न, एल. एण्ड नुनैज, ए. (2000). मैपिंग द रोड टू कॉलेजः फर्स्ट जेनेरेशन स्टूडेन्टस मैथ ट्रैक, प्लानिंग स्ट्रैटिजीस, एण्ड कॉन्टेक्सट ऑफ सर्पोट. (एनसीईएस रिर्पोट न0. 2000–153). *वॉशिंग्टन, डीसीः नेशनल सेन्टर फॉर ऐजुकेशन स्टैटिसटिक्स।*

हर्टेल, जे. बी. (2002). कॉलेज स्टूडेन्ट जनरेशनल स्टेटसः सिमिल्र्टीज़, डिफरेन्स, एण्ड फैक्टर्स इन कॉलेज एडजस्टमेंन्ट. द सायकोलॉजिकल रिकॉर्ड, 52, 3–18.

हेलमैन, सी. एम. (1996). एकेडमिक सेल्फ–इफिसिएन्सीः हाइलाइटिंग द फर्स्ट–जनेरेशन स्टूडेन्ट. जर्नल ऑफ एप्लाइड रिसर्च इन द कम्यूनिटी कॉलेज, 4 (1), 69–75.

हैकमैन, जे. जे., एण्ड रबिस्टीन, वाई. (2001). द इम्पोंटेन्स ऑफ नॉन कॉग्नेटिव स्किल्सः लेसन फ्रॉम द जीइडी टेस्टींग प्रोग्राम. द अमेरिकन इकोनॉमिक रिविव, 91, 145–149.

हॉज़, अलेक्सा ई. एण्ड ऐलिज़ाबेथ ए. मेलिन. (2010). ''फर्स्ट–जनेरेश कॉलेज स्टूडेन्ट्सः द इन्फ्लुएन्स ऑफ फैमिली ऑन कॉलेज एक्सपीरिएन्स.'' *द पेन्न स्टेट मैकनायर जर्नल* 17:120–134.

हॉश–वॉघन, डी. (2004). द इम्पैक्ट ऑफ पैरेन्ट्स एजुकेशन लेवल ऑन कॉलेज स्टूडेन्ट्सः एन एनालिसिस यूजिंग द बेगनिंग पोस्टसेकेन्डरी स्टूडेन्ट्स लॉन्गीट्यूडनल स्टडी 1990–92/94. *जर्नल ऑफ कॉलेज स्टूडेन्ट डेवलपमेंट,* 44 (5), 483–500

हाराकिविक्ज, जे. एम., एण्ड हुलेमैन. सी. एस. (2010) द इम्पॉर्टेन्स ऑफ इन्टरेस्टः द रोल ऑफ एचीवमेन्ट गोल्स एण्ड टास्क वैल्यूज़ इन प्रोमोटिंग द डेवलपमेंट ऑफ इन्टरेस्ट. सोशल एण्ड पर्सनैलिटी सायकॉलजी कम्पास, 4 (1). 42–52.

हॉर्न एंड नुनैज. (2000). मैपिंग द रोड टू कॉलेजः फर्स्ट–जनरेशन स्टूडेन्टस मैथ ट्रैक, प्लाानिंग स्ट्रैटजीज़, एण्ड कॉन्टेक्सट ऑफ सर्पोट नेशनल सेन्टर फॉर

एजुकेशन स्टैटिसटिक्स. यू.एस. डिपार्टमेन्ट ऑफ एजुकेशन. आईएसबीएन एनसीईएस.

हसलर, डी., भामित, जे., एण्ड वेस्पर, एन. (1999). गोइंग टू कॉलेजः हाव सोशल, इकोनोमिक, एण्ड ऐजुकेशनल फैक्टर इन्फ्लूएन्स द डीसीज़न स्टूडेन्ट मेक. *बाल्टीमोर, एमडीः द जॉन्स हॉपकिन्स यूनिवर्सिटी प्रेस।*

हियर्न, जे. सी. (1987). इम्पैक्ट्स ऑफ अन्डरग्रेजुएट एक्सपीरिएन्सेस ऑन एसपीरेशन्स एण्ड प्लान्स फॉर ग्रेजुऐट एण्ड प्रोफेशनल ऐजुकेशन. रिसर्च इन हायर ऐजुकेशन. 27 (2), 119–141. रिट्राइव्ड फ्रॉम http://www.jstor.org/stable/40195811.

हेचेट, एम. एल. (1993). 2002– अ रिसर्च ओडसेः टुअडर्स द डेवलपमेन्ट ऑफ अ कम्यूनिकेशन थ्योरी ऑफ आइडेन्टिटी कम्यूनिकेशन स्टडीज़, 51, 372–287.

https://en.wikipedia.org/wiki/2011_Census_of_India

इनमैन, डब्ल्यू. इलियट, एण्ड लारी मेयस. (1999). द इम्पॉर्टेन्स ऑफ बींग फर्स्टः यूनीक कैरेक्टरिस्टिक्स ऑफ फर्स्ट–जनरेशन कम्यूनिटी कॉलेज स्टूडेन्टस. कम्यूनिटी कॉलेज रिव्यूव 26 (4):3–18.

इशतानी, टैरी टी. (2006), ''स्टडी एट्रीशन एण्ड डिग्री कम्पलीशन बिहेवियर एमन्ग फर्स्ट जनेरेशन कॉलेज स्टूडेन्ट्स इन द यूनाइटेड स्टेटस.'' *द जर्नल ऑफ हायर एजुकेशन* 77 (5): 861–885.

इशितानी, टी.टी. (2003). अ लॉन्गीटयूडिनल अप्रोच टू एसेसिंग अट्रीशन बिहैवियर एमन्ग फर्स्ट–जनेरेशन स्टूडेन्ट्सः टाइम–वैरिइन्ग इफैक्टस ऑफ प्री–कॉलेज कैरेक्टरिस्टिक्स. 44 (4), 433–449.

जहांगीर, राशने आर., माइकल जे. स्टेबल्टन, एण्ड वेरोनिका दीनानाथ (2015). एन एक्सप्लोरेशन ऑफ इन्टरसेक्टिंग आइडेटिटीज़ ऑफ फर्स्ट–जनेरेशन, लो–इन्कम

कॉलेज स्टूडेन्ट्स. कोल्मिबिया, एससीः यूनिवर्सिटी ऑफ साउथ कार्लोनिया, नेशनल रिर्सोस सेन्टर फॉर द फर्स्ट–ईयर एक्सपीरिएन्स एण्ड स्टूडेन्ट्स इन ट्रान्जिशन.

जहांगीर, आर. (2010). स्टोरीज़ एज़ नॉलेजः ब्रिंगिंग द लिव्ड एक्सपीरिएन्स ऑफ फर्स्ट–जनेरेशन कॉलेज स्टूडेन्ट्स इनटू द एकेडमी अर्बन एजुकेशन, 45 (4), 533–553.

जेनकिन्स, एस. आर., बेलान्गर, ए., कोनाली. एम. एल., बोल्स, ए., एण्ड डूरॉन. के. एम. (2016). फर्स्ट–जनेरेशन अन्डरग्रेजुएट स्टूडेन्ट्स सोशल सपोर्ट, डिप्रैशन, एण्ड लाइफ सैटिसफैक्शन. *जर्नल ऑफ कॉलेज काउन्सिलिंग,* 16, 129–142.

जॉनसन, बी. एण्ड क्रिस्टटेन्सन, एल. (2012). एजुकेशनल रिसर्चः क्वालिटेटिव, क्वान्टेटिव एण्ड मिक्स अप्रोचेस. थाउज़ेन्ड ओक्स, सीएः सेज.

कुमार, अनुज (2010), "21 वीं सदी में उच्च शिक्षा की चुनौतियाँ भविष्योंमुखी दृष्टि और उच्च शिक्षा" , भारतीय आधुनिक शिक्षा, एन0सी0ई0आर0टी0, जुलाई, नई दिल्ली।

कुह, जी.डी., किन्ज़ी, जे., बुकले, जे. ए., ब्रिजेस, बी.के., एण्ड हायेक, जे.सी. (2007). पायसिंग टूगेदर द स्टूडेन्ट सक्सेस पज़ल. एएसएचई हायर ऐजुकेशन रिर्पोट, 32 (5).

किम, वाई., एण्ड सैक्स, एल. (2009). स्टूडेन्ट–फैकल्टी इन्ट्रैक्शन इन रिसर्च यूनिवर्सिटीजः डिफरेन्सेस बाय स्टूडेन्ट जेन्डर, रेस, सोशल क्लास, एण्ड फर्स्ट–जनेरेशन स्टेटस. रिसर्च इन हायर ऐजुकेशन, 50 (5), 437–459. डीओआईः 10.1007 / एस 11162–009–9127–एस.

कुह, जी. डी., एण्ड हू. एस. (2001). द इफैक्ट्स ऑफ स्टूडेन्ट–फैकल्टी इन्ट्रैक्शन इन द 1990. द रिविव ऑफ हायर ऐजुकेशन, 24 (3), 309–332.

काब्रेरा, अलबर्टो एफ., ब्रुकुम. कर्टआर., ला नासा. स्टीवन एम. (2005). पाथवे टू ए फोर–इयर डिग्री. इन ए. सिडमैन (इडी.), कॉलेज स्टूडेन्ट रेन्टेन्शनः फॉरमूला फॉर स्टूडेन्ट सक्सेज (पेज न0. 155–214). वेस्टपोर्ट, सीटीः प्रैज़र पब्लिशर्स.

कॉफमैन, एस. (2011). ए सोशल कन्शट्रक्शनिस्ट विव ऑफ इश्यू कन्फ्रटिंग फर्स्ट–जनेरेशन कॉलेज स्टूडेन्ट्स. न्यू डायरेक्शन्स फार टीचिंग एण्ड लर्निंग, 2011 (127), 81–90. डीओआईः 10.1002/टीएल. 459.

कॉक–एस्ठर, ए. (2010). स्टूडेन्ट्स एज़ लर्नरस एण्ड टीचर्सः टेकिंग रेसपॉन्सिबिलिटी, ट्रान्सफॉर्मिंग ऐजुकेशन, एण्ड रिडिफाइनिंग एकाउन्टेबिलिटी. कैरीकुलम इन्क्वैरी, 40 (4), 555–575. डीओआईः10.1111/जे.1467–873एक्स.2010. 00501.एक्स.

कॉफमैन,ए.एण्ड लिचेंबर्ग, ई., 2006 एसेसिंग एडोलेसेन्ट एण्ड अडल्ट इन्टैलिजेन्स. न्यू जर्सेः जॉन व्हाले एण्ड सन्स आईएनसी.

लंदन, एच.बी. (1989). ब्रेकिंग अवेः ए स्टडी ऑफ फर्स्ट–जनेरेशन कॉलेज स्टूडेन्ट्स एण्ड देयर फैमिलीज़. *अमेरिकन जर्नल ऑफ ऐजुकेशन,* 97 (1), 144–170.

ली, जे., एण्ड मुएलर, जे. ए. (2014). स्टूडेन्ट लोन डेब्ट लिटरेसीः ए कम्पैरिज़न ऑफ फर्स्ट–जनेरेशन एण्ड कन्टीन्यूइंग जनेरेशन कॉलेज स्टूडेन्ट्स *जर्नल ऑफ कॉलेज स्टूडेन्ट डेवलपमेन्ट,* 55 (7), 714–719.

लेहमैन, वॉल्फगैंग (2007). आई जस्ट डोन्ट फील लाइक आई फिट इनः द रोल ऑफ हैबिट्स इन यूनिवर्सिटी ड्रॉप–आउट डिसीज़न्स. कानाडियन *जर्नल ऑफ हायर एजुकेशन* 37 (2): 89–110.

लुण्डबर्ग, कैरोल ए., लायूराइ ए. स्करेइनर, क्रिस्टाइन होवेगूइमेन, एण्ड सार्यन स्लैविन मिलर. (2007). ''फर्स्ट–जनेरेशन स्टेटस एण्ड स्टूडेन्ट रेस/ इथिनीसिटी एज डिसटिन्क्ट प्रीडिक्टर्स ऑफ स्टूडेन्ट इन्वॉल्वमेन्ट एण्ड लर्निंग.'' एनएएसपीए जर्नल 44 (1): 57–83.

लैम्पोर्ट, एम. ए. (1993). स्टूडेन्ट–फैकल्टी इन्फ्रॉर्मल इन्टरैक्शन एण्ड द इफैक्ट ऑन कॉलेज स्टूडेन्ट आउटकम्सः ए रिविव. एडोल्सेन्स. 28 (112). 971.

मेहता, एस. एस., न्यूबोल्ड, जे. जे., एण्ड ओरूरके, एम. ए. (2011). व्हाई डू फर्स्ट–जनेरेशन स्टूडेन्ट्स फेल्स? *कॉलेज स्टूडेन्ट जर्नल,* 45 (1), 20–35.

मैककैनल, पी. (2000). व्हाट कम्यूनीटी कॉलेजेस सुड डू टू एसिसट फर्स्ट–जनेरेशन स्टूडेन्ट्स? कम्यूनिटी कॉलेज रिविव, 28, 75–87.

मैकडोनो, पी. एम. (1997). चुज़िंग कॉलेजेसः हाउ सोशल क्लास एण्ड स्कूल्स स्ट्रक्चर अपच्यूनीटी. न्यू यॉर्कः स्टेट यूनीवर्सिटी ऑफ न्यू यॉर्क प्रेस.

मैकक्रोन, जी.पी., एण्ड इंकसल, के. के. (2006). द गैप बिटवीन ऐजुकेशनल एस्पीरेशन्स एण्ड अटैन्मेंट फॉर फर्स्ट–जनेरेशन कॉलेज स्टूडेन्ट्स एण्ड द रोल ऑफ पैरेन्टल इन्वॉल्वमेन्ट. *जर्नल ऑफ कॉलेज स्टूडेन्ट डेवलपमेंट*, 47 (5), 534–549.

मैकाएक, डी. डब्ल्यू., (2005). न्यू प्लेयर्स एण्ड न्यू पैटर्नस. इनः डब्ल्यू. रूफ एण्ड एम. सिल्क, इडीएस. रीलिज़न एण्ड पब्लिक लाइफ इन द पैसिफिक रीज़नः फ्ल्यूड आइडेन्टिटीज़. वॉलनट क्रीक, सीएः अल्टामीरा प्रेस, पीपी. 89–108.

मरियम, एस. बी. (1998). क्वालिटेटिव रिसर्च एण्ड केस स्टडी अपलीकेशन्स इन एजुकेशनः रीवाइज़ड एण्ड एक्सपैन्डेड फ्रॉम केस स्टडी रिसर्च इन एजुकेशन. सैन फ्रैन्सिस्को, सीएः जोसे–बास पब्लिर्सस

नुनैज़. ए., एण्ड कुकारो–अलामिन. एस. (1998). फर्स्ट–जनेरेशन स्टूडेन्ट्सः अन्डरग्रेजुऐट्स हूज़ पैरेन्ट्स नेवर इन्रोल्ड इन पोस्टसेकेण्डरी एजुकेशन न0. एनसीईएस 98–082. वाशिंगटन, डीसीः नेशनल सेन्टर ऑर एजुकेशनल स्टैटिसटिक्स.

नीयू, एस., एण्ड टिन्डा, एम. (2013). डिलेड इनरोल्मेन्ट एण्ड कॉलेज प्लान्सः इज़ देयर ए पोस्टसेकण्डरी पेनाल्टी? द जर्नल ऑफ हायर ऐजुकेशन, 84, 1–26.

ओरवे, एम. पी. (2004). नेगोसिएटिन्ग मल्टीपल आइडेन्टटीज़ विदइन मल्टीपल फ्रेम्सः एन एनालिसिस ऑफ फर्स्ट–जनेरेशन कॉलेज स्टूडेन्ट्स. कम्यूनीकेशन ऐजुकेशन, 53 (2), 131–149. डीओआइः 10.10 / 03634520410001682401.

ऑस्ट्रोव. जॉन एम. एण्ड स्यूसैन एम. लॉन्ग (2007). ''सोशल क्लास एण्ड बिलॉन्गिंगः इम्पलीकेशन्स फॉर कॉलेज एडजस्टमेन्ट.'' द रिविव ऑफ हायर एजुकेशन 30 (4): 363–389.

ओनव्यूगबूजी, ए. जे. एण्ड लीच, एन. एल. (2007). अ कॉल फॉर क्वालिटेटिव पावर एनालिसिसः कन्सिडरेशन्स इन क्वालिटेटिव रिसर्च. क्वालिटी एण्ड क्वांटिटीः इन्टरनेशनल जर्नल ऑफ मैथडॉलजी, 41 (1), 105–121.

पास्करेला, ई. टी., एण्ड टेरेन्जिनी, पी. टी. (2005). हाउ कॉलेज अफैक्ट स्टूडेन्ट्सः वॉल्यूम 2: ए थर्ड डिकेड ऑफ रिसर्च. सेन फ्रांससिको, सीएः जॉन वेली एण्ड सनस, आइएनसी.

पटेल, एल.के. (1988). अ स्टडी ऑफ द प्रोब्लम्स ऑफ फर्स्ट जनरेशन लर्नर्स इन स्टैन्डर्स I टू IV अहमदाबाद सिटी. इन एम.बी. बच (ईडी.) (1997). फिफ्थ सर्वे ऑफ रिसर्च इन एजुकेशन. न्यू दिल्लीः एनसीईआरटी वैल्यूम. II, पी. 824.

पाइक, ग्रे आर. एण्ड जॉर्ज डी. कुह (2005). ''फर्स्ट एण्ड सेकेण्ड–जनेरेशन कॉलेज स्टूडेन्ट्सः ए कम्पैरिज़न ऑफ देयर इंगेज़मेन्ट एण्ड इन्टैलेक्चुअल डेवल्पमेन्ट.'' द *जर्नल ऑफ हायर एजुकेशन* 76 (3): 276–300.

प्रैट, आइ. एस., हार्वुड, एच.बी., कावाज़ोस, जे.टी., डिटज़फेल्ड, सी.पी. (2017). सुड आइ स्टे ऑर सुड आइ गो? रेन्टेन्शन इन फर्स्ट–जनेरेशन कॉलेज स्टूडेन्ट्स. *जर्नल ऑफ कॉलेज स्टूडेन्ट रीटेन्शन,* 0 (0), 1–14. डीओआईः 10. 1177 / 1521025117690868.

पास्करेला, अर्नेस्ट. टी., क्राइस्टोफर टी. पियर्सन, ग्रीगोरी सी वॉलनेक, एण्ड टेरेंजिनी, पी. टी. (2004). फर्स्ट–जनेरेशन कॉलेज स्टूडेन्ट्सः एडिशनल एविडेन्स ऑन कॉलेज एक्सपीरिएन्स एण्ड आउटकम्स. *जर्नल ऑफ हायर एजुकेशन,* 75 (3), 249–284.

पार्योवस्की, जी. (1983). सर्वाइवर गिल्ट इन द यूनीवर्सिटी सेटिंग. *पर्सनल एण्ड गाइडेन्स जर्नल,* 61, 620–622.

पेन्नैबेकर, जे., कोल्डर, एम., एण्ड शार्प, एल. (1990). एकेलेरेटिंग द कॉपिंग प्रोसेस. *जर्नल ऑफ पर्सनैलिटी एण्ड सोशल साइकोलॉजी,* 58, 528–537

प्रैट, पी., एण्ड स्कैग्स, सी. (1989). फर्स्ट–जनेरेशन कॉलेज स्टूडेन्ट्सः आर दे एट ग्रेटर रिस्क फॉर एट्रीशन दैन देयर पियर? रिसर्च इन रूरल ऐजुकेशन, 6 (2), 31–34.

पेडरो गॉर्ल्ट., एण्ड अर्जुन एस. बेदी (2011) द इम्पैक्ट ऑफ इन्टरेस्ट इन स्कूल ऑन एजुकेशन सक्सेस इन पुर्तगाल. आईजेडए डीपी न0. 5462.

पैडगेट, आर. डी., जॉनशन, एम. पी., एण्ड पास्करेला, ई. टी. (2012). फर्स्ट–जनेरेशन अन्डग्रेजुएट स्टूडेन्ट्स एण्ड द इम्पैक्ट्स ऑफ द फर्स्ट ईयर ऑफ कॉलेजः एडिशनल एविडेन्स. *जर्नल ऑफ कॉलेज स्टडेन्ट डेवलपमेन्ट.* 53 (2), 243–266.

पास्करेला, ई. टी.,एण्ड टेरेंजिनी, पी. टी. (1977). पैटर्न ऑफ स्टूडेन्ट–फैकल्टी इल्फ्रॉमल इन्ट्रैक्शन बियॉन्ड द क्लासरूम एण्ड वॉलन्ट्री फ्रेशमैन एट्रीशन. *द जर्नल ऑफ हायर ऐजुकेशन,* 48 (5), 540–552. रिट्राइव्ड फ्रॉम http://www.jstor.org/stable/1981596.

पास्करेला. ई. टी. (1980). स्टुडेन्ट–फैकल्टी इन्फॉमल कान्टेक्ट एण्ड कॉलेज आउटकम्स. रीविव ऑफ एजुकेशनल रीसर्च, 50 (4), 545–595 https://doi.org/10.2307/1170295

पास्करेला, ई. टी., एण्ड टेरेंजिनी, पी. टी. (1991). हाउ कॉलेज अफैक्टस स्टूडेन्टसः फाइन्डिंगस एण्ड इनसाइटस फ्राफम टवअन्टी ईयर्स ऑफ रिसर्च. सैन फ्रैन्सिसको, सीएः जोसे–बास.

पास्करेला, ई. टी., टेरेंजिनी, पी. टी., एण्ड हिब्ल, जे. (1978). स्टूडेन्ट–फैकल्टी इन्ट्रैक्शनल सेटिंग एण्ड देयर रिलेशनशिप टू परडिक्टेड एकेडमिक परफ्रॉमेन्स. *द जर्नल ऑफ हायर ऐजुकेशन,* 49 (5), 450–463. रिट्राइव्ड फ्रॉम http://www.jstor.org/stable/1980509.

रिए, डायने, गिल क्रोज़ियर, एण्ड जॉन क्लेटन (2009). ''स्ट्रेन्ज़र्स इन पैराडाइज़ वर्किंग–क्लास स्टूडेन्ट्स इन इलिट यूनिवर्सिटीज़.'' सोशियोलॉजी 43 (6): 1103–1121.

रिचर्डसन, आर.सी. एण्ड स्किनर, ई. एफ. (1992). हेल्पिंग फर्स्ट जनरेशन माइनॉरिटी स्टूडेन्टस एचीव डिग्री. इन एल.एस. जुएरलिंग एण्ड एच.बी. लंदन (ईडीएस), फर्स्ट जनरेशन कॉलेज स्टूडेन्टसः कन्फर्न्टिंग द कल्चरल इस्यू (पीपी.29–44). सान फ्रान्सिसको, सीएः जोसे–बास पब्लिशर्स।

श्रीवास्तव, ए.के. सिमहाद्री, आर.ए. (1979). टेस्ट ऑफ रीडिंग रेडीनेस एण्ड मेन्टल एबिलिटी इन फर्स्ट जनरेशन लर्नर्स. बच एम.बी. (ईडी.). थर्ड सर्वे ऑफ रिसर्च इन एजुकेशनल वैल्यूम–2 न्यू दिल्ली एसीईआरटी.

सिंह. बी. एण्ड कुमार. एम. (2005). प्रोब्लम्स ऑफ फर्स्ट जनरेशन फिफ्थ ग्रेडस लर्नर्स. इन्डियन जर्नल ऑफ एजुकेशनल रिसर्च. वैल्यूम.–24, न0.–2.

स्नेल, टी. पी. (2008). फर्स्ट–जनेरेशन स्टूडेन्ट्स, सोशल क्लास, एण्ड लिटरेसी. अमेरिकन एसोसिाएशन ऑफ यूनीवर्सिटी प्रोफेसर्स.

स्टेफेन्स, एन. एम., फ्राइबर्ग, एस. ए., मार्कुस, एच. आर., जॉनशन, सी. एस., एण्ड कोवारीबायस, आर. (2012). अनसीन डिसएडवान्टेजः हाउ अमेरिकन यूनिवर्सिटीज़ फोकस ऑन इन्डेपेन्डेन्स अन्डरमाइन द एकेडमिक परफॉरमेन्स ऑफ फर्स्ट–जनेरेशन

कॉलेज स्टूडेन्ट्स. *जर्नल ऑफ पर्सनैलिटी एण्ड सोशल साइकोलॉजी,* 102 (6), 1178–1197. डीओआईः 10.1037/ए0027143.

सीरिन, एस. आर. (2005). सोशियोएकोनॉमिक स्टेटस एण्ड एकेडमिक एचीवमेन्टः ए मेटा–एनालिटिक रिविव ऑफ रिसर्च. रिविव ऑफ एजुकेशनल रिसर्च, 75 (3), 417–453.

सोरिया. के.एम., एण्ड स्टेब्लटन, एम. जे. (2012). फर्स्ट–जनेरेशन स्टूडेन्ट्स एकेडमिक इंगेजमेन्ट एण्ड रेन्टेन्शन. टीचिंग इन हायर ऐजुकेशन, 17 (6), 673–685. डीओआईः 10. 1080/13562517.2012.666735.

सीन्ज़, वी. बी., हर्टाडो, एस., बारेरा, डी., वॉल्फ, डी., एण्ड युंग, एफ. (2007). फर्स्ट इन माय फैमिलीः ए प्रोफाइल ऑफ फर्स्ट–जनेरेशन कॉलेज स्टूडेन्ट्स एट फोर–इयर इन्स्टीट्यूसन्श सिन्स 1971. लॉस एंजिल्सः रिजेन्ट्स ऑफ द यूनिवर्सिटी ऑफ कैलिफोर्निया.

सोरिया, क्रिस्टा एम., माइकल जे. स्टेबल्टन, एण्ड रोनाल्ड एल. हयूजमैन (2013). ''क्लास काउन्टः एक्सप्लोरिंग डिफरेन्सेस इन एकेडमिक एण्ड सोशल इन्टीग्रेशन बिटवीन वर्किंग–क्लास एण्ड मिडिल/अपर क्लास स्टूडेन्ट्स एट लार्ज, पब्लिक रिसर्च यूनिवर्सिटीज़.'' *जर्नल ऑफ कॉलेज स्टूडेन्ट रिटेन्शनः रिसर्च, थ्योरी एण्ड प्रैक्टिस* 15 (2): 215–242.

स्टुबर, जेनी एम. (2011). इन्साइड द कॉलेज गेटः हाउ क्लास एण्ड कल्चर मैटर इन हायर एजुकेशन. लेनहम, एमडीः रॉमैन एण्ड लिटिलफील्ड.

शर्लिन, जे. (2000). अन्डरस्टैन्डिंग द सिस्टम पर्सिस्टेन्स ऑफ फर्स्ट–जनेरेशन स्टूडेन्ट्स थ्रो पाथ मॉडलिंग. अनपब्लिशड डॉक्टोरल डिर्जटेशन, यूनीवर्सिटी ऑफ मैरीलैण्ड. कॉलेज पार्क.

स्मिथ, जे., हॉकेमेयर. जे., हेरॉन, के., वन्डरलिच. एस., एण्ड पेन्नैबेकर, जे. (2008). प्रीवेलेन्स, टाईप, डिसक्लोज़र, एण्ड सेवर्टि ऑफ एडवर्स लाइफ इवेन्ट इन कॉलेज स्टूडेन्ट्स. *जर्नल ऑफ अमेरिकन कॉलेज हेल्थ,* 57, 69–76.

टेरेंजिनी, पी.टी., स्प्रिंगर, एल., येगर, पी.एम., पास्करेला, ई.टी., एण्ड नोरा, ए. (1996). फर्स्ट–जेनेरेशन कॉलेज स्टूडेंट्सः कैरेक्टरिस्टिक, एक्सपीरिएन्स, एण्ड कॉग्नेटिव डेवलपमेंट. *रिसर्च इन हायर ऐजुकेशन, 37(1),1–22।*

वैंग टिफनी. (2012). अन्र्डस्टैडिंग द मेमोरेबल मैसेजेस फर्स्ट–जनेरेशन कॉलेज स्टूडेन्टस रीसीव फ्रॉम ऑन–कैम्पस मेंटर. वैल्यूम 61.10.1080/03634523.2012. 691978.

थायर, पी. (2000). रीटेन्शन ऑफ स्टूडेन्ट्स फ्रॉम फर्स्ट जनेरेशन एण्ड लो–इन्कम बैकग्राउन्डस. अपच्यूनिटी आउटलुक, 11, 2–8. रिट्राइव्ड फ्रॉम http://files.eric.ed.gov/full text/ED446633.pdf.

टाइकसन, डेविड. (2000). लाइब्रेरी सर्विस फॉर द फर्स्ट जनरेनशन कॉलेज स्टूडेन्ट. इन टीचिंग द न्यू लाइब्रेरी टू टूडेज़ यूजर्सः रीचिंग इन्टरनेशनल, मायनॉरिटी, सीनियर सिटीजन्स, गे/लेसबियन, फर्स्ट जनरेशन, एट–रिस्क, ग्रेजुएट एण्ड रिटर्निंग स्टूडेन्टस, एण्ड डिस्टैन्स लर्नर्स, एडिटेड बाय टूर्डी ई. जैकोबसन एण्ड हेलेन सी. विलियम्स 89–105. न्यू यॉर्कः नील्सहयूमन.

टीवाइएम, सी., मैकमिलन, आर., बारोने, एस., एण्ड वेबस्टर, जे. (2004, नवम्बर). फर्स्ट–जनेरेशन कॉलेज स्टूडेन्ट्सः ए लिटरेचर रिविव. राउन्ड रॉक, टीएक्सः टीजी रिसर्च एण्ड एनालिटिक सर्विसेस.

ट्रो, एम. (1999). फ्रॉम मास हायर एजुकेशन टू यूनिवर्सल ऐक्सेसः द अमेरिकन एडवान्टेज. माइनर्वा, 37 (4), 303–328.

टिंटो, विनसेन्ट. 1987. लीविंग कॉलेजः रिथिंकिंग द काजेस एण्ड क्योर्स ऑफ स्टूडेन्ट एट्रीशन. शिकागो, आइएलः यूनिवर्सिटी ऑफ शिकागो प्रेस.

टोरस, किम्ब्रेली (2009). ''कल्चर सॉकः ब्लैक स्टूडेन्ट्स एकाउन्ट फॉर देयर डिसटिन्क्टिवनेस एट एन इलिट कॉलेज'' इथिनिक एण्ड रेशियल स्टडीज़ 32 (5): 883–905.

टिंटो, वी. (1993). लर्निंग कॉलेजः रीथिंकिंग द कॉज़ेज एण्ड क्यूर्स ऑफ स्टूडेन्ट एट्रीशन (2 nd ed.). शिकागोः यूनीवर्सिटी ऑफ शिकागो प्रेस.

टेरेंजिनी, पी. टी., रेन्डन, एल. आई., अपक्राफ्ट, एम. एल., मिलर, एस. बी., एलिसन, के. डब्ल्यू., ग्रेग, पी. एल., एण्ड जालमो. आर. (1994), द ट्रांजिशन टू कॉलेजः डायवर्स स्टूडेन्ट्स, डायवर्स स्टोरीज़. रिसर्च इन हायर ऐजुकेशन, 35, 57–73.

टोरेज़, एन. (2004). डेवलपिंग पैरेन्ट इन्फॉर्मेशन फ्रेमवर्क्स दैट सर्पोट कॉलेज प्रीपेरेशन फॉर लैन्टिनो स्टूडेन्ट्स. द हाई स्कूल जर्नल, 87, 54–62. डीओआईः 0. 1353/एचएसजे. 2004.0006.

तायब, डी. (2008). एक्सप्लोरिंग द इम्पैक्ट ऑफ पैरेन्टल इन्वॉल्वमेन्ट ऑन स्टूडेन्ट डेवलपमेन्ट. इन के.सी. कार्नी–हॉल (इडी.), मैनेजिंग पैरेन्ट पाटर्नशिप्सः मैक्समाइज़िंग इन्फ्लूएन्स, मिनीमाइजिंग इन्टरफेरेन्स, एण्ड फोकसिंग ऑन स्टूडेन्ट सक्सेस (न्यू डायरेक्शन्स फॉर स्टूडेन्ट सर्विस न0. 122) (पेज न0 15–28), सेन फ्रान्सिसको, सीएः जोसी–बास.

टेडली, सी, एण्ड यू, एफ. (2007). मिक्स मेथेड सैम्पलिंगः अ टापोलॉजी विद इक्ज़ाम्पल्स. जर्नल ऑफ मिक्स मेथेड रीसर्च, 1 (1), 77–100.

वारबर्टन, ई. सी., बुगरिन, आर., एण्ड नुनैज़, ए. (2001). ब्रिजिंग द गैपः एकेडमिक प्रीपियरेशन एण्ड पोस्ट–सेकेण्डरी सक्सेस ऑफ फर्स्ट–जनेरेशन स्टूडेन्ट्स (रिसर्च रिर्पोट न0. एनसीई 2001–153). यू. एस. डिपार्टमेन्ट ऑफ ऐजुकेशन नेशनल सेन्टर फॉर ऐजुकेशन स्टैटिस्टिक्स. वाशिंगटन, डीसीः यू. एस. गर्वनमेन्ट प्रिटिंग ऑफिस.

वर्गास, जे.एच. (2004). कॉलेज नॉलेजः ऐडरेसिंग इनफॉरमेसन बैरियर टू कॉलेज. बोस्टन, एमएः द ऐजुकेशन रिर्सोस इन्सटीट्यूट (टीईआरआई)।

विल्बुर, टी. जी., एण्ड रोसिग्नो, वी.जे (2016). फर्स्ट–जनेरेशन डिसएडवान्टेज़ एण्ड कॉलेज इन्रोलमेन्ट / कम्पलीशन. सोशियस. 2, 1–11.

वेनिगर जी, लेंज सीत्र सकैसे यू, र्लिले ई. एमिगडाला एण्ड हिपोकैम्पल वैल्यूम्स एण्ड कॉगनिशन इन अडल्ट सर्वावर्स ऑफ चाइल्डहुड अब्यूज विद डिसोसिएटिव डिसआर्डर्स. एक्टा साइचेट्रस्कैन्ड. (2008).118(4):281-90. doi: 10.1111/j.1600-0447.2008.01246.x. PMID: 18759808.

वारेन, डी. जे. (1999). स्कूल कल्चरः एक्सप्लोरिंग द हिडेन करीकुलम. एडोलेसेन्स, 34, 593–596.

वरर्बटन, ई. सी.., बुगरिद, आर., एण्ड नुनैज़. ए. (2001) ब्रिजिंग द गैपः एकेडमिक प्रीप्रियेशन एण्ड पोस्ट–सेकेण्डरी सक्सेस ऑफ फर्स्ट–जनरेशन स्टूडेन्टस (रिसर्च रीपोर्ट न0 एनसीईएस 2001–153). यू.एस. डिपार्टमेन्ट ऑफ एजुकेशन, नेशनल सेन्टर फॉर एजुकेशन स्टैटिसटिक्स.

यादव नीतू (2014). भारतीय शिक्षा व्यवस्था का विकास। नई दिल्लीः यूनिवर्सिटी पब्लिकेशन।

यी, ए. (2015). द अनरिटेन रूल्स ऑफ इन्गेज़मेन्टः सोशल क्लास डिफरेन्शेस इन अन्डरग्रेजुएट्स एकेडेमिक स्ट्रेटेजीस. *द जर्नल ऑफ हायर एजुकेशन,* 87 (6), 831–858.

यॉर्क–एंडरसन, डी.सी., एण्ड बोमन, एस.एल. (1991). ऐसेसिंग द कॉलेज नॉलेज ऑफ फर्स्ट–जेनेरेशन एण्ड सेकेण्ड जेनेरेशन कॉलेज स्टूडेंट्स. *जर्नल ऑफ कॉलेज स्टूडेन्ट डेवलपमेंट, 32 (2),116–123*

परिशिष्ट

परिशिष्ट I

साक्षात्कार अनुसूची

"उच्च शिक्षा में प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों की चुनौतियाँ एवं प्रतिक्रियाः लखनऊ जिले के युवाओं का समाजशास्त्रीय अध्ययन

प्रिय उत्तरदाता,

मैं सुनीता भारती बाबासाहेब भीमराव अम्बेडकर विश्वविद्यालय के समाजशास्त्र विभाग की शोध छात्रा हूँ और मेरे शोध का विषय **"उच्च शिक्षा में प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों की चुनौतियाँ एवं प्रतिक्रियाः** मेरे शोध में प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों का अर्थ उन विद्यार्थियों से है जिनके अभिभावकों ने स्नातक स्तर की शिक्षा ग्रहण नहीं की हैं अर्थात् अभिभावकों में उच्च शिक्षा के बारे में ज्ञान की कमी के कारण प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों उच्च शिक्षा प्राप्त करने में किन किन कठिनाईयों का सामना करना पड़ता है साथ ही उनके अनुभवों को भी जानने का प्रयास किया जायेगा। अभिभावकों में उच्च शिक्षा के बारे में ज्ञान की कमी के कारण प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों को कॉलेज के चुनाव से सम्बन्धित ज्ञान की कमी, पाठ्यक्रम के चुनाव से सम्बन्धित ज्ञान की कमी, प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों शिक्षकों के साथ अन्तःक्रिया (interaction) करने में होने वाली कठिनाईयों को भी जानने का प्रयास किया जायेगा। अतः आपसे अनुरोध है कि आप इस प्रश्नावली को भरकर आप मेरे इस शोध को सफल बनाने में आप मेरा सहयोग करे।

प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों की पृष्ठभूमिः (Background)

(1) उत्तरदाता का नाम :–

(2) उत्तरदाता की उम्र :–

(3) लिंग :–

(i) महिला ( ) (ii) पुरूष ( )

(4) जाति :–

(i) सामान्य जाति ( ) (ii) अन्य पिछड़ा वर्ग ( )

(iii) अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति ( )

(5) धर्म :–

(i) हिन्दू ( ) (ii) मुस्लिम ( )

(iii) अन्य ( )

(6) निवास स्थान :–

(i) ग्रामीण क्षेत्र ( ) (ii) शहरी क्षेत्र ( )

(7) पारिवारिक आय :–

(i) 6000–10000 ( ) (ii) 11000–15000 ( )

(iii) 16000–20000 ( ) (iv) 21000–25000 ( )

(v) 26000–30000 Above ( )

(8) परिवार में सदस्यों की संख्या :–

(i) 3-5 ( ) (ii) 6-8 ( )

(iii) 9-11 ( )

(9) पिता की शिक्षा :–

(i) अशिक्षित ( ) (ii) प्राथमिक शिक्षा ( )

(iii) उच्च प्राथमिक शिक्षा ( ) (iv) माध्यमिक शिक्षा ( )

(10) माता की शिक्षा :–

(i) अशिक्षित ( ) (ii) प्राथमिक शिक्षा ( )

(iii) उच्च प्राथमिक शिक्षा ( ) (iv) माध्यमिक शिक्षा ( )

(11) पिता का व्यवसायः–

(i) कृषि ( ) (ii) कौशलरहित कार्य ( )

(iii) कौशलपूर्ण कार्य ( ) (iv) प्राइवेट नौकरी ( )

(v) सरकारी नौकरी ग्रप बी सी डी ( )

(12) माता का व्यवसायः–

(i) गृहिणी ( ) (ii) कृषि ( )

(iii) सरकारी नौकरी ग्रप बी सी डी ( )

(13) घर का प्रकार :–

(i) कच्चा घर ( ) (ii) कच्चा पक्का घर ( )

(iii) पक्का घर ( )

(14) पाठ्यक्रम :–

(i) कला संकाय ( ) (ii) विज्ञान संकाय ( )

(iii) वाणिज्य संकाय ( ) (iv) तकनीकी एवं प्रबन्धन ( )

(15) क्या आप इस बात से सहमत है कि वर्तमान समय में नौकरी पाने के लिए उच्च शिक्षा जरूरी है?

(i) नही ( ) (ii) कुछ हद तक ( )

(iii) हाँ ( )

(16) क्या आप इस बात से सहमत है कि वर्तमान समय में अच्छी नौकरी पाने के लिए उचित कोर्स का चुनाव जरूरी है?

(i) नही ( ) (ii) कुछ हद तक ( )

(iii) हाँ ( )

(17) क्या आप इस बात से सहमत है कि वर्तमान समय में अच्छी नौकरी पाने के लिए शिक्षा की गुणवत्ता महत्वपूर्ण है?

(i) नही ( ) (ii) कुछ हद तक ( )

(iii) हाँ ( )

(18) क्या आप अभिभावकों से अपनी पसंद के पाठ्यक्रमों के बारे में चर्चा करते हैं?

(i) बहुत कम हद तक ( ) (ii) कुछ हद तक ( )

(iii) बहुत हद तक ( ) (iii) बहुत ज्यादा हद तक ( )

(19) क्या आप अभिभावकों से अपने ग्रेड/अंक के बारे में चर्चा करते हैं?

(i) बहुत कम हद तक ( ) (ii) कुछ हद तक ( )

(iii) बहुत हद तक ( ) (iii) बहुत ज्यादा हद तक ( )

(20) क्या आप अभिभावकों से नौकरी की संभावनाओं के बारे में चर्चा करते हैं?

(i) बहुत कम हद तक ( ) (ii) कुछ हद तक ( )

(iii) बहुत हद तक ( ) (iii) बहुत ज्यादा हद तक ( )

(21) क्या आप अभिभावकों से विश्वविद्यालय परिसर में आने वाली चुनौतियों के बारे में चर्चा करते हैं?

(i) बहुत कम हद तक ( ) (ii) कुछ हद तक ( )

(iii) बहुत हद तक ( ) (iii) बहुत ज्यादा हद तक ( )

(22) क्या आप अपने दोस्तों से सहयोग मांगते हैं?

(i) बहुत कम हद तक ( ) (ii) कुछ हद तक ( )

(iii) बहुत हद तक ( ) (iii) बहुत ज्यादा हद तक ( )

(23) क्या आप अपने पड़ोसियों से सहयोग मांगते हैं?

(i) बहुत कम हद तक ( ) (ii) कुछ हद तक ( )

(iii) बहुत हद तक ( ) (iii) बहुत ज्यादा हद तक ( )

(24) क्या आप अपने रिश्तेदारों से सहयोग मांगते हैं?

(i) बहुत कम हद तक ( ) (ii) कुछ हद तक ( )

(iii) बहुत हद तक ( ) (iii) बहुत ज्यादा हद तक ( )

(25) क्या आप अपने परिचितों से सहयोग मांगते हैं?

(i) बहुत कम हद तक ( ) (ii) कुछ हद तक ( )

(iii) बहुत हद तक ( ) (iii) बहुत ज्यादा हद तक ( )

(26) क्या आप अध्ययन कक्ष में शिक्षकों से स्पष्टीकरण मांगते हैं?

(i) नही ( ) (ii) कुछ हद तक ( )

(iii) हाँ ( )

(27) क्या आप अध्ययन कक्ष में होने वाली अध्ययन से सम्बन्धित चर्चा में शामिल होते हैं?

(i) नही ( ) (ii) कुछ हद तक ( )

(iii) हाँ ( )

(28) क्या आप शिक्षकों की बोली और भाषा को आसानी समझ पाते हैं?

(i) नही ( ) (ii) कुछ हद तक ( )

(iii) हाँ ( )

(29) क्या आप दूसरों से बातचीत करने में असहजता का अनुभव करतें हैं?

(i) सहमत ( ) (ii) कुछ हद तक सहमत ( )

(iii) असहमत ( )

(30) क्या आप पार्क, कैंटीन आदि जैसे सामान्य स्थानों पर असहजता का अनुभव करतें हैं?

(i) सहमत ( ) (ii) कुछ हद तक सहमत ( )

(iii) असहमत ( )

(31) क्या आप यह अनुभव करते हैं कि आप अन्य विद्यार्थियों के समान अंग्रेजी फिल्मों, रेस्तरां, कंप्यूटरों, एवं खाद्य पदार्थों के विषय में नहीं जानते हैं?

(i) सहमत ( ) (ii) कुछ हद तक सहमत ( )

(iii) असहमत ( )

(32) क्या आप यह अनुभव करते हैं कि आपकी ड्रेसिंग, बात करने का तरीका, खाने की आदतें अन्य विद्याार्थियों से भिन्न हैं?

(i) सहमत ( ) (ii) कुछ हद तक सहमत ( )

(iii) असहमत ( )

(33) विश्वविद्यालय के वातावरण को देखकर क्या आप यह अनुभव करते हैं कि आपने ऐसा परिवेश कभी नहीं देखा हैं?

(i) सहमत ( ) (ii) कुछ हद तक सहमत ( )

(iii) असहमत ( )

(34) क्या आप यह अनुभव करते हैं कि आप उच्च शिक्षा में मिसफिट है?

(i) सहमत ( ) (ii) कुछ हद तक सहमत ( )

(iii) असहमत ( )

(35) क्या आप यह अनुभव करते हैं कि आप उच्च शिक्षा में प्रवेश लेने के बाद किसी प्रकार का अफसोस महसूस करते है?

(i) सहमत ( ) (ii) कुछ हद तक सहमत ( )

(iii) असहमत ( )

(36) क्या आप अपनी बातचीत करने के कौशल और संचार को बेहतर बनाने की कोशिश करते है?

(i) बहुत कम हद तक ( ) (ii) कुछ हद तक ( )

(iii) बहुत हद तक ( ) (iii) बहुत ज्यादा हद तक ( )

(37) क्या आप केवल अपनी पढ़ाई पर ध्यान केन्द्रित करने की कोशिश करते है?

(i) बहुत कम हद तक ( ) (ii) कुछ हद तक ( )

(iii) बहुत हद तक ( ) (iii) बहुत ज्यादा हद तक ( )

(38) क्या आप अभिजात वर्ग के विद्यार्थियों से मित्रता करने की कोशिश करते है?

(i) बहुत कम हद तक ( ) (ii) कुछ हद तक ( )

(iii) बहुत हद तक ( ) (iii) बहुत ज्यादा हद तक ( )

परिशिष्ट II

साक्षात्कार गाइड

1 प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थी विश्वविद्यालय स्तर पर होने वाले नकारात्मक अनुभवों को कैसे कम करने का प्रयास करते है ?

2 उच्च शिक्षा में किस पृष्ठभूमि से प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थी प्रवेश लेते है ?

3 प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थी को कॉलेज में प्रवेश लेते समय किस प्रकार की कठिनाइयाँ होती है ?

4 प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों को किन–किन आधारों पर सामाजिक अन्तः क्रिया करने में समस्या होती है ?

5 प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों को शिक्षकों के साथ समायोजन करने में किस प्रकार की असुविधा होती है ?